

रूहानी डायरी, भाग 1 - राय साहिब मुन्शी राम

प्रकाशक: सेवा सिंह, सेक्रेटरी, राधास्वामी सत्संग ब्यास, डेरा बाबा जैमल सिंह, जिला अमृतसर (पंजाब)-143 204

© Radha Soami Satsang Beas-1968; 2000 All Rights Reserved

पहली बार से नौवीं बार 1968-2000 77,000 दसवीं बार 2003 12,000

मुद्रक : सरताज प्रिंटिंग प्रेस, जोशी एस्टेट, टाँडा रोड, जालन्धर शहर

विषय-सूची

	भू।मका	
1.	डलहौज़ी व सिकन्दरपुर की यात्रा और डेरे में रहने का हाल	7
2.	साँगली, बम्बई इत्यादि के (देहली के रास्ते) दौरे	9
3.	डेरे में ठहरना, डलहौज़ी और पहाड़ी क्षेत्र की यात्रा का हाल	30
4.	सिकन्दरपुर की यात्रा का हाल	47
5.	डेरे में निवास का हाल	69
6.	देहली के रास्ते सिकन्दरपुर और पिसावा के दौरे की घटनाएँ	88
7.	डेरे में निवास का हाल	109
8.	डलहौजी के दौरे का हाल	126
9.	डेरे में निवास का हाल	146
10.	डलहौजी की यात्रा का हाल	176
11.	डेरे में निवास का हाल	182
12.		207
	सिकन्दरपुर का दौरा	217
13.	डेरे में निवास का हाल	229
	सिकन्दरपुर का दौरा	234
15.	डेरे में निवास का हाल	240
16.	कालू की बड़ के दौरे का हाल	245
17.	सिकन्दरपुर के दौरे का हाल	248
18.	सिकन्दरपुर, देहली और रोहतक के दौरे का हाल	264
19.	डेरे में निवास का हाल	275
20.	मिण्टगुमरी, मुलतान, बनी बग्गी व लदरोर आदि	
	के दौरे का हाल	283

3

	- 1 22	298
	डेरे और डलहाँ जी में निवास का हाल	310
21.	हो और डलहा था के हाल कालू की बड़ का दौरा	319
	77 1 Hald 4	328
23.	डेरे में निवास का हाल	343
24.	डलहौजी का दौरा	354
25.	उद्धरण	362
	अनुक्रमणिका	367
	इमारे प्रकाशन	

पाठकों से निवेदन

अकसर देखने में आता है कि हिन्दी पाठक श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की वाणी (गुरुवाणी) का शुद्ध उच्चारण नहीं कर पाते हैं। गुरुवाणी मूल रूप में गुरुमुखी लिपि में लिखी गई है। इसमें कई शब्दों के अन्त में हस्व इ (f) और हस्व उ (ु) की मात्राओं का प्रयोग है। यह प्रयोग केवल व्याकरण की दृष्टि से हैं; वाणी पढ़ते समय ये मात्राएँ आमतौर पर उच्चारण में नहीं आतों। हिन्दी पाठक बड़े प्रेम से गुरुवाणी का पाठ या गायन करने का यल करते हैं, लेकिन इन मात्राओं और कुछ अन्य अपरिचित हिज्जों के कारण अनजाने में उच्चारण ग़लत हो जाता है। गुरुवाणी का रूपान्तर देवनागरी लिपि में करते समय ये हस्व हटा दिये गए हैं और अन्य छोटे–मोटे परिवर्तन कर दिये गए हैं ताकि हिन्दी पाठकों को गुरुवाणी के ठीक उच्चारण में सहायता मिल सके :

मूल रूप: अखी बाझहु वेखणा विणु कंना सुनणा। पैरा बाझहु चलणा विणु हथा करणा। उच्चारण रूप : अक्खीं बाझों वेखणा विण कंना सुनणा। पैरां बाझों चलणा विण हत्थां करणा।

सुणिऐ पड़ि पड़ि पाविह मानु। सुणिऐ लागै सहजि धिआनु। सुणिऐ पढ़ पढ़ पावह मान। सुणिऐ लागै सहज ध्यान।

यहाँ यह बात स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि इन मात्राओं का प्रयोग पढ़ने में भले ही नहीं होता, गुरुवाणी में इन मात्राओं का व्याकरण और अर्थ की दृष्टि से विशेष महत्व है। गुरु साहिबान के सन्देश को अधिक गहराई से समझने के इच्छुक गुरुवाणी का मूल रूप में अध्ययन कर सकते हैं।

- प्रकाशक

प्रार्थना काल क्रिक विकास हे परमात्मा! मुझे चेला बनाना, गुरु न बनाना। मुझे सेवादार बनाना, सेवा कराने वाला न बनाना। मुझे बाहरी विद्या देना या न देना, मगर आन्तरिक ज्ञान देना। मुझे सांसारिक पदार्थ न देना, मगर सुख देना। मुझे सवारी न देना, टाँगें देना। मुझे स्वादिष्ट भोजन न देना, भूख देना। मुझे अमीराना बिस्तर न देना, नींद देना। मुझे संसार की शाबाश न देना, अपनी शाबाश देना।

भूमिका

लाला मुन्शी राम जी, पंजाब के न्याय विभाग में अफ़सर थे। आप अपनी योग्यता व बुद्धिमता के कारण जज के पद से उन्नित करके डिस्ट्रिक्ट व सेशन जज के उच्च पद पर पहुँचे। आप एक उच्चकोटि के दयालु और न्यायशील न्यायाधीश रहे हैं। ब्रिटिश सरकार ने आपको राय साहिब की उपाधि से सुशोभित किया था।

1942 में आप अपने पद से अवकाश-प्राप्त करके अपने सतगुरु जी की शरण में ब्यास में रहने लगे।

1952 में मुझे 'द पाथ ऑफ़ द मास्टर्स' पढ़ने का अवसर मिला। हुजूर सन्त-सतगुरु के दर्शन की इच्छा हुई। राय साहिब का ध्यान आया। उन्हें इजाजत के लिये लिखा, जवाब आया कि जब चाहो, आ सकते हो। मैं गया, उनके सादा जीवन और उच्च विचारों ने अपना प्रभाव डाला। महाराज चरन सिंह जी के दर्शन हुए , उनकी दया-दृष्टि पड़ी, और मैं निहाल हो गया। चरणों में शरण देने की प्रार्थना की, तो आज्ञा हुई कि अभी कुछ समय के लिये सोच-विचार कर लो, जल्दी की ज़रूरत नहीं। दो चार बार फिर गया, राय साहिब का संग मिला। उनको पूर्ण गुरु-भक्त व विचारवान दार्शनिक पाया। मेरे ऊपर उनका रंग चढ़ता गया। प्रार्थना करने पर हुजूर महाराज जी ने मुझ पर दया करके, नामदान बख़्श दिया।

राय साहिब से बातचीत में पता चला कि आप नियमित रूप से डायरी लिखते रहे हैं। मेरे चाव और प्रेम प्रकट करने पर आपने बड़े प्रेम और कृपा से यह डायरी मुझे पढ़ने को दी। मैंने इसे एक अमूल्य निधि पाया।

परम सन्त-सतगुरु महाराज बाबा सावन सिंह जी के समय में जब राय साहिब आये और उन्होंने सेक्रेटरी का कार्य सँभाला, उस समय आपने यह डायरी लिखनी शुरू की। जब महाराज जी सत्संग के लिये दौरे पर तशरीफ़ ले जाते थे तो आप भी हमेशा उनके साथ होते थे। विचार परमार्थी थे और हृदय में प्रेम था। गुरु-भिक्त के नशे में मस्त थे। वही रंग उनकी लिखी हुई डायरी में है। इसमें राय साहिब ने प्रतिदिन के जीवन की घटनाएँ, महाराज जी की यात्र के रोचक हालात, सत्संग की अमृत वर्षा, परमात्मा के खोजियों से बातचीत के खास प्रभावशाली पत्रों का संग्रह तथा महाराज जी की अन्तिम यात्रा आदि घटनाओं का वर्णन किया है। महाराज सावन सिंह जी के बाद आप सरदार बहादुर महाराज जगत सिंह जी के समय में भी सेक्रेटरी के पद पर कार्य करते रहे और डायरी लिखते रहे। सरदार बहादुर जी का समय थोड़ा ही रहा और उन्होंने अपने स्थान पर श्री हुजूर महाराज चरन सिंह जी को वसीयत द्वारा अपना जानशीन नियुक्त किया। राय साहिब ने इन घटनाओं पर काफ़ी प्रकाश डाला है।

राय साहिब अपने शेष जीवन में श्री हुजूर महाराज चरन सिंह जी के सेक्रेटरी रहे। आपने उनकी गद्दीनशीनी और बाद के वृत्तान्त बड़ी सुन्दरता से लिखे हैं। आप एक प्रेमी सत्संगी और उच्चकोटि के अभ्यासी होने के साथ-साथ, तीनों सतगुरु साहिबान के विश्वास-पात्र भी थे और वे आपसे कभी-कभी परामर्श भी करते थे। इसलिये आपकी डायरी का विशेष महत्त्व है।

इस डायरी में परम सन्त-सतगुरु महाराज बाबा सावन सिंह जी के समय की घटनाएँ बड़े विस्तार के साथ लिखी गई हैं। डायरी को तीन भागों में प्रकाशित किया जा रहा है। पहले और दूसरे भाग में श्री हुजूर महाराज सावन सिंह के समय की अक्तूबर 1942 से 1948 तक की घटनाएँ लिखी गई हैं। सरदार बहादुर महाराज जगत सिंह व श्री हुजूर महाराज चरन सिंह जी के समय का वृत्तान तीसरे भाग में दिया गया है। राय साहिब के काग़जों में उनके हाथ की लिखी हुई प्रार्थना मिली है जिसे डायरी के आरम्भ में ही दिया गया है।

> ताराचन्द अग्रवाल रिटायर्ड डिस्ट्रिक्ट व सेशन जज राधास्वामी कॉलोनी, ब्यास

महाराज सावन सिंह जी भਹਾਰਾਜ ਸਾਵਨ ਸਿੰਘ ਜੀ

अध्याय १ डलहौजी व सिकन्दरपुर की यात्रा और डेरे में रहने का हाल हुजुर की डलहौजी की यात्रा तथा वापसी

तारीख़ पहली अक्तूबर, 1942 को सुबह 6 बजे डेरे से मोटर द्वारा नहर के सारते उलाही जी की यात्रा पर चले। हुजूर महाराज पटानकोट बल्टी पर्युं कर चाहते थे, लेकिन हम लोग यह कहते थे कि जल्टी की क्या तहरत है, सवा नी बजे से पहले-पहले आग्रम से पर्युंच जायेंगे। सारते में नहर के फाटक बन्द थे, तीन-चार फाटक आये। क्योंकि टण्ड के कारण फाटक वाले अपने-अपने घरों में सो रहे थे, इसलिये भाई खादी व इग्रइवर सरूप सिंह को जाकर उनको जगाकर लाना पड़ा ताकि फाटकों के दरवाने खोले जायें। इस प्रकार हम लोगों को हर फाटक पर काफी समय रकना पड़ता। खेर, जैसे-तैसे 8.30 बजे पटानकोट स्टेशन के सामने पहुँचे। वहाँ से पता चला कि बस सर्विस सवा आठ बजे तक जाती है। महाराज जी ने फरम्बया कि मैं तुमसे पहले ही कहता था कि जल्दी करों। भाग-दौड़ करके चौकी पर पहुँचे तो पुलिस वाले ने, जोकि महाराज जी को जानता था, कहा कि अब तो मैं टेलीफोन कर चुका, सर्विस बन्द हो चुकी, अब लाचार हूँ। नतीजा यह हुआ कि हमें एक बजे तक बैरियर पर रुकना पड़ा। मैं और सरूप सिंह दोनों पुल चक्की देखने गये। कुछ पायों के बीच में गर्डर पायों पर रखने की बजाय पहियों के

^{*} उन दिनों में जब भी मैदानों से पहाड़ों पर जाना होता था, दो तरफा सर्विसे बलती थीं, एक मैदानों से पहाड़ों की ओर, दूसरा पहाड़ों से मैदानों की ओर, रास्ता तंन होने के कारण वाहन बीच रास्ते पर आकर रुकते थे। निश्चित समय पर बैरियर खुलता था, ऊपर के वाहन नीचे और नीचे के ऊपर की ओर जाने दिये जाते थे।

बीच में अजीब कारीगरी से लटकाये हुए मालूम होते थे। वहाँ से आकर दूध पिया। मिलिट्री वालों की लॉरी चलाने की सिखलाई देखते रहे। हुजूर श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से चुनी हुई वाणी छपवा रहे हैं, उसके फरमें पढ़ते रहे। इस प्रकार समय बिता कर 1 बजे चलकर 4 बजे के क़रीब डलहौजी पहुँच गये। संगत स्वागत के लिये उपस्थित थी। सामान उठवाकर 'एल्समियर' पहुँचे। मौसम बड़ा सुहावना था। धूप ख़ूब थी। मगर ठण्डक के कारण सुहावनी थी। सामाने पहाड़ पर सफ़ेद बर्फ़ चमक रही थी। हुजूर ने खड़े होकर पहाड़ का दृश्य देखा। इंजीनियर लाला त्रिलोक चन्द व हीरा नन्द उपस्थित थे।

दूसरे दिन लाला दुनी चन्द नागपाल की इच्छा पर अनुराग सागर की कथा शाम को 5 बजे शुरू की गई। मगर अनुराग सागर का हिन्दी संस्करण ग़लितयों से भरा हुआ निकला। बीबी लाजवन्ती पाठ करती थी, हुजूर को बार-बार ठीक करना पड़ता था, वरना अनुराग सागर जैसी उच्चकोटि की कविता सुन कर लोग आनन्द-विभोर हो जाते हैं।

3 अक्तूबर शाम को रिसालदार खुशहाल सिंह ने पाठ किया, क्योंकि सुनने वालों की संख्या अधिक हो गई थी। इस प्रकार 4 अक्तूबर तक हर शाम अनुराग सागर का पाठ होता रहा और साथ-साथ डंगा* बनाने की योजनाएँ भी बनती रहीं। कमेटी की बैठक 3 अक्तूबर को हुई, जिसमें डंगे का नक्शा पास हो गया। लाला त्रिलोक चन्द को डंगा बनाने के काम पर लगाकर हुजूर 5 अक्तूबर को सुबह ही अमृतसर के रास्ते डेरे की ओर रवाना हुए। रास्ते में पठानकोट में सीमेण्ट का पता लगाते हुए आये। सीमेण्ट कहीं भी किसी क्रीमत पर नहीं मिलता। गुरदासपुर से इधर जंगल में खाना खाया, जोिक बीबी ने साथ बाँध दिया था और गुरदासपुर दोपहर के 1 बजे पहुँच गये। वहाँ जंगलात के पब्लिसिटी अफ़सर लाला जगदीश चन्द के यहाँ श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का भोग था। वहाँ हुजूर महाराज जी ने लगभग डेढ़ घण्टे तक सत्संग किया। वहाँ से चल कर बटाला में पाँच दस मिनट भाई शादी के काम के लिये रुकना पड़ा। वहाँ मिस्त्रियों से काम था। वहाँ से अमृतसर सत्संग-घर आये, जहाँ सत्संगियों के बार-बार कहने पर हुजूरी वाणी में से एक शब्द 'गुरू

चरन बसे अब मन में "* का पाठ किया गया, जिसमें हुजूर ने सिमरन पर जोर दिया। क्योंकि जिसका सिमरन अधूरा है, उसका ध्यान भी अधूरा है और जिसका ध्यान अधूरा है उसका शब्द भी अधूरा है। वहाँ से लगभग 6 बजे चलकर शाम को 7.30 बजे डेरे पहुँच गये।

महाराज जी का डेरे में निवास

6 अक्तूबर, 1942 को हुजूर तो बाजरा कटवाते रहे और मैं हिसाब-किताब लिखता रहा, डाक का काम पूरा करता रहा। शाम को सरदार कृपाल सिंह ने सत्संग किया। हुजूर स्वयं उपस्थित थे, मगर थके हुए थे। तीसरे गुरु अमर दास जी का शब्द 'भाणा' के विषय में था। कभी-कभी हुजूर भी बीच में व्याख्या कर देते थे। सरदार कृपाल सिंह की व्याख्या दार्शनिकतापूर्ण (Philosophical) थी, हुजूर की सादा, आम लोगों के समझने योग्य तथा व्यावहारिक थी। हुजूर ने राजा परीक्षित का उदाहरण दिया कि 'भाणा' टल नहीं सकता।

महाराज जी का सिकन्दरपुर सिरसा की ओर प्रस्थान

7 अक्तूबर, 1942 को सुबह 6 बजे सरदार भगत सिंह को साथ लेकर सिरसा की ओर चल दिये। जालन्थर में सरदार साहिब उतर गये और संगत को दर्शन देकर सरदार लाल सिंह के साथ हुजूर लुधियाना की ओर चल पड़े। रास्ते में फगवाड़ा व गोराया में संगत को दर्शन देते हुए, लुधियाना बलवन्त राय वकील के घर आये, जहाँ संगत उपस्थित थी। वहाँ राय साहिब गुलवन्त राय डिस्ट्रिक्ट जज भी थे। उनसे बातचीत करते रहे और उनके बार-बार कहने पर उनकी कोठी देखने गये। वहाँ से सरदार निरंजन सिंह की कोठी गये, जोिक फिरोजपुर पुल के पास थी। उनकी लड़की की शादी की बातचीत करके साढ़े दस बजे के क़रीब मोगा में डॉ. प्रेम नाथ के यहाँ पहुँचे। वहाँ डॉ. साहिब बड़े प्रेम से मिले। उनसे बातचीत करके सरदार लाल सिंह के घर पहुँचे। उनकी माताजी की तबीयत ठीक न थी, उनकी तबीयत के बारे में पूछकर और सरदार साहिब की कोठी को देखकर हुजूर 12 बजे के क़रीब चल पड़े। रास्ते में मलोट

^{*} पहाड़ी रास्तों पर बनी पुख़्ता दीवार।

^{*}वाणी के सभी उद्धरण पुस्तक के अन्त में दिये गए हैं।

10 अस्त्वर 1942

हुजूर का सिकन्दरपुर में ठहरना

मशीनों की मुरम्मत हो रही है। सिकन्दरपुर में महाराज जी का रोज का कार्यक्रम इस प्रकार है– महाराज जी सुबह नहा-धोकर व नाश्ता करके 9 बजे के लगभग केरे में, जहाँ कि मशीनें लगी हुई हैं और जोकि आबादी से दो-तीन मील दूर सड़क के किनारे सिरसा व हिसार के बीच है, पैदल जाते हैं और वहाँ जाकर काम की देखभाल करते हैं। डेढ़ बजे सबका खाना वहीं आ जाता है, सब लोग खाना खाते हैं। खाना खाने के बाद महाराज जी आराम करते हैं। और करीब 5 बजे बाहर आते हैं। बाकी लोग अपने–अपने काम में लग जाते हैं। मैं खाना खा लेने के बाद आराम—चौकी पर टाँग रखकर सो जाता हूँ क्योंकि सँचो पांजा* ने कहा है– ''वह आदमी धन्य है जिसने पहले–पहल नींद का आविष्कार किया और फिर इस आविष्कार को गुप्त न रखा।'' 6 बजे के लगभग सब लोग आबादी में वापस आ जाते हैं और महाराज जी सहन में चब्तरे पर कुर्सी डालकर बिराजमान होते हैं। बाक़ी लोग इधर–उधर बैठकर सत्संग और वचनों का लाभ उठाते हैं और फिर भोजन के बाद सो जाते हैं।

मेरे लिए अलग कमरा व स्नान-गृह है तथा हर प्रकार की सुविधा प्राप्त है। जितने लोग आये हैं सबको बढ़िया खाना मिलता है और हर प्रकार का आराम दिया जाता है। छोटे भाई सरदार हरबन्स सिंह आदर्श गृहस्थ हैं, मेहमान आ जायें तो ख़ुश होते हैं, उनका सत्कार करने में कोई कसर नहीं छोड़ते, कोई तक़लीफ़ महसूस नहीं करते और न ही ख़र्च की परवाह करते हैं। अतिथि-सेवा, मीठे वचन, जलपान, चारपाई इत्यादि हरएक के लिये तैयार रहती है। जैसा कि शास्त्रों में गृहस्थ-धर्म का वर्णन किया गया है, वैसा ही उनको पाया। सतगुरु महाराज दया करें कि हर गृहस्थ उनकी तरह ही गृहस्थ-धर्म का पालन करके जीवन सफल बनाये।

आजकल यहाँ और आसपास के गाँवों में मलेरिया जोरों पर है। महाराज जी ने सलाह दी कि इसका देशी इलाज यह है कि सात पने तुलसों के, चार या पाँच दाने काली मिर्च के साथ रगड़ लो फिर मुनक्का में, जिसमें से बीज निकाल दिये गए हों, मिलाकर गोलियाँ बनाकर खाई जायें तो मलेरिया रोका जा सकता है, और बुख़ार के बीच में पित पापड़ा, जंग हरड़, चिरायता, अजवायन, गिलो हरएक एक छटाँक लेकर पाँच सेर पानी में काढ़ा बनाकर एक छटाँक काला नमक भी काढ़े में डाल दें। मलेरिया बुख़ार वालों को एक-एक छटाँक के लगभग दिन में दो-चार बार पिलायें तो वह कुनीन जैसा ही असर करता है। क्योंकि आजकल लड़ाई के कारण कुनीन कम और महाँगी मिलती है, इसलिये महाराज जी ने रोगियों को यही काढ़ा पिलाया और डॉ. मुरली मनोहर साहिब को सिरसा से बीमारों को देखने के लिये बुलाया। वह भी यही नुस्खा अपने बीमारों के लिये प्रयोग में ला रहे थे। मेरा विचार है कि अगर रोगी को कब्ब हो तो पहले कब्ज को ही दूर करना चाहिये। फिर इस दवाई से जरूर लाभ होगा।

कडानी डायरी, भाग 1

10 अक्तूबर, 1942 को सिरसा के नायब तहसीलदार साहिब महाराज जी से मिलने केरे आये।

11 अक्तूबर, 1942 को सुबह 10 बजे सिरसा सत्संग-घर में महाराज जी ने हुजूरी पोथी में से सत्संग किया और ये शब्द लिया, 'सतगुरु का नाम पुकारो। सतगुरु को हियरे धारो॥"

महाराज जी ने व्याख्या की और इस बात पर जोर दिया कि अभ्यासी को अन्तर में तारा दिखाई देने लगे तो 'निरत' को तारे पर जमाना चाहिये, तारा फटेगा तो 'तारा मण्डल' नजर आयेगा।

12 अक्तूबर, 1942 को हुजूर, दास* व भाई शादी के साथ दोपहर के समय बकबोर्ड** द्वारा सरदार बचिन्त सिंह जी के घर गये। कुछ दूर यानी दो मील तक सिरसा और हिसार के बीच पक्की सड़क पर जाना पड़ा, बाद में खेतों में से बकबोर्ड ले जानी पड़ी। रास्ता कोई न था। खेत भी समतल नहीं थे। इसिलये सफ़र आराम का नहीं था। बड़े भाई साहिब ने ख़ूब सेवा की और चाहते थे कि महाराज

^{*} एक प्रसिद्ध विदेशी उपन्यास का हँसोड़ चरित्र।

^{*}डायरी के लेखक राय साहिब मुंशी राम

^{**}चार पहिये वाली एक प्रकार की घोड़ा-गाड़ी।

14 अक्तूबर 1942

14
जी रात को वहीं विश्राम करें। परन्तु महाराज जी को केरे में काम देखना था, इसलिये उन्होंने हठ नहीं किया और हम सब शाम को केरे होते हुए सिकन्दरपुर पहुँच गये।

13 अक्तूबर, 1942 को शाम के छ: बजे सिरसा सत्संग-घर में सत्संग किया गया। उपस्थित लोगों में सिरसा के नहर विभाग के एस. डी. ओ., डॉक्टर साहिब और दूसरे बड़े-बड़े लोग भी शामिल थे। सब यही चाहते थे डॉक्टर साहिब और दूसरे बड़े-बड़े लोग भी शामिल थे। सब यही चाहते थे कि नाम के भेद का वर्णन किया जाये। महाराज जी ने श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से मारू राग महला पहला का यह शब्द पढ़वाया, 'काम क्रोध परहर पर निंदा'।' हुजूर ने ऐसी व्याख्या की कि बिना आन्तरिक मण्डलों तक पहुँचे हुए महात्मा के कोई ऐसी व्याख्या नहीं कर सकता और न ही इसे समझ सकता है। मतलब यह कि पहले नेकचलन बनो, उच्चकोटि का चरित्र बनाओ और पूरे गुरु की शरण में जाओ, जब वे नाम का भेद दें तो सिमरन करके मन को एकाग्र करो। तब अन्तर में बिजली के चमकारे, फिर सूरज, चाँद, शशमाल चक्र और इनके बाद सतगुरु का नूरी स्वरूप दिखाई देगा। तब शब्द स्वरूप सतगुरु अन्तर में शब्द सुनाकर ऊपर के आत्मिक देशों– तुरिया पद, ब्रह्मलोक से निकालकर पारब्रह्म में ले जायेंगे, जहाँ पहुँचकर आत्मा सारे परदों, मन और माया से मुक्त होकर पवित्र हो जायेगी और उस समय उसको गुरुमुखता या हंस गित प्राप्त हो जायेगी। इसके बाद वह कुल मालिक के दर्शन कर सकेगी।

सत्संग के बाद महाराज जी ने सत्संग–घर के चौबारों के आगे बरामदे के खम्भों का नाप लिया और फिर कमरों के लिये चटाइयों का नाप देखा। इस बीच रात के सवा आठ बज गये और हुजूर बकबोर्ड में सिकन्दरपुर को चल दिये। रात के साढ़े नौ बजे केरे पहुँचे, वहाँ भाई शादी, मिस्टर भण्डारी, सरूप सिंह व गाँधी सब प्रतीक्षा कर रहे थे और चिन्तित थे कि इतनी देर क्यों हो गई। सब मिलकर सिकन्दरपुर की ओर रवाना हुए। रात के 10 बजे के लगभग खाना खाकर आराम किया। दोनों पाठी लुधियाना जाने के लिये सिरसा रह गये थे।

14 अक्तूबर, 1942 को श्री भण्डारी सुबह 10 बजे की गाड़ी से डेरे की ओर चल दिये। हुज़ूर सारा दिन केरे में काम की देख-भाल करते रहे। शाम को सिकन्दरपुर आये, बीमारों को काढ़ा पिलाया गया, समाचार-पत्र सुनते रहे, फिर

खाना खाकर सब लोग सो गये और यह फ़ैसला हुआ कि सुबह छ: बजे चलेंगे। सिरसा के वृत्तान्त को समाप्त करने से पहले एक बड़ा जरूरी वर्णन बाक़ी है।

कुछ अनजान सत्संगी और दूसरे लोग यह एतराज करते सुने गए कि हुजूर इतने बड़े महात्मा और महापुरुष होकर अपने बाल-बच्चों का काम दूसरे दुनियादारों की तरह करते हैं और आम गृहस्थों की तरह बर्ताव करते हैं। हुजूर ने स्वयं केरे में एक दिन शाम को मुझसे कहा कि जिस घराने में जरा-सी भी महन्ती आ जाये, उस घराने के लोग स्वयं कमाकर खाना शान के ख़िलाफ़ समझने लग जाते हैं और पूजा-सेवा का धान खाते हैं। मैं नहीं चाहता कि मेरी सन्तान अपाहिजों की तरह समाज पर या मेरे सत्संगियों पर बोझ बन जाये और परमार्थ से गिर कर पूजा व सत्संग के पैसों की आशा रखे। इसलिये मैंने इनको खेती में लगा दिया है। जितना रुपया नौकरी से पेन्शन लेने के समय मेरे पास था, वह मैंने इनके लिये जमीन ख़रीदने में लगा दिया। अगर नक़द रुपया इन्हें दे देता तो शायद ये खो देते या ख़र्च कर डालते। मैंने यही ठीक समझा कि नक़द रुपये देने की बजाय इनको जमीन ख़रीद दूँ जिससे अपना निर्वाह करते रहें और इनको कभी-कभी आकर सहायता देता रहूँ जिससे कि ये अपने पाँव पर खड़े हो जायें। यदि हुज़ूर सारे संसार का भला करने के लिये सतलोक से यहाँ पधारे हैं तो क्या हुजूर की सन्तान उन लोगों में नहीं आती ? क्या वह अपनी सन्तान के प्रति लापरवाह हो जायें ? हुजूर ने खेती-बाड़ी में अपनी सन्तान की सहायता करके न केवल अपनी सन्तान का भला किया बल्कि साध-संगत का बड़ा उपकार किया। फलस्वरूप अब उनके सुपुत्र साध-संगत से सेवा लेने की बजाय साध-संगत की सेवा करते हैं। जो सत्संगी उनके यहाँ जाते है उनका हर तरह से अतिथि-सत्कार करते हैं और केवल यही नहीं बल्कि हुजूर की देख-रेख और परिश्रम से यह क्षेत्र, जोकि सिवाय बबूलों के या कहीं-कहीं खेती के, रेगिस्तान दिखाई देता था, 25-30 वर्ष के समय में हरा-भरा और उपजाऊ हो गया है। जो अराई लोग इस प्रदेश में खेती-बाड़ी का काम नहीं जानते थे या मेहनत नहीं करते थे, उन पर हुजूर के उदाहरण का इतना अच्छा प्रभाव पड़ा कि अब वे लोग कमाद (गना), सब्ज़ी, कपास आदि फ़सलें पैदा करते हैं, जिनका पहले कभी

वनको ख़्याल तक न था, कमाद को सरकण्डा कहा करते थे। अब वे खुशहाल और दौलतमन्द हो गये हैं। 'जमाले हम-नशीं दर मन असर कर्द' अर्थात् प्रियतम के सौन्दर्य ने मुझे प्रभावित किया।

इसमें एक और भी भेद है, त्यागी सन्तों से संसार को इतना लाभ नहीं पहुँचता जितना कि गृहस्थ सन्तों से पहुँचता है। त्यागी महात्मा के सम्बन्ध संसार और सांसारिक लोगों के साथ बहुत कम होते हैं। उनकी अपनी शारीरिक आवश्यकताएँ बहुत कम होती हैं इसीलिये उनके सेवकों का दायरा सीमित होता है। गृहस्थ महात्मा को डॉक्टर, हकीम, वकील, स्कूल-मास्टर सम्बन्धियों तथा दोस्त-दुश्मन सबसे सम्बन्ध रखने पड़ते हैं। हुजूर ने तो यह दायरा इतना बड़ा कर रखा है कि कोई ही अभागा सत्संगी होगा जिसको किसी न किसी सम्बन्ध में हुज़ूर की सेवा का अवसर न मिला हो। कहीं खेती-बाड़ी का प्रबन्ध हो रहा है, कहीं मुक़द्दमों की रोक-थाम हो रही है, कहीं डॉक्टर, वैद्य, हकीम बुलाये जा रहे हैं, कहीं स्कूल-मास्टर व अध्यापिकाओं से सम्बन्ध बना रखा है, कहीं लोहार, तरखान, मिस्त्री, कारीगर मशीन के फ़िटर, पटवारी, गिरदावर, माल अफ़सर तथा कमिश्नर तक से सम्बन्ध हैं, कहीं किताबें छप रही हैं। बे-समझ लोग इन सम्बन्धों पर एतराज करते हैं। जो परमार्थ के भेद को जानते हैं वे इन कामों में मालिक की अत्यन्त दया के निशान देखकर हैरान और ख़ामोश हैं। बे-समझ लोग समझते हैं कि एक व्यक्ति, जोकि हमसे भी अधिक सांसारिक कार्यों में लगा हुआ है, वह कैसे महात्मा हो सकता है। वास्तव में वे लोग ग़लती पर हैं। वे बाहरमुखी कार्यों से महात्मा की आत्मिक उन्नति का अनुमान लगाना चाहते हैं। सन्तों की परख मन और बुद्धि के द्वारा असम्भव है। कुछ दिन उनका सत्संग और संगत की जाये तो कुछ-कुछ पता चलता है। मौलाना रूम साहिब ने इस विषय पर काफ़ी विचार किया है:

क्रौम गुफ़तन्द ऐ गिरोहे मुदई, कू गवाहे तिबो इलमे नाफ़ई। चू शुमा बस्ताई हम ख़्वाबो ख़ुरीद, कै शुमा सय्यादो सेमुर्गे दिलेद। ऐ दावेदारो! तुम जो तिब, चीरने-फाड़ने के माहिर हो और मान-बड़ाई चाहते हो, तुम्हें पैग़म्बरों में कैसे गिना जा सकता है। ख़ास कर जबिक आप खाने-पीने व सोने में फँसे हुए हो, आप महाबली मन को कैसे क़ाबू कर सकते हो। सन्त समझाते हैं कि ऐ दुनियादार लोगों! तुम प्रभु के भक्तों का बाहरी रहन-सहन देखकर उनका अनुमान लगाना चाहते हो! तुम अन्धे हो, मालिक से वे आँखें माँगों जिनसे तुम्हें वह क़ीमती चीज़ जो उनके पास है, दिखाई देने लगे। तुम बुद्धि की तराजू में उन्हें तोलना चाहते हो यह तुम्हारी भूल है। किसी आम मनुष्य के दिल और दिमाग़ का पता लगाना हो तो उसके पास दिन-रात कुछ समय तक रहकर ही सही अनुमान लगाया जा सकता है। सन्तों की परख जो दूर से करते हैं, वे बड़े नादान हैं।

हुजूर का सिकन्दरपुर से चलना, लुधियाना में ठहरना और डेरे को वापसी

महाराज जी तो 5 बजे ही तैयार थे, हम सब भी तैयार हो गये, सवा पाँच बजे के क़रीब चल दिये। सिकन्दरपुर से चलकर सिरसा सत्संग-घर में 15 मिनट संगत को दर्शन देकर आगे रवाना हो गये। कोटकपूरा निकलकर आगे मोगा की ओर एक नहर सड़क को काटती है, उस नहर के पार मोटर ठहराकर हम सब लोग शौच आदि से निपटे। शादी व सरूप सिंह ने पराँठे खाने शुरू कर दिये। हुजूर का नवासा काका सतनाम सिंह, भाई शादी के साथ अगली सीट पर था। उसको भी खाने के लिये कहा, परन्तु उसने नहीं लिये। रास्ते में कोटकपूरा के रेलवे फाटक पर संगत दर्शनों के लिये आई। हुजूर का विचार मोगा वालों को एक घण्टा समय देने का था परन्तु हमारे सौभाग्य और उनके दुर्भाग्य के कारण कोई भी घर पर नहीं था। न डाॅ. प्रेम नाथ जी घर पर थे और न सरदार भाग सिंह जी। इसलिये उनके घर से लौटकर लुधियाना की ओर चल दिये। लुधियाना में हुजूर महाराज डिस्ट्रिक्ट व सैशन जज रायबहादुर लाला गुलवन्त राय साहिब की कोटी पर तशरीफ़ ले गए। सवा दस बजे का समय था। वहाँ नहा—धोकर सबने खाना खाया। हुजूर ने दोपहर को विश्राम किया। डिप्टी साहिब लाला हरनारायण साहिब का लिखित सन्देश मिला:

नीलकंठ तुम नीले रहियो, हमारी राम-राम रामजी से कहियो। सोते हों तो जगाकर कहियो, जागते हों तो कान में कहियो।

लुधियाना व जगराओं की संगत दर्शनों के लिये आई। शाम को राय बहादुर की कोठी में सत्संग हुआ। भीड़ अधिक न थी क्योंकि शहर वालों को सत्संग का पता न था और न ही कोठी का पता था। एक अजनबी ने बड़े पते का सवाल पूछा कि जब सन्त कहते हैं कि ईश्वर मनुष्य के अन्दर बिराजमान है तो वह मनुष्य को बुरे कामों से क्यों नहीं रोकता और क्यों लोगों को नरक और चौरासी मं भेजता है ? इस सवाल का जवाब गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपनी रामायण में भेजता है ? इस सवाल का जवाब गोस्वामी तुलसीदास जी ने अपनी रामायण की भूमिका में अच्छी तरह से दिया है। हुजूर ने समझाया कि आग काठ में है लेकिन काठ को नहीं जलाती। अगर युक्ति से काठ में से आग को प्रकट कर लिया जाये अर्थात् एक लकड़ी दूसरी लकड़ी से रगड़ी जाये तो काठ की आग अपना असर दिखाती है। इसी प्रकार अगर अभ्यास से ईश्वर को अन्तर में प्रकट कर लिया जाये तो वह बेशक मनुष्य को बुरे कामों से रोकेगा और उसे नरकों और चौरासी में जाने से बचायेगा। शम्स तबरेज ने फ़रमाया है :

गोयन्द आँ सगाँ कि नरफ़तन्द राहे रास्त, राह नेस्त बन्दा रा बजनाबे ख़ुदा-दरदग़।

अर्थात्, वे नासमझ, जोिक कभी सीधे रास्ते पर नहीं चले, कहते हैं कि मानव के लिये परमात्मा तक पहुँचने का कोई रास्ता नहीं – लेिकन यह झूठ है! झूठ है!! झूठ है!!!

शाम के सत्संग के बाद कुछ समय आराम करके हुजूर सड़क पर पैदल घूमने चले गए। वहाँ से वापस आये तो सरदार बिचन्त सिंह और हुजूर के भाई सरदार कुण्डा सिंह इत्यादि हुजूर से बातचीत करने आये, क्योंकि हुजूर की बिरादरी में से एक बारात लुधियाना आई थी। दूसरे दिन सुबह ही हुजूर आनन्दकारज के लिये गए। वहाँ आनन्दकारज के बाद श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से दो शब्दों का पाठ किया गया। एक मारू राग तीसरी पातशाही का, दूसरा पाँचवीं पातशाही का, ''पाठ पढ़यो अर बेद बीचारयो'' '

हुजूर ने कहा कि अभी तक लोग गुरु नानक साहिब की ऊँची फ़िलॉसफ़ी के द्वार पर भी नहीं पहुँचे। सत्संग के बाद हुजूर फ़ील्डगंज में माई की धर्मशाला में बरातियों सें मिलने गये। वहाँ से होकर दास* के मकान को, जोकि कचहरी रोड पर है, अपने चरण-कमलों से पवित्र किया और लुधियाना के सत्संगियों को दर्शन देकर अपने विश्राम-गृह में आ गये। वहाँ खाना खाकर लेट गये। दोपहर को भैनी साहिब से सन्त प्रताप सिंह साहिब हुजूर से मिलने के लिये आए। हुजूर को अपने यहाँ होनेवाले उत्सव पर आने का न्योता दिया। लेकिन ग्वालियर से जनरल राजवाड़े व रानी लक्ष्मीबाई आनेवाले थे, इसलिये हुजूर ने उत्सव में न आने की क्षमा माँग ली और रास्ते में बारातियों से मिलकर ब्यास को चल दिये। रास्ते में फ़िल्लौर, गोराया तथा मौली की संगतों को दर्शन देकर सरदार साहिब सरदार भगत सिंह जी के मकान पर ठहरे। सरदार साहिब मलेरिया से बीमार थे। परन्तु उस समय आराम था। वहाँ एक घण्टा ठहर कर शाम को डेरे पहुँच गये।

रूहानी डायरी भाग 1

हुजूर का डेरे में ठहरना

17 अक्तूबर की सुबह कार्तिक की संक्रान्ति का सत्संग था। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब से पाँचवीं पातशाही का बारहमाहा पढ़ा गया। ऐसी उच्चकोटि की पंजाबी कविता परमार्थ के विषय पर देखने में नहीं आती। इसमें पहले परमार्थ के खोजियों के लिये पूरे गुरु की आवश्यकता पर जोर दिया गया है और फिर मृत्यु के समय का चित्र अच्छा खींचा है। हुजूर ने समझाया कि जब मनुष्य की आत्मा शरीर से निकलने को तैयार होती है, उस समय उसके सम्बन्धी बड़ी ग़लती करते हैं कि उसकी आत्मा को चैन व शान्ति से शरीर से अलग होने देने की बजाय रोना- पीटना व चिल्लाना शुरू कर देते हैं जिससे मरने वाले का अकाज व हानि होती है। उनको यह चाहिये कि उसका हौसला बढ़ायें कि हमारी चिन्ता न करो, मालिक का ध्यान करो, ताकि वह प्रसन्नता के साथ प्राण त्याग सके।

कार्तिक के महीने में गुरु अर्जुन साहिब ने कर्मों की फ़िलासफ़ी (सिद्धान्त) पर प्रकाश डाला है कि बुरे कर्मों का फल बुरा और अच्छे कर्मों का फल अच्छा होता है। परन्तु कर्मों से मुक्ति नहीं मिल सकती। अगर किसी ने पाप कर भी लिये तो उनका उपाय यह है कि नाम की कमाई से उनको साफ़ किया जाये। पापों को साफ़ करने का इलाज महात्मा के सत्संग तथा नाम के अभ्यास के सिवाय और कोई नहीं है।

डेरे में सुबह का सत्संग करके शाम का सत्संग हुजूर ने सत्संग-घर, मजीठा रोड, अमृतसर में किया। अँधेरा हो गया था, रात को वहाँ से वापस डेरे आ गये।

18 अक्तूबर, 1942 को जनरल राजवाड़े व रानी लक्ष्मीबाई पधारे। सुबह साढ़े नौ बजे सत्संग हो रहा था, जब यह साहिबान पहुँचे। हुजूर ने हुजूरी वाणी से कार्तिक का महीना लिया और कमलों का भेद प्रकट किया, जो शरीर के

^{*} डायरी के लेखक राय साहब मुन्शी राम।

22 अक्तूबर, 1942

अन्दर हैं। डाक कई दिनों की इकट्ठी हो गई थी, वह सुनी। रात को सर कॉलिन गारबेट पधारे।

19 अक्तूबर, 1942 को सुबह बाजरे की कटाई होती रही और डाक का काम चलता रहा। शाम को पाँच बजे सत्संग हुआ। हुजूरी वाणी का यह शब्द लिया गया, 'सतगुरु का नाम पुकारो। सतगुरु को हियरे धारो॥'

सत्संग में हुजूर ने समझाया कि गुरु के समान और कोई सम्बन्धी इस संसार में नहीं है, न स्त्री, न माँ-बाप, न मनुष्य का अपना शरीर, क्योंकि गुरु मरते समय साथ जाते हैं, वे ही लोक और परलोक दोनों के साथी हैं। सिमरन चन्द्र-मण्डल से परे नहीं ले जाता, उससे आगे गुरु-स्वरूप का ध्यान आत्मा को खींचकर ले जाता है। सत्संग के बाद हुजूर सर कॉलिन को समय देते रहे।

20 अक्तूबर, 1942 को हुजूर और सर कॉलिन राय साहिब के कमरे में बातचीत करते रहे। मैं डाक का कार्य करता रहा। लाला त्रिलोक चन्द जी का डलहाँजी से तार आया कि सीमेण्ट दो रुपये प्रति मन से कम नहीं मिलता और वह भी बहुत थोड़ा मिल सकेगा। उनको एक हजार रुपया भेजा गया और तार दिया गया कि ख़रीद लें। इसके बाद हुजूर डाक देखते रहे। पेट्रोल के लाइसेंस की, जोकि खो गया था और लाउड-स्पीकर की दरख्वास्त ला. नियामत राय को रिजस्ट्री करके भेजी गई। सरदार जगत सिंह कल रात वापस चले गए। आज यह शब्द पढ़ा गया, 'गुरु गुरु मैं हिरदे धरती'।

इसके बाद जनरल व रानी लक्ष्मीबाई मोटर कार में साढ़े छ: बजे शाम को जालन्धर व देहली के रास्ते वापस चले गए। श्रीमती मानक भिड़े व सर कॉलिन गारबेट रह गए। सुना है कि जाने से पहले ये लोग हुजूर से साँगली तशरीफ़ ले जाने का वचन ले गए हैं। शायद 10 नवम्बर के बाद जाएंगे। आज सुबह की डाक हुजूर ने अपने कमरे के ऊपर बरामदे में ही मँगवा ली। डाक के बाद हुजूर अलग-अलग लोगों को वक्त देते रहे।

शाम को सत्संग में फ़रमाया, कि मेरे मकान के बाहर बोर्ड लगा दो कि 12 बजे से 4 बजे तक कोई मुझसे मिलने की कोशिश न करे, क्योंकि यह समय मेरे आराम का होता है। सत्संग में पढ़ा गया, 'धुन सुन कर मन समझाई'।' सरदार

साहिब भगत सिंह जी जालन्धर से सत्संग के समय पधारे। हुजूर ने सरदार गुलाव सिंह से कहा कि व्याख्या करो। सरदार साहिब ने बड़ा दार्शनिक उपदेश दिया कि मन और आत्मा की बैठक आँखों के पीछे है, एक और तीसरी शक्ति मन और आत्मा की बैठक के पास आ ठहरी है अर्थात् शब्द, जोकि अनामी से लेकर सत्तलोक इत्यादि देशों में से गुज़र कर तीसरे तिल पर आकर सुनाई देता है। बाक़ी सब साधन- हठ-योग, ज्ञान-योग, ध्यान-योग मरने के समय बेकार हो जाते हैं, क्योंकि यह सब शरीर व बुद्धि के द्वारा मनोकाश में किये जाते हैं और मरने के समय मनोकाश जो हृदय से लेकर तीसरे तिल तक है, सिमट जाता है, उस समय ये साधन कैसे काम दें। उस समय शब्द जोकि मनोकाश से परे है, वहीं जारी रहता है तथा मन और आत्मा को खींचकर ऊपर ले जाता है। चौदह शक्तियाँ या देवता शरीर में हैं। पाँच कर्म-इन्द्रियाँ और पाँच ज्ञान-इन्द्रियाँ- आँख, कान, नाक, जबान (स्वाद लेने-वाली) और त्वचा अर्थात् चमड़ी जो स्पर्श को महसूस करती है। त्वचा से गर्मी, सर्दी और भार महसूस होता है। मन के चार कार्य अर्थात् चार अन्त: करण- मन, बुद्धि, चित्त और अहंकार हैं। बुद्धि से निर्णय लिया जाता है। अहंकार में 'मैं-मेरी' पर जोर देने की शक्ति है। मन स्वाद लेता है और चित्त देखता है। बुद्धि सबसे ऊपर अष्ट-दल कमल के पास ही है। भजन के समय ये चौदह शक्तियाँ समेटनी होती हैं।

रात के 9 बजे सरदार साहिब जालन्धर वापस लौट गये। लाला पृथ्वी नाथ परसों से आये हुए हैं और मेरे पास बिराजमान हैं।

22 अक्तूबर, 1942 – कल रात 11 बजे श्रीमती वान ऐलन पधारीं। आज उनको 'नाम' दिया गया। शाम के सत्संग में यह शब्द लिया गया 'धाम अपने चलो भाई'। सरदार गुलाब सिंह ने व्याख्यान दिया। सरदार साहिब भगत सिंह भी उपस्थित थे। हुजूर ने समझाया कि शरण से मतलब यह है कि अच्छा आचरण बनाकर मन तथा सुरत को समेटकर अष्ट-दल कमल में, जहाँ कि गुरु का नूरी स्वरूप है, पहुँचा देना और गुरु से बातें करना। सत्संग के बाद हुजूर शाम को राय साहिब के चबृतरे पर आ बिराजे और साँगली के दौरे के बारे में परामर्श देते रहे।

23 अक्तूबर, 1942- आज सुबह 9-10 बजे के बीच भी हुज़ूर साँगली के दौरे के विषय में विचार-विमर्श करते रहे। दोपहर के 12 बजे सर कॉलिन व श्रीमती वान ऐलन हुजूर से विदा लेने ऊपर गये। मुझे भी अनुवादक के रूप में बुलाया गया। हुजूर ने समझाया कि जो कुछ अन्तर में देखों किसी से न कहना और चाहे युद्ध का नतीजा या देश की दशा कैसी भी हो, मेरा और तुम्हारा सम्बन्ध नहीं टूट सकता। दोनों को सुबह प्रसाद दिया गया और दोनों आज दोपहर को चले जायेंगे। शाम को सत्संग में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से मारू राग का शब्द पढ़ा गया, 'सच्चा आप सवारणहारा'। सरदार गुलाब सिंह ने व्याख्या की क्योंकि हुजूर श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से चुने गए शब्दों का सारा दिन अध्ययन करते-करते थक गये थे। हुजूर ने फ़रमाया कि नाम मिलना ऊँचे भागों का नतीजा है। सत्संग के बाद हुजूर एक रोगी का हाल-चाल पूछने मोटर में डॉ. चन्द्रबन्सी साहिब के साथ जल्लूवाल गये।

24 अक्तूबर, 1942 को सुबह हुजूर राय साहिब के कमरे में पधारे। कुछ समय तक बातचीत करके नई पुस्तक का मसौदा पढ़ने चले गए। शाम को सत्संग में कबीर साहिब की वाणी में से 'सिमरन का अंग' लिया गया। पाठ शुरू होने से पहले हुजूर ने फ़रमाया कि लोगों को सिमरन के लाभ का पता नहीं। यदि सिमरन पूरा हो जाये तो चलती गाड़ी को रुकने को कहो तो वह भी खड़ी हो जायेगी। एक निहंग सिक्ख का सिमरन इतना तेज था कि जो कोई बुख़ार का रोगी उनके पास आता, वह पाठ शुरू कर देता। पाठ ख़त्म होते–होते बुख़ार रफ़ूचक्कर! सिमरन से चन्द्र—लोक तक जा सकते है। वहाँ जाकर यह संसार भूल जाता है। जितनी देर उधर रहते हैं उतनी देर सांसारिक सुख-दु:ख का अनुभव नहीं होता। लोग सिमरन पर इतना जोर नहीं देते। पहले ही शब्द सुनना शुरू कर देते हैं। पर यह शब्द खींच नहीं सकता। सिमरन में इतना रस है कि ऐसा रस संसार की किसी वस्तु में नहीं है। फिर आत्मा व मन को शब्द से मिलने वाले रस का क्या ठिकाना होगा। लेकिन सिमरन ऐसा हो कि मन बाहर न जाये। अगर मन बाहर जाता है तो उसे दूसरी जंजीर ध्यान की दे दो। सिमरन ऐसा हो कि 'तन थिर, मन थिर, बचन थिर, सुरत निरत थिर होय।'

यह नोट करना भूल गया कि बेचारा दिलीपा जो हमारे मकान में रहा करता था, कल दोपहर के 12 बजे के क़रीब, चढ़ाई कर गया। संसार में आकर बीमारी और ग़रीबी के दिन बिताकर चला गया, परन्तु नाम साथ ले गया। 27 अक्तूबर, 1942 आज शाम को महात्मा चरणदास जी की वाणी में से 'शील का अंग' पढ़ा गया।

रूहानी डायरी भाग 1

कल से चार रात का 'ब्लैक आउट' है इसलिये आज्ञा हुई कि शाम की जगह सत्संग सुबह किया जाये जिससे कि सूरज छिपने के पहले संगत रोटी खा सके।

28 अक्तूबर, 1942 को सुबह 9 बजे सत्संग हुआ। महात्मा कबीर की वाणी में से 'शील का अंग' लिया गया। हुजूर ने 'नामधारियों' की रहनी की बड़ी तारीफ़ की। फ़रमाया कि सन्त जीवों पर बड़े-बड़े अहसान करते हैं, मगर बताते नहीं और न ही आम तौर पर जीव को उनके उपकार का ज्ञान होता है। 'शील के अंग' के बाद श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से पाँचवीं पातशाही का शब्द पढ़ा गया, 'दरसन भेटत पाप सभ नासै'। '

29 अक्तूबर, 1942 को 10 बजे ठिट्ठया गाँव में भोग था। हुजूर वहाँ कार द्वारा गये। साथ बख़्शी चानन शाह व सरदार जोध सिंह गये। मैं डाक का काम करता रहा।

डाक का काम करनेवाले को पता लगता है कि इस जमाने में लोग किस प्रकार दु:खी हैं। नब्बे प्रतिशत से भी ज्यादा पत्र ऐसे होते हैं, जिनमें लिखने वाला बीमारी, ग़रीबी या सम्बन्धियों व प्रिय-जनों की मृत्यु की शिकायत करता है। आमतौर पर पत्रों का उत्तर यही होता है कि सब दु:ख अपने पिछले जन्म के पापों के परिणाम हैं। मालिक के चरणों में प्रार्थना करो और नाम का सिमरन करो, मालिक दया करेंगे। कभी-कभी यह भी लिख दिया जाता है कि अमुक दवा का प्रयोग करो, आराम हो जायेगा। इससे अनजान लोग यही समझेंगे कि जब सब ऐसे पत्रों का उत्तर एक ही प्रकार का होता है तो पत्र डालने वाले को क्या सन्तोष मिलता होगा और उसको पत्र लिखने का क्या लाभ होता होगा। परन्तु हुजूर स्वामी जी महाराज ने अपनी पोथी सार बचन में फ़रमाया है:

सहो अब पड़े जैसी आय। करो फ़र्याद गुरु से जाय॥ गुनह तुम किये दिन और रात। गुरू की कुछ न मानी बात॥''

प्रार्थना करने में सत्संगी का लाभ है चाहे देखने में ऐसे पत्रों का उत्तर लगभग एक ही प्रकार का होता है, परन्तु लिखने वाले को तो उसी समय सहायता मिलती है, जब वह अपनी प्रार्थना को विनयपूर्वक लिखता है। एक व्यक्ति ने लिखा था कि मुझे सख़्त दर्द है और बड़ी बेचैनी है। उसको जवाब तो साफ़-साफ़ ऐसे ही शब्दों में दिया गया था। परन्तु आज उसका उत्तर आया है कि जिस दिन से उसने पत्र भेजा है उस दिन से कुछ आराम है। यह एक नहीं बल्कि इस प्रकार के बीसियों पत्र धन्यवाद के आते रहते हैं, जिससे मनुष्य हैरान हो जाता है। कई पत्रों में यह लिखा आता है कि हुजूर ने फ़लाँ-फ़लाँ संकट के समय आकर सहायता की। ये पत्र हिन्दुस्तान से ही नहीं बल्कि हिन्दुस्तान के बाहर अमेरिका, इंग्लैण्ड के सत्संगियों व हिन्दुस्तानी सैनिकों व मोटर ड्राइवरों से, जो कि आजकल द्वितीय विश्व युद्ध के कारण भारत से बाहर गये हुए हैं, प्राय: आते रहते हैं। कोई मिश्र से, कोई मलाया से, कोई बर्मा से, कोई गहरे समुद्र से, कोई अमेरिका के प्रान्त कैलिफ़ोर्निया से ऐसी बात लिखता है, जिससे हुजूर की अत्यन्त दया तथा सहायता पर आश्चर्य होता है जोकि वे अपने जीवों पर कर रहे हैं। थियोसाफ़ी की पुस्तक 'इनविज़िबल हेल्परज़' पढ़ी, जोकि शायद स्वर्गीय श्री लेडबीटर की लिखी हुई है । परन्तु ये पत्र जो यहाँ आते रहते हैं वे इस पुस्तक के उदाहरणों से कहीं बढ़कर हैं, जिससे स्वामी जी महाराज के ये वचन कि सन्तों के सत्संगी को प्रतिदिन सहायता मिलती है, पूरी तरह ठीक सिद्ध हो जाते हैं। चाहे उसका मतलब अन्तर के दृश्यों से लिया जाये या बाहर की सहायता से, दोनों प्रकार से ठीक है। सन्त अन्दर व बाहर दोनों तरफ़ सहायक हैं। अमेरिका से जो पत्र आते हैं, उनमें प्राय: रूहानी अभ्यास की उन्नित तथा नजारों का ज़िक्र होता है। आज एक अमेरिकन सत्संगी का पत्र आया कि वह आत्मिक शक्ति से लोगों की बीमारियों का इलाज करता है। उत्तर दिया गया कि यदि आत्मिक शक्ति को बाहर सांसारिक कार्यों में ख़र्च करोगे तो आगे आत्मिक उन्नति बन्द हो जायेगी। आज सीरते-उल-नबी जिल्द दोम का पन्ना 114 पढ़ रहा था। एक आयत उसमें कुरान मजीद से लिखी हुई थी, जिसका अर्थ यह लिया गया 'ख़ुदा को बलिदान का मांस और ख़ून नहीं पहुँचता बल्कि तुम्हारी परहेजगारी* उस तक पहुँचती है।' जानवर का बलिदान सहज है, परहेजगारी* कठिन।

30 अक्तूबर, 1942 को सुबह सत्संग में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से चौथी पातशाही का शब्द राग तिलंग महला 4 पढ़ा गया 'हर कीआ कथा कहाणीओं, गुर मीत सुणाईओं'। ' हुजूर ने फ़रमाया कि वास्तव में धनी वह है जिसके पास नाम की कमाई का धन है। गुरु रामदास जी को गुरु अमर दास जी ने एक कण्ठा दिया था। जब गुरु रामदास जी बाहर घूम रहे थे तो कोई व्यक्ति गुरु अमरदास जी की निन्दा करने लगा। गुरु साहिब ने अपना कण्ठा उतार कर उसको दे दिया कि यह ले लो, निन्दा मत करो। गुरु रामदास जी को अपने गुरु से ऐसा प्रेम था। कमाई करोगे तो आसानी से और शीघ्र ही सतलोक जाओगे।

सत्संग के बाद हुजूर वहीं बैठे-बैठे बच्चों का नाम रखते रहे। फिर बाजरे को इकट्ठा करने की सेवा में खड़े रहे। फिर डाक देखी।

31 अक्तूबर, 1942 को सत्संग में हुजूर स्वामी जी महाराज की वाणी से यह शब्द लिया गया, 'सुरत तू दुखी रहे हम जानी'। उस दिन के दूसरे सत्संग में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से यह शब्द पढ़ा गया, 'दुनीआ न सालाहे जो मर वंजसी'। एक सत्संगी ने सेवा के समय एक 8-9 साल का लड़का पेश किया कि इसको किसी ने तीन-चार सेर का पत्थर सिर पर मारा लेकिन पत्थर से न चोट आई, न जख़्म हुआ और न सूजन हुई। महाराज जी की दया!

1 नवम्बर, 1942 को श्री गुरु ग्रन्थ साहिब से पहली पातशाही का यह शब्द पढ़ा गया, 'जहं देखा तहं दीन दयाला'। उसके बाद हुजूरी वाणी से 'धन्य धन्य धन धन्य पियारे। क्या कहुं महिमा शब्द की " पढ़ा गया। हुजूर ने फ़रमाया कि पाँच शब्द का रास्ता अनादि है। जब मनुष्य को बनाया तो साथ ही यह रास्ता उसके अन्दर जब प्रभु ने रख दिया। यह रास्ता कुदरती है, बनावटी नहीं। यही रास्ता मुसलमानों के उच्चकोटि के फ़क़ीरों का रहा है। यही कबीर साहिब, तुलसी साहिब, दादू साहिब, पलटू साहिब, मौलाना रूम साहिब, ख़्वाजा हाफ़िज इत्यादि का है।

2 नवम्बर, 1942 सोमवार को नामदान दिया गया। शाम के समय स्त्री-पुरुषों को नाम दिया गया। उसके बाद लैम्प के प्रकाश में डाक सुनाई गई। मैं और डॉ. चन्द्रबन्सी साहिब बम्बई व साँगली की यात्रा के लिये खाने-पीने के प्रबन्ध के बारे में बातचीत करते रहे। आज सुबह राजा साहिब साँगली, जनरल

^{*} मांस आदि खाने से परहेज करना, इन्द्रियों के भोगों से परहेज करना।

राजवाड़े और पूना तथा बम्बई की संगत को प्रोग्राम के बारे में तार भेज दिये गए। अमेरिका की डाक हवाई डाक से भेज दी गई।

3 नवम्बर, 1942 को सुबह 9 बजे हुजूर ने संगत को प्रसाद दिया तािक लोग प्रसाद लेकर अपने-अपने घर वापस जा सकें। इसके बाद डाक सुनी, शाम को सत्संग बाबू गुलाब सिंह जी ने किया क्योंकि हुजूर बहुत थके हुए थे। श्रद्धा तथा भिक्त का विषय गद्य में था जिसमें हिन्दी के बहुत शब्द थे। श्रद्धा और भिक्त वह नींव है जिस पर परमार्थ की इमारत खड़ी की जाती है। अगर नींव कमजोर है तो इमारत कैसे मज़बूत होगी ?

कल 7.30 बजे हुजूर डलहौज़ी डंगे को देखने के लिये नहर के रास्ते से जा रहे हैं। भोजन रास्ते में ही किया जायेगा।

महाराज जी का डलहौज़ी जाना व वहाँ ठहरना

भाई शादी और हुजूर महाराज जी कार में नहर की पटरी के रास्ते डलहौजी को सुबह 7.30 बजे चल दिये। रास्ते में नहर के पुल के पास घुमान की संगत दर्शनों के लिये आई हुई थी। वहाँ पाँच मिनट ठहर कर आगे चले। रास्ते में गगड़भाना और कादियाँ दिखाई दिये। फिर सभराओं ब्राँच आई। उसके बाद पटरी से उतर कर मालिकपुर के पास जरनैली सड़क पर चले गए। पठानकोट में लाला मलावा मल बन्सी लाल को सीमेंट के लिये पूछा गया परन्तु सीमेंट नहीं था। चक्की की चौकी पर 10.30 बज गये, वहाँ मैं और सरूप सिंह हुजूर से इजाजत लेकर चक्की नदी देखने गये। दुकानों से दही के लिये पूछा। लेकिन दही कहाँ ? चक्की से 11.30 बजे के लगभग दोनों वापस आये। भाई शादी का विचार था कि भोजन करने में देर न लग जाये। क्योंकि सर्विस 1 बजे चलती है। भाई शादी बरफ़ी लाया, सरूप सिंह पानी लाया, और हुजूर को मोटर में ही खाना दिया गया। हम तीनों ने बाहर सड़क पर बैठकर खाना खाया। सफ़र में खाना बहुत स्वादिष्ट लगा। यों भी बीबियाँ सफ़र के लिये खाना बड़ी सावधानी से बनाती हैं। सेब की सब्ज़ी, शलगम की तरकारी, गाढ़ी उड़द की दाल और साथ में पराँठे। खाना खाकर थोड़ा आराम किया। इतने में एक अंग्रेज साहिब और मेम की कार आकर हमारी कार से आगे बैरियर के पास डट गई। ड्राइवर अमृतसर का बड़ा सज्जन पुरुष सिक्ख था, उसने हुजूर को पहचान लिया। बड़ी श्रद्धा से

प्रणाम किया और कहने लगा कि यह अंग्रेज, 'मैसर्स सिपनर्ज़' का मैनेजर है और बम्बई से सैर के लिये इधर आया है। पहले मनाली की सैर की, वहाँ से अब डलहाँजी देखने जा रहा है। इसे बावा प्रदुमन सिंह ने ड्राइवर समेत कार दी हुई है। फिर ड्राइवर ने बताया कि मनाली के रास्ते में मेम साहिबा कार चलाना चाहती थी, परन्तु मैंने यह ख़तरा मोल लेना पसन्द नहीं किया और गाड़ी छोड़कर अलग खड़ा हो गया तो मजबूर होकर दोनों ने मान लिया कि ड्राइवर ही गाड़ी चलाये। जब मैदान आ गया तो मेम साहिब का ड्राइवरी का चाव पूरा कर दिया गया। बैरियर पर कार हमसे आगे थी, परन्तु हम आगे निकल गये। रास्ते में बकलोह के नीचे गोरखा सत्संगी इकट्ठे हो गये थे। वहाँ हुजूर को पाँच मिनट उतरकर बातचीत करनी पड़ी। तब अंग्रेज़ की कार आगे थी। दुनेरे पर हम चारों ने मोड पिया। हुजूर ने अपने पास से पैसे दिए। डलहौजी चार बजे पहुँच गये। डंगे को देखा गया। डंगा, सचमुच लाला त्रिलोक चन्द इंजीनियर ने लाला दिवान चन्द ठेकेदार की सलाह से बहुत मजबूत बनाया था। ठोस चट्टान मालूम होती थी। ऊपर से चौड़ा है, नीचे नींव 6 फुट चौड़ी दी गई है।

डलहौज़ी में आजकल मौसम बड़ा सुहावना है, दिन को धूप अच्छी निकलती है। आसमान पर बादलों का नाम तक नहीं। मौसम ठण्डा और बड़ा सुहावना है। सुबह से शाम तक बहुत ठण्ड रहती है। जब हम पहुँचे तो हवा सामने के बर्फ़ीले पहाड़ों से इधर आ रही थी और ठण्ड मालूम होती थी। मैंने गर्म कपड़े पहन लिये। हुजूर ने भी ओवरकोट पहन लिया। परन्तु कहीं बाहर सैर को नहीं गये। मैं और लाला त्रिलोक चन्द रात को 8 बजे खाना खाकर जरा घूमने गए। बाजार और सड़कों पर घोर अँधेरा था। सिर्फ़ कमेटी का एक लैम्प गराज-घर के चौक पर जल रहा था। हम टार्च लेकर चले थे नहीं तो जरूर किसी गड्ढे में गिरते। शायद सारे वर्ष में सबसे ज्यादा अँधेरी रातें आजकल होती है। किसी संस्कृत के किव ने ऐसे अँधेरे के विषय में क्या उचित कहा है: मानो अँधेरा शरीर से चिमटता चला जा रहा है, ऐसा लगता है कि आकाश से पिसा हुआ सुरमा बरस रहा है और आँखें ऐसी बेकार हो गई हैं जैसे बुरे आदमी पर उपकार बेकार हो जाता है:

लिम्पतीव तमोऽङ्गन वर्षतीवाञ्जन अंजन नभः असत्पुरुषसेवेव दृष्टिर्विष्फलता गता। अँधेरे की गहराई को इससे अधिक ठीक शब्दों में नहीं लिखा जा सकता।

अंधेरे को गहराई का इससे आवंध जन राज्य हालना पड़ा। रात को अच्छी सर्दी थी। रज़ाई के ऊपर कम्बल डालना पड़ा।

5 नवम्बर, 1942 को सुबह 10 बजे के क़रीब हुजूर धूप में आये तो बड़ा आराम महसूस हुआ और फ़रमाया कि यहाँ बड़ा एकान्त और शान्ति है। फर मैंने डाक के दो पत्रों का जवाब सुनाया और इजाजत लेकर सैर को चला फिर मैंने डाक के दो पत्रों का जवाब सुनाया और इजाजत लेकर सैर को चला गया। कचहरी के पास तिब्बत का कोई व्यापारी बहुत मीठा और सस्ता अखरोट लाया था। कई बोरे थे। जब दो अखरोट टकराये तो टूट गये। लोगों ने हाथों-हाथ ख़रीद लिये। मैं और सरूप सिंह ड्राइवर दोनों वहाँ पहुँचे। व्यापारी के पास जीरा भी बढ़िया था। उससे कहा कि हमारी कोठी पर आकर दोनों चीजें दे जाये। परन्तु लोगों ने कहा कि अखरोट तो सब यहीं बिक जायेंगे। बस हमने भी 100 ले लिए और वहीं खाना शुरू कर दिया। वापस आये तो कोठी पर राय बहादुर दीवान सोहन लाल साहिब वकील चम्बा, हुजूर से मिलने आये हुए थे। उनसे हुजूर बातें करते रहे, मैं खाना खाने चला गया।

एक बात भूल गई। जब हम जा रहे थे तो श्री त्रिलोक चन्द एक पठान से बरमी भाषा में बातचीत करने लगे। बातचीत के बीच में 'बूमान' का शब्द मेरे कान में पड़ा। मैंने उनसे उसका अर्थ पृष्ठा तो कहने लगा कि बू कहते हैं साहिबा को और मान का अर्थ है स्त्री। बूमान से मतलब मालिक, मेम साहिब है। बीबी को भी बरमी में मान कहते है। अच्छी भाषा है। रात को मुझे ठण्ड से बुखार हो गया। सुबह कुछ हलका हो गया।

6 नवम्बर, 1942- हुज़ूर महाराज जी की डेरे में वापसी

डलहौजी से सुबह 8 बजे चल कर रास्ते में भोजन किया। मैं मोटरकार में लेटा रहा। बीबी ने सबको खाना खिलाया। फिर हुजूर ने गुरदासपुर में ही माल अफ़सर सरदार गुरबख़्श सिंह के यहाँ श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का भोग डाला और कुछ शब्द कहे। रास्ते में बटाला में लोहारों के साथ मशीनों की बातचीत की और अमृतसर शाम के चार बजे पहुँच गये। वहाँ हुजूर ने सत्संग किया। में और बालक राम रेलवे स्टेशन पर किसी से मिलने चले गए। हुजूर वहाँ से मुझे लेकर सीधा डेरे की ओर चल दिये।

7 नवम्बर से 9 नवम्बर, 1942 तक हुजूर का डेरे में ठहरना

मुझे बुख़ार अब भी है, 101 डिग्री रहता है। डाक बहुत इकट्ठी हो गई थी। अमेरिका के पाँच पत्र टाइप कराकर भेजे गए। एक अमेरिकन सत्संगी ने लिखा था कि मैं और मेरी पत्नी आत्मिक शक्ति से इलाज करने का काम करते हैं और मुफ्त करते हैं। हम यह काम बन्द नहीं करना चाहते। उनको जवाब दिया गया कि या तो परमार्थी उन्नति बन्द हो जायेगी या यह काम बन्द करना होगा। दूसरे यह एतराज था कि तुम लोग गुरु को खुदा समझते हो, हम इसके लिये तैयार नहीं हैं। उत्तर दिया कि गुरु को बड़ा भाई या उस्ताद समझकर उसके कहने के अनुसार अभ्यास करके अन्दर जाओ फिर उनका उन लोकों में सम्मान व पहुँच देखो।

अध्याय 2 साँगली, बम्बई इत्यादि के दौरे (देहली के रास्ते) 10 नवम्बर , 1942

देहली, बम्बई व पूना के रास्ते साँगली की तरफ़ जाना

आज सुबह पाँच बजे मुझे तेज बुख़ार है। बैठना कठिन है, परन्तु हुजूर साथ ले जाना चाहते हैं। कार में रेलवे स्टेशन तक पहुँचा। वहाँ से सैकिण्ड क्लास में बैठ गये। बुख़ार तेज था। डिब्बे में भी भीड़-भाड़ थी। डॉक्टर साहिब व दीवान साहिब को फ़िक्र थी कि सफ़र में बुख़ार ज्यादा न हो जाये, क्योंकि सफ़र बहुत लम्बा था। मैं मुश्किल में था यानी न तो सफ़र का शौक्र था, न ठहरने का। हुजूर की मौज पर अपने आपको छोड़ दिया था। उन्होंने कहा था कि हुजूर से विनती करो। मैंने इनकार कर दिया तो उन्होंने स्वयं ही विनती की होगी जिसके जवाब में हुजूर ने स्वर्गीय लाला मंगत राय साहिब की याद ताजा कराई कि एक बार उनको डेरे में निमोनिया हो गया, हमने कहा कि इस हालत में सिरसा न जाओ। उन्होंने बीमारी की परवाह न की और चले गए। रास्ते में शाम को निमोनिया ग्रायब। जिनको पूर्ण विश्वास है उनकी सँभाल मालिक ख़ुद करता है।

रास्ते में सरदार भगत सिंह व इम्पीरियल बैंक के मैनेजर आहलूवालिया साहिब, संगत के साथ दर्शनों के लिये जालन्धर रेलवे स्टेशन पर आये। सरदार साहिब जालन्धर छावनी तक हमारे साथ चले। हिटलर का भाषण हो चुका था। उसको पढ़ने का शौक़ प्रगट किया। उर्दू का अख़बार ख़रीदा और उन्होंने उस भाषण का सारांश जोकि अख़बार में लिखा था, पढ़कर सुनाया। मेरी और उनकी यह राय थी कि अब हिटलर में वह जोश और शेख़ी नहीं रही जो पहले भाषणों में पाई जाती थी। उसके बन्द कुछ ढीले पड़े हुए हैं। रूस के स्टालनग्राड पर

डटे रहने और अंग्रेजों के उत्तरी अफ्रीका में आगे बढ़ जाने के कारण उसकी शेख़ी किरकरी हो गई है।

फ़िल्लौर व लुधियाना में संगत दर्शनों को आई हुई थी। लुधियाना से आगे मैं हुजूर के डिब्बे में नहीं गया और सारा दिन सोया रहा। शाम को बुख़ार कम हो गया। रास्ते में डॉक्टर साहिब ने मुझे दूध व कुनीन पिलाई, अंगूर खाये, संतरों का रस पिया। दो पढ़े-लिखे सेठ बनिये और एक मुसलमान, पंजाबी अफ़सर भी फ़ौजी लोगों के सिवाय हमारे डिब्बे में थे। मुसलमान साहिब व एक बनिया सेठ, अच्छे भ्रमण करनेवाले साबित हुए। सेठ साहिब ने विलाडी वास्टक से मास्को तक अपनी लम्बी रेलवे यात्रा की घटनाएँ बड़े अनोखे ढंग से सुनाई कि तीन-तीन सौ मील तक कोई स्टेशन नहीं आता। जब आता है तो केवल एक ही क्लर्क स्टेशन पर होता है। वही सिगनेलर, पार्सल क्लर्क तथा बुकिंग क्लर्क का सब काम करता है। दो-दो दिन तक खाने को कुछ नहीं मिलता। पहले से ही खाने का प्रबन्ध रखना पड़ता है। लेनिनग्राड में उनका बाथरूम साफ़ करने वाला मोटर में सवार होकर रबड़ के बड़े-बड़े लम्बे दस्ताने पहनकर उनकी टट्टी साफ़ करने आया करता था। एक बार उसने उनको चाय पर बुलाया। सेठानी साहिबा चकराई कि हिन्दू धर्म भ्रष्ट हो जायेगा परन्तु लाचार होकर चली गई। वहाँ जब ठण्ड महसूस हुई तो उनकी श्रीमती जी ने अपना कोट अन्दर से निकालकर सेठानी साहिबा को पहना दिया।

फिर चीन की यात्रा के हाल सुनाये कि वहाँ के लोग बड़े डाकू हैं, वे लोगों को जबरदस्ती उठा कर ले जाते हैं और बाद में रुपया-पैसा माँगते हैं। शंघाई, केंटन इत्यादि शहरों में शाम को 8 बजे के बाद कोई भी पुरुष बाजारों में धूमने की हिम्मत नहीं रखता। सेठ साहिब जब घूमने जाते तो एक जंजीर अपनी कलाई में बाँधकर अपने लड़के व सेठानी साहिबा की कलाइयों में भी वही जंजीर बाँध देते, जिससे कि अगर कोई उनमें से किसी को उठाने लगे तो उसमें कुछ देरी लग जाये जिस के कारण सहायता मिल सके। जापान के लोगों की प्रशंसा करते हुए कहा कि वे लोग सत्यवक्ता, ईमानदार व नम्न हैं। पुलिस वाले को अधिकार है कि यातायात की दुर्घटना के सम्बन्ध में मौके पर फ़ैसला करके 200 रुपये तक हर्जाना दिला दे। हर्जाना उसी वक़्त देना पड़ता है। उदाहरणार्थ, एक ग़रीब दूध की बोतलें

देना। यह हाल है उन देशों का। बबीं तुफ़ावत रा अज़ कुजा ता ब कुजा। अर्थात् , देखिये! रहन-सहन अथवा सभ्यता में कितना अन्तर है।

मुसलमान साहिब ने फ़रमाया कि उनकी भी यही राय है। अंग्रेज जाति बहुत चतुर और चालबाज है परन्तु व्यापार में ईमानदार है। मुसलमान साहिब ने कहा कि धर्म झगड़े की जड़ है। हुज़ूर ने उत्तर दिया कि हरएक के रीति-रिवाज (कर्म-काण्ड) अलग-अलग हैं और रीति-रिवाज केवल रहने का ढंग है। रूहानियत सब धर्मों की एक ही है।

देहली में बहुत-सी संगत आई हुई थी। सरदार जगजीत सिंह साहिब की मोटर आई हुई थी। फिर भी दरियागंज पहुँचते-पहुँचते 12 बज गये। वहाँ जाकर खाना खाने के बाद एक बजे रात को सब लोग सो गये। सुबह हुजूर नीचे सत्संग-हाल में संगत को दर्शन देने के लिये बैठे रहे। फ्रिण्टियर मेल गाड़ी आधा घण्टा लेट थी। मेरी ड्यूटी यह थी कि सामान ताँगे में लदवा कर, सबके टिकट लेकर रेल में रखवा दूँ। लाला अमर नाथ भार्गव मेरे साथ थे। हमारा रिज़र्व डिब्बा पहले से प्लेटफ़ार्म नं. 6 के सामने खड़ा था। उसमें सामान रखवा दिया तो याद आया कि मेरा हरा बैग दरियागंज रह गया था। उसमें दो हज़ार के लगभग रक़म थी और रानी साहिबा के सामान का टाँगा नहीं पहुँचा था। इसलिये ताँगा लेकर दौड़ता हुआ दरियागंज गया तो हुज़ूर मेरे वहाँ पहुँचने से पहले ही मोटर से रेलवे स्टेशन को चल दिये थे। अपने कमरे में गया। बैग वहाँ नहीं मिला, निराश होकर नीचे आया तो इधर-उधर नजर मारी। कहीं बैग नज़र नहीं आया। वहाँ नीचे दो-चार आदमी थे। एक ने मुझे पहचाना और बैग निकालकर मुझे सौंप दिया। कहने लगा कल यह बैग मैंने तुम्हारे हाथ में देखा था, जब तुम गाड़ी से उतर रहे थे। अब मैंने इस बैग को यहाँ नीचे पड़ा देखा। सब लोग चले गए हैं, मैंने सावधानी से उठा लिया। आपको हैरान देखा तो समझ गया कि आप बैग की खोज कर रहे हैं, यह लो। मैंने उसका बहुत धन्यवाद किया और हुजूर की विशेष गुप्त दया का भी, जोकि हर समय और हर हाल में होती रहती है, मन ही मन में धन्यवाद करता हुआ स्टेशन की ओर भागा। गाड़ी में बड़ा वक़्त था। ८ बजे गाड़ी आई। हमारा डिब्बा रिज़र्व (सुरक्षित) था। डिब्बे में चार सीटें हैं। पीछे भी बहुत बढ़िया गद्दे बैठकर सहारा लेने के लिये लगे हुए हैं। देहली से हमारे साथ श्री हेमचन्द्र भार्गव व श्री सचदेव और दो-तीन लड़के नई देहली तक हुजूर के दर्शन करते हुए गये। वहाँ से चल कर गाड़ी मथुरा में ठहरी। वहाँ श्री अमर नाथ के मामाजी श्री द्वारिका नाथ मथुरा के वकील व उनके भाई साहिबान कुछ दूसरे आदिमयों के साथ हुजूर के दर्शनों के लिये आए। बीना से पहाड़ी इलाका शुरू हो जाता है। वर्षा अधिक होने के कारण बड़ी हरी-भरी घाटियाँ पहाड़ों से घिरी हुई एक-दूसरे के बाद नाचती हुई हमारे सामने से जल्दी-जल्दी भागती मालूम होती थीं। शामगढ़ के स्टेशन पर गाड़ी काफ़ी समय के लिये ठहरी। सुनने में आया कि यहाँ एक वैष्णव होटल है, जिसमें यात्री लोग भोजन करते हैं। वैसे तो डाइनिंग कार में भी बहुत-से लोग भोजन करने 10 नवम्बर 1942

गए। नागदा में जनरल साहिब ने खाना भेजा। पूरियाँ व सब्ज़ी हर प्रकार की, गए। नागदा में जनरल साहिब ने खाना भेजा। पूरियाँ व सब्ज़ी हर प्रकार की, जिसमें हलवाई ने उस इलाके की रीति के अनुसार बहुत नमक-मिर्च डाल रखा था। सौभाग्य से दूध की काफ़ी मात्रा साथ थी। दूध और डबल रोटी व मक्खन जोकि श्री भार्गव अपने साथ लाये थे, आड़े समय पर ख़ूब काम आये। रतलाम में गाड़ी कुछ देर ठहरी। यहाँ से इन्दौर तीस मील है। रतलाम में हम सब लोग खाना खाकर सो गये। हुजूर ने आदत के अनुसार अपना ट्रंक सावधानी के लिये जंजीर से सीट के नीचे जकड़कर ताला लगवा लिया और हमने सब खिड़िकयाँ इत्यादि अन्दर से बन्द कर लीं क्योंकि यह सब अन्दर से बन्द हो सकती हैं। निश्चन्त होकर सो गये। किसी ने रास्ते में नहीं जगाया।

सुबह मैं तो 5-6 बजे के लगभग उठकर मुँह-हाथ धोकर फिर सो गया और हम 8-9 बजे तक सोते रहे, जब तक कि धूप न निकल आई। उस समय बम्बई के पास के स्टेशन पर पहुँच चुके थे और बी. बी. एण्ड सी. आई. की लोकल ट्रेनें बड़ी तेजी से चल रही थीं। समुद्र का दृश्य देखा। जगह-जगह पर नमक बनाने के लिये समुद्र के पानी को नालियों से ले जाकर क्यारियाँ बनाई गई हैं, जिनमें पानी सूख कर नमक रह जाता है। बीच-बीच में बहुत-से हरे पेड़ दिखाई पड़ते हैं। सारा दृश्य पानी व हरियाली का है। लम्बे-लम्बे ताड़ के वृक्ष खड़े हैं। परन्तु सब एक ही ओर को झुक रहे हैं। हुजूर के ओर की दोनों खिड़कियाँ खोल दी गईं, जिससे कि हवा और प्रकाश अन्दर आये। हमने भी केवल शीशों के परदे रहने दिए। हुजूर ने फ़रमाया कि वृक्षों का एक ओर को झुकना प्रगट करता है कि हवा का रुख़ एक ही ओर को ज़ोर का रहता है।

हम सब 10 बजे के बाद बम्बई पहुँचे। वहाँ सत्संगियों की बहुत भीड़ थी। बहुत-से तो दक्षिण के मराठे लोग थे। कोई-कोई सिक्ख तथा कहीं-कहीं हिन्दू, पंजाबी बाबू भी दिखाई पड़ते थे। वहाँ कई फ़ोटो लिये और वहाँ से मोटरों में सवार होकर लैमिंगटन रोड से होते हुए सेण्डहर्स्ट रोड से लक्ष्मी बाग़ में आ गये। यह मकान किसी नेक दिल विधवा ने बारात वग़ैरह के ठहरने के लिये बना रखा है। इसका किराया 30 रुपये प्रतिदिन के क़रीब है। उसमें गर्म व ठण्डा पानी नल के द्वारा जब चाहें मिल जाता है। बिजली का करण्ट छोड़ दो, पानी गर्म मिलेगा। जितना गर्म चाहें उतना गर्म कर सकते हैं। हुजूर नीचे के बड़े हाल में सत्संग

फ़रमाते हैं। ऊपर की मंज़िल में एक कमरे में महाराज जी और दूसरे साथ वाले कमरे में मैं और डॉक्टर साहिब रहते हैं। मकान हवादार और खुला है। यह चौपाटी के पास ही ओपेरा हाउस, गली भट्ट वाली में है। अगर बस में आना हो तो ओपेरा हाउस का टिकट ले लो। वहाँ हम तो आराम करते रहे परन्तु हुजूर, राय बहादुर गुलवन्तराय के समधी का कारख़ाना व कोठी देखने चले गए। फिर दोपहर को चार बजे के लगभग हम सब लोग कारों में बैठकर वी.टी. स्टेशन को, चल दिये। वहाँ जनरल साहिब मिल गये और फिर वहाँ से 'डेक्कन क्वीन'* (Deccan Queen) गाड़ी पकड़ी, जिसमें केवल फ़र्स्ट क्लास व सैकिण्ड क्लास के टिकट वाले लोग ही बैठ सकते हैं और यह बड़ी तेज चलने वाली व आरामदेह गाड़ी है। इसे सारे हिन्दुस्तान में सबसे तेज चलने वाली गाड़ी कहा जाता है। तीन घण्टे में पूना 126 मील पहुँचा देती है। बिजली से चलती है। रास्ते में हरे-भरे मैदान, कोठियाँ व समुद्र का बड़ा मनोरंजक दृश्य आता है। इसके बाद पहाड़ व घाटियाँ दिखाई देती हैं। इस प्रकार की गाड़ी पंजाब में नहीं देखी। रास्ता बाहर से नहीं, बल्कि सारी गाड़ी में अन्दर ही अन्दर एक सिरे से दूसरे सिरे तक जा सकते हैं। इसमें एक फ़र्स्ट क्लास, दूसरा सैकिण्ड क्लास, भोजनालय और एक बैठने का कमरा है। हुजूर फ़र्स्ट क्लास में दीवान साहिब के साथ हैं। जनरल साहब व उनकी श्रीमती जी दूसरे फ़र्स्ट क्लास में हैं। मैं व शादी, सैकिण्ड क्लास में जा रहे हैं। जैसे पंजाब में डीज़ल कार के दोनों ओर लम्बी-लम्बी खिड़िकयाँ लगी हुई हैं, वैसे ही इस गाड़ी में एक तरफ़ तो यात्रियों के लिये लम्बी खिड़की-सी है, दूसरी ओर छोटा-सा दरवाजा और उसके परे बरामदा है। सबके लिये अलग-अलग एक-एक शौचालय बना है। अन्दर के रास्ते से सोडे व चाय वाला आवश्यकतानुसार यात्रियों को सोडा व चाय पिलाता है। गद्दे अच्छे, स्थान खुला, मतलब यह है कि हमारे देखते-देखते पूना का स्टेशन आ गया।

कारों में बैठकर जनरल साहिब के मकान पर रात के 9 बजे के क़रीब जा पहुँचे। रास्ते में लैफ़्टिनेण्ट ब्रिज लाल कपूर के मकान पर मैं, शादी व हुज़ूर गये। वहाँ संगत को दर्शन दिये। जनरल साहिब ने नया मकान सवा लाख रुपये की

^{*}डेक्कन क्वीन नामक एक ट्रेन।

13 नवम्बर 1942

36 लागत से बनाया है। उसमें हरी दानेदार टाइलों का फ़र्श कहीं-कहीं बहुत सुन्दर लगता है और दोनो मंजिलों के साथ बने गोलाईदार बाधरे, हुजूर को बहुत पसन्द आये। उनमें कमानीदार लोहा है जिससे बड़ी हवा आती है। दोनों मंजिलों के बाधरों में कुर्सी गद्दे लगे हैं। पूना में मौसम बड़ा सुहावना था। हुजूर के साथ हमें भी ऊपर की मंजिल पर कमरा दिया गया। लोहे के पलंगों पर हरे-हरे मोटे गद्दे लगे हुए हैं। भोजन करने के लिये नीचे रसोई के पास भोजन करने का कमरा है जिसमें मेज कुर्सी नहीं बल्कि एक लकड़ी का पट्टा आगे और एक नीचे रख लेते हैं। एक पर खाने वाला बैठ जाता है, दूसरे पर थाली व कटोरियाँ रखी जाती हैं। पानी के लिये गिलास के स्थान पर पीतल की भारी-भारी कटोरियाँ होती हैं, जिनमें काफ़ी पानी आ जाता है।

दूसरे दिन पूना से दोपहर को चले, रास्ते में लोनन्द के स्टेशन के आगे गाड़ी 270 दर्जे का चक्कर काटती है और दृश्य देखने लायक है। इस प्रदेश में रूई, तम्बाकू और चरी खड़े थे। खाँड के कारख़ाने व रूई के कारख़ाने भी थे। रास्ते में सतारा आता है और कोल्हापुर भी। रात के 7.30 बजे हम सब बुद्ध गाँव के स्टेशन पर उतर गये जोकि मिराज जंक्शन से एक स्टेशन इधर है। वहाँ पर राजा साहिब व सर जोशी साहिब रेलवे स्टेशन पर हुजूर के स्वागत के लिये उपस्थित थे। वहाँ से साँगली का महल डेढ़ मील होगा। हम सब मोटरों में वहाँ तक पहुँचे। सामान पीछे आ गया।

13 नवम्बर से 19 नवम्बर, 1942 तक साँगली में ठहरना

हुजूर को राजा साहब ने अपनी कोठी में ऊपर की मंजिल में एक कमरा दे दिया, जहाँ कि उनका परिवार रहता है। हमें इससे लगभग एक फ़र्लांग पर उसी कोठी के मेहमान-घर में कमरे दिये गए। नि:संदेह महल राजाओं के लायक है और मेहमान-घर भी बहुत अच्छा है। हर तरह के आराम का सामान मौजूद है। नीचे स्नान-घर है जिसमें पानी के नल हैं। उससे परे फ्लश की टट्टी है। नौकर बाल्टियों में गर्म पानी भर कर लाते हैं क्योंकि सुबह के वक़्त यहाँ बड़ी ठण्ड होती है। यह स्थान पूना से कुछ अधिक गर्म और बम्बई से अधिक ठण्डा है। कल दोपहर को बड़ी धूप थी जिसमें चलना कठिन था। शाम को भी ज़्यादा ठण्डक नहीं होती। सुबह को हुज़ूर उस कोठी में सत्संग फ़रमाते हैं। केवल राजा साहिब के सम्बन्धी, नौकर-चाकर इत्यादि व हम लोग जाते हैं। कोई-कोई बड़ा

अफ़सर व शहर का बड़ा धनी आ जाता है। शाम को 7 बजे सत्संग क्लब-घर में होता है जो यहाँ से सवा मील के क़रीब है। अधिकतर हुज़ूरी वाणी का पाठ होता है। 'गुरू गुरू मैं हिरदे धरती" 'सतगुरु का नाम पुकारो" 'मिली नर देह यह तुम को " इत्यादि शब्द लिये गए।

रूहानी डायरी भाग 1

आज सत्संग का दूसरा दिन है और क्लब-घर के सत्संग में बड़ी भीड़ थी। कोई एक हजार के क़रीब स्त्री-पुरुष होंगे। फिर भी पत्ता हिलने तक की आवाज़ नहीं। लोगों ने इतने ध्यान से सत्संग सुना कि सन्नाटा छाया हुआ था। मैंने ऐसी शान्ति अपने सत्संग में नहीं देखी। कारण यह है कि इस सत्संग में कोई भी बच्चा नहीं आने दिया गया था।

15 नवम्बर, 1942 को राजा साहिब हमारी देख-रेख के लिये स्वयं हमारे कमरे में आये। हमने उन्हें विश्वास दिलाया कि हम सब अपने घर से भी अधिक आराम से हैं और उनका धन्यवाद किया। इधर-उधर की बातें व सत्संग के विषय में चर्चा होती रही।

16 नवम्बर, 1942 को सुबह 10 बजे हुजूर ने यहाँ के स्त्री-पुरुषों को नामदान बख़्शा। लगभग 50 स्त्रियाँ व 40 पुरुष होंगे। यहाँ की स्त्रियों व पुरुषों का पहनावा सादा है। पंजाब की तरह भड़कीले वस्त्र नहीं पहने जाते। केवल एक बण्डी (चोली) और नीचे रंगदार धोती होती है। स्त्रियाँ प्राय: रंगदार परन्तु सादा पहनावा पहनती हैं, पुरुषों की तरह धोती बाँधी जाती है। यहाँ के लोग लम्बे व तन्दुरुस्त हैं। कोई भी दुर्बल व्यक्ति दिखाई नहीं पड़ता। स्त्रियाँ भी सुदृढ़ हैं तथा उनके शरीर गठे हुए हैं। पुरुष लम्बे नहीं बल्कि पतले हैं। स्त्रियाँ पुरुषों से अधिक मोटी-ताज़ी मालूम होती हैं। ये लोग बहुत सभ्य हैं। राजा साहिब अपनी प्रजा के हर व्यक्ति को, चाहे वह कितना ही ग़रीब हो, अपने पास बुलाकर बातचीत करते हैं और उनसे भाइयों की तरह बर्ताव करते हैं। राजा और प्रजा में मेल-मिलाप अंग्रेजी प्रदेश से बहुत अधिक है। लोग भी ख़ुशहाल मालूम होते हैं। यहाँ खाना पंजाब से अधिक स्वादिष्ट बनता है। अर्थात् कई खाने ऐसे हैं जो पंजाब से ज़्यादा अच्छे बनते हैं। कई ऐसे भी हैं जो पंजाब में नहीं बनते, मीठी ब्रागड़ी (रोल्ड ब्रैड) जिसको करौंजी कहते हैं और छोटी-छोटी मीठी पूरियाँ, जोकि पहले घी में तल कर फिर चीनी की चाशनी में डालकर बनाई जाती हैं, 17 नवम्बर 1942

पंजाब की जलेबियों की याद दिलाती हैं। हरी मिर्च कूट-पीस कर हर खाने के साथ थाल में अलग रख देते हैं। ये लोग मिर्च ख़ूब खाते हैं। दही में खीरे की फाँके डालकर और केले की कतिलयाँ डालकर अलग-अलग थाली में एक-एक तोला रख देते हैं। दाल व चावल हर खाने में देते हैं। दाल पतली परन्तु कढ़ी हुई, बैंगन, बन्द गोभी, फूल गोभी, एक तरह की फिलयाँ पतली-पतली काटकर घी में भुनी हुई, आलू तले हुए, फुलका पतला परन्तु बड़ा-सा, तोरियाँ, भिण्डी। हलवे को शीरा कहते हैं और दिलये का बनाते हैं। सुबह चाय के साथ छोटी-छोटी मिट्टयाँ, केला, मक्खन-टोस्ट, गुलकन्द अर्थात् सोपाक, जिसमें नारियल की गिरी और गुलाब के फूल की पंखुड़ियाँ होंगी, खोया जिसमें कुछ खट्टी चीज और नारियल की गिरी होती है।

शाम को सत्संग में हुजूर ने कबीर साहिब का शब्द, 'कर नैनों दीदार महल में प्यारा है '' लिया। महाराष्ट्र में गणपित की पूजा होती है इसिलये हुजूर ने गणपित की वास्तविकता स्पष्ट की और फ़रमाया कि परमात्मा को पानी, पत्थर व काग़ज़ में न ढूँढें। यह भी फ़रमाया कि जितने दल का कमल, वहाँ उतने ही देवनागरी के अक्षर होते हैं। इसके बाद 'दिल का हुजरा साफ़ कर' पढ़ा गया। रात के सवा आठ बज गये।

उस दिन दोपहर को हम सब लोग गजानन मिल्स में साड़ियाँ बनती देखने गये और जेलख़ाना भी देखा। गुजराती साड़ियाँ 5 गज़ से लेकर साढ़े नौ गज़ तक हैं। ऐसी साड़ियों का रिवाज उत्तरी भारत में नहीं हैं।

17 नवम्बर, 1942 को, आज सुबह हुजूर कार में साँगली का अतिथिगृह (गवर्नर इत्यादि के लिये), पुराना महल, शस्त्र-गृह, गणपित का मन्दिर,
अजायब-घर देखने गए। मैंने व दीवान साहिब ने नारियल का पानी पिया। यहाँ
खेतों की मिट्टी का रंग काला है, कुछ गीली-सी लगती है। खेतों में हल्दी लगी
हुई थी। जब मैंने जिमीं कन्द का खेत देखा तो पूछा कि यह क्या है ? बोले सूरन
का गइडा। परन्तु न तो मुझे कहीं सूर दिखाई पड़े न गइडा। हैरान था कि सूरों
का गइडा कहाँ है। इतने में सिन्धी साहिब आ गये। उन्होंने कहा, ''हाँ, हाँ!
सूरन।'' मैंने पूछा कि सूरन क्या ? तो कहने लगे कि जिमींकन्द। तो समझा कि

सूरन का गड्डा क्या होता है। पुराने महल में सब अदालतें, जेलख़ाना, शस्त्र-घर हैं। बाहर तीन सिपाही सलामी दे रहे थे। उनकी बन्दूकें पुराने ढंग की थीं। हमारी सरकार नये ढंग की बन्दूकें अब रियासतों को देना पसन्द नहीं करती। दो तोपें जमीन पर पड़ी थीं, पता लगा कि उनकी गाड़ियाँ भी ले ली गई हैं। हिन्दुस्तानियों पर अंग्रेजों को विश्वास नहीं है।

शाम को सत्संग क्लब-घर के मैदान में हुआ, 'नाम निर्णय करूँ भाई' पढ़ा गया। उसके बाद तुलसी साहिब की ग़ज़ल 'सुन ऐ तकी न जाइयो जिनहार देखना' पढ़ा गया। रात के 9 बजे हम अपने विश्राम-गृह लौटे।

18 नवम्बर, 1942 को प्रात: हुजूर और हम सब लोग एक आदर्श गाँव, जो यहाँ से 4-5 मील दूर कृष्णा नदी के पार है, देखने गए। वहाँ तम्बाकू और चरी खड़ी थी। हुजूर को कई प्रकार के लकड़ी के हल और बीजने की मशीनें दिखाई गईं। यहाँ के बैल हृष्ट-पुष्ट होते हैं। यहाँ की मिट्टी काली है जिसमें संतरा व माल्टा नहीं हो सकता जबिक रूई, कमाद हो जाता है। इसके बाद हम लोग राजा साहिब का मार्डन गार्डन, जोकि उनके महल के पास ही है, देखने उतर गये। वहाँ हरे नारियल का पानी पिया और सुपारी के वृक्ष देखे, जो नारियल जैसे होते हैं। परन्तु ये वृक्ष पतले व सीधे होते हैं और इन पर सुपारियाँ लगी देखी गईं। नारियल का वृक्ष बारह मास फल देता रहता है। हरे नारियल का मीठा पानी कुछ खट्टा था, फिर भी स्वादिष्ट और ठण्डा, कुछ लोगों ने पानी पीकर गिरी खाने के लिये नारियल फोड़े। सफ़ेद-सफ़ेद गूदा-सा निकला जिसको मलाई बोलते थे। मैंने भी कुछ मलाई खाई, परन्तु सारे रास्ते मलाई का फूसक फेंकता आया। कुछ अमरूद भी दिये गए परन्तु कच्चे थे। शादी रात का भूखा था बड़े चाव से खाता रहा। भूख कच्चा-पक्का कुछ नहीं देखती। महल में आकर राजा साहिब ने अपने परिवार के साथ हुजूर का फ़ोटो खिंचवाया। फिर हुजूर का एक फ़ोटो अकेले का और एक फ़ोटो राजा साहिब और उनके स्टाफ़ के साथ लिया गया।

आज सुबह सत्संग बन्द था। शाम को सत्संग में कबीर साहिब की वाणी में से 'सुमिरन का अंग" पढ़ा गया।

हुजूर महाराज जी का राजा साहिब के पोते का नामकरण संस्कार करना और वहाँ से वापस लौटना, पूना में ठहरना, बम्बई की यात्रा और वहाँ ठहरना

19 नवम्बर को सुबह राजा साहिब के पोते का नामकरण-संस्कार 9 और 10 बजे के बीच राजा साहिब के बड़े मर्दाने कमरे में हुआ। बच्चे को परिवार के रीति-रिवाजों के अनुसार हुजूर ने पालने में अपने शुभ कर-कमलों से लिटाया। इसके बाद उसका नाम रखा, पुरुष रामराव भाउ। इसके बाद पेड़ों का प्रसाद सब छोटे-बड़ों को बाँटा गया और सम्बन्धियों ने बच्चे को रुपये दिये। हम सबने 600 रूपया दिया। बीबी ने 50 रुपये दिये। उसके बाद हुजूर ने सारे परिवार को बधाई दी और हुजूर 40-50 स्त्री तथा पुरुषों को नामदान देने चले गए। हम सब लोग अपने कमरे में आ गये। अब दोपहर को डॉक्टर साहिब उन फ़ोटो को, जो कभी साँगली में खींचे थे, ठीक से रख रहे हैं और उनके साथ-साथ हर फ़ोटो के पीछे नोट लिख रहे हैं। नौकर सामान लेकर पाँच बजे शाम को मिरज रेलवे स्टेशन से सवार होंगे क्योंकि रात को साढ़े नौ बजे गाडी उसी स्टेशन से चलती है। वहाँ से सामान आसानी से रखा जा सकेगा। शेष लोग बुद्ध गाँव से सवार होंगे। सुबह 6 बजे पूना पहुँच जायेंगे। हम लोगों को राजा साहब ने अपने हाल में बुलाया और सबको एक-एक चाँदी का टी सैट और एक गड़वा व चाँदी की एक कटोरी दी, जोकि धन्यवाद के साथ ले ली गई। नौकरों को 15-15 रुपये इनाम के रूप में दिये गए और पाठियों को सौ-सौ रुपया दिया गया। इसके बाद हम सब लोग खाना खाकर 10.30 बजे के क़रीब मोटरों से बुद्ध गाँव रेलवे स्टेशन पर पहुँच गये। गाड़ी डेढ़ घण्टा लेट थी। मुझे महाराज जी ने अपने फ़र्स्ट क्लास के कमरे में अपने ऊपर की बर्थ पर सोने की आज्ञा दी। मेरे साथी व दीवान साहिब दूसरे दर्जे में थे, क्योंकि कोई फ़र्स्ट क्लास की सीट रिज़र्व नहीं हो सकी थी। बीबी लाजवन्ती को यह शिकायत रही कि रात को उसे अकेली ही इंटर क्लास में सफ़र करना पड़ा। हालाँकि बाद में हमारे आदमी उसके डिब्बे में चले गए थे। रात को गाड़ी डेढ़ घण्टा और लेट हो गई। हम सब पूना दस बजे पहुँचे। जनरल साहिब की कारें आई हुई थीं। हम उनके महल कोरेगाँव पार्क में चले गए। नौकर पीछे से ताँगों में सामान लेकर पहुँचे। पहले हमने चाय पी, फिर

नहा-धोकर खाना खाया। फिर हुजूर ने आराम किया और हम जनरल साहिब की कार में पूना शहर की सैर करने चल दिये। वहाँ साड़ियाँ आदि की ख़रीद को ही पूना की सैर समझा गया। हाँ, बाजार जाने से पहले दीवान साहिब ने पूना के इंजीनियरिंग कॉलेज को देखा, क्योंकि 40 साल पहले वे उस कॉलेज में शिक्षा प्राप्त कर चुके थे। जब साड़ियों की ख़रीदारी हो गई तो हम पूना के दूसरे बाजार की सैर को निकले। परन्तु बदिकस्मती से जब हमारी मोटर एक चौक में से धीरे-धीरे गुज़र रही थी तो सामने गली में से एक और कार ने सीधी आकर टक्कर मारी, जिससे हमारी मोटर का शीशा और मडगार्ड टूट गये तथा मोटर के बाहर का रंग भी उखड़ गया। हमें बड़ा दु:ख हुआ। मोटर-कार का नम्बर व दुर्घटना स्थान को नोट करके हम वापस आ गये। रास्ते में बन्द-बाग़ और मूला मुट्ठा दिखा। देखा। दिखा के आर-पार एक पत्थर का मजबूत बाँध लग रहा है। बाँध चौड़ा है, जिस पर लोग सैर करते हैं। कुछ पानी झील की तरह से ठहरा हुआ है। कुछ बाँध में से दूसरी तरफ जाता है। बाँध के बाहर दिखा के किनारे पर एक बाग़ है। इसलिये उसको बन्द-बाग़ कहते हैं।

हुजूर तो आज सारा दिन काम में लगे रहे। उनको न तो खाने का ध्यान है, न अपनी सेहत का, न सैर का। पहले नाम दिया, फिर कर्नल साण्डर्स, कर्नल डक व उनकी धर्मपत्नी और दूसरी रानियों से बात करते रहे। मैं साथ-साथ अनुवाद कर रहा था। फिर शाम के 6 बजे के क़रीब सत्संग हुआ 'गुरु कहें जगत सब अंधा' मैं में कर्नल डक व उनकी धर्मपत्नी को अनुवाद करके सुनाता था। हुजूर ने फ़रमाया कि मांस ख़ाना क्यों मना है। पाप तो गेहूँ, अनाज व सब्ज़ी खाने में भी है क्योंकि सब में आत्मा और जान है। परन्तु अनाज और सब्ज़ियाँ प्रकृति के कारख़ाने में सबसे निचले दर्जे पर हैं। उनको खाये बिना निर्वाह असम्भव है, इसलिये इनको खाना ऊँचे दर्जे के जीवों को खाने की अपेक्षा कम पाप है।

सत्संग के बाद मेरे शहर के एस. डी. ओ. पण्डित चेतन दास मुझसे मिलने आ गये और उनको साथ लेकर हम सब पैदल सैर करते बाँध व मूला दिखा की तरफ़ चल दिये। हुज़ूर मोटर में बाहर चले गए। यहाँ रात को पुलिस, बिजली की रंगदार रोशनी द्वारा चौराहों पर यातायात का प्रबन्ध करती है। एक सिपाही लाल रंग का + निशान उस तरफ़ बटन दबाकर कर देता है जिस तरफ़ से रास्ता बन्द करना होता है। ऐसा मैंने पंजाब में नहीं देखा था।

इसके बाद डेक्कन क्वीन में सवार होकर हम दिन के ग्यारह बजे बम्बई वी. टी. स्टेशन पर पहुँच गये और वहाँ से मोटरों द्वारा लक्ष्मी बाग में स्थित धर्मशाला आ गये। यह बड़ी आरामदेह धर्मशाला है जिसे एक विधवा ने भट्टवाड़ी रोड पर रायल ओपेरा हाउस के सामने गिरगाँव में बनाया है। परन्तु 30 रुपया रोज किराया देना पड़ता है। इसमें बिजली द्वारा गर्म व ठण्डा पानी मिलता है। मकान में पंखे लगे हैं और बड़ी हवा आती है। बम्बई में मौसम गर्मी का ही है, चाहे नवम्बर का अन्त आ गया है। यहाँ 22 नवम्बर इतवार

को दोपहर तक पंखे चल रहे हैं। सत्संग उसी मकान के नीचे के हाल में हुआ, जिसमें हज़ार-पाँच सौ आदमी आ जाते हैं। परन्तु जगह की कमी के

कारण अब शाम को सत्संग वर्ली नाका में होगा।

आज सुबह में, महाराज जी व दूसरे लोग राय बहादुर लाला शंकर दास (वकील लायलपुर) के सुपुत्र, के. एल. सोंधी के घर, जोकि जुहू में है, गये। फिर वहाँ से उनके दूसरे सुपुत्र एस. एल. सोंधी के घर माटूंगा में गये, जोकि दूसरी बड़ी मंजिल में रहते हैं। वहाँ से दस बजे आकर हुजूर ने सत्संग किया 'जग में घोर अंधेरा भारी" और बाबा सोमनाथ ने उसका अनुवाद मराठी भाषा में करके लोगों को सुनाया।

हाँ इतना लिखना भूल गया कि कल 21 नवम्बर को जज साहिब के सम्बन्धी मुझे और बाक़ी लोगों को मोटर में बैठा कर अपने बर्तनों के कारख़ाने में जोकि रे रोड के परे, डॉक-यार्ड के पास है, दिखाने ले गये। इस कारख़ाने में पीतल व ताँबे के बर्तन, थालियाँ, कटोरियाँ, गुजराती लोटे आदि बनते हैं। आजकल लड़ाई के कारण पीतल, ताँबा नहीं मिलता इसलिये पुराने टूटे-फूटे बर्तनों से ही नये बर्तन बनते हैं। इस फ़ैक्ट्री में से कुछ जगह दूसरी फ़ैक्ट्रियों को किराये पर दी हुई है। एक में चीनी के बर्तन बनते हैं। उसके इंचार्ज ने बताया कि संगमरमर की टाईल टट्टी में नहीं लगानी चाहिये, क्योंकि संगमरमर पानी को सोख लेता है; बल्कि चाईना मिट्टी की टाईल ऐसी जगह पर लगानी चाहिये। इस कारख़ाने के सामने एक दूसरा कारख़ाना था जिसमें लेथ (ख़राद) से मशीनें तैयार की जाती थीं। उसका इंचार्ज एक डेनमार्क का निवासी था। यह कारख़ाना साफ़ सुथरा था, यद्यपि बर्तनों के कारख़ाने में सफ़ाई नहीं रखी जा सकती।

आज इतवार के दिन सुबह अंग्रेज़ व हम लोग और देसी बाबू जुहू में नहाने आये थे। यहाँ समुद्र का किनारा नहाने के लिये बहुत ही अच्छा है। वर्ली व चौपाटी की तरह इसमें बू नहीं है। सेण्डहर्स्ट रोड से जायें तो पहले वर्ली आता है जहाँ बाबा सोमनाथ का सत्संग घर है। यहाँ रेडियो स्टेशन है। उसके परे शिवाजी रोड, विलयम रोड गुज़र कर दादर आता है। दादर से परे बान्दरा जहाँ कि बड़ा मज़्बह (वधस्थल) है, फिर आता है सान्ताक्रूज़ व जुहू। सारे रास्ते में बड़े साफ़-सुथरे कोठीनुमा कई-कई मंज़िलें मकान आते हैं। सड़कें ऐसी साफ़ हैं कि पंजाब में नहीं देखी जातीं। सब जगह चहल-पहल है। जुहू से वापसी पर माटूँगा में श्री शान्ति लाल सोंधी के मकान पर आये। वह भी ऐसा ही साफ़-सुथरा था। चारों ओर शान्ति बरस रही थी। पंजाब के शहरों की तरह शोर-गुल नहीं। कल रात मैं व हमारी पार्टी रात के 9 बजे चौपाटी की सैर को गये। समुद्र का दृश्य था, रात चाँदनी थी, इक्के-दुक्के आदमी समुद्र के किनारे बेंचों पर बैठे चाँदनी में समुद्र की लहरों का दृश्य देख रहे थे। हमारी पार्टी ने नारियल का पानी पिया और फिर घर आकर दस बजे के बाद भोजन किया। रात को बिजली के पंखों के नीचे सोये।

22 नवम्बर, 1942 को इतवार का दिन था। दुकानें बन्द थीं। सुबह का सत्संग हुजूर ने लक्ष्मी बाग़ में और शाम का सत्संग आर्थर रोड जैकब सर्कल व बाबा सोमनाथ के मकान पर वर्ली नाका में फ़रमाया। दोनों स्थानों पर बड़ी भीड़ थी। जैकब सर्कल में अधिकतर बम्बई की मिलों में काम करने वाले लोग और उनके परिवार के लोग प्रतीत होते थे। वर्ली नाका में रानी लक्ष्मीबाई और दूसरी स्त्रियाँ तथा पढ़े-लिखे लोग दिखाई दिये। सेठ मंगल दास जी जुहू से और डॉक्टर मिराजकर, जोकि बम्बई के प्रसिद्ध सर्जन हैं, हुज़ूर के दर्शन को आये। सर चुन्नी लाल मेहता भी आये हुए थे। दोपहर के समय हुजूर कार में हमारी पार्टी के साथ लाला देवीदयाल तुलसी राम के मकान पर, जोकि चौपाटी मेरीन ड्राईव में है, गये। वहाँ उन लोगों और एक साधु के साथ पन्द्रह-बीस मिनट ज्ञान-चर्चा होती रही। उनमें से कुछ ने सोमवार को नाम भी ले लिया।

23 नवम्बर, 1942 को सुबह मैं और डॉक्टर साहिब बस में सवार होकर साढ़े आठ बजे गेटवे ऑफ़ इण्डिया देखने गये। वहाँ से वापस आकर मैं सरदार निहाल सिंह संन्यासी दवाख़ाने वाले के साथ लुहारचाल गया। लुहारचाल प्रिन्सेस स्ट्रीट के पास है और प्रिन्सेस स्ट्रीट कालबादेवी के पास है। इसके बाद हम क्राफोर्ड मार्केट में मौसिमयाँ लेने गए और 12 दर्जन ख़रीदीं।

इसके बाद जनरल राजवाड़े ने 12.30 बजे दोपहर ताजमहल होटल में मुझे, डॉक्टर साहिब, दीवान साहिब और उनके पुत्र व लाला अमर नाथ को भोजन के लिये बुलाया हुआ था। हम वहाँ गये। ताजमहल के कमरे में जनरल साहिब व उनकी रानी साहिबा के साथ अंग्रेज़ी रसोइयों का बनाया हुआ वैष्णव भोजन खाया। सारा होटल देखा। कहा जाता है कि खाने के कमरे को एयर कण्डीशन कराने में दो लाख रुपया ख़र्च हुआ। कमरे में बड़ी सुगन्ध और ठण्डक थी। बाहर का शोर या गर्मी नहीं थी, सैंकड़ों मेजें लगी हुई थीं, जिन पर तरह-तरह के लोग, जिनमें अधिकतर अंग्रेज व मेमें थी, खाना खा रहे थे। एक तरफ़ दो-तीन देसी लोग वायलिन बजा रहे थे और एक मेम उनके साथ प्यानो बजाती थी, जिससे कि खाने वालों का मनोरंजन हो। यहाँ एक बोतल सोडे के बारह आने व लेमोनेड का एक रुपया लेते हैं। हमारे मेज़बान ने खाना खिलाने वाले बैरों को पाँच रुपये इनाम में दिये। मेरे विचार में प्रति आदमी 20 रुपये ख़र्च आया होगा। बैरा खाने के साथ पानी के स्थान पर बर्फ़ में ठण्डा किया हुआ लाईमजूस हरएक के गिलास में भरता रहता था और उसे कभी कम नहीं होने देता था। यह गिलास मामूली न था बल्कि नीचे शीशे के पाये पर जड़ा हुआ था। पहले सूप दिया गया, फिर बेसन की तली हुई टिक्की, आमों, टमाटर सास और कई चटनियों इत्यादि के साथ दी गई, फिर उबली हुई गोभी दी गई। नमक मिर्च अपनी तबीयत के अनुसार डालना था। उसके बाद फ्रूट, सलाद व क्रीम दी गई। केक की एक पतली-सी मीठी और सूखी टुकड़ी बर्फ़ से ठण्डे किये हुए मक्खन के साथ रखी हुई थी। भोजन समाप्त करके हम वापस आ गये।

हुजूर का देहली के रास्ते वापस आना

23 नवम्बर की शाम को सामान लेकर मैं तो रेलवे स्टेशन पर आ गया, हुजूर बम्बई की संगत को दर्शन देते रहे। बम्बई सैण्ट्रल में कुछ टिकटों का झगड़ा रहा। हुजूर के दर्शन को बहुत-सी संगत आई थी। स्टेशन पर बहुत भीड़

थी परन्तु हमारे लिए गाड़ी का डिब्बा रिज़र्व था। हमारा सारा सामान उसमें रखा गया। रास्ते में भसीन के स्टेशन पर केले बहुत सस्ते थे।

हुजूर महाराज जी का दिल्ली में ठहरना

25 नवम्बर, 1942 को सुबह दिल्ली में सत्संग का इन्तिजाम ठीक न था, क्योंकि हुजूर का तख़्त कमरे में था। उसमें और उसके आगे के बरामदे में ज़्यादा स्त्री-पुरुष नहीं आ सकते थे। बाहर सहन में जो लोग खड़े थे उनको न आवाज सुनाई देती थी और न ही दर्शन होते थे। कई साहिब दूर-दूर बस्तियों से सत्संग सुनने आये थे, परन्तु आज उनके लिये आगे स्थान न था। वे निराश होकर वापस चले गये। मैं भी उन्हीं लोगों में था। परन्तु शाम को हुजूर का तख़्त बरामदे के किनारे पर था, अच्छा प्रबन्ध था। हुजूर को यह शिकायत रही कि लोगों ने आराम के समय भी उनसे मिलना जरूरी समझा और उनको आराम न करने दिया।

सत्संग के बाद हुजूर रात के 7.30 बजे कर्ज़न रोड नई दिल्ली पर सरदार जगजीत सिंह ठेकेदार के मकान पर भोजन के लिये गये। सरदार साहिब की बीबी व दोनों लड़िकयों ने हुजूर को बड़े प्रेम से भोजन कराया। हमने भी भोजन किया और इसके बाद हम रात को साढ़े नौ बजे दरियागंज आ गये और आराम किया।

26 नवम्बर, 1942 को हुजूर ने नामदान दिया। हुजूर को बारह-एक बजे तक फ़ुर्सत न मिली। दोपहर को भी लोगों को मुलाकात के लिये समय देते रहे। शाम को हमने सामान बाँधकर ताँगों में भेज दिया। हुजूर सत्संग में पधारे और गुरु अर्जुन साहिब का शब्द, 'जे भुल्ली जे चुक्की साईं ^{ho} पढ़ा गया। फ्रण्टियर मेल गाड़ी एक घण्टा लेट थी। परन्तु हुज़ूर 9 बजे से पहले-पहले छ: नम्बर प्लेटफ़ार्म पर पहुँच गये। वहाँ हमारा सामान सैकिण्ड क्लास के डिब्बे में, जोकि रिज़र्व था, रखा गया। हाँ, यह बात लिखना भूल गया कि शाम को डाँ. शराफ़ अपनी श्रीमती व सुपुत्र के साथ हुजूर को अपना आँखों का अस्पताल, जोकि दरियागंज में है, दिखाने ले गये। अस्पताल में बहुत-से बीमार स्त्री-पुरुष बिस्तरों पर लेटे हुए थे। बहुतों की आँखों पर पट्टियाँ बँधी हुई थीं मानों नरक की सजा भुगत रहे हों। आँखों की बीमारियों के लिये अच्छे-अच्छे यन्त्र दिखाई दिये।

डॉक्टर साहिब यह सेवा मुफ्त करते हैं। उनके नीचे और भी प्रसिद्ध आँखो के डॉक्टर हैं। इलाज भी मुफ़्त किया जाता है। वहाँ हुज़ूर ने 50 रुपये दान के रूप में अस्पताल को दिये। वहाँ से होकर चाँदनी चौक में श्रीमान् अमर नाथ भागव की बिजली की दुकान व दरीबा कलाँ में लक्ष्मी प्रेस देखने गए , फिर इम्मीरियल बैंक के पीछे बिजली के सामान के स्टोर को देखते रहे। दिल्ली में एक सौ के लगभग स्त्री-पुरुषों ने नामदान लिया।

हुजूर महाराज जी की डेरे की तरफ़ वापसी

फ्रिण्टियर मेल रास्ते में तीन घण्टे लेट हो गई। हम जालन्धर सुबह 9 बजे के क़रीव पहुँचे। सरदार साहिब सरदार भगत सिंह व दूसरे सत्संगी प्लेटफार्म पर उपस्थित थे, हुजूर मोटर में उनके निवास-स्थान को चल दिये। में और बाक़ी लोग हुजूर के सामान के साथ ब्यास स्टेशन पर पहुँच गये। वहाँ दो बैलगाड़ियों में सामान लाद कर मोटरकार में सवार होकर हुजूर से पहले डेरे पहुँच गये।

अध्याय 3

डेरे में ठहरना, डलहौज़ी और पहाड़ी क्षेत्र की यात्रा का हाल

हुजूर की तबीयत जुकाम की वजह से ठीक नहीं थी। इसलिये हुजूर ने बाबू गुलाब सिंह जी से सत्संग करवाया।

29 नवम्बर, 1942 को सरदार भगत सिंह ने ख़ूब सत्संग किया। भाषा सरल व समझ में आनेवाली थी और शम्स तबरेज़ की फ़ारसी की कविता, 'सलाम अलेक ऐ दहक़ाँ दरी अम्बाँ चहा दारी' (अर्थात् , ए इनसान! तुझ पर ख़दा की सलामती हो। तुझे इस दुनिया से क्या लेना है।) अनुवाद के साथ उपस्थित सज्जनों को पढ़कर सुनाई।

30 नवम्बर, 1942 को नाम दिया गया। कल मुसलमानों को नाम दिया जायेगा। हुजूर की तबीयत आज कुछ ठीक है परन्तु चेहरा कमज़ोर और पीला प्रतीत होता है जोकि अधिक व्यस्त रहने के कारण है। आज हुजूर ने दोपहर के तीन बजे भोजन किया और भोजन के बाद घुमान के और दूसरे सत्संगियों को वक़्त दिया, पर आराम नहीं किया। सुबह नौ बजे से हुजूर काम में लगे हुए हैं। शाम को सेवा में बैठे, अँधेरा हो गया।

1 दिसम्बर, 1942 को मुसलमानों को नाम दिया गया। शाम को 'रामा रम रामो सुन मन भीजै" शब्द श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से पढ़ा गया और हुज़ूर ने अपने शुभ मुखारबिन्द द्वारा इसकी व्याख्या की। डॉक्टर साहिब, कर्नल मार्टिन आदि को अंग्रेज़ी में अनुवाद करके बताते थे। अन्त में शाम को कहने लगे कि भाई, इससे बहुत बोझ पड़ता है।

रात को मैं नौ बजे रेडियो से ख़बरें सुनता रहा। ख़ुशी की बात यह है कि हमारी सरकार अफ्रीका में विजयी हो रही है और रूस मास्को व स्टालिनग्राड में जर्मनी को दबा रहा है।

4 दिसम्बर 1942

2 दिसम्बर, 1942 को सुबह हुजूर बाहर खेतों में घूमने के लिये गए। मैं मिस कॉलिन्ज के साथ, जीकि स्विट्जरलैण्ड की रहनेकाली हैं, बाग में घूमता रहा। उन्होंने मुझे गुलदाकदी, गेंदा, एस्टर के पौधे दिखाये जोकि सत्संग-घर के बाग में लगे हुए थे और कहा कि माली इन पौधों को बहुत कैंचा बढ़ने देता है, जिसका नतीजा यह होता है कि फूल नहीं आते, अगर तीन फुट की कैंचाई से ऊपर-ऊपर कभी-कभी छाँट दिये जायें तो ख़ूब फूल आयें। आसपास की झाड़ियों को भी साफ़ कर दिया जाये तो वह उन पौधों के फूलों की ख़ुराक लेकर फूलों को लगने से न रोके। फिर आगे जाकर मैंने तिलों के पौधे दिखाये और सरसों के साग की चर्चा की तो मिस साहिबा ने कहा कि यूरोप में जिस किस्म का पालक होता है, वैसा भारत में नहीं होता। उसको साग की तरह खाया जाता है।

वापसी पर हुजूर ने साधुओं को 'प्रशादियाँ' बाँटीं। उसके बाद डाक सुनी। फिर दो बजे के लगभग खाना खाया। सवा दो बजे मुझे बुलाया कि इटली के एक सत्संगी क़ैदी को दिलासे का पत्र लिख देना। शाम को अंग्रेजों व मिस काँलिन्ज को नवें गुरु के भोग का शब्द 'गुन गोबिंद गायो नहीं ' का अनुवाद अंग्रेजी में करके सुनाते रहे।

3 दिसम्बर, 1942 को सुबह नौ-दस बजे के क़रीब हुज़ूर जल्लूवाल किसी मृतक का भोग डालने गये। बहुत से लोग साथ गये। वहाँ से ढिलवाँ डिपो कार में गये। तीन बजे वापस लौट आये। आते ही आराम करने की बजाय डाक सुननी शुरू कर दी।

शाम को 'सतगुरु का नाम पुकारों का शब्द पढ़ा गया। मेरा काम था कि अंग्रेज़ों को अनुवाद करके सुनाता जाऊँ। हुजूर ने समझाया कि गुरु-भिवत अलूनी सिला का चाटना है, परन्तु जब तक गुरु-भिवत पूरी न हो जाये अर्थात् आत्मा सूर्य-लोक और चन्द्र-लोक को पार करके सतगुरु के नूरी स्वरूप को प्रकट न कर ले तब तक गुरु-भिवत पूर्ण नहीं होती। उसके बाद नाम-भिवत सरल और आनन्ददायक है, क्योंकि शब्द में आनन्द है। जिसकी गुरु-भिवत पूर्ण हो गई उसकी मुक्ति में कोई शंका नहीं। असली परोपकारी सन्त हैं। उनके पास इस संसार रूपी जेलाख़ाने की कुंजी है। वे जेलाख़ाने को खोलकर क़ैदियों से कहते हैं: जाओ अपने-अपने घरों को। दूसरे परोपकारी क़ैदियों को थोड़े समय

के लिये तो सुखी कर देते हैं परन्तु जेल से मुक्ति नहीं दिलाते। सर्त्संग के अन्त में फ़रमाया कि सन्तमत का सार-तत्व गुरु-आज्ञा की मानना है। बस यही पूजा और यही भक्ति है।

4 दिसम्बर, 1942 की शाम को हुन्तूरी वाणी में से 'गुरुमता अनोखा दरसा" का शब्द लिया गया। हुन्तूर ने फ़रमाया कि गुरुमत सूर्य, वन्द्रलोक से आगे सतगुरु के नूरी स्वरूप के दर्शन से आरम्भ होता है। जब कोई सत्संगी उस स्थान पर मन और आत्मा को एकाग्र करके ले जाये तो उस समय वह गुरुमत में प्रवेश करता है और उस समय ही यह समझा जायेगा कि उसको गुरु मिल गया। सन्तमत पारब्रह्म से शुरू होता है। फ़रमाया कि सहस्र-दल कमल और बंकनाल के बीच बहुत-सी रचना है, जिसकी चर्चा इस शब्द में नहीं की गई है और जिस पर कई पुस्तकें लिखी जा सकती हैं। सहस्र-दल कमल की ज्योति के तिल में से गुज़रने पर वह रचना दिखाई देती है।

5 दिसम्बर, 1942 को डाक देखने के बाद हुजूर ने फ़रमाया कि हमारा दाने, दिवाने व मस्ताने सभी तरह के लोगों से वास्ता पड़ता है और कामी-क्रोधियों के साथ भी निर्वाह करना पड़ता है। कल डलहाँजी जाने की तैयारी है।

हुजूर महाराज जी की डलहौज़ी की यात्रा और वहाँ ठहरना

सुबह 8 बजे डलहाँजी को चल दिये। में, बीबी लाजवन्ती व भाई शादी मोटर कार में पिछली सीट प्रर थे और हुजूर ड्राईवर के साथ। रास्ते में हुजूर घुमान की संगत को दर्शन देने के लिये उतरे। ऐसा प्रतीत होता था कि सारा गाँव ही दर्शन करने आ गया हो। वहाँ से नहर की पटरी पर होते हुए 11.30 बजे चक्की की बैरियर (चौकी) पर पहुँच गये। वहाँ खाना खाने के लिये जगह देखकर, खेस बिछाकर हुजूर और हम सबने खाना खाया। बीबी बेचारी कै के डर से भूखी रही और रास्ते में दुनेरे तक तो उसे कुछ तकलीफ़ नहीं हुई, परन्तु बनीखेत के आसपास उसका जी बहुत मिचलाया और थूकने लगी तथा होश-हवास खोने लगी। अन्त में डलहाँजी डाकख़ाने के पास पहुँच गये। हमेशा की तरह त्रिलोक चन्द साहिब मौजूद थे। हुजूर ने डंगों को देखा। तीनो डंगे अब बन गये हैं सिर्फ़ सबसे ऊपर के डंगे में दो दिन का काम बाक़ी है। तीनों डंगे बहुत मजबूत मालूम होते हैं।

7 दिसम्बर 1942

रात को बातचीत के बीच हुजूर ने फ़रमाया कि उन्होंने 18 वर्ष पहाड़ पर नौकरी की। जब बर्फ पड़ने का समय आता है तो पहले वर्षा आती है, फिर ओले पड़ते है, फिर बर्फ़। आदमी तीन फ़ुट गहरी बर्फ़ तक चल सकता है। जानवर दो फ़ुट से अधिक गहरी बर्फ़ में नहीं चल सकते। अगर चलते-चलते

आदमी थककर बर्फ़ पर आराम करने के लिये बैठ जाये तो नींद आने लगती है। इसके बाद ठण्ड से मृत्यु का डर है। अगर बर्फ़ पड़ कर रात को तारे निकल आयें तो दूसरे दिन बर्फ़ सख़्त हो जाती है और आदमी उस पर चल-फिर सकते हैं। रात बड़ा जाड़ा था, मेरे नीचे रूईदार गद्दा, उसके ऊपर दो कम्बल बिछे थे और मेरे ऊपर एक रजाई तथा रूईदार तुलाई थी। फिर भी गर्म

पाजामा व गर्म क़मीज पहन कर सोना पड़ा।

7 दिसम्बर, 1942 को कोठी के उत्तर की ओर की खिड़िकयों के आगे टीन की चादरें या लकड़ी की पटियाँ लगाई जा रही हैं, जिससे बर्फ़ से नुक़सान न पहुँचे। इस समय दोपहर के 2 बजे बड़ी धूप है। परन्तु हवा बड़ी ठण्डी है।

सुबह हुजूर ने एक-दो पत्र लिखवाये। हुजूर कहीं बाहर घूमने नहीं गये। केवल शाम को डंगे की बनावट का निरीक्षण करने गये। हुजूर ने रात को बातचीत के बीच कहा कि कभी-कभी लोग वहम के कारण मकानों को भूत-प्रेत वाला समझने लग जाते हैं। जब आपकी बदली मरी पहाड़ पर हुई तो आपने बस्ती से बाहर एक बँगला किराये पर लिया। बँगला बिलकुल एकान्त में था। कोई उसे किराये पर नहीं लेता था, क्योंकि लोगों का ख़याल था कि उसमें भूत रहता है। लोगों ने हुजूर से कहा कि आप इस कोठी को न लें, इसमें एक भूत रहता है जो रात को इसमें रहनेवालों को पत्थर और ईंटें मार कर भगा देता है। हुज़ूर ने जवाब दिया, ''कोई बात नहीं। मैं और भूत इकट्ठे रह लेंगे''।

रात को मकान पर पत्थर गिरने की आवाज़ आने लगी। उन दिनों बाबा बन्ता सिंह* हुजूर की नौकरी में था। वह घबरा कर बाहर भाग निकला। शोर और पत्थर गिरने की आवाज सुनकर हुजूर बाहर आये। आपने देखा कि कोठी से लगा हुआ एक पेड़ है, जिसके अखरोट जैसे सख़्त फल हैं जो रात को तेज़ हवा चलने पर कोठी की टीन पर टकरा-टकरा कर आवाज़ कर रहे हैं। दूसरे दिन हुजूर ने पेड़ का वह टहना कटवा दिया।

इसी प्रकार हुजूर ने लुधियाना जिले के एक जाट की कहानी सुनाई कि उसके खेत में माता देवी की बुर्जी बनी हुई थी। अप्रैल में नवरात्रों के दिनों में जब उसकी गेहूँ की फ़सल पकने को होती तो सैकड़ों स्त्रियाँ व बच्चे माता देवी को पूजने के लिये आते और फ़सल को नष्ट-भ्रष्ट कर देते। बेचारा लाचार था क्या करता। अन्त में एक रात उसने बुर्जी को उठाकर शहीदों के स्थान पर रख दिया। सुबह गाँव में शोर करने लगा कि भाइयो रात बहुत-से बाजे-गाजे हो रहे थे। क्या आपने नहीं सुने ? उन्होंने कहा कि हमें तो सुनाई नहीं दिये। जाट ने कहा कि भाई, रात को शहीद माता देवी को ब्याह कर ले गये, इसलिये बहुत बाजे बजते रहे। इनसान का दिल वहम से कमज़ोर होकर ख़याली चित्रों से उसको डराता है।

हुजूर महाराज जी का डलहौज़ी से लौटना

1 बजे की सर्विस से हम शाम के सात बजे के क़रीब नहर के रास्ते डेरे पहुँच गये।

हुजूर महाराज जी का डेरे में ठहरना

9 दिसम्बर को मैं हिसाब-किताब में लगा रहा। डेढ़ बजे के क़रीब हुजूर, मैं, राय साहिब तथा भाई शादी कार में सवार होकर अमृतसर गये क्योंकि हथियारों का निरीक्षण कराना था और बैनामे कराने थे। रात के दस बजे तक अमृतसर में जमीन के काग़जात वग़ैरह पर बातचीत होती रही।

10 दिसम्बर को मेरा सारा दिन बैनामों के मामले में गया। शाम को 5 बजे फ़ुर्सत मिली। हुजूर ने 9 दिसम्बर की शाम और 10 दिसम्बर की सुबह को 9 बजे सत्संग किया। अमृतसर से चल कर शाम को 7 बजे के क़रीब डेरे वापस आ गये। रास्ते में ब्यास रेलवे स्टेशन के फाटक के पास बीबी धर्मदेवी व जमादार प्रताप सिंह लारी में मिले। अर्ज़ की कि हुजूर सत्संग के लिये आठ दिन के लिये पहाड़ पर पधारें। हुजूर ने आज्ञा दी कि परसों सुबह आठ बजे जालन्धर के रास्ते मुकेरियाँ को मोटर कार से चलेंगे। सामान लारी में कल जायेगा।

^{*}भाई बन्ता सिंह आजीवन हुजूर की नौकरी में रहा। हुजूर के सिरसा में ज़मीन ख़रीदने के बाद सिरसा में रहा और हुज़ूर के परिवार की सेवा करता रहा। बड़ा प्रेमी अभ्यासी था। हुजूर के जीवन की कई बातें सुनाया करता था। सन् 1951 में उसने सिरसा में चोला छोड़ा।

हुजूर महाराज जी का पहाड़ का दौरा 12 दिसम्बर को सुबह 8 बजे मैं, डॉ. चन्द्रबन्सी, भाई शादी तथा हुजूर

मोटर कार में जालन्धर के रास्ते मुकेरियाँ को चल दिये। 9 बजे जालन्धर में सरदार साहिब के मकान पर पहुँच गये। सरदार साहिब के हठ करने पर हुज़ूर उतर पड़े और हम लोग मिठाई और फल खाने लग गये। अभी सरदार गुरदयाल सिंह हमारे लिए दूध ला ही रहे थे कि मोटर कार चल पड़ी। हम लोग रास्ते में हुजूर की आज्ञानुसार कन्या महाविद्यालय में गये। वहाँ हुजूर को बीबियों को दर्शन देने थे। बहुत-से सत्संगी स्त्री-पुरुष वहाँ आ गये और अर्ज़ करने लगे। प्रिंसिपल साहिबा बड़ी आदर्श युवती हैं। बड़े प्रेम व आदर-सत्कार से हमारी आव-भगत की। हुज़ूर को मोटर कार तक पहुँचाने आईं। हुजूर ने भी उनको कुछ आन्तरिक बातें बताईं। वहाँ से आगे सरदार साहिब अपनी कार में दूध लाकर हम सबको पिलाकर वापस चले गए। रास्ते में टाँडा के पास सड़क पर हजारों की संख्या में लोग जमा थे। बाजे बज रहे थे। हुजूर ने कुछ देर सत्संग किया। फिर खोड़ा, कुराला व झंगरकलाँ, दसूहा में भी ऐसे ही लोग जमा थे। दसूहा में भी एक छोटा-सा शब्द पढ़ा गया। वहाँ मेरे पुराने मित्र पण्डित सदा नन्द, लाला देव राज और पण्डित मथुरा दास वकील साहिबान मिल गये, जिनके दर्शन मैंने 25 साल के बाद किये।

रास्ते में सरूप सिंह ड्राइवर ने हुजूर से सवाल किया कि ये जो इतने लोग हुजूर के दर्शन को आये हैं उनको क्या लाभ होगा ? हुजूर ने फ़रमाया जो प्रेम-भाव से दर्शन करेंगे, उनको मनुष्य-जन्म मिलेगा। जो सत्संग सुनकर खोज करेंगे उनको कभी नाम मिलेगा। जो दोष-दृष्टि से आये हैं उनको कोई लाभ नहीं होगा। हुजूर ने आगे यह भी फ़रमाया कि संस्कार सबके हृदय पर पड़ता है और लाभ पहुँचता है। अब सोचो कि हुजूर की इस यात्रा से परमात्मा की सृष्टि को कितना भारी लाभ होगा। सैंकड़ों बल्कि हज़ारों मनुष्य-जन्म के अधिकारी हो जायेंगे और बिना मेहनत या कोशिश के हजारों नाम के भी अधिकारी बन जायेंगे। मुकेरियाँ से आगे सनियाल 11-12 मील पर था। हम शाम को तीन-चार बजे के क़रीब वहाँ पहुँच गये। भोजन के बाद 5 बजे सत्संग हुआ, जिसमें तीसरे गुरु साहिब का शब्द श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'काया कामण अत सुआले पिर वसै जिस नाले '5 पढ़ा गया।

हुजूर ने फ़रमाया कि मनुष्य की बड़ी भूल है कि परमात्मा या ख़ुदा को जंगलों, पहाड़ों, पत्थरों, मूर्तियों, किताबों और नदियों आदि में खोजता है। परमात्मा किसी को बाहर न मिला है और न मिलेगा। परमात्मा तो मनुष्य के अन्दर है। अगर मन और आत्मा को अन्दर ले जायें तो परमात्मा मिले और मुक्ति भी। धार्मिक पुस्तकों में तो परमात्मा नहीं है, केवल परमात्मा की बड़ाई या महात्माओं की आन्तरिक यात्रा के वृत्तान्त लिखे हुए हैं। जो लोग केवल धर्म-शास्त्रों को प्रतिदिन पढ़ लेते हैं और उससे ही मुक्ति की आशा रखते हैं वे भूले हुए हैं। पुस्तकों के उपदेश पर चलने से अर्थात् आत्मा को अन्तर में इकट्ठा करके रूहानी मण्डलों में चढ़ाई करने से मुक्ति होगी। जो लोग देवी-देवताओं को पूजते हैं उनका हाल ऐसा ही है जैसे कोई राजा अपने नौकर को पूजे। परमात्मा ने मनुष्य, जोकि उत्तम रचना है, की सेवा के लिये देवी-देवता बनाये हैं। उनका कर्तव्य मनुष्य के शरीर की देख-भाल करना, पैदा करना तथा संहार करना है, चाहे हम उसको पूजें या न पूजें। मनुष्य के पूजने योग्य परमात्मा के सिवाय कोई नहीं है।

कल सुबह 9 बजे सत्संग होगा और उसके बाद हुजूर नामदान देकर 3 बजे शाम मुकेरियाँ और हाजीपुर के रास्ते तलवाड़े जायेंगे। वहाँ रात ठहरेंगे।

13 दिसम्बर, 1942 को सुबह उठा तो कन्धे और पीठ में दर्द था। डॉक्टर साहिब कहते हैं कि टाक्सीमिया है अर्थात् शरीर में विषैले कीटाणु जमा हो गये हैं। यहाँ सीलापन बहुत है। बाहर मकान का फ़र्श हमेशा गीला रहता है। पानी 15 फ़ुट पर है। हवा में नमी है। आज सुबह 9 बजे हुज़ूरी वाणी में से 'यह तन दुर्लभ तुमने पाया' का शब्द लिया गया। सुबह से बादल हैं। उपस्थिति कल से कुछ कम थी। सत्संग के बाद एक सत्संगी ने प्रार्थना की कि उसको अन्तर में आज्ञा हुई कि तुम आठ दिन के अन्दर वृक्ष से गिर कर मर जाओगे। लोगों ने रोका कि वृक्ष पर मत चढ़ना, उसने कहा जो मुसीबत आनी है वह कैसे टल सकती है। इसलिये उसको वृक्ष पर ईंधन लेने के लिये चढ़ना था। जब वह टहनियाँ काट चुका तो ऐसा लगा कि वह पीठ के बल नीचे गिर गया। बड़ी ऊँचाई से गिरा, रास्ते में ही होश गुम हो गये थे परन्तु उसको ऐसा लगा जैसे किसी ने उसके सिर और टाँगों को ज़मीन से टकराने से रोकने के लिये थामे रखा हो। सिर्फ़ कमर टकराई और उसको दर्द हुआ, जिससे मुँह और दूसरे सुराख़ों से ख़ून आने लगा। फिर उसको हुक्म हुआ कि दूसरे हकीम की दवाई खाओ (वह ख़ुद भी हकीम था) और दस दिन में ठीक 54

हो जाओगे। उसने ऐसा ही किया और बारहवें दिन बहँगी उठाने के लायक़ हो गया (वह झीवर का काम करता था)। किसी ने पूछा मरा क्यों नहीं ? उत्तर मिला कि कई बार अन्दर पीछे से क़ाल की आवाज आ जाती है जिसको अभ्यासी सतगुरु की आवाज समझता है।

सत्संग के बाद हुजूर चार मील पैदल चल कर हुलेड़ गाँव में सत्संग घर की जगह देखने गये। रास्ता गीला था। जगह-जगह पानी की नदियाँ बह रही थीं। इस इलाक़े में मलेरिया और तिल्ली का ज़ोर है। यहाँ धान ख़ूब होता है। इसलिये लोग ख़ुशहाल हैं, परन्तु कमज़ोर। वहाँ से एक बजे लौटे। लोगों को नाम दिया। परन्तु भोजन नहीं किया। केवल सुबह दही लिया होगा। नामदान के समय आसपास के गाँवों के हजारों स्त्री-पुरुष सत्संग सुनने को जमा हो गये थे परन्तु हमारा प्रोग्राम बन चुका था। हम शाम को 4 बजे खुर्दपुर के रास्ते हाजीपुर को चल दिये। रास्ते में बहुत-से नाले आये जिन पर पुल थे लेकिन हमारी मोटरकार का पुलों पर से गुजरना मुश्किल था, क्योंकि इसका नीचे का भाग जमीन से टकराता था। रास्ते में बहुत-से गड्डे भी थे। हमारे साथ लारी में 18-20 आदमी थे, जो रास्ते में कहियों से सड़क ठीक कर देते थे। गाँव के आदमी, औरतें, बच्चे हमारी मोटर देखने या हुजूर के दर्शन करने आ खड़े होते, क्योंकि इस रास्ते से कभी मोटरें, कारें या लारियाँ नहीं गुजरी होंगी। सड़क से शिवचक में बीबी मालां के सम्बन्धियों को दर्शन देने गए। उनके घर सड़क से एक मील के लगभग होंगे। वहाँ से हाजीपुर होते हुए तलवाड़ा, बँगला डी. बी. में 8 बजे शाम को पहुँच गये जोकि हाजीपुर से 8 मील है। हाजीपुर से आगे देड़ में कुछ सत्संगी एकत्रित थे। वहाँ हुजूर ने 5 मिनट बैठकर दर्शन दिये। तलवाड़े का डाक बँगला ब्यास नदी के किनारे स्थित है। कमरों के तीन सेट हैं। आगे खुला मैदान है, जिसमें पेड़ लगे हैं। अच्छी छाया है।

आज सुबह 10 बजे के सत्संग में दो हजार के क़रीब व्यक्ति एकत्रित थे। 'जग में घोर अंधेरा भारी⁷ का शब्द लिया गया। ब्यास और मुकेरियाँ के बीच अधिकतर हिन्दू राजपूतों की आबादी है। हुजूर ने फ़रमाया कि उनके पूर्वज चन्देल राजपूत थे और यहाँ के पार नालागढ़ के इलाक़े में आबाद थे। अकबर के जमाने में वहाँ से लुधियाने के जिले में जाकर आबाद हो गये और जब औरंगजेब के समय में राजपूत लोग मुसलमान हो गये तो उन्होंने अपनी

लड़िकयाँ मारनी शुरू कर दीं और जाटों की लड़िकयाँ लेने लगे। इसलिये जाट कहलाने लग गये।

तलवाड़ा से हम सब 14 दिसम्बर, 1942 को दोपहर के सवा एक बजे चल दिये। रास्ते में भम्भूताड़ी गाँव आया। वहाँ राय साहिब लाला ज्ञान चन्द, रिटायर्ड स्कूल इन्सपेक्टर, ने बड़े प्रेम से हुजूर का स्वागत किया। वहाँ हजारों स्त्री-पुरुष आसपास के गाँवों से जमा थे। हुजूर ने मोटर कार से उतर कर सत्संग किया और श्री गुरु ग्रन्थ साहिब से 'रामा रम रामो सुन' शब्द की व्याख्या की। वहाँ से आगे दौलतपुर में संगत को दर्शन दिये। यह रास्ता कार के लिये अच्छा नहीं। रास्ते में जगह-जगह बड़े-बड़े नालों की ख़ुश्क तहें आती हैं, जिन पर पत्थर-कंकर पड़े हैं या रेत के ढेर हैं या ऊँचे-नीचे गड्डे हैं परन्तु दृश्य अच्छा है। चारों ओर हरे-भरे पहाड़ों की पंक्तियाँ, बीच में ख़ुरक नाला, जोकि वर्षा में बड़े ज़ोर से चलता होगा, और खेत हैं। एक लाइन को पार करो तो दूसरी ऐसी ही लाइन आ जाती है। दौलतपुर में आर्य समाज का हाई स्कूल है। वहाँ से चलेट दो-तीन मील के क़रीब होगा। वहाँ हमारी पार्टी शाम के 7 बजे के लगभग पहुँच गई।

चलेट में बड़े-बड़े फ़ौजी अफ़सर और नौकरी-पेशा जमींदार रहते हैं। आसपास के गाँवों में बहुत-से सत्संगी बसे हुए हैं। बहुत से स्त्री-पुरुष व बच्चे सत्संग-घर के आगे शामियानों के नीचे बैठे हुए थे। बाजा बज रहा था। चलेट की आबादी कई पहाड़ियों पर फैली हुई है। लोग बड़े प्रेमी हैं। यह सारा पहाड़ी इलाक़ा प्रेमियों की जमीन है। लोग सीधे-सादे हैं, जिनको हुजूर के उपदेश का बहुत जल्दी लाभ हो जाता है। हुजूर ने ख़ुद भी फ़रमाया कि यहाँ बहुत-से सत्संगी स्त्री-पुरुष ऊँची आन्तरिक चोटियाँ पार कर चुके हैं। हमारे आने के बाद वर्षा शुरू हो गई, जिसकी आजकल किसानों को बड़ी जरूरत है। ये लोग प्रसन्न हैं क्योंकि वर्षा उनके लिये अनाज देने वाली है। सारी रात वर्षा होती रही।

15 दिसम्बर, 1942 आज भी सुबह वर्षा हो रही है। बड़ी ठण्ड है। सत्संग होना सम्भव नहीं क्योंकि बाहर बैठने को जगह नहीं है। फिर भी लोग वर्षा से प्रसन्न हैं। सत्संग-घर दो मंजिल वाला है। आगे बड़ा मैदान है। निचली मंजिल में सत्संगी लोग ठहरते हैं। ऊपर एक कमरे में हुजूर, दूसरे में मैं और तीसरे में रसोई है। सब कमरों के ऊपर टीन की छत है। छत तो केवल एक ही है परन्तु 16 दिसम्बर 1942

आज संक्रान्ति को सारे दिन वर्षा होती रही। कोई सत्संग नहीं हो सका। रात के तीन बजे तक बड़े ज़ोर की वर्षा होती रही।

16 दिसम्बर, 1942 को सुबह फिर बादल हैं। हुजूर नाम देने के लिये बीबी धर्मदेवी की कुटिया में गये हैं। मैं और डॉक्टर साहिब ख़ुश्क नाले के ऊपर की तरफ़ डेढ़ घण्टे के लिये सैर को चले गए। वहाँ से 11.30 बजे वापस आये। ख़ुश्क नाले की तह बड़ी चौड़ी थी और उसमें रोड़े ही रोड़े पड़े हुए थे। आगे जाकर ऊँचाई पर एक कच्चा तालाब था जिसमें से लोग पानी लाते थे। पानी पीनें के लिये कोई कुआँ नहीं है। इसी कारण से पहाड़ी इलाक़ों में पानी पीने के कुओं पर झगड़े होते रहते हैं।

खाना खाने के बाद हुजूर फ़ौजी सरदारों की आबादी में, जो सत्संग-घर से 1 मील दूर पहाड़ी पर स्थित है, सत्संग और रात को ठहरने के लिये तशरीफ़ ले गये। सारे चलेट में पानी की कमी है। ज़मीन के नीचे पानी नहीं है। इसलिये कुएँ नहीं खुद सकते। सरदारों की आबादी के शुरू में एक कच्चा तालाब है, जिसमें पीने के लिये वर्षा का पानी जमा रहता है। इस तालाब के पास सत्संग हुआ। शब्द हुजूरी वाणी से 'सतगुरु का नाम पुकारों" पढ़ा गया। हुजूर ने फ़रमाया कि जो नाम सतगुरु देते हैं उसके सिमरन करने का हुक्म है। 15-16 हजार के क़रीब लोग होंगे। सत्संग के बाद शाम को सरदारों के मकान की ऊपर

की मंजिल में हमें कमरे दिए गए और शाम को हुजूर हरएक सरदार के मकान पुर गये। हरएक ने अपना–अपना मकान ख़ूब सजा रखा था। इस काम में काफ़ी देर लग गई। सरसों का साग व मकई की रोटी खाई जोकि बड़ी स्वादिष्ट लगी।

17 दिसम्बर, 1942 को सुबह सवा आठ बजे ही हम पहाड़ी से नीचे उतर कर मोटर कार में बैठकर सत्संग-घर 9 बजे से पहले आ पहुँचे और वहाँ श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का शब्द 'दरसन भेटत पाप सभ नासै ^{५०} लिया गया। हुजूर ने फ़रमाया, ''चरण धूलि से मतलब सतगुरु-स्वरूप के चरणों तक अपने अन्दर रसाई करने से है।'' सत्संग के बाद खाना खाकर मोटर कार में 11 बजे गग्रेट की तरफ़ चल दिये। रास्ते में पहले नंगल गाँव में कप्तान मोती सिंह के घर जाना पड़ा, जो सड़क से क़रीब 1 मील दूर होगा। वहाँ दर्शन देकर हुजूर संघनई के स्कूल में, जो सड़क के किनारे पर स्थित है, सत्संग करने के लिये 15 मिनट ठहरे। हुजूरी वाणी का शब्द 'गुरु मेरे जान पिरान, शब्द का दीन्हा दाना"। लिया। बड़ा आनन्द आया। हुजूर ने महसूस किया कि यह सड़क कहीं-कहीं से बहुत ऊँची-नीची, कहीं-कहीं रेत से अटी हुई है, कहीं छोटी-छोटी वटियों से भरी हुई है। यह इलाक़ा ख़ुश्क-सा मालूम होता था। कलोह में बहुत-से सत्संगी जमा थे। वहाँ से आगे इलाक़ा समतल, हरा-भरा और ख़ुशहाल है। गग्नेट चलेट से 9 मील पर है और ऊना 15 मील आगे। गग्रेट अच्छा कस्बा है। पहाड़ का केन्द्र है, अच्छा बड़ा बाज़ार है परन्तु यहाँ सत्संगी कोई नहीं है। आगे पिंजौर में बहुत- से सत्संगी जमा थे। उससे आगे पंडोगा और भरसाल में भी लोग जमा थे। भरसाल से आगे यह कच्ची सड़क होशियारपुर वाली पक्की सड़क को काटती है। उसके आगे सवां नदी आती है, जिसमें बहुत थोड़ा पानी था। सवां को पार करके ऊना का अड्डा और उससे बाँयें हाथ को मुड़कर कुछ मील पर कालसिंघी है, जहाँ हजारों स्त्रियाँ व पुरुष खड़े थे। बड़ा-सा दरवाजा बनाया गया था। बाजा बज रहा था। नया सत्संग-घर बना हुआ है परन्तु हुजूर केवल पाँच मिनट ठहरे। वहाँ से नारी ढक्का से आगे झम्बर आ जाता है परन्तु रास्ता ख़राब, कहीं कीचड़ थी, कहीं चो कभी-कभी हमें मोटर से नीचे उतर कर मोटर को पीछे से धकेलना पड़ता था। एक जगह कार कीचड़ में धँस गई। झम्बर की

^{*}बरसाती नदी या नाला।

आबादी ऊँची जगह पर है और बिखरी हुई है। यहाँ भी बाजे बज रहे थे और भीड़ को तो कोई सीमा न थी। जब हजरत ईसा मसीह ने अपना प्रसिद्ध उपदेश जेरूसलम की पहाड़ी पर किया होगा, उस समय भी इतनी जनता न होगी। छतें, ग्रस्ते, मैदान, खेत सब स्त्रियों और पुरुषों से भरे पड़े थे। हुजूर चाहते थे कि उन सब व्यक्तियों को सत्संग सुनायें, परन्तु लाउड-स्पीकर न पहुँच सके क्योंकि लारी रास्ते में कीचड़ में दो मील पीछे ही धँस गई थी। हमारा सारा सामान उठाकर वहाँ से लाना पड़ा। लाउड-स्पीकर के बिना इतने ज्यादा लोगों को सत्संग सुनाना सम्भव न था। हमें भी बड़ा अफ़सोस रहा।

ये लोग धन्य हैं जो इतने ज्यादा व्यक्तियों के रहने का तथा खाने-पीने का प्रबन्ध दो रात के लिये करेंगे। हमें ऊपर की मंजिल में कमरे दिये गए मगर वे बारिश के कारण सीले और ठण्डे थे। हमारे कमरे में पलंगों से जरा ऊँचे तीन बड़े-बड़े झरोखे हैं, इसलिये इस कमरे को काफ़ी हवादार मान सकते हैं। डॉक्टर साहिब तो चाहते हैं कि रात को सोते वक़्त दरवाज़ा भी खुला रखें तािक ऑक्सीजन अच्छी तरह मिल सके, परन्तु मैंने उन्हे बड़ी मुश्किल से मनाया कि रात को दरवाज़ा ज़रूर बन्द कर देना चाहिये। वे शायद न मानते परन्तु मैंने उनका ध्यान एक और हवा आने के रास्ते की ओर दिलाया। कमरे पर फूस की छत है और उस छत और दीवारों के बीच काफ़ी अन्तर है जिसमें से रात को हवा आती रहेगी। इसके इलावा झरोखे में कोई तख़्ते नहीं हैं केवल चादरें उनके आगे लटका रखी हैं।

हरक चेह बादा बाद मा कश्ती दर आब अन्दाख्तेम। अर्थात् , जो हो सो हो, हमने तो नाव पानी में उतार दी।

18 दिसम्बर, 1942 को 11 बजे सत्संग बड़े मैदान में हुआ। इससे पहले मैं और डॉक्टर साहिब आसपास की पहाड़ियों पर सैर के लिये गए। सत्संग में 'यह तन दुर्लभ तुमने पाया' पढ़ा गया। हुजूर ने फ़रमाया कि जो पुरुष पत्थर की मूर्ति पूजते हैं वे पहाड़ियों में पैदा होते हैं जहाँ कि बहुत वटियाँ होती हैं। कोई 20,000 व्यक्ति उपस्थित थे। उसी दिन शाम के तीन बजे फिर सत्संग हुआ इसमें क़रीब 25,000 लोग होंगे। सत्संग के बाद शाम को हुजूर बाहर सैर को तशरीफ़ ले गये। रास्ते में पहाड़ी पर सत्संगियों की छोटी-सी आबादी थी। वहाँ से स्त्रियाँ दर्शन करने उतरीं। एक ने बताया कि उसकी लड़की मियादी बुख़ार से छ:

महीने तक बीमार रही। एक दिन सुबह रोने लगी कि सुबह हुजूर आये थे परन्तु वापस चले गए कि अभी तेरा वक़्त नहीं आया फिर उसके कुछ दिन बाद चोला छोड़ गई। इन सत्सींगयों पर हुजूर की बड़ी दया है। हुजूर फ़रमाते हैं कि मालिक का नाम ग़रीबनिवाज़ है।

19 दिसम्बर, 1942 को सुबह 7 बजे हमारे बिस्तरे बैलगाड़ियों में लाद कर नाहरी की ओर भेज दिये गए, जो यहाँ से तीन मील होगा। हम मोटर कार में साढ़े नौ बजे के लगभग आ पहुँच। हुज़ूर ने सुबह 11 बजे मैदान में सत्संग किया। यह गाँव मैदान में स्थित है। यहाँ लोग झम्बर से अधिक ख़ुशहाल हैं, क्योंकि यह गाँव पहाड़ियों और चोओं से बचा हुआ है, परनु इस गाँव की आबादी निचान में है। इसिलये वर्षा में पानी खड़ा रहता होगा। सत्संग के बाद हुज़ूर से नाम लेनेवाले बहुत-से स्त्री-पुरुष इकट्ठे हो गये। हुज़ूर ने 1200 स्त्री-पुरुषों को नामदान दिया। इसके बाद हुज़ूर तीन मील दूर कराला, मोटर द्वारा गये।

हुजूर को जब आराम के लिये कहा जाये तो कहते हैं कि इस देह को अन्त में मिट जाना है। जितना परोपकार हो सके, कर लें। न उनको खाना सूझता है, न नहाना और न सैर। सारा दिन पर-हित में लगे रहते हैं और फिर किसी को जताते भी नहीं। आप अपनी बे-आरामी, कम सोने और स्थान-स्थान घूमने वग़ैरह की शिकायत भी नहीं करते। यह काम मनुष्य का नहीं है।

हुजूर महाराज जी का लौटना

20 दिसम्बर, 1942 सुबह 8 बजे विदा हुए। रास्ते में काफ़ी रेत थी जिसमें मोटर कार धँस गई। लोगों ने बड़ी किठनाई से धकेल कर निकाली। 9 बजे कालसिंघी में एक विवाह सम्पन्न किया गया। इसके बाद ऊना आये, वहाँ से हरौली, जोकि रायबहादुर लाला जोधा मल का गाँव है, जाना था, परन्तु रास्ता न मिला। फिर होशियारपुर को चल पड़े। ऊना की सड़क पर बहुत मोड़ आते हैं। होशियारपुर से 4 मील बनखण्डी में, जोिक सबसे अधिक ऊँचाई पर है, आराम करने का सरकारी बँगला है। उससे परे जहानखेला, होशियारपुर से चार मील है। वहाँ हुजूर ने सत्संग किया। उसके बाद आदमपुर में गिलयों में से होकर पोस्ट-मास्टर बाबू ख़ुशी राम के यहाँ किसी बीमार को देखने पहुँचे। वहाँ से जालन्थर शहर सरदार साहिब के मकान पर आ गये। वहाँ हमने ख़ूब पेट भर कर, सरदार

.21 दिसम्बर 1942

साहिब की दावत का आनन्द लिया। आर्यों की दुकान की मिठाई, फल, दूध। वहाँ से चल कर शाम को 5-6 बजे के क़रीब डेरे पहुँच गये। हुजूर ने सत्संग किया, फिर लाहौर जाने का प्रोग्राम बनाया।

हुजूर का डेरे में निवास 21 दिसम्बर से 6 जनवरी, 1943

आज लाहौर जाने की तैयारी है। शाम को सत्संग में हुजूर ने समझाया कि जब तक विरह न हो परदा कैसे खुले ? कुछ गैर-सत्संगी ऐसे निर्मल होते हैं कि सतगुरु उनके साथ-साथ फिरते हैं। कुछ ऐसे श्रद्धालु और प्रेमी हैं कि तीर्थों को साष्टाँग दण्डवत् करते हुए चले जाते हैं। आगे जाकर क्या मिलता है ? ईंट और पत्थर! बागड़ में लोग आम तौर पर इसी प्रकार गोगा पूजने जाते हैं। कहते हैं कि गोगा एक चौहान राजपूत था जो साँप बन गया था। उनको नाम और सतगुरु का पता नहीं है। बड़े भाग्य हैं उनके जिनको कलियुग में नाम मिल गया है।

22 दिसम्बर, 1942 सुबह 6 बजे हुज़ूर कार में लाहौर चले गए। वहाँ राय साहिब का डॉक्टरी निरीक्षण करवाया गया।

23 दिसम्बर, 1942 शाम को वापस आये।

24 दिसम्बर, 1942 सुबह को वर्षा थी और बड़ी ठण्ड थी। इसलिये बाहर से लोग पहले वर्षों की अपेक्षा कम आये। शाम को भोग डालने के बाद श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से केवल शब्द पढ़े गए।

25 दिसम्बर, 1942 सुबह हुज़ूर श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का भोग डालने वड़ाइच गाँव में गये। वहाँ से 12.30 बजे वापस आकर अपने कमरे में चले गए, उससे पहले डाक देखी। उस समय एक बीबी ने कहा कि उसका लड़का गुज़र गया है और पूछा वह कहाँ गया ? हुज़ूर ने उत्तर दिया कि तुम्हारे घर में भी तो किसी के यहाँ से आया था। अब जिनके घर गया, उनका है। तुम्हारा उस पर क्या अधिकार है ?

26 दिसम्बर, 1942 को सुबह सत्संग में भोग-वाणी पढ़ी गई। हुजूर ने फ़रमाया, 'आसां पर्वत जेंडियाँ मौत तनावाँ हेठ'। शाम को स्वामी जी महाराज की वाणी से आषाड़ व सावन का महीना पढ़ा गया। हुजूर ने फ़रमाया कि मौत

प्रकार की है। एक सत्संगी की और दूसरी गैर-सत्संगी की। गैर-सत्संगी दिनयादार की मृत्यु का दृश्य बड़ा भयानक होता है। इधर तो उसकी आत्मा शरीर से उड़ने को होती है, उधर सम्बन्धी लोग रोना-पीटना शुरू कर देते हैं, जिससे उसकी आत्मा को शान्ति से निकलने का अवसर नहीं मिलता। चाहिये तो यह कि जब कोई मृत्यु के निकट हो तो उसके पास जो भी हों उसको धैर्य और शान्ति से विदा करें, रोयें-चिल्लायें नहीं। उसको धैर्य दें कि हमारी फ़िक्र न करो, अपना ध्यान परमात्मा में लगाओ। यदि सत्संगी मरता है तो भी यही नियम लागू होना चाहिये, परन्तु उस समय उसके निकट कोई भी गैर-सत्संगी नहीं होना चाहिये, चाहे वह कैसा ही निकट सम्बन्धी क्यों न हो।

27 दिसम्बर, 1942 सुबह को श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'सूरत देख न भूल गवारा। मिथन मोहारा झूठ पसारा^{भ3} पढ़ा गया। हुजूर ने फ़रमाया कि सन्तों की शिक्षा तो दसवें द्वार अर्थात् पारब्रह्म से आरम्भ होती है, जहाँ सन्तों और भक्तों की मण्डलियाँ हैं और जहाँ से सभी रागों की धुनें निकली हैं। जब इधर से आत्मा वहाँ पहुँचती है तो वहाँ की आत्माएँ बड़े प्रेम और आदर-भाव से उसके स्वागत के लिये आती हैं और बधाई देती हैं कि धन्य हो तुम जो माया और माया के पदार्थों को त्यागकर यहाँ आ गई हो। हुजूर ने फ़रमाया कि नाम का मिलना आसान नहीं। कई जन्मों के श्रेष्ठ कर्म इकट्ठे हों तो नाम मिलता है और साधु-महात्माओं का पहले जन्मों का संग फल लाता है। फ़रमाया कि धर्मदास से कबीर साहिब का आठ जन्म का सम्बन्ध था। एक सत्संगी ने विनती की कि जब वह दस वर्ष का था तो उसकी आत्मा स्वप्न में सूरज व चाँद लोक पार करके ऊपर चली गई। ऐसा मालूम होता था कि वह एक बालक है और किसी महात्मा की गोद में लेटा है परन्तु वह रोने लगा तो उस महात्मा ने उसे गोद से बाहर फैंक दिया, बताइये, वह कौन महात्मा थे ? हुजूर ने कहा कि जब तुम अन्दर जाओगे तो वह ख़ुद ही मिल जायेगा, बाहर से बताने की आवश्यकता नहीं है।

28 दिसम्बर, 1942 सुबह 'रामा रम रामो सुन' १ शब्द गुरु राम दास साहिब का श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से लिया गया। यह शब्द प्राय: हुजूर पढ़वाया करते हैं। इसमें एक शब्द 'सुन' का ऐसा आया है जिससे जिज्ञासु की आँखें खुलनी चाहिये अर्थात् , यह कि राम नाम केवल मानने का विषय ही नहीं है, बल्कि सुनने का भी है। अर्थात् , परमात्मा की वाणी है जो सुनी जा सकती है। शाम को स्वामी जी की कविता के बारहमाहा में से क्वार का महीना पढ़ा गया। हुजूर ने फ़रमाया कि संसार के मनुष्य विषयों में ऐसे ग्रस्त हो गये हैं कि उनके नशे में सन्तों-महात्माओं के उपदेश को सुनकर टाल देते हैं। इसके बाद गुरु नानक का शब्द मारू राग में से 'कुदरत करनैहार अपारा" पढ़ा गया। उसके बाद कबीर साहिब का शब्द 'महरम होय सो जाने साधी ऐसा देश हमारा" सुनाया गया। रात को तीन दिन की डाक सुनी। लगभग ९ बज गये। रात को हुजूर 2 बजे सोये। आज फिर लोग उनको सोने नहीं देंगे।

29 दिसम्बर, 1942 भण्डारे का दिन था। सत्संग 1 बजे के बाद आरम्भ हुआ और 4 बजे के क़रीब समाप्त हुआ। सत्संग से पहले हुजूर सेवा में बैठे। सत्संग में हुजूरी वाणी में से 'सतगुरु का नाम पुकारो' अगेर श्री गुरु ग्रन्थ साहिब से 'हर कीआं कथा कहाणीआं गुर मीत सुणाईआं गढ़ पढ़ा गया। हुजूर ने फ़रमाया कि जब से यह संसार बना है तब से हम लोग यहाँ आये हुए हैं। करोड़ों युग बीत गये। कई प्रलय और महाप्रलय हो गई परन्तु हमें अपने घर जाने का रास्ता नहीं मिला, यदि मिलता तो हम यहाँ इस प्रदेश में क्यों बैठे होते। 'सतगुरु का नाम पुकारो' से मतलब है कि सतगुरु से नाम लेकर नाम का स्मरण करके सूर्य-चाँद और सितारों के पार जाकर सतगुरु के नूरी स्वरूप के दर्शन करो। सत्संग के अन्त में साई फुम्मनशाह ने अपनी वाणी सुनाकर संगत को प्रसन्न किया। इसके बाद शाम को सेवा में बैठे।

30 दिसम्बर, 1942 को हुजूर ने नामदान दिया और तीन बजे के लगभग अवकाश मिला।

31 दिसम्बर, 1942 को हुजूर ब्यास के लिये मोटर में दोपहर के समय चले गए। फिर वापस आकर कालाबाग़ व ऐबटाबाद की संगत को प्रसाद दिया, जो 100 के लगभग स्त्री-पुरुष होंगे। उसके बाद 5 बजे सत्संग हुआ, जिसमें कार्तिक का महीना हुजूरी वाणी में से पढ़ा गया। हुजूर ने फ़रमाया कि निचले छः कमलों में शब्द नहीं है। सत्तलोक मस्तिष्क के मध्य में तालू के स्थान पर है और भँवर गुफा जहाँ कि खोपड़ी और माथे का मेल है। ब्रह्म की मुक्ति कल्प पर्यन्त है। नौ सौ अठानवे चौकड़ी युग को एक कल्प कहते हैं। ब्रह्म की मुक्ति से

वापस आना पड़ता है। वेदान्ती दो प्रकार के हैं – एक सनातन और दूसरा नवीन। सनातन वेदान्ती व्यास, विशष्ठ आदि अभ्यास करके ब्रह्म में पहुँचे। परन्तु नवीन वेदान्तियों के केवल तीन ही स्थान हैं। नेत्र, हृदय और कण्ठ। जब वह आँखों के पीछे चिदाकाश में जाते हैं तो उनको अपना ही रूप दिखाई देता है, जोिक बहुत चमकदार है और उससे उनको कुछ-कुछ करामातें भी प्राप्त हो जाती हैं। उस नूर और स्वरूप को देखकर वह कह उठते हैं, 'अहं ब्रह्मास्मि'।

मैं ही ब्रह्म हूँ। वास्तव में यह रूप उनका निज रूप नहीं। निज रूप तो पारब्रह्म में मिलेगा। यह रूप उनके मन का है जो उनको धोखा देकर आगे जाने से रोकता है। कुछ सत्संगी भी इस रूप को देखकर रुकने लगते हैं।

एक सत्संगी ने शिकायत की कि मेरी माँ जिसको नाम मिला हुआ था, चारपाई पर ही मर गईं और उसके मरने के बाद कोई 'दिया' इत्यादि नहीं करवाया गया। उसकी बिरादरी कहती है कि उसकी गित नहीं हुई। हुजूर ने उत्तर दिया कि मेरा उपदेश तो अन्दर ज्योति के दर्शन करने का है, बाहर का दिया तो बेकार है। कोई सत्संगी मरने के समय दिया न करे और क्रिया–कर्म बिरादरी की रीति है, उसे कराओ या न कराओ, मरने वाले को उसका कोई लाभ नहीं पहुँचता। क्रिया–कर्म तो अपने जीवन में हर व्यक्ति को अभ्यास के द्वारा ही करने होते हैं। अभ्यास करना ही असली क्रिया–कर्म है। शेष क्रिया–कर्म केवल रिवाज हैं।

1 जनवरी, 1943 को जब हुजूर डाक देखने आये तो मैंने विनती की कि आज तो तबीयत थकी हुई मालूम होती है। हुजूर ने उत्तर दिया कि चलो मैंने तो गुजारा कर लिया, जो मेरी जगह आयेगा वह क्या करेगा ? इस पर सब लोगों की आँखें भर आईं। आज वर्षा व ठण्ड के कारण सत्संग नहीं हो सका।

2 जनवरी, 1943 को मैं जालन्थर गया, डेरे का काम था। रात को 9 बजे डेरे वापस पहुँचा, हुजूर को रिपोर्ट दी। वहाँ महन्त इन्द्र सिंह ऐबटाबादी के विषय में बातें हो रही थीं, जिनकी 31 दिसम्बर रात को 12 बजे ही मृत्यु हो गई थी। मरने से एक-दो दिन पहले उसने हुजूर से विनती की कि या तो मुझे स्वस्थ करके अपने साथ सिरसे ले चलो या जाने से पहले-पहले मेरा फ़ैसला कर दो। हुजूर उसकी अच्छाइयाँ याद करके ख़ुश हो रहे थे। बड़भागी जीव था जिससे गुरु इतने प्रसन्न थे। कल को घुमान जाना है परन्तु बादल छाये हुए हैं। आज सारा दिन जालन्धर में बूँदा-बाँदी होती रही।

4 जनवरी, 1943 को वर्षा होती रही। शाम को 4 बजे के लगभग आकाश साफ़ हुआ और धूप निकली। आजकल रोज बाहर से केवल पाँच-छ: पत्र आते हैं। बाहर जाने का प्रोग्राम मौसम की ख़राबी के कारण स्थिगत कर दिया है। शाम को सत्संग में भोग-वाणी पढ़ी गई। उसमें आया 'जिहबा गुन गोबिंद भजो करन सुनो हर नाम 19 इसकी तुलना गुरु राम दास के शब्द 'रामा रम रामो सुन 20 से करें तो पता चलता है कि नाम या राम सुनने का विषय है अर्थात् , शब्द की आवाज ही राम है और उसको सुनना चाहिये। यह श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का मत है।

5 जनवरी, 1943 को सुबह बड़ी धुन्ध थी, जोकि दोपहर 12 बजे के लगभग साफ़ हुई और सूर्य निकला। दोपहर को डाक देखने के बाद हुजूर ने साधुओं को प्रसाद बाँटा। फिर शाम को सत्संग किया, 'काल ने जगत अजब भरमाया'²¹ हुजूरी वाणी में से पढ़ा गया।

फिर फ़रमाया कि गुरु से प्रेम होगा तो परदा खुलेगा। जब तक इंजन न आये तो गाड़ियों को कौन खींचे ? गुरु इंजन है उसको प्रगट करो जो हर समय तुम्हारे साथ रहे और बातें करे। इसके बाद परदे खुलेंगे। यह भी फ़रमाया कि प्रेम करने से हृदय, ध्यान करने से आँखें और शब्द सुनने से कान निर्मल होते हैं।

हुज़ूर का घुमान में सत्संग

7 जनवरी,1943 को घुमान में हुजूर सत्संग-घर से हुजूर बाबा जी महाराज के निवास-स्थान पर गये। वह मकान कच्चा है और पिवत्र स्थान है। लोगों ने विनती की कि उसको पक्का बना दिया जाये। हुजूर ने फ़रमाया कि हुजूर बाबा जी महाराज से अन्तर में कई बार विनती की है। वह सुनकर चुप्पी साध लेते हैं। हमें डर लगता है कि उनकी इच्छा के विपरीत न हो जाये। हुजूर ने कहा कि गुरु रामदास का दरबार साहिब में कच्चा कोठा था। उन्होंने आज्ञा दी थी कि जो उसको गिरायेगा उसका कुछ नहीं रहेगा। अन्त में महाराजा रणजीत सिंह ने कहा कि में अवश्य उसकी जगह पक्का कोठा बनवाऊँगा। परिणाम यह हुआ कि उनका कुछ न रहा। घुमान में दो बजे से चार बजे तक सत्संग करके हुजूर साढ़े पाँच बजे डेरे पहुँच गये। कल दस बजे तरनतारन जाने का प्रोग्राम है।

8 से 11 जनवरी, 1943

हुजूर का तरनतारन व अमृतसर का दौरा

दोपहर के 12 बजे के बाद मोटर में तरनतारन की ओर चल दिये। जंडियाले से पहले नहर की पटरी, जो बाईं तरफ़ मुड़ती है, पर जाकर बायें हाथ को कच्चे रास्ते मोटर ले गए। ठल्हेर का गाँव नहर से तीन मील बाँये हाथ को था। वहाँ श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से दो शब्द पढ़कर 4 बजे के बाद तरनतारन को इस नहर की पटरी पर चले। रास्ते में औरंगाबाद को पार करके पक्की सड़क पकड़कर तरनतारन, डेरा सन्त बग्गा सिंह साहिब, की ओर चले। डेरे के द्वार पर स्वयं सन्त जी और उनकी संगत हुजूर के स्वागत के लिये उपस्थित थी। अन्दर बीबियाँ व पुरुष दर्शनों के लिये बेचैन थे और शब्द पढ़ रहे थे। हुजूर को बाबा जी ने अपना ऊपर का कमरा दे दिया। हमें हुजूर के सामने वाले कमरें में ऊपर की मंज़िल में ठहराया गया। दोनों कमरों के बीच चौड़ा छता हुआ बरामदा है और बरामदे में मेज-कुर्सियाँ, दिरयों के फ़र्श पर सजी हुई थीं। वहाँ दोनों बिराजमान हुए। हम नीचे फ़र्श पर बाबा जी को मत्था टेककर बैठ गए। इधर-उधर की बातों के बाद माल्टों का प्रसाद तरनतारन की संगत में बाँटा गया। फिर बाबा जी तो सामने के दूसरे मकान की ऊपर की मंज़िल में, जहाँ कि उनकी रसोई भी है, पधारे और हमने अपना डेरा जमाया। मैं और डॉक्टर साहिब सैर करने चले गए। वहाँ से वापस आकर रात को बाबा जी महाराज की ठहरने की जगह पर रसोई के पास आँगन में भोजन किया। तरनतारन की संगत ने बड़े प्रेम और श्रद्धा से हमारी आवभगत की। यहाँ रीति है कि संगत को सोने के लिये चारपाई नहीं दी जाती। बिजली का सब कमरों में अच्छा प्रबन्ध है।

दूसरे दिन 10 बजे से पहले अमृतसर के सत्संगी लाला अरूड़ चन्द इत्यादि आ पहुँचे और हम सब 10 बजे तरनतारन के प्रसिद्ध कोढ़ीख़ाने में गये। वहाँ के इंचार्ज डॉक्टर और उनकी श्रीमती जी बड़े प्रसन्नचित्त और मिलनसार हैं और कोढ़ियों व उनके बीबी-बच्चों को प्रेम से रखते हैं। 210 के लगभग पुरुष तथा स्वियाँ वहाँ रोग-ग्रस्त थे और 90 के लगभग बालक थे। यह बताया गया कि जब 66

10 जनवरी 1943

वहाँ से सन्त बग्गा सिंह जी के कुएँ पर गये। वहाँ ऊँचे चबूतरे पर हुजूर व बाबा बग्गा सिंह जी बिराजे, बाक़ी सब नीचे बैठ गये। साईं फ़ुम्मन शाह ने अपनी लिखी हुई पंजाबी कविता पढ़कर सुनाई और कृषकों को प्रसाद बाँटा। सत्संगियों ने विनती की कि इन बैलों पर भी दया-दृष्टि की जाये। मेरे विचार में तो हुजूर ने कोढ़ियों को भी प्रशादी देकर फिर से मनुष्य-जन्म का अधिकारी बना दिया। वहाँ से लौटकर खाना खाया। ढाई बजे के लगभग कोटली गाँव में, जोिक अमृतसर की ओर तीन मील पर स्थित है, गये। वहाँ सत्संग हुआ। बहुत-से जाट सिक्ख उपस्थित थे। लोग बड़े प्रेमी हैं। एक व्यक्ति ने मुझे बताया कि एक प्रेमी के पास पाँच भैसें दूध देनेवाली थीं। उसने संगत की दूध और मिठाई से ख़ूब

सेवा की। वहाँ से होकर अमृतसर की ओर, जोकि 11 मील है, चले। अमृतसर में हुजूर ने फिर सत्संग किया। मैं डाक का काम करता रहा। वहाँ से छ: बजे चल कर सूर्य छिपने से पहले गुरुद्वारा तरनतारन में लौट आये। वहाँ कुछ देर आराम करके हुजूर रेलवे लाईन व मण्डी की ओर पैदल सैर को चले गए। रास्ते में जमींदारों से अपनी सिरसा की ज़मीन की फ़सलों के विषय में बातचीत करते रहे।

रात को भोजन करके हम कुछ हुजूरी सत्संगी, हुजूर के पलंग के पास कमरे में चले गए। पहले तो सांसारिक बातें होती रही, फिर हुजूर ने दूसरे दिन सुबह के सत्संग के लिये श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से शब्द पढ़वा कर सुने। हुजूर की मेहनत का अनुमान इससे लगा सकते हैं कि जो शब्द उन्होंने कई बार सत्संगों में पढ़े और व्याख्या की, उनको सत्संग करने से पहले फिर पढ़वा कर सुन लेते हैं। उसके बाद मैंने प्रश्न किया कि हुजूर जो चौरासी लाख योनियों की गिनती बताया करते हैं, अर्थात् 30 लाख प्रकार के वृक्ष इत्यादि; 27 लाख प्रकार के कीड़े, पतंगे, साँप, बिच्छू इत्यादि; 14 लाख प्रकार के पक्षी, 9 लाख प्रकार के जल के जीव और 4 लाख प्रकार के मनुष्य, देवता, यक्ष, किन्नर, गन्धर्व, भूत-प्रेत इत्यादि। परन्तु पशुओं को गिनती से बाहर रखते हैं। हुजूर ने उत्तर दिया कि पशु भी ऊँची श्रेणी अर्थात् मनुष्यों की श्रेणी में शामिल हैं। कोयटे वाले एक सत्संगी ने पूछा कि जब एक सतगुरु गुप्त हो जाये और अभी सत्संगी का ध्यान नहीं जमा तो किसका ध्यान करे। उत्तर मिला कि स्मरण करने से जब मन और आत्मा इकट्ठे होकर ऊपर चाँद-सूर्य से परे जायेंगे तो सतगुरु का स्वरूप स्वयं ही आ जायेगा। उनके उत्तराधिकारी से नये सिरे से नाम लेने की आवश्यकता नहीं। केवल उनसे सत्संग व भजन में रुकावट के विषय में मालूम किया जा सकता है, परन्तु अन्त समय वही चोला दर्शन देगा जिसने नाम दिया है। कभी-कभी उत्तराधिकारी का चोला भी, अर्थात् दोनों चोले अन्त समय दर्शन दे देते हैं। गुरु कभी नहीं मरता, केवल स्थूल देह लुप्त हो जाती है। परन्तु अन्तर में स्वरूप, दर्शन, सहायता व दया सेवक को मिलती रहती है। बाहर समझाने-बुझाने का कार्य वारिस चोला करता है।

10 जनवरी, 1943 को सुबह 10 बजे अच्छा सत्संग हुआ। दो-तीन शब्द श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'तेरीआं खाणी तेरीआं बाणी'²² 'रामा रम रामो सुन'²³

और 'घर मह घर देखाय देय 124 पढ़े गये। फिर हुज़ूर महाराज जी ने स्वामी जी की सार बचन छन्द-बन्द में से विनती का विस्तार से वर्णन किया 'करूँ बेनती दोउ कर जोरी''। क सन्तों ने श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में सबसे ऊँचे देश के मालिक के लिये स्वामी-पद का प्रयोग किया है। राधास्वामी का अर्थ, आत्मा का स्वामी है। फिर 'काहु न जानी शब्द की रीता'। इसका यह अर्थ नहीं कि शब्द का भेद स्वामी जी से पहले किसी ने प्रगट नहीं किया था, बल्कि सेवक कहता है कि मैंने पहले तीन युगों में बिलकुल शब्द का भेद न जाना, नहीं तो मेरी मुक्ति हो जाती और मैं कलियुग में इस संसार में उपस्थित ही न होता। अब स्वामी जी महाराज ने मुझ पर शब्द प्रगट किया है। इसका यह अर्थ नहीं कि स्वामी जी से पहले कोई सन्त ही दुनिया में नहीं आया। फिर फ़रमाया कि 'क्षर' का अर्थ है यह संसार, 'अक्षर' का अर्थ है परलोक। गुरु नानक साहिब ने भी फ़रमाया है कि यह सारी त्रिलोकी 52 अक्षरों में है। यह नाश हो जायेगी, परन्तु अक्षर देश में दो शब्द हैं जिनमें से एक से निचली रचना हुई और दूसरा ऊपर को ले जाता है। 'जे तूं पढ़या पंडित बीना दुइ अक्खर दुइ नावा ¹²⁷ दसवें द्वार में यह दो अक्षर हैं। एक से निचली सृष्टि हुई, उसको छोड़ना है। दूसरा ऊपर की रचना का है। वहाँ की धुन सुनने से जन्म-जन्मान्तरों की ख़बर हो जाती है और यही शब्द है। उससे नीचे के शब्द में माया की मिलावट है। यह रहस्य बहुत गूढ़ है, सिवाय पूर्ण महात्माओं के किसी को नहीं पता। वैसे ही हुजूर ने कल रात फ़रमाया कि वास्तव में मनुष्य के वुजुद में 18 कमल हैं जिनमें से स्वामी जी महाराज ने 12 बड़े-बड़े कमल अर्थात् स्टेशन या चक्र, कार्तिक के महीने में बतलाये हैं। पिण्ड के छ: चक्र ब्रह्माण्ड के छ: चक्रों का प्रतिबिम्ब हैं और ब्रह्माण्ड के छ: चक्र ऊपर के छ: चक्रों के प्रतिबिम्ब हैं।

- 1. गणेश चक्र, चार दल। इसी प्रकार अन्तःकरण चार दल आँखों से ऊपर मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार। फिर त्रिकुटी का चार दल का कमल।
- 2. इंद्री चक्र छ: दल। इसी प्रकार अन्तःकरण से ऊपर छ: दल का कमल। फिर दसवें द्वार के निचले भाग का छ: दल का कमल।
- 3. विष्णु चक्र आठ दल। उसके ऊपर तीसरा तिल अष्ट-दल। फिर दसवें द्वार में ऊपर के भाग में अष्ट-दल। इसी प्रकार तीन ऊपर के चक्रों का हाल है।

अध्याय 4 सिकन्दरपुर की यात्रा का हाल 12 जनवरी, 1943

रात फिर वर्षा रही। हुजूर का प्रोग्राम सिरसा जाने का पहले से ही बन चुका था। इसलिये हम सब लोग सुबह छ: बजे तैयार हो गये और वर्षा में ही चल दिये। ब्यास तक सड़क कच्ची थी और वर्षा से ख़राब हो गई थी। जब जालन्थर पहुँचे तो वर्षा हो रही थी। वहाँ से गस्ते में फगवाड़ा और मौली के कुछ सत्संगियों को दर्शन देते हुए फ़िल्लौर आये, वहाँ वर्षा बन्द थी। वहाँ तीन-चार मिनट लगाकर लुधियाना को चल दिये। वहाँ डाकघर के पास ग्राँड ट्रंक (जी. टी.) रोड पर स्त्री-पुरुष दर्शनों के लिये आये हुए थे। वहाँ से मोगा में डॉक्टर प्रेम नाथ साहिब के यहाँ गये तो तेज वर्षा हो रही थी। डॉक्टर साहिब को आश्चर्य हुआ कि ऐसी वर्षा में इतनी लम्बी यात्रा ? वहाँ से सरदार भाग सिंह जैलदार के मकान पर गये। मगर उतरे नहीं। फिर सीधे कोटकपूरा, मुक्तसर, मलोट होते हुए डबवाली पहुँच गये। वहाँ वर्षा नहीं थी। आगे सिरसा सत्संग में सूर्य चमकने लगा। वहाँ साधु लाला कर्म चन्द उपस्थित थे। अधिक सत्संगी उपस्थित नहीं थे। वहाँ भी कार में बैठे रहे। वहाँ से ग्रेवाल मिल्स, केरा में, जोकि हिसार जाने वाली पक्की सड़क के पास है, वहाँ आकर मोटर कार छोड़ी। 2.15 बजे के लगभग दोपहर को पहुँचे। वहाँ खाना खाया। हुजूर ने काम की देख-भाल की और वहाँ से शाम को 5.30 बजे के लगभग पैदल सिकन्दरपुर को, जहाँ सरदार हरबन्स सिंह का निवास-स्थान है, आ गये। दिन-भर के थके-हारे थे। खाना खाकर सो गये।

हुजूर का सिकन्दरपुर में निवास 13 जनवरी, 1943

नहा-धोकर हुजूर और मैं पैदल मिल में 10 बजे पहुँचे। राय साहिब लाला हरनारायण आदि ताँगे में पहुँचे। आज कमाद पेलने का काम बन्द था, क्योंकि लोग बाजरी लेने गये हुए थे। दोपहर को 2 बजे के लगभग हिसार की बस से डॉक्टर साहिब, प्रोफ़ेसर साहिब व दूसरे सत्संगी अपने सामान के साथ आ गये। सबने खाना खाया और सिकन्दरपुर डेरा जमाने के लिये आ गये। हम वहीं रहे। डाक लिखी। परन्तु धूप अधिक नहीं थी। क्योंकि आसमान पर बादल मेंडरा रहे थे। शाम को हवा भी ठण्डी चलने लगी। मैं व हुजूर पैदल शाम के 6 बजे सिकन्दरपुर आ गये। कल कमाद का काम शुरू होगा।

एक बाबू ने अपनी पत्नी के विषय में पत्र भेजा कि यद्यपि वह सत्संगिन थी, मरने से तीन-चार दिन पहले उसको भयानक शक्तें दिखाई देने लगीं और वह चीखें मारती रही। यहाँ तक कि मरते दम तक चीख़ती रही। उत्तर दिया गया कि उसने भजन-सिमरन नहीं किया था, उसके विचार शक्तें बन-बन कर उसको डराते थे। परनु चिन्ता नहीं करनी चाहिये। जब आत्मा सिमट कर सुषुम्ना के पास जाती है तो सतगुरु सँभाल लेते हैं और उसके पापों की ओर ध्यान नहीं देते।

जुग जुग भूले जीव अनेका। दया भाव सतगुरु का ठेका।

14 जनवरी को माघ की संक्रान्ति है और आज कुछ-कुछ कमाद का कार्य आरम्भ हुआ, परन्तु अभी तक जोर-शोर से नहीं होने लगा। शाम के 5 बजे के लगभग हुजूर कार में सिरसे सत्संग-घर पहुँच गये। डाक देखने के बाद श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से बारहमाहा का सत्संग आरम्भ कर दिया। सत्संग के समाप्त होने पर प्रसाद बँटा और सब लोग लौट गये। बादल हो गये थे। ठण्ड अधिक हो गई। हम सब लोग सिकन्दरपुर आ गये। रात को 10 बजे के लगभग फिर घर के अन्दर सहन में सेवादारों के लिये बारहमाहा पढ़ा गया। उसके बाद प्रसाद बाँटा गया। रात के 11.15 बजे सब सो गये।

15 जनवरी को सुबह ही से दो इंजन काम करने लगे और चार-पाँच भट्ठियाँ गुड़ बनाने लगीं। शाम को 7 बजे हम घर आ गये। 16 जनवरी को हुजूर 10 बजे सुबह बाहर के सहन में टहलने के लिये आ गये तो एक नौकर ने रिपोर्ट की कि एक साँड की टाँगें टूट गई हैं, क्योंकि वह एक दूसरे साँड से लड़ा था। यह भी कहा कि इन दोनों साँडों में इतनी शत्रुता है कि जब भी मिलते है एक दूसरे पर आक्रमण कर देते है। हुजूर ने फ़रमाया कि देखो यह पहले जन्मों के संस्कारों का परिणाम है वरना जानवरों में शत्रुता कैसी ? वैसे ही संस्कृत के एक किव ने कहा है कि पदार्थों में कोई आन्तरिक शक्ति एक को दूसरे की ओर खींचती है। लगाव और मोहब्बत अर्थात् राग व द्वेष बाहरी सामानों की परवाह नहीं करते :

रूहानी डायरी भाग 1

व्यतिषजित पदार्थानान्तरः कोपि हेतु-र्न खलु बहिरुपाधीम् प्रीतयः संश्रयन्ते॥

वहाँ से एक बीमार लड़के का हाल पूछकर हुज़ूर मिल में पधारे और वहाँ से शाम को आठ बजे लौट आये। कार्य पहले से अधिक हो रहा है।

17 जनवरी को रविवार था। हुजूर सिरसे सत्संग के लिये चार-पाँच बजे के बीच चले गए। बादल हो रहे थे। जब हम वापस आये, काफ़ी ठण्ड थी। आजकल ग्रेवाल मिल्स में गन्ने से गुड़ बना रहे हैं। मेरठ ज़िले से गुड़ बनाने वाले आये हुए हैं। यहाँ का गन्ना काफ़ी मोटा और लम्बा होता है। एक गन्ने की लम्बाई आक काटकर 11.30 फ़ुट निकली और मोटाई भी काफ़ी थी। दुआबे में ऐसे गन्ने नहीं देखे। लोहे के बेलने इंजन से चलते हैं और लेटवाँ धुरे के गिर्द घूमते हैं। एक घण्टे में बहुत-सा कमाद (गन्ना) पेर कर रख देते हैं। इसलिये इंजन चलाने से पहले गन्ने को काटकर और साफ़ करके इकट्ठा कर लेते हैं, जिससे कि बीच में इंजन को खड़ा न करना पड़े। इस प्रकार सुबह से दोपहर तक एक बड़ा खेत पेरा जाता है। शेष दिन गन्ना काटने में बीत जाता है या गुड़ बनाने में। 8-9 भट्टियाँ हैं, जिनमें रस को काढ़ते हैं। हरएक भट्टी के ऊपर एक अण्डे की-सी शक्ल का चौड़ा-सा लोहे का कढ़ाहा होता है। दुआबे में कढ़ाहों में, जोिक गहरे होते हैं, रस को काढ़ते हैं। परन्तु यहाँ कम गहरे कढ़ाहे हैं। इनकी भाप बनाने की सतह ज़्यादा होती है। इसलिये रस जल्दी गाढ़ा हो जाता है। भट्टी भी मामूली शक्ल की नहीं होती बल्कि साईंस के सिद्धान्त पर बनी है। जहाँ अण्डे की-सी शक्ल का लोहे का कढ़ाहा रखते है वह गढ़ा भी

अण्डे की सी शक्ल का होता है और उसकी गहराई भी लगभग इतनी होती है जितनी कि कढ़ाहे की, जिससे कि ईंधन बेकार न हो जाये। उस गड्डे के आगे एक और आयताकार कुएँ से कम गहरा छोटा-सा गड्डा है जिसमें एक छिद्र के बीच में से ईंधन दूसरे गड्डे में धकेलते हैं। इस दूसरे गड्डे के नीचे से एक मोरी जमीन में से पहले गड्डे के परले किनारे पर जाकर खुलती है, जिससे हवा उस गड्डे से बाहर से जाकर ईंधन को भली प्रकार जलाती है। ईंधन से पूरी-पूरी गर्मी ली जाती है। इससे जल्दी ही रस गाढ़ा हो जाता है और उसमें कभी-कभी भिण्डी की शाखाओं को पानी में भिगोकर रस में डालते रहते हैं, जिससे रस में से मैल ऊपर आ जाता है। उस मैल को कलछों से किसी बर्तन में डालते हैं। जिससे उस मैल में भी यदि कोई मिठास रह गई हो तो उसको दो या तीन बार निकाला जाये। इस प्रकार रस बड़ा साफ़ होता है और गुड़ अधिक साफ़-सुथरा बनता है। आजकल सुना है यहाँ गुड़ 12 रु. मन बिकता है। भट्टी के विषय में एक बात रह गई है कि हरएक भट्टी के उस गड्डे के, जिस पर कढ़ाहा रखते हैं, परले सिरे से एक बन्द मोरी बाहर जाती है, जिसके सिरे पर ईंटों की या मिट्टी की ऊँची-सी-चिमनी बनी होती है, जिससे कि मोरी के रास्ते धुआँ चिमनी से बाहर निकलता रहे और उसको काला न करे।

18 जनवरी को बाजरे के पिड़ और तूड़ी का कुप देखकर हुजूर 11.00 बजे सुबह कारख़ाने में पहुँच गये। हुजूर पैदल जाना पसन्द करते हैं, यही उनकी सेहत का राज है। कारख़ाने में जाकर भी काम की देखभाल करते हुए घूमते रहते हैं। केवल खाना खाकर कभी-कभी थोड़ा-सा लेट लेते हैं। भोजन में मटर आपको पसन्द आते हैं। और कश्मीरी सेब की तरकारी या कच्चा एक-आध सेब रोज ताक़त क़ायम रखने के लिये खाते हैं। उसके साथ-साथ कभी-कभी मौसमी या मीठा सन्तरा ले लेते हैं। मिठाई व तली हुई चीज़ों से परहेज करते हैं। सरसों का साग आपको भाता है। परिश्रम की यह हद है कि इस आयु में प्रतिदिन रात को 9 बजे के बाद ठण्ड में मिल से घर आते हैं। सुबह से लेकर रात के 9-10 बजे तक बाहर ख़ेतों में सर्दी में खड़े रहकर काम करवाते हैं और फिर तड़के उठकर भजन भी करते हैं।

मिल में पहले गुड़ बन रहा था परन्तु चूँिक गुड़ के लिये कोई मार्केट नहीं है इसलिये अब खाँड बनाने की तैयारी है। रस को गाढ़ा करके बड़े–बड़े ड्रमों में डाल देते हैं, राब के तौर पर। उस राब से खाँड बनेगी। हर रोज़ गन्ने के 15-16 गड्डे मिल में आते हैं और पेरे जाते हैं। सुबह 12 बजे तक गन्ने को पेरते हैं फिर यह काम बन्द हो जाता है। मगर सुबह से शाम तक भट्टियों में रस काढ़ने का काम जारी रहता है। गन्ने की कटाई और छिलाई अँधेरे तक होती रहती है और खेतों से कटे हुए गन्ने मिल से गड्डे में या आदिमयों के सिरों पर आते हैं। हुज़ूर हर काम को स्वयं देखते हैं, मशीनों को, कटाई को, राब बनाने को, इत्यादि। बातों-बातों में हुज़ूर ने फ़रमाया कि शरीफ़ घरानों की औरतें अपने घर में आये हुए मेहमानों की आवभगत करती हैं, जिससे उनके वंश का नाम रोशन होता है और जब उनके पुरुष दूसरों के घरों में जाते हैं, तो उनकी भी अच्छी आवभगत होती है।

25 जनवरी को शाम के समय गन्ने के खेतों में बैठकर हुजूर ने अपने मुखारबिन्द से यह नीचे लिखा हुआ पत्र एक अभ्यासी सत्संगी को लिखवाया। सबके लाभ के लिये यहाँ लिखना आवश्यक समझा। ''मैं बहुत ख़ुश हूँ कि तुमको परमार्थ का शौक़ है। परन्तु अभी आपको सत्संग की जानकारी नहीं है। आपको समझाने की काफ़ी आवश्यकता है। इस संसार से मुक्ति के केवल तीन साधन हैं-सिमरन, ध्यान और शब्द। यह तीनों शरीर में अपना-अपना काम करते हैं। सबसे पहले हमारा यह काम है कि हम अपनी आत्मा और मन को नौ दरवाजों से निकालकर आँखों के पीछे स्थित दसवीं गली को खोलें। यह काम केवल सिमरन से हो सकता है। जब आप सिमरन द्वारा प्रकाश, तारा मण्डल, सूर्य मण्डल और चन्द्र मण्डल पार कर जायें तो उसके ऊपर सतगुरु खड़े हैं। सतगुरु के चरणों तक पहुँचने के लिये केवल सिमरन की ही ज़रूरत है और किसी चीज़ की नहीं। यहाँ पहुँचकर सिमरन का कोर्स समाप्त हो जाता है। सिमरन उससे आगे नहीं पहुँचा सकता। जब सतगुरु सामने आ जायें तो ध्यान की जरूरत है। आरम्भ में जब सतगुरु के दर्शन अन्दर होते हैं तो अध्यासी को बड़ी प्रसन्नता होती है और यह है भी ऊँची पदवी। पहले-पहले सतगुरु आते हैं और चले जाते हैं। असल में अभ्यासी को ही ऐसे लगता है, वरना सतगुरु तो अपनी जगह खड़े हैं। अभ्यासी की रूह आती है और जाती है क्योंकि उसका ध्यान कमज़ोर है। उस समय जिज्ञासु

31 जनवरी 1943

को ध्यान पर जोर देना चाहिये। सतगुरु के स्वरूप का इतना ध्यान करे कि अपना आपा भूल जाये और ऐसा लगे कि मैं वही हूँ जिसका ध्यान कर रहा हूँ। दूसरे शब्दों में यह कहो कि सतगुरु का रूप हो जाये, अर्थात् सतगुरु में समा जाये। जब यह हालत होगी कि सतगुरु हमेशा उसके साथ रहेंगे और उसको साथ लेकर ऊपर चल देंगे, उस वक्ष्त जिज्ञासु घण्टे की धुन के नजदीक हो जाता है और वह ध्विन उसको धीरे-धीरे खींचकर मंजिल-दर-मंजिल ऊपर ले जायेगी और हर मंजिल पर सतगुरु साथ होंगे। उस समय जो सवाल चाहो सतगुरु से पूछ सकते हो, उसका जवाब मिलेगा। यदि सतगुरु की कृपा से अभ्यासी को यह अवस्था प्राप्त हो जाये तो उसको इस ताक़त को हज़म करना चाहिये। सिवाय सतगुरु के किसी से इसका जिक्र न करे। इस भेद को इस प्रकार छुपाना चाहिये जैसे स्त्री अपने बदन को छुपाती है। चूँकि अभी तुम्हारा अभ्यास कच्चा है, तुम्हारी आत्मा अन्दर जाने से उरती है। यदि तुम्हें सिमरन के समय प्रकाश आया था तो तुम्हें बैठे रहना चाहिये था। तुम्हें और अधिक ध्यान से उस प्रकाश को देखना चाहिये था। आँखें नहीं खोलनी चाहिये। तुम्हें प्रेम और प्यार से अन्दर जाना चाहिये। जब सतगुरु तुम्हारे अन्दर हैं तुम्हें अन्दर जाने से नहीं डरना चाहिये।''

28 जनवरी कल रात हुजूर कमाद के खेत से 12 बजे वापस आये और परसों रात के 11 बजे आए थे। इतनी मेहनत कोई व्यक्ति नहीं कर सकता। सारा-सारा दिन लगे रहते हैं। हमें 8 बजे के लगभग पहले ही घर भेज देते हैं।

30 जनवरी को महीने के अन्तिम इतवार का सत्संग हुजूर ने शाम के 5

बजे से 7 बजे तक सत्संग-घर सिरसे में किया।

31 जनवरी को लाला कुंज लाल वकील, हिसार वाले और कुछ दूसरे लोग हिसार व हाँसी से आये थे। हुजूरी पोथी में से 'नाम निर्णय' पढ़ा गया। हुजूर ने फ़रमाया कि लोगों ने मन और रूह को आँखों से ऊपर इकट्ठा करके ले जाने के लिये प्राणायाम, हठ-योग, ध्यान-योग इत्यादि बनाये। प्राणायाम वाले मन और रूह के साथ प्राणों को भी, जोकि जड़ हैं, समेटकर ले गये। जिसकी ज़रूरत न थी। कलियुग में सबसे आसान साधन सिमरन है, जिसके द्वारा मन और रूह को इकट्ठा करके ऊपर ले जा सकते हैं तथा देवयान और पितृयान मार्ग जो वेदों में बताया गया है, उसमें गुजर सकते हैं। एक सत्संगी ने कहा कि

जब इस शब्द में 'गुरू की मौज में सब कुछ' लिखा है तो आप कैसे कहते है कि सत्संगी को अपनी मेहनत से मन व रूह समेटकर तीसरे तिल में आ जाना चाहिये। उत्तर मिला कि गुरु को तो ताक़त है कि किसी की रूह को खींचकर ऊपर के मण्डलों में ले जाये, परन्तु उस रूह में सहन-शक्ति नहीं होती। यदि ऐसा किया जाये तो मनुष्य पागल हो जाये या मस्ती में घर-बार को छोड़ दे क्योंकि वहाँ का आनन्द और प्रकाश ही ऐसा है और जब कोई बाल-बच्चे व सम्बन्धियों को छोड़ दे, तो उसको उनका क़र्ज़ अदा करने के लिये फिर जन्म लेना पड़ेगा। इसलिये सन्त गृहस्थ मार्ग को पसन्द करते हैं, कि धीरे-धीरे भजन-सिमरन करते जाओ। जब बड़ी आयु में घर का कार्य सँभालने के लिये लड़के जवान हो जायें तो भजन पर ज़ोर दे देना। गृहस्थ में मनुष्य की सब इच्छाएँ पूर्ण हो जाती हैं। त्याग में इच्छाएँ बाकी रह जाती हैं और वह जन्म का कारण बन जाती हैं। फ़रमाया कि गृहस्थों में बहुत आन्तरिक उन्नति वाली आत्माएँ देखने में आईं, परन्तु त्यागियों में कहीं-कहीं। फिर फ़रमाया कि जब वेदान्ती आँखों के पीछे अपना रूप देखते हैं तो वे ज्योति व प्रकाश को देखकर कह उठते हैं कि 'अहम् ब्रह्म अस्मि'- मैं ही ब्रह्म हूँ। वास्तव में वह रूप मन का होता है। असली रूप पारब्रह्म में मिलता है। मन के इस रूप को छोड़ देना चाहिये। इस शब्द के बाद दादू दयाल का शब्द 'जाने अंतर्यामी अकथ अकह अनामी' लिया गया। 'नौ लख कमल युगल दल अंतर द्वादस साहिब स्वामी' का अर्थ जरा टेढ़ा है। हुजूर ने फ़रमाया कि नौ द्वारों को लख अर्थात् पार करके आँखों के दो दल कमल में से होकर सहस्र-दल कमल में ईश्वर है। सहस्र-दल कमल बारह दल का कमल इसलिये है कि उसमें दस आवाज़ें हैं + मन और रूह = कुल बारह।

सत्संग के बाद हुजूर केरे मिल में पधारे। वहाँ बातों-बातों में जिक्र आया कि एक बार हुमायूँ बादशाह शेरशाह से हार कर गुरु साहिब के पास आन्तरिक सहायता के लिये आया। उस समय गुरु साहिब समाधि में थे, खड़ा रहा। अन्त में जब देखा कि गुरु साहिब ध्यान नहीं देते तो तलवार खींच ली। गुरु साहिब ने आँखें खोल दीं और फ़रमाया कि, ''फ़कीर से तलवार ?'' हुमायूँ बादशाह ने विनती की कि मैं इस समय संकट में हूँ। गुरु साहिब ने उत्तर दिया यदि प्रेम से आते तो इस समय तुमको तख़्व वापस मिल जाता। चूँकि तुमने तलवार खींची,

पहले उसका दण्ड भोगो फिर मिल जायेगा। इसी प्रकार अकबर बादशाह कहते हैं कि चित्तौड़ का किला जीतने के लिये गुरु साहिब के दरबार में विनती करने उपस्थित हुआ। गुरु साहिब ने फ़रमाया कि हमारी बावली का कड़ नहीं टूटता। तुड़वा दो तो चित्तौड़ फ़तह हो जायेगा। बादशाह ने मज़दूर, कारीगर लगवा कर तुड़वा दिया। जब लोगों ने कहा कि हुज़ूर कड़ टूट गया, तो गुरु साहिब ने फ़रमाया कि चितौड़ गढ़ फ़तह हो गया है। उस समय बादशाह को भी ख़बर आ गुई कि किला फ़तह हो गया। रात के 9.30 बजे हुज़ूर निवास-स्थान पर पधारे।

2 फ़रवरी से 3 फ़रवरी खाँड निकलनी शुरू हो गई है। राब में से मशीनों द्वारा खाँड निकालते हैं और शीरा जो नीचे रह जाता है, उसका गुड़ बनाते हैं। खाँड बड़ी सफ़ेद है। गुड़ जो उससे बनाया गया है, कल उसकी छोटी-छोटी टिक्कियाँ देखीं। बहुत साफ़-सुथरी दिखाई देती थीं। मैंने भी खाकर देखीं, स्वादिष्ट थीं।

एक सत्संगी ने लिखा कि वह सरकार का नौकर है। उससे कुत्ते मरवाने का काम लिया जाता है। उत्तर दिया गया किसी बहाने से छुट्टी ले लो।

आजकल बड़ी सफ़ेद खाँड बन रही है और गुड़ भी मिसरी की डिलयों जैसा तैयार हो रहा है। शीरे का गुड़ गेरुवे लाल रंग का होता है।

7 फ़रवरी को शाम के छ: बजे हुजूर सत्संग करने सिरसे सत्संग-घर गये। पहले तुलसी साहिब के दोहे पढ़े गए, जिनमें से एक दोहे का अर्थ, साधारण अर्थ के अतिरिक्त दूसरे ढंग से भी समझाया गया। 'अढ़ाई अक्षर प्रेम के पढ़े सो पण्डित होय।' पण्डित वही है जो पारब्रह्म में जाकर अढ़ाई अक्षर देखे। जिनमें से एक तो नीचे की सृष्टि को चलाता है दूसरा ऊपर को ले जाता है। उनका संकेत बार-बार कबीर साहिब और गुरु नानक साहिब की वाणियों में आता है। 'बावन अच्छर लोक त्रै सभ कछु इन ही माहें। ऐ अक्खर खिर जाहेंगे ओय अक्खर इन मह नाहें 'फर 'जे तूं पढ़या पंडित बीना दुइ अक्खर दुइ नावां। प्रणवत नानक एक लंघाऐ जे कर सच समावां 'इसके बाद गुरु राम दास जी का शब्द श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से लिया गया 'मन खिन खिन भरम भरम बहु धावै तिल घर नहीं वासा पाईऐ। 'स्वामी जी महाराज ने भी अपनी वाणी में तिल का संकेत दिया है। 'घट भीतर तू बैठ री तिल आसन डार '', 'तीन तिलों के बीच में

तेरा सकल पसार'। कबीर साहिब ने कहा है कि, 'सन्त मिले कोई भेदी तिल का है। शरीर में तीन तिल हैं। एक आँखों के पीछे, दूसरा सगुण और निर्गुण ब्रह्म के बीच में और तीसरा पारब्रह्म में।

12 फ़रवरी को फाल्गुन की संक्रान्ति को हुजूर ने 34 स्त्री-पुरुषों को सिरसा सत्संग-घर में शाम के समय नामदान दिया। फिर श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से केवल फाल्गुन का महीना पढ़कर लौट आये।

14 फ़रवरी को शाम के 6 बजे फिर वहीं सत्संग किया जहाँ 200 के . लगभग स्त्री-पुरुष इकट्ठे थे। हुजूरी वाणी में से 'यह तन दुर्लभ तुमने पाया ' का शब्द लिया गया। हुजूर ने फ़रमाया कि त्यागी महात्माओं की अपेक्षा गृहस्थ महात्माओं से संसार को ज्यादा फ़ायदा पहुँचता है, क्योंकि गृहस्थ ही गृहस्थ की तकलीफ़ों व दुःखों को समझ सकता है और हमदर्दी कर सकता है। त्यागियों को गृहस्थ की तकलीफ़ों का पता नहीं होता। कुछ लोग जो परमार्थ के भेदों से अनजान हैं वे भगवे कपड़े पहने हुए या फ़क़ीरों जैसे कपड़े पहने हुए साधुओं को अधिक पसन्द करते हैं और यह कहते सुने जाते हैं कि महात्मा क्या और गृहस्थ क्या ? उनको ख़बर नहीं कि बाहरी त्याग की अपेक्षा आन्तरिक त्याग कहीं अधिक अच्छा है। मौलाना रूम साहिब ने अपनी मसनवी में फ़रमाया है कि 'गर दरवेशाँ तामअ आन्दोज़िशत खू, तू दर शिकम ख़्वारों साहिब दिल बजू' अर्थात् त्यागी लोग लालची और कड़वे स्वभाव वाले हैं तो तू गृहस्थ लोगों में से ही किसी उदार पुरुष की खोज कर। लोग बम्बई से हुजूर के दर्शनों को यहाँ आये हैं। कोई दो-तीन पुरुष तथा स्त्रियाँ प्रतिदिन बाहर से आते-जाते रहते हैं।

एक सत्संगी किसी दफ़्तर में नौकरी करता था। एक मास की छुट्टी लेकर घर आया। जब छुट्टी के ख़त्म होने पर वापस जाने लगा तो उसकी बीवी रोने लगी। वह हज़रत ऐसे पसीजे कि नौकरी ही छोड़ दी। जब बेकारी आई तो घरवालों ने कहा कि लाओ खाने-पीने को, फिर पछताने लगे। हुज़ूर ने यह सुनकर यह कहावत सुनाई कि 'कायर कूकर घर रहें, सिंह रहें बन माहीं, बाज बेगाने देश में, नित मारें नित खायें।'

महँगाई की हद हो गई। गेहूँ 11 रुपये 8 आने मन, गुड़ 12 रुपये प्रति मन, खाँड 16 रुपये प्रति मन, धान 8 रुपये प्रति मन, ज्वार-बाजरा 5 रुपये प्रति मन, मलमल का कोई कपड़ा 18-20 रुपये थान से कम मूल्य का नहीं था। लट्ठा 'डी-वन' का 54 रुपये का थान बताते हैं।

एक सत्संगी ने हुजूर से पूछा कि सिमरन जबान से किया जाये या दिल की जबान से। उत्तर मिला कि यदि मन सिमरन की तरफ़ रहता है और अधिक फैला हुआ नहीं है तो दिल की ज़बान से, वरना ज़बान से। यदि मन फिर भी बाहर जाये तो जबान से ऊँचे-ऊँचे जैसे मुसलमान फ़क़ीर जंगल में जाकर ज़ोर-ज़ोर से अल्लाह हू–अल्लाह हू करते हैं। इसका मतलब भी यही है कि मन ठहर जाये। यदि सिमरन के समय मन बाहर जाता है तो उसको गुरु के स्वरूप का ध्यान भी दो ताकि मन दो जंजीरों में जकड़ा जाये। सिमरन या ध्यान में ख़याल को दायें कान की तरफ़ ले जाकर शब्द सुनने का प्रयत्न नहीं करना चाहिये, क्योंकि इससे मन सिमरन से हटकर फैल जाता है। ध्यान को अपने केन्द्र (तीसरा तिल) से नहीं हटाना चाहिये, चाहे शब्द कम सुने या अधिक। सिमरन करते हुए ध्यान करो। यदि मन फिर भी बाहर जाता हो तो साथ शब्द भी दे दो। एक सत्संगी को उसके पत्र के उत्तर में लिखा गया कि अन्तर में यदि देवी-देवता, माया सर्पनी अथवा कुण्डिलनी इत्यादि दिखाई दें तो उनकी ओर ध्यान मत दो। केवल सतगुरु-स्वरूप व शब्द को पकड़ो। भौरां नामक एक आदमी ग़दर में देहली से बहुत-सा रुपया लूटकर लाया। बीवी के सिवाय उसका कोई वारिस नहीं था। पत्नी से पूछा कि रुपये को कहाँ ख़र्च करूँ जिससे मेरा नाम हो। यदि लड़का-लड़की होता तो उसके ब्याह को धूमधाम से रचा कर नाम कमाता। पत्नी ने कहा कि मेरी बहन की सास की बरसी कर दो इससे नाम रोशन हो जायेगा। मतलब कि सब रुपया उसमें ख़र्च कर दिया। जब कुछ भी पास न रहा तो एक सरदार साहिब ने पूछा- भौरां क्या हाल है ? उत्तर दिया भौरा उड़ गया। 'सो धन जोड़ किया क्या भाई। जगत लाज में दिया उड़ाई॥"

आजकल यहाँ लोगों की भीड़ है। हुजूर बहुत व्यस्त रहते हैं। हर इतवार शाम को सिरसे जाकर दो घण्टे सत्संग करते हैं।

28 फ़रवरी इतवार को मैं व हुजूर, सरदार हरबन्स सिंह के साथ मोटर कार में सिरसे गये। दड़बी की जमीन का सेठ देवी दयाल सुखानी के साथ सौदा करके साई दे दी और बयाने की रसीद ले ली। कोई 600 बीघे जमीन है। उस दिन दड़बी में और शहर में इस सौदे का पता चल गया। सुना है कि कई लोग अचम्भे में आ गये हैं, कहते हैं जमीन अच्छी है। एक-एक खेत बड़े-बड़े क्षेत्रफल का है। इसमें आधे के मालिक बिनये लोग हैं और यह भी पता चला कि सेठ सुखानी ने बिहार के उत्तरी पहाड़ों में अभ्रक निकालने के कारख़ाने लगवा रखे हैं और लाखों रुपया कमाते हैं। सिक्किम के राजा साहिब तक से उनका मेल-जोल है।

उस समय एक महात्मा के बारे में सुना गया कि वह अपने इष्ट के दर्शन किये बिना, खाना नहीं खाते। कुछ लोग इसको सुनकर बड़ाई करेंगे कि बड़ी श्रद्धा है। कुछ नई रोशनी वाले कहेंगे कि वहम है। मौलाना रूम साहिब ने कहा है कि 'अबलहां ताज़ीमें मसजिद मीकुनन्द, अहले दिल दर साफीये दिल मी रोनद' अर्थात्, अज्ञानी लोग मसजिद की इज्ज्ञत करते हैं जबकि अनुभवी पुरुष अपने मन की सफ़ाई की ओर ध्यान देते हैं। यह इसलिये कि परमात्मा मनुष्य के अन्दर है न कि किताबों में या मसजिदों, मन्दिरों में। यदि परमात्मा से नीचे कोई इज्ज़त के लायक़ हस्ती है तो इनसान है जिसको मुसलमान संसार में अश्रफ़ुल मख़लूक़ात कहते हैं। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब और वेद-शास्त्र नर-नारायणी देह कहते हैं। स्वयं श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में इनसानी देह को गुफ़ा अर्थात् , आत्मा के रहने का स्थान और काया–नगर कहा है। जो ईंटों या पत्थरों, इमारतों की पूजा के लिये व पुस्तकों की पूजा के लिये एक दूसरे का गला काटते हैं, वे नकली मन्दिरों के लिये अहंकार में आकर ब्रह्म-हत्या अर्थात् असली मन्दिरों को गिराने का महापाप करते हैं। फिर यह विचार करते हैं कि पुण्य कमा लिया। संसार में कैसी भूल फैली है ? शाम को श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से सत्संग किया गया और वह महात्मा चुपचाप सुनते रहे।

2 मार्च दोपहर को बड़े सरदार साहिब के यहाँ हमारी दावत थी। हुजूर , राय साहिब और मैं व दूसरे लोग कार में थेहड़ी रसूलपुर उनके निवास-स्थान पर गये। बहुत ही तकल्लुफ से भरा हुआ व स्वादिष्ट भोजन सरदार साहिब ने ख़िलाया। सरदार साहिब स्वयं अच्छा खाना खाने के शौक़ीन हैं। चीजें तो वही थी जो हम हर रोज़ इस्तेमाल में लाते हैं केवल बनाने का ढंग विशेष था। कोई भी प्रशंसा किये बिना न रह सका। सरदार साहिब ने कहा कि पहले तो मसाले को बारीक घोटना, फिर उसको हल्की आँच पर ठीक प्रकार से भूनना और उसके बाद सब्जी-तरकारी को मसाले में धीरे-धीरे घी डालकर भूनना मेहनत का काम है, जो कि हरएक नौकर करना पसन्द नहीं करता। राय साहिब ने कहा कि अरबी को छील कर और गोद कर गर्म घी में डाल दो और जब अरबी घी पी चुके तो फिर भूनो। बातों-बातों में राय साहिब ने कहा कि हम बाल अवस्था में मसजिदों में मौलिवियों के पास पढ़ा करते थे। जब कोई त्योहार होता तो हम अपने उस्तादों को दो या चार आने ईदी के तौर पर दे देते और वह हमारी तिख़्तयों पर कविता लिख देते।

कल 12 बजे के बाद हुजूर सिरसा सत्संग-घर में नाम देने के लिये जायेंगे। देहली से मिस्टर सचदेव सत्संगी आये हुए थे और सत्संग-घर में ही ठहरे। सुबह को दर्शन करके वहीं से चले गए।

3 मार्च बुधवार को हुजूर ने 50 से अधिक स्त्री-पुरुष को सिरसा सत्संग-घर में नाम दिया और फिर सत्संग किया।

7 मार्च को हुजूर ने डिप्टी किमश्नर साहिब बहादुर को लंच दिया। फिर सिरसे के अफ़सरों व रईसों को शाम के पाँच बजे चाय दी। लंच बहुत ही अच्छा था और चाय में सरदार भगत सिंह, जालन्थर आर्यों की दुकान से बिंहया-बिंहया मिठाइयाँ लाये थे, जो सबने पसन्द कीं।

8 मार्च को हुजूर का व हमारा खाना बड़े भाई, सरदार बिचन्त सिंह साहिब के घर है। उनका घर कोट बाबा सावन सिंह में है जोिक थेहड़ी रसूलपुर में स्थित है। हम सबको, जो 20 के लगभग थे, दावत दी गई थी। भाई साहिब को न केवल स्वयं अच्छा खाना खाने का चाव है बिल्क अतिथियों को भी अच्छा खाना खिलाकर प्रसन्न होते हैं। छोटे भाई और बड़े भाई साहिब के दोनों पुत्र कमर कस कर खाना खिला रहे थे। खाने में नमकीन चावल, मूँग का हलवा, दही-भल्ले, रबड़ी, हरी मटर, कचौरी इत्यादि बहुत-सी चीज़ें थी। हम सबने जरूरत से ज्यादा भोजन किया। उसके बाद कुछ समय आराम करके हम सब लोग मोटर कार और ताँगों में केरे मिल में वापस आ गये और वहाँ से सब लोग अपने-अपने शहरों को लौट गये। सरदार भगत सिंह जालन्धर को, मिलक राधा किशन वकील मुलतान को, लाला बालकराम अमृतसर को और राय बहादुर शंकर दास लायलपुर को गये। राय बहादुर की बड़ी हिम्मत थी कि 20 दिन इंफ्लुएंजा से बीमार रहकर

बीमारी के बिस्तर से उठकर सीधे गुरु के भरोसे पर इतनी लम्बी यात्रा भीड़-भाड़ में तय करके आ गये। हुजूर उन पर बहुत प्रसन्न हैं।

रूहानी डायरी भाग 1

में यहाँ से 8 मार्च को देहली व गुड़गावाँ गया और 13 मार्च को लौट आया। जाते हुए भटिण्डा में राजपुरा से धूरी के सस्ते जो गाड़ी आती है उसमें एक डिब्बा इण्टर क्लास का काट कर देहली जानेवाली गाड़ी में लगाया जाता है, उसमें मुझे व सरदार लाल सिंह साहिब को बड़ा आराम मिला वरना गाड़ी में बड़ी भीड़ थी।

14 मार्च को सिरसे सत्संग-घर में शाम के 6 बजे संक्रान्ति का सत्संग हुआ। मैं एस.डी.ओ. राय साहिब लाला चानन मल को मिलने चला गया। वह अभी-अभी चौधरी जयनारायण सिंह की जगह पर आये हैं। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में बारहमाहा पढ़ा गया।

15 मार्च सोमवार को हुजूर ने सिकन्दरपुर 'शान्ति आश्रम' में शाम के 7 बजे सत्संग किया और 'सतगुरु का नाम पुकारो' विथा 'कोई आण मिलावै मेरा प्रीतम प्यारा' देश शब्द पढ़े गए। बड़ी शान्ति का समय था और घर के सहन में सन्नाटा छाया हुआ था। सत्संग में बड़ा आनन्द आया। हुजूर ने फ़रमाया कि 'गुरु चरनन आशिक़ होना' का मतलब है कि सत्संगी अन्तर में गुरु-स्वरूप को प्रकट करे। जो उपकार गुरु करता है, वह कोई सांसारिक सम्बन्धी नहीं करता।

रानी साहिबा साँगली को उनके पत्र के उत्तर में लिखा गया कि आप अपने युवा पुत्र की मृत्यु की चिन्ता छोड़ दीजिये। उसको अब दोबारा मनुष्य-जन्म मिल चुका है और वह वहाँ अपने माँ-बाप को उतना ही प्यारा है जितना कि तुमको था और तुम्हारा अब उस पर कोई अधिकार नहीं रहा। फ़िल्लौर के सत्संगी का आज एक पत्र आया कि हुजूर ने रेलवे ट्रेन में उसकी भाभी व बाल-बच्चों की डाकुओं से कैसे रक्षा की, यद्यपि वह सत्संगिन नहीं थी परन्तु सत्संगी की सम्बन्धी थी।

कल बड़े भाई साहिब के यहाँ सारी संगत का खाना है। कमाद पीड़ने का काम समाप्त हो गया। लोग घरों को जा रहे हैं। खाँड को बेचने व इधर-उधर ले जाने पर सरकार ने बड़ी पाबन्दी लगा रखी है। प्रोफ़ेसर जगमोहन लाल साहिब कपूरथला से आकर यहाँ ठहरे हुए हैं। उनसे ख़ूब बातचीत होती रहती है। उनसे अंग्रेज़ी में भूगोल लेकर कुछ भाग पढ़ा जिसमें सूर्य व चन्द्रग्रहण का वर्णन व 15 मार्च 1943

जमीन गोल होने की दलीलें थीं। पहले जो बचपन में प्राकृतिक भूगोल हमको पढ़ाया गया था वह तो केवल बच्चों का खेल था। अब इसको इस आयु में पढ़कर बड़ा आनन्द प्राप्त हुआ।

आज बड़े भाई साहिब के घर थेहड़ी में जिसको कोट बाबा सावन सिंह भी कहते हैं, सारी संगत की दावत थी। पहले हम सब लोग मिल में गये। वहाँ मैंने कल की डाक देखी, फिर दोपहर के 12 बजे सब लोग थेहड़ी को चल दिए। मैं, प्रोफ़ेसर जगमोहन लाल और लाला त्रिलोक चन्द इंजीनियर एक ही ताँगे में थे, जिसको सरदार सतनाम सिंह चला रहे थे। रास्ते में पक्की सडक पर जोकि हिसार जाती है, बेरों के दो-तीन बाग़ थे। हिसार के बेर प्रसिद्ध हैं। मेरा मन ललचाया, प्रोफ़ेसर साहिब को भी चाव चढ़ गया। उन्होंने यह कहावत सुनाई, 'बेर-बेर मैं कहत हूँ समझे क्यों न गँवार, लाल फल काँटों लदा खावे जग संसार।' मैंने कहा कि बेर और फ्रूट हिन्दुस्तान के असली देसी मेवे हैं। बाक़ी सब मेवे, सन्तरे, मालटे आदि बाहर से लाकर यहाँ लगाये गए हैं। अत: इस जिक्र को सुनकर इंजीनियर साहिब ने बेरों के ख़रीदने का बीड़ा उठाया और तौलिया मैंने दिया। ताँगा खड़ा किया गया और बेर लाये गए। अच्छे ख़ासे थे पर रस कम था। हमने सोचा यदि बेरों से ही पेट भर लिया गया तो दावत में क्या खायेंगे। इसलिये हाथ खींच लिया।

जब सरदार साहिब के घर पर उतरे तो संगत खाना खा रही थी। हमने भी हाथ-मुँह धोया क्योंकि राह में धूल बहुत थी। सरदार साहिब ने सबको बहुत बिंद्या खाना खिलाया। दही, दूध, घी, उनके यहाँ बहुत है और बीबियों को खाना बनाने में भी बड़ी निपुणता प्रतीत होती है। तरीदार मटर, सूखे आलू , माश की दाल, दही की बून्दी, नमकीन चावल, हलवा, घी में भुनी हुई गाजर इसके बाद सन्तरे। तात्पर्य यह है कि हमने ख़ूब पेट-भर खाया बल्कि ठूँसा। शेख़ सादी के कहने के अनुसार खाने को नाक तक भर लिया। वहाँ से मैं 3 बजे वापस चल पड़ा और हुज़ूर कार द्वारा मिल में पधारे। डाक के 20-22 पत्र हुज़ूर को सुनाये और फिर उनके जवाब लिखे। शाम के 7 बज गये। लाला बाँकेराय से मनीआर्डर वसूल किये। सारा हिसाब-किताब किया। इसके बाद सिकन्दरपुर पैदल लौटे तो हुजूर मेरे कमरे में शोभायमान थे और राव बहादुर शिवध्यान सिंह से जोिक उस समय पहुँचे थे, बातचीत में लगे हुए थे।

रात को 10 बजे भोजन के बाद सत्संग सहन में हुआ। बड़ी शान्ति और ख़ामोशी का समय था। ऐसा ही वातावरण ऐबटाबाद में 1910-11 में हुजूर के बँगले में रात के समय सत्संग में देखा था। पहले हुजूरी पोथी में से 'सतगुरु सरन गहो मेरे प्यारे। कर्म जगात चुकाय॥ 15 पढ़ा गया। सन्तमत में शरण का स्थान बहुत ऊँचा है, परन्तु है बड़ा कठिन। हुजूर ने फ़रमाया कि शरण लेना इसका नाम है कि गुरु के विषय में कभी यह विचार न आये कि वह मनुष्य है और मन उसके हुक्म के आगे कोई तर्क न करे। यदि गुरु दिन को रात कहें तो कहें रात है, यदि गुरु घोड़े को भैंस कहें तो कहें भैंस है। शरण में मन का दख़ल बिलकुल नहीं रहता। जब तक मन की खींचातानी है, शरण नहीं। इसलिये सन्त कहते हैं कि शरण लेनी मुश्किल, भजन करना आसान है। हुजूर ने भाई मंझ की कहानी इसी विषय पर सुनाई। इसके बाद श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'गुरू गुरू गुर कर मन मोर" पढ़ा गया, इसके बाद महर्षि शिवब्रत लाल की चर्चा चली। हुजूर ने फ़रमाया कि वह क़लम के धनी थे।

हुजूर ने फ़रमाया कि बाबा जी महाराज के ज्योति-ज्योत समाने के बाद हुजूर स्वामी जी महाराज के भाई हुजूर सेठ प्रताप सिंह जी महाराज सत्संग करने आगरा जाया करते थे। एक दफ़ा वहाँ सन्त ग़रीब दास जी भी उपस्थित थे। हुजूर ने चाचा जी महाराज से एकान्त में कुछ सवाल आन्तरिक अभ्यास के विषय में पूछे जिस पर उन्होंने उत्तर दिया कि बाबा ग़रीब दास जी से पूछेंगे। दूसरे दिन हुजूर महाराज बीमार होने के कारण सत्संग में उपस्थित न हो सके परन्तु सेठ साहिब ने सन्त ग़रीब दास जी को वह सवाल पेश किये तो महात्मा जी ने फ़रमाया कि ये सवाल यहाँ के किसी सत्संगी के नहीं है। फिर अभ्यास में जाकर कहने लगे कि पूछो क्या पूछना है और सब सवालों का उत्तर देते रहे। रात के 11 बजे सत्संग समाप्त हुआ और हम सब सो गये।

आज राव बहादुर साहिब, जो यू. पी. के बड़े जमींदार हैं, मालटे के पेड़ों को ठीक करने में व्यस्त थे। कई पेड़ों को फूल व फल नहीं आता और कई को बहुत कम आता है। आजकल मालटे के बाग़ में बड़ी सुगन्ध आती है क्योंकि 'करना' महक रहा है। राव बहादुर ने हरएक पेड़ की जड़ के आस-पास 9 इंच या एक फ़ुट गहरा गढ़ा 4 फ़ुट गोलाई का खुदवाया और तने के बाहर जो मोटी-

19 मार्च 1943

19 मार्च को हुन्तूर सिरसा पधारे और नामदान दिया। मैं दूसरा काम करता रहा। शाम को सिरसा में सत्संग हुआ और हम सब रात के 1 बजे कार में सिकन्दरपुर लौट आये। कमाद की कटाई का काम तो 14-15 मार्च से समाप्त हो चुका है, अब खाँड का काम कल को समाप्त हो जायेगा। लोग वापस घरों को जा रहे हैं, बहुत-से चले गए हैं। अभी कमाद बोने का काम हो रहा है। धूप बड़ी तेज है। दोपहर को कार में बड़ी तिपश थी। रात को कमरे के सब दरवाज़े और खिड़कियाँ खोलकर सोते हैं। परन्तु सैंड फ्लाई (गुत्ती) रात को काटती हैं। यह रेतीला प्रदेश है।

20 मार्च शनिवार को हुजूर सिकन्दरपुर में दोपहर के बाद तक रहे और मैं भी वहीं रहा क्योंकि हुजूर को प्राईवेट काम था, कई लोगों से मिलना था। इसके बाद डाक देखी। खाना खाकर दोपहर के समय हम लोग आराम करने लगे। 3 बजे, मैं व हुजूर मिल में गये, राव साहिब व डॉक्टर साहिब घर पर रहे। धूप तेज थी। परन्तु शाम को आकाश में बादल थे, गर्द थी, हवा भी कुछ चल रही थी। छ: बजे के बाद हुजूर मिल के बाहर सहन में कुर्सी पर बिराजमान हुए। मैं, इंजीनियर साहिब तथा दूसरे लोग भी बैठ गये और ख़ूब बातचीत होती रही। हुजूर ख़ूब हँसी की कहानियाँ सुनाया करते हैं। फ़रमाया कि पहले देहात में यह रिवाज था कि जब मेले के दिन शहर में जाना होता तो सुबह ढोल बजाया जाता जिससे गाँव के सब लोग इकट्ठे होकर मेला देखने जायें और वहाँ शहर में कोई वारदात हो जाये तो एक-दूसरे की सहायता कर सकें। एक मनुष्य 'काहना'

जोंकि बुढ़ापे के कारण मेले में जाने का विचार तक न कर सकता था, ढोल की आवाज सुनकर बिस्तरे में पड़ा-पड़ा टाँगे मारने लगा। यहाँ तक कि रजाई फट गई। जब वह दिन चढ़े उठा और औरतों ने उसकी रज़ाई उठाई तो पूछा कि कैसे फटी ? तो कहने लगा कि जब ढोल बजा तो क्या मेरे बस की बात थी ?

21 मार्च को बड़े भाई साहिब के घर राव बहादुर शिवध्यान सिंह रईस (पिसावा के ज़र्मीदार) की दावत थी। हमें भी दावत पर बुलाया गया था। अत: हम पहले तो हुजूर के साथ ताँगों में सवार होकर मिल में गये। वहाँ से मैं, डॉक्टर साहिब, इंजीनियर साहिब, तीनों बड़े भाई साहिब के ताँगे में थेहड़ी की ओर चल दिये। रास्ते में बेरों का विचार आया, अत: सड़क के किनारे बाईं ओर के पहले बाग़ में गये। वहाँ बहुत-सी बेरियाँ हैं। हमने कई प्रकार के बेर देखे, कुछ तो बड़े मोटे थे परन्तु रस उनमें कम था। दूसरे गोल-गोल लाल रंग के थे। वे अच्छे थे। डॉक्टर साहिब को वे पसन्द थे। मैंने कहा, जो सबसे अच्छे हैं, वे दो। बेर वाला कहने लगा, कैथली बेर देता हूँ। अत: एक बेरी पर चढ कर सेर सवा-सेर बेर तोड़े, जोकि खाने में स्वादिष्ट तथा रस-भरे और सस्ते थे। दो आने के सेर भर दिये। शेष जोकि हम नमूने के लिये चखते रहे, वे अलग। अर्थात् सेर सवा-सेर बेर लेकर हम चल दिये। रास्ते में विचार आया कि इतने बेर खाने के बाद खाना क्या खाया जायेगा ? अत: आधे के लगभग रख दिये। भाई साहिब के यहाँ भोजन बड़ा स्वादिष्ट था। विशेषकर फिरनी बिलकुल रबड़ी की तरह थी, परन्तु स्वाद में रबड़ी से अच्छी। सब्जियों में घी खुले दिल से डालते हैं। भोजन के बाद मैं व हुजूर दोपहर के तीन बजे मिल में वापस आ गये। वहाँ

फिर 5 बजे सिरसा जाकर हुजूर ने सत्संग किया। वहाँ एक मुसलमान थानेदार सत्संग–घर में आये। बड़े स्वतन्त्र विचारों के थे तथा कोई धार्मिक कट्टरता नहीं रखते थे, ईश्वरवादी थे, परन्तु ईश्वर से मिलने की आवश्यकता नहीं समझते थे। बुद्धि के तर्क से ईश्वर के अस्तित्त्व को प्रमाणित करते थे। हुजूर ने फ़रमाया कि आपने प्रकृति की खोज की, परन्तु रूह के अस्तित्त्व को नहीं माना। कहते थे कि शरीर के तत्त्वों की व्यवस्था के कारण शरीर में ताक़त, स्फूर्ति व बढ़ोतरी है। जब व्यवस्था बिगड़ गई, मृत्यु आई और सब समाप्त हो गया। हुजूर ने उत्तर दिया कि आत्मा, परमात्मा व आन्तरिक दृश्य मन के परदे के पीछे हैं। मन को स्थिर करके देखो। कहने लगे, फिर आऊँगा,

22 मार्च 1943

एकान्त में बात करूँगा। हुजूर ने सिरसा जाने से पहले जिला मुजफ्फरनगर के कुछ राबियानों को नामदान दिया।

वापसी पर पूर्णमासी का चाँद था, परन्तु ठण्ड अधिक थी। हुजूर ने गर्मी के मौसम के ठण्डे कपड़े पहन रखे थे। मिल से सिकन्दरपुर आते हुए सर्दी महसूस की और कहा कि रात को भी नहीं सोये, क्योंकि मच्छर काटते थे। दूसरे दिन सुबह पता लगा कि हुजूर को रात कुछ बुख़ार हो गया था। नाम लेने वालों के कर्म भारी थे। फ़रमाया कि दूर से आये हैं। फिर शायद अवसर प्राप्त न होता। इस विचार से अपने कष्ट का ध्यान न करते हुए नाम दे दिया। सुबह पता चला कि डॉक्टर साहिब को भी उच्च रक्तचाप (ब्लड प्रेशर) हो गया। रास्ते में पैदल आ रहे थे कि हृदय की धड़कन बढ़ गई। रास्ते में ही पड़ गये। घोड़ी पर उनको लाया गया। सारी रात दिल की धड़कन धीमी रही। सुबह 4 बजे नींद आई। आज बिस्तर पर लेटे हुए हैं। आज उन्होंने वापस जाना था। परन्तु अब अटक गये हैं।

22 मार्च को लोग प्रसाद लेकर वापस जा रहे हैं। राव बहादुर, इंजीनियर साहिब तथा दूसरे जमींदार लोग विदा हो रहे हैं। उन सबका सामान गड्डे में सिरसा रेलवे स्टेशन तक जा रहा है। कल रात राबिये* भी चले गए। आज शाम को मिल में उदासी छा रही है। राव साहिब आज यहाँ नहीं आये और न डॉक्टर साहिब। हुजूर सो रहे हैं, मैं और शादी मिक्खयाँ मार रहे हैं जोकि यहाँ बहुत हैं, जिन्होंने नींद हराम कर रखी है। हम दोनों बारी-बारी सोने का प्रयत्न कर चुके हैं परन्तु क्या मजाल कि एक सैकिण्ड के लिये भी आराम करने दें। ऋग्वेद में इनको 'अयमद' कहा है और टीकाकार लिखता है कि यह शब्द मज़ाक के तौर पर ब्राह्मणों और मिक्खियों के लिये भी प्रयोग किया गया है। 'अयमद' का अर्थ है कि खाने पर बैठने वाला। परन्तु हमारे कमरे में तो कोई खाना नहीं है इसलिये यहाँ उनका आना ठीक नहीं। परन्तु यह शूद्र शत्रु है। इसलिये हम लाचार हैं। 'क़हरे दरवेश बर जाने दुरवेश' अर्थात् फ़क़ीर का ग़ुस्सा अपनी ही जान पर।

ड्राइवर की रिपोर्ट है कि मोटर कार बिगड़ गई है और बाहर से पुर्जे मँगवाये बिना नहीं चल सकेगी। कल हिसार जाने का प्रोग्राम है और दो दिन के बाद

वापस डेरे जाना है। देखिये कैसे पहुँचते हैं ? आज शाम को निश्चय हुआ कि ड्राइवर देहली जाकर पुर्जे लाये। वह 23 मार्च को सुबह चल दिया। किसी से 'बेबी आस्टिन' माँगकर हुजूर, मैं और भाई हरबन्स सिंह उसमें बैठकर हिसार को सुबह 8 बजे चल दिये। फ़तेहाबाद में से होते हुए अगरोहे के खण्डहरों के पास से हिसार में पहुँचे। अगरोहे के खण्डहरों से पता लगता है कि किसी समय यह एक बडा शहर होगा। खण्डरात बड़ी-बड़ी दूर तक फैले हुए हैं। हिसार में बाबू कुंज लाल एडवोकेट के मकान पर, जोकि रेलवे रोड पर है, उतरे और खाना खाया। फिर आराम किया। 4 बजे शाम को हुजूर का बुख़ार 99.7 डिग्री था। हुजूर को सुबह चलने के वक़्त 100.7 डिग्री बुख़ार था। मैंने, डॉक्टर साहिब व दूसरे लोगों ने हुज़ूर से प्रार्थना की कि हिसार न जायें, परन्तु हुज़ूर ने उत्तर दिया कि इक़रार, इक़रार है।

शाम को बाबू जवाहर लाल भार्गव के मकान पर सत्संग हुआ। बहुत-से आर्य समाजी, सिक्ख तथा मुसलमान भी उपस्थित थे। सबने प्रेम और ध्यान से सत्संग सुना, क्योंकि हुजूर किसी धर्म का खण्डन नहीं करते, शुद्ध रूहानियत का प्रचार करते हैं। कहते हैं कि अपने-अपने धर्म में ही रहकर किसी पूर्ण सन्त-सतगुरु से रास्ता लेकर हक़ीक़त की खोज करो। सत्संग के बाद शहर में से होते हुए रात के साढ़े नौ बजे घर पहुँच गये।

24 मार्च को हुजूर को इंफ्लुएंज़ा की शिकायत है। सारा दिन अन्दर कमरे में बिस्तरे पर लेटे रहे। दोपहर को डाक सुनी, जोकि हर रोज़ से अधिक थी। इसके बाद शाम के 7 बजे चबूतरे पर आ बिराजे और समाचार-पत्र पढ़ते रहे। इधर-उधर की बातें होती रहीं। कल शाम को ड्राइवर सरूप सिंह मोटर कार के पुर्ज़े देहली से ले आया और रात को मोटर कार में फ़िट करता रहा।

आज प्रात: 25 मार्च को डॉक्टर साहिब कहते हैं कि हुजूर को 99.5 डिग्री का ज्वर है। देखों हुजूर लोगों के लिये कितना दु:ख उठा रहे हैं और किसी को पता तक नहीं। सांसारिक लोग बाहरी परोपकार के लिये कितना शोरगुल करते हैं। यहाँ जो चुपके-चुपके सबसे बड़ा परोपकार कर रहा है, उसका दुनिया वालों को पता तक नहीं। आज दोपहर के बाद सिरसा संगत को दर्शन देने जाना है।

^{*}चीनी मिल में राब बनाने वाले। राब से चीनी बनती है।

अध्याय 5

डेरे में निवास का हाल

हुजूर की डेरे की वापसी की यात्रा और वहाँ निवास

26 मार्च को सुबह 5 बजे हुजूर कार द्वारा चल दिये। रास्ते में सड़क के किनारे सिरसा के कुछ सत्संगी भाई व बहनें दर्शनों के लिये खड़े थे। वहाँ से बिना कहीं रुके मुक्तसर पहुँचे तो सूर्य निकल आया था। वहाँ पण्डित बुद्ध राम जी रईस तथा दूसरे लोग उपस्थित थे। हुजूर ने कार से उतर कर कुछ समय तक लोगों से बातचीत की। वहाँ से चलकर सराय नाँगा तथा कोटकपूरा की संगत को दर्शन देते हुए हुजूर 9 बजे मोगा सरदार बहादुर कैप्टन लाल सिंह के मकान पर पधारे। वहाँ कुछ मिनट ही ठहरकर लुधियाना की ओर चल दिये, क्योंकि डॉ. प्रेम नाथ जी के विषय में पता चला कि वह कहीं बाहर गये हैं। मोगा से डबवाली की ओर जाते हुये ऐसा लगता है कि उस रात वर्षा काफ़ी हुई थी। सिरसा में केवल पहले दिन शाम को बूँदा-बाँदी हुई थी, परन्तु सुबह सर्दी काफ़ी थी। लुधियाना में कचहरी के सामने बहुत-सी संगत जमा थी। वहाँ लगभग आधा घण्टा हुजूर महाराज जी ठहरे। संगत को दर्शन दिये परन्तु कुछ खाया नहीं। इसके बाद रास्ते में फ़िल्लौर, गोराया, मौली, फगवाड़ा की संगतों को थोड़ा-थोड़ा समय देते हुए जालन्धर शहर में सरदार भगत सिंह जी वकील की कोठी पर आकर सारी पार्टी उतर गई। वहाँ कई लोगों ने खाना खाया। मैं माई हीराँ के दरवाज़े से वैद्य जी को बुलाकर लाया। उन्होंने हुजूर को ठीक से देखकर इंफ्लुएंजा की दवा दी। इसके बाद राय साहिब को देखा और दवा बताई। फिर तीन बजे वहाँ से चल कर सीधे डेरा आ गये।

डेरे में बहुत संगत जमा थी, उसी दिन शाम को हुजूर ने सत्संग किया। 27 मार्च को चार बजे सत्संग हुआ। इस बार 40-50 हजार के लगभग संगत थी और ऐसी भीड़ थी कि बड़े-बड़े मेलों पर होती होगी, क्योंकि मौसम सुहावना था और सत्संग दो माह बन्द रहा था। लंगर में रात के एक बजे तक खाना खिलाते रहे।

28 मार्च इतवार को सुबह 9 बजे सत्संग हुआ। हुजूरी वाणी में से 'सतगुरु का नाम पुकारों" लिया गया और श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से पाँचवीं पातशाही का शब्द 'दरसन भेटत पाप सभ नासै य पढ़ा गया। हुजूर ने बड़ा लम्बा-चौड़ा व्याख्यान दिया। हुजूर ने फ़रमाया कि जब परमात्मा किसी जाति व देश को मिलाना चाहता है तो वह मनुष्य का जामा पहन कर इस संसार में आता है, क्योंकि देवी-देवता के रूप में आये तो हम उसे देख नहीं सकते और मनुष्य से निचली योनियों में ज्ञान नहीं। इसिलये मनुष्य का गुरु मनुष्य होना जरूरी है। राम, कृष्ण, मुहम्मद साहिब और जितने वली, पैगम्बर, अवतार, ऋषि-मुनि आये वे सब मनुष्य-शरीर को धारण करके ज्ञान देते रहे। ऐसी हस्ती का नाम है सतगुरु। परन्तु जो महात्मा हमारे जमाने से पहले होकर गुजर चुके हैं, यद्यपि वह अपने समय के पूर्ण महात्मा थे, फिर भी वे हमें कुछ लाभ नहीं दे सकते। यही संसार की बहुत बड़ी भूल है कि पुराने वक़्तों के महात्माओं की टेक बाँधकर जीवित सतगुरु की खोज नहीं करते। सत्संग के बाद भोजन हुआ और सब लोग अपने-अपने घरों को पधारे।

29 मार्च सोमवार को भी बहुत संगत उपस्थित थी। जब सुबह हुजूर नाम देने के लिये पण्डाल में पधारे तो इस तरह भीड़-भाड़ व धक्का-पेल हुई कि हुजूर ने नाम देने से इनकार कर दिया और सब लोगों को हुक्म दिया कि अब नाम नहीं दिया जायेगा। अपने-अपने घरों को जाओ। फिर अगले सत्संग में देखा जायेगा। यह पहली बार है कि इतनी बेक़ाबू भीड़ ने हुजूर को मजबूर किया कि शोरगुल की वजह से नाम न दें। आज हुजूर ने डाक भी नहीं सुनी। फ़रमाया कि तबीयत पर बोझ है, फिर सही।

30 मार्च मंगलवार को हुजूर ने न सत्संग किया न नाम दिया। हुजूर थकावट महसूस कर रहे हैं। सुबह को अमेरिका की डाक सुनी। शाम को दो घण्टे बाक़ी डाक देखी, फिर प्रसाद बाँटकर जानेवाली संगत को विदा किया।

श्रीमती कॉलिन्ज ने मुझे बताया कि क्राइस्ट वास्तव में विशेषण है, जिसका अर्थ है पहुँचा हुआ। पहले मसीह का नाम जीसस द क्राइस्ट था। धीरे-धीरे 'द' उड़ गया और जीसस भी यूनानी शब्द है क्योंकि इंजील, यद्यपि पहले-पहल

इब्रानी में लिखी गई, परन्तु उसका पहला अनुवाद यूनानी में लिखा गया। जिस भाषा में ईसा ने उपदेश दिया वह इब्रानी की एक प्राकृत अथवा आरमेनिअन या आरोमाइट थी जोकि जैरूसलम में बोली जाती थी। शेख़ फ़ैजी ने लिखा है, ऐ नामओ तोड़ड़ो करिस्टो। जर्मन व फ्रान्सीसी भाषा में लिखते 'जीसस' हैं, परन्तु पढ़ते 'जीजू' हैं। श्रीमती कॉलिन्ज ने बताया कि उनके पास एप्लाइड फ़िलॉसफ़ी (Applied philosophy) की डिग्री है और वह आधिभौतिक विज्ञान की भी ज्ञाता हैं। उसने तीन बातें बताई जो बड़े काम की मालूम होती हैं। पहली यह कि हर विचार, चाहे हम उसे महसूस करें या न करें, कार्य की ओर आकर्षण रखता है। दूसरे, जब सचेत और अचेत मन की टक्कर होती है तो उसमें अचेत मन की ही विजय होती है। (Every thought conscious or unconscious tends towards action. When there is a conflict between the conscious and subconscious mind, it is the latter that always wins.) तीसरे, हर बच्चे की आयु के पहले 6 वर्ष विशेष महत्त्व रखते हैं। इस आयु के संस्कार बड़ी आयु में जाकर बड़ी कठिनाई से मिटाये जा सकते हैं। इसिलये माता-पिता को बड़ी सावधानी से बच्चे का पालन-पोषण करना चाहिये।

31 मार्च बुधवार की शाम को 6 बजे के लगभग सत्संग आरम्भ हुआ। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से महला पाँच, सोरठ राग 'पाठ पढ़यो अर बेद बीचारयो ' पढ़ा गया, जिसका भावार्थ यह है कि पुस्तकों के पठन-पाठन, दान-पुण्य, तीर्थ-व्रत, योग-आसन, ब्रह्मचर्य, मौन व्रत तथा त्याग इत्यादि में मुक्ति नहीं। यद्यपि यह सब अच्छे कर्मों में गिने जाते हैं, परनु हर कर्म का फल कर्म है। मुक्ति सत्संग, पूर्ण महात्मा व हरि-कीर्तन अथवा शब्द-अभ्यास में है; इसके बाद 'अमृत' शब्द पर विचार किया गया। 'अमृत' का अर्थ है कि जीवन देनेवाला और यह वह शब्द है जो हर व्यक्ति के अन्दर है और शब्द मन के परदे के पीछे है। जब मन को शान्त कर लिया जाये तो शब्द मिलता है। दूसरा अमृत वह है जो सन्त-महात्मा कई बार अपनी आत्मा को रूहानी मंजिलों पर ले जाकर बनाते हैं। वहाँ से ध्यान लाकर पानी में डाला और पानी में रूहानी असर पैदा हो गया। लेकिन जब तक कोई महात्मा आन्तरिक आध्यात्मिक मंजिलों पर जानेवाला न हो, बाहर के जल को अमृत नहीं बना सकता। अमृत का यह अर्थ नहीं कि मनुष्य का शरीर न मरे, बल्कि यह कि मनुष्य जन्म-मरण से मुक्ति पा जाये।

1 अप्रैल को महाराज जी ने गिने चुने भाई-बहनों को अपने कमरें में नाम दिया। डाक सुनी। फिर शाम को 6 बजे के लगभग सत्संग में पधारे। सत्संग में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का शब्द पढ़ा गया और सरदार गुलाब सिंह जी ने व्याख्यान किया। हुजूर कभी-कभी अपने मुखारबिन्द से बीच में एक-दो वाक्य फ़रमाते थे। सरदार गुलाब सिंह जी ने बहुत ठीक कहा कि आँखों की इन्द्रीय संसार से सबसे अधिक सम्बन्ध जोड़ती है, क्योंकि यह इन्द्रीय दूर-दूर तक देखकर सांसारिक फ़ोटो मन में भरती जाती है। कान की इन्द्रीय से भी सांसारिक सम्बन्ध पैदा होते हैं और जिह्ना या जबान दिल के तालाब को ख़ाली करने की एक नाली है। अभ्यासी को चाहिये कि इन तीनों को ज़रूरत से ज्यादा प्रयोग में न लाये। सरदार भगत सिंह जी भी सत्संग के समय पधारे और साढ़े चार बजे के लगभग चले गए।

आज-कल महाराज जी दुर्बलता व थकावट महसूस कर रहे हैं और ख़ुश्क खाँसी-सी भी है। ऐसा मालूम होता है कि काम की अधिकता से कमजोरी है। सत्संग भी शाम को सरदार गुलाब सिंह जी करते हैं।

आज-कल चनों की कटाई हो रही है। महाराज जी सुबह आठ बजे वहाँ पधारते हैं और मैं दस बजे लाइब्रेरी की पुस्तकें गिनने जाता हूँ।

- 4 अप्रैल शाम को सत्संग में हुजूर स्वामी जी महाराज का यह शब्द 'कोई मानो रे कहन हमारी 4 लिया गया। जिसका अर्थ यह है कि मनुष्य स्वयं ही संसार में फँसा है। यदि सांसारिक भोग छोड़ दे तो परमात्मा मिल सकता है। आज इतवार के दिन बहुत-से लोग अमृतसर इत्यादि से आ गये थे।
 - 5 अप्रैल सुबह को आकाश पर बादल थे और मिट्टी उड़ रही थी।
- 6 अप्रैल को सुबह साढ़े आठ बजे चलकर महाराज जी ढिलवाँ एक सिक्ख सत्संगी के घर उसकी स्वर्गीय माँ की भोग रस्म में गये। वहाँ उनकी छत पर श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का भोग डाला गया। नवीं पातशाही का शब्द 'गुन गोबिंद गायो नहीं '5 पढ़ा गया। हुजूर ने व्याख्या की और फ़रमाया कि सब दुनिया पराया काम कर रही है क्योंकि जितना भी इस दुनिया का व्यापार है वह या तो इन्द्रियों के भोग इत्यादि का सामान एकत्र करना है या इन्द्रियों के भोगों को भोगने का। यह भोग शरीर का काम है। आत्मा का काम है कि उसे उसके भण्डार अर्थात् सतलोक में पहुँचाया जाये क्योंकि हर वस्तु अपने असल में मिलना चाहती है

परन्तु सब लोग सारी आयु मन और इन्द्रियों का काम करने में बरबाद कर देते हैं। अपना काम कोई नहीं करता। हुजूर स्वामी जी ने फ़रमाया है, 'काम अपना करो जाई। पराये काम निह फँसना॥ विया यह काम न किया गया तो चौरासी का चक्र तैयार है। 30 लाख प्रकार के वृक्ष, 27 लाख प्रकार के कीड़े-मकौड़े, 14 लाख प्रकार के पक्षी, 9 लाख प्रकार के पानी के जीव, 4 लाख प्रकार के मनुष्य, पशु, देवी, देवता, यक्ष, किन्तर, गन्धर्व, भूत-प्रेत इत्यादि हैं। इन सबको भोग कर मनुष्य का चोला मिलता है और केवल मनुष्य-जन्म में ही जन्म-मरण से छुटकारा यानि मुक्ति हो सकती है। देवी-देवता इत्यादि मुक्ति प्राप्त नहीं कर सकते। वे भी चाहते हैं कि मनुष्य-जन्म मिले तो वे मुक्ति प्राप्त कर सकें। इसलिये जहाँ तक हो सके, नाम के भजन-सिमरन में समय व्यतीत करना चाहिये। क्योंकि एक-एक साँस का मूल्य करोड़-करोड़ रुपयों से भी अधिक है। जैसे कि सिकन्दरे आजम को सारे राज्य के बदले में एक साँस भी अधिक न मिल सका। दुनिया के काम-काज किसी के भी पूर्ण नहीं हुए। सब अधूरे छोड़कर मर गये। कहावत है 'धन्धा किने न जितया, सब धन्धे जिती'।

इसके बाद 'सद' पढ़ी गई जिसमें सतगुरु अमर दास जी ने फ़रमाया है कि हमारे मरने के बाद 'में पिछै कीरतन करयो निरबाण जीओ। केसो गोपाल पंडित सदयो हर हर कथा पढ़ह पुराण जीओ " अर्थात् गुरु साहिब ने वसीयत की कि मेरी मृत्यु के बाद सांसारिक रस्में हिन्दुओं के रिवाज के अनुसार कर लेना परनु मेरा परमार्थ का रास्ता तो निर्वाण कीर्तन है, वह करते रहना। इसी प्रकार श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में आया है, 'निरबाण कीरतन गावो करते का निमख सिमरत जित छूटै' है कीर्तन का अर्थ वास्तव में तो शब्द-धुन सुनने से है जो मुक्ति का दाता है। बाहर के बाजों से मन नाचता है। उसको मुक्तिदाता नहीं कह सकते। मेरे विचार में निर्वाण कीर्तन का अर्थ है, पारब्रह्म के सार-शब्द की निर्मल धुन सुनने से, जिसके पल-भर सुनने से मुक्ति प्राप्त हो जाती है। वहाँ से काम समाप्त करके हम 12 बजे वापस आ गये। आकर डाक देखी।

फिर शाम को 5 बजे ढिलवाँ गये। वहाँ हाई स्कूल में सत्संग किया। जो सड़क जी.टी. रोड से रेलवे फाटक के सामने से अलग होकर ढिलवाँ शहर को जाती है, इस पर यह स्कूल बड़े सुहावने स्थान पर स्थित है। सड़क के दोनों ओर आम के पेड़ खड़े हैं। पानी पृथ्वी की तह के पास होने के कारण चारों ओर हरे-

भरे खेत लहराते दिखाई देते हैं। आमों पर आजकल बौर आया हुआ है जिसमें से मीठी-मीठी सुगन्ध आ रही है। स्कूल के पीछे मैदान में बहुत-से स्त्री-पुरुष उपस्थित थे। हुजूर के लिये ऊँचा पण्डाल सजा हुआ था। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'आद निरंजन प्रभ निरंकारा" शब्द लिया गया, काफ़ी लम्बा शब्द है और उसमें सन्तमत की पूर्ण शिक्षा दी गई है। 'आद निरंजन' का अर्थ है निरंजन का आदि। निरंजन त्रिलोकीनाथ है, आदि निरंजन का मतलब अकालपुरुष है जो सतलोक का धनी है और सन्त जिसका अवतार होते हैं। इस सत्तपुरुष ने 84 लाख प्रकार की ख़लक़त पैदा करके मनुष्य को सबसे ऊँचा बनाया। अब मनुष्य को चाहिये कि कर्म-धर्म अर्थात् तीर्थ, ब्रत, दान, पुण्य, यज्ञ, तप और विद्या इत्यादि कर्मों में मुक्ति न ढूँढे। कर्मों का बदला कर्म है। यदि अच्छे कर्म करेगा तो यहाँ पर जन्म लेकर उनके बदले सेठ-साहूकार, राजा-महाराजा, गुणी-ज्ञानी बन कर भोग लेगा। यह श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की शिक्षा के अनुसार कुरुता (बेमौसमी) बीज है क्योंकि कलियुग में नाम के बिना मुक्ति नहीं है। अब कलू आयो रे, इक नाम बोवो बोवो अन रुत नाही नाही। मनुष्य को चाहिये कि गुरुमुख महात्मा की खोज करे, अर्थात् जो महात्मा पारब्रह्म में पहुँचकर आत्मा पर से तीनों गुणों, तीनों शरीरों, पच्चीस प्रकृति के ग़िलाफ़ों को उतार चुके हैं। जैसे कि गीता में भगवान कृष्ण ने लिखा है, 'त्रैगुण्यविषया वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन।' कलियुग में कीर्तन प्रधान है। कीर्तन का अर्थ उस शब्द रूपी आरती सुनने से है जो आँखों के पीछे हर वक़्त आठों पहर हो रही है, बाहर के बाजों से मतलब नहीं है। इस कीर्तन को सुनने के लिये यह आवश्यक है कि किसी पूर्ण गुरुमुख से अभ्यास का ढंग सीखा जाये। जैसे कि आसा दी वार में कहा है :

> बिन सतगुर किनै न पायो बिन सतगुर किनै न पाया। सतगुर विच आप रखिओन कर परगट आख सुणाया।10

एह जीओ बहुते जनम भरंमयां ता सतगुर सबद सुणाया। सतगुर जेवड दाता को नहीं सभ सुणयों लोक सबाया।"

अर्थात् , पूर्ण सतगुरु में वह मालिके-कुल स्वयं प्रकट होता है। सत्संग साढ़े छ: बजे समाप्त हुआ। हम कार से आकर ब्यास की कोठी में ठहर गये क्योंकि

हुज्र को वहाँ खेती-बाड़ी देखनी थी। कोठी में लूसन, चटाला, आम के वृक्ष, सरु, युकलिपटिस और सब्ज्ञी-तरकारी लगी है। युकलिपटिस के वृक्ष की जलवायु स्वास्थ्यवर्धक मानी जाती है क्योंकि यहाँ रोगी प्राय: आकर ठहरते हैं। वैसे भी शान्ति का वातावरण है। वहाँ लगभग एक घण्टा ठहर कर सब डेरे वापस आ गये।

7 अप्रैल को मौसम कुछ ठण्डा है। शाम के समय डलहौजी की ओर आकाश में नीले-नीले बादल दिखाई दे रहे हैं। यह मौसम जुकाम, खाँसी आदि पैदा करता है। आज फ़ौज के तीन अफ़सर ख़ाकी वर्दियों में डेरे आये। उनको दोपहर का खाना हुजूर के पोते सरदार पुरुषोत्तम सिंह ने खिलवाया। फिर वे 7 बजे के लगभग सत्संग में आये। सत्संग में गुरु अमर दास जी का शब्द 'किस हों सेवी क्या जप करी ¹¹² पढ़ा जा रहा था। महाराज जी ने इन लोगों के लाभ के लिये सन्तमत का अमली पहलू अपने मुखारबिन्द से समझाया कि यद्यपि परमात्मा सब जगह व्यापक है, लेकिन ऐसे है जैसे दूध में घी। दूध दिखाई देता है, परन्तु घी दिखाई नहीं देता। यदि किसी पुरुष ने दूध में से घी न निकाला हो और कहा जाये कि दूध में घी है तो वह नहीं मानेगा, परन्तु जब दूध को दही बनाकर घी निकाला जायेगा तब वह दूध को जब देखेगा, कहेगा कि इसमें घी है। इस प्रकार यद्यपि ईश्वर सर्वव्यापक है, फिर भी जब तक मनुष्य अभ्यास द्वारा उसको अपने अन्दर प्रगट न कर ले वह बाहर नज़र नहीं आता, न ही सर्वव्यापक ईश्वर हमें कोई लाभ पहुँचाता है। जिस आदमी ने ईश्वर को अन्दर पा लिया वह बाहर भी कह सकता है कि ईश्वर हर जगह है। बाक़ी सबका कहना व्यर्थ है। अन्तर में ईश्वर प्राप्ति का साधन सतगुरु बतायेंगे। जाग्रत अवस्था में आत्मा की बैठक दोनों आँखों के बीच है। मनुष्य को चाहिये कि मन व आत्मा को नौ द्वारों से समेटकर आँखों में ले जाये, तो तारा-मण्डल, सूर्य-मण्डल, चन्द्र-मण्डल को पार करके स्थूल शरीर को छोड़कर सूक्ष्म शरीर से गुरु के नूरी अर्थात् सूक्ष्म स्वरूप को देखेगा। वह सूक्ष्म शरीर स्थूल शरीर से बहुत अधिक सुन्दर और सूक्ष्म है। स्थूल शरीर को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने के लिये किसी सवारी, रेलगाड़ी या मोटर कार की आवश्यकता होती है। सूक्ष्म शरीर विचार की धारा से जहाँ चाहे वहाँ पहुँच जाता है। सूक्ष्म के बाद कारण शरीर मिलता है। उस लोक का नाम ब्रह्म-लोक है जहाँ से सृष्टि की उत्पत्ति, पालन और संहार होता है। उससे आगे पारब्रह्म में आत्मा सब ग़िलाफ़ों को छोड़कर स्वतन्त्र हो जाती है। उस समय उसका अपना प्रकाश बारह सूर्य का होता है। फिर वह परमात्मा को समझने के योग्य बनती है। चन्द्र-मण्डल से परे सतगुरु आत्मा को शब्द देकर ऊपर चढ़ाते हैं।

8 अप्रैल को सुबह आठ बजे से पहले महाराज जी ठट्ठियाँ को, जोकि डेरे से लगभग 5 मील दूर है, भोग की रस्म के लिये गए। साथ में शादी व सरदार पुरुषोत्तम सिंह जी भी थे। मैं बीमारी के कारण तैयार न हो सका।

एक नुसखा जो महाराज जी ने दिल और दिमाग की ताक़त के लिये मेरे सामने एक व्यक्ति को लिखवाया, वह यह है- मगज, छोटी इलायची दो तोले, तबाशीर चार तोले, सर्द चीनी एक तोला, चार मगज 8 तोले, बादाम की गिरी 8 तोले, हरएक को अलग-अलग बारीक पीस कर कपड़छान कर लें। फिर उनमें सबके बराबर मिसरी मिलाकर रख लें; ख़ुराक एक तोला आधी छटाँक मक्खन के साथ।

आज 2 बजे के लगभग अमृतसर जाने की तैयारी है। वहाँ से 11 अप्रैल को वापसी होगी। 8 अप्रैल को महाराज जी 3 बजे के लगभग कार में अमृतसर को चल दिये। वहाँ साढ़े पाँच बजे के लगभग सत्संग हुआ। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'हर कीओं कथा कहाणीओं गुर मीत सुणाईआं' विया गया। महाराज जी ने फ़रमाया, जैसे कि हरी ऐनक वाले को सारी दुनिया हरी-हरी दिखाई देती है, वैसे ही गुरु राम दास जी को अपने ऊँचे प्रेम के कारण सब जगह प्रेम ही प्रेम दिखाई दे रहा है।

9 अप्रैल को सुबह साढ़े आठ बजे सत्संग आरम्भ हुआ। 'खोजत रही पिया पंथ, मर्म कोइ नेक न गाया " हुजूरी वाणी में से पढ़ा गया। शाम को साढ़े पाँच बजे के सत्संग में वही शब्द जो ढिलवाँ में पढ़ा था, पढ़ा गया।

10 अप्रैल को सुबह सत्संग नहीं हुआ। हुजूर ने नामदान दिया। उसके बाद हुजूर पेंशन के लिये कचहरी पधारे। वहाँ लाला रोशन लाल ए. डी. एम. और ख़जाने का अफ़सर हुजूर के दर्शनों को डी. सी. आफ़िस के सुपरिण्टेण्डेण्ट लाला नत्थू राम के प्राइवेट कमरे में उपस्थित हुए। कचहरी के बाद हुजूर लॉएडज बैंक में रुपया निकलवाने गए। उसके बाद चार बजे के लगभग मोक़ल, जिला लाहौर के ज़मीदार सरदार दीन मुहम्मद साहिब पधारे। वे हुज़ूर के पुराने जानने वाले हैं, बड़े सभ्य सुसंस्कृत बुजुर्ग और जमींदार हैं। उनका विचार था कि

12 अप्रैल 1943

आजकल की सरकार की पद्धति पंजाब के लोगों के विचारों के अनुसार नहीं है, जिससे में पूर्णतया सहमत हूँ। एम. एल. ए. साहिबों की कहानियाँ बताते रहे कि उनमें से कुछ ऐसे हैं जो कौंसिल में जाकर यह नहीं समझ सकते कि क्या वाद-विवाद हो रहा है। केवल उपस्थित होना ही अपना कर्तव्य समझते हैं।

उस दिन शाम को हुजूर ने कबीर साहिब का शब्द 'कर नैनों दीदार महल में प्यारा है 15 लिया और उसको बड़े अच्छे ढंग से समझाया। हुजूर ने फ़रमाया कि दो प्रकार के फ़क़ीर होते हैं - दर्ज़ाते सिफ़ली और दर्ज़ाते उलवी। दर्जाते सिफ़ली वे हैं जो जिकरे क़लब (हृदय का ध्यान) पास-अन्फास (प्राणायाम) और हब्से दम (कुम्भक) इत्यादि करके आँखों के नीचे के छ: चक्रों में मन व रूह को इकट्ठा करते हैं, आँखों के ऊपर नहीं गये। कबीर साहिब के इसी शब्द के पहले भाग में उन्हीं छ: चक्रों का वर्णन किया गया है। उसके बाद दर्जाते उलवी के फ़क़ीरों का रास्ता और मंज़िलों का वर्णन किया है जो आँखों से ऊपर सतलोक तक जाते हैं। उनके लिये मांस, शराब इत्यादि से परहेज आवश्यक है। दर्जाते उलवी के फ़क़ीर कम मिलते हैं। सत्संग से पहले हुजूर वर्कशाप देखने गये थे। सत्संग के बाद राय साहिब लाला अर्जुन दास, जोकि नहरों के अफ़सर हैं, की कार में बाहर सैर को गये।

11 अप्रैल को सरदार भगत सिंह पधारे। सुबह का सत्संग हुआ। खाना खाकर, आराम करके हुजूर तीन बजे के लगभग हाल बाजार में एक बीमार आदमी की ख़बर लेकर, राय साहब अर्जुन दास की कोठी में सरदार भगत सिंह के लिये एक घोड़ी देखने गये कि उसमें कोई नुक्स तो नहीं है। क्योंकि हुजूर अपनी नौकरी के सारे समय में घोड़े की सवारी करते रहे और घोड़े के अच्छे सवार थे। सरदार भगत सिंह वहाँ के एक-दो और व्यक्तियों को भी साथ लाये थे। एक ने घोड़े की पिछली टाँग में बेर हड्डी की शंका की। निश्चय किया कि किसी जानवरों के डॉक्टर को दिखाई जाये। वहाँ से ब्यास के रेलवे स्टेशन पर सरदार साहब को छोड़कर हम सब लोग शाम को छ: बजे डेरे वापस आ गये। आते ही हुजूर ने डाक माँगी। उसके बाद सत्संग में चले गए। अमृतसर में चार बजे के आसपास बड़ी वर्षा हुई थी, परन्तु ब्यास में नहीं थी।

12 अप्रैल सुबह को फिर थोड़ी-सी वर्षा हुई जिस कारण गेहूँ की फ़सल की कटाई न हो सकी। इसलिये सुबह के समय भोग समाप्त किया गया। हुजूर ने फ़रमाया कि मरे हुओं को रोना वाहेगुरु की आज्ञा के विरुद्ध है। जैसे कि श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में गुरु रामदास जी की 'सद' से साफ़ जाहिर हैं और कबीर साहिब ने भी कहा है:

कबीर संत मूए क्या रोईऐ जो अपने गृह जाय। रोवो साकत बापुरे जो हाटै हाट बिकाय।16

दोपहर को हुजूर गेहूँ की फ़सल कटवाने चले गए। वहाँ मैं डाक लेकर पाँच बजे उपस्थित हुआ। डाक में किसी व्यक्ति ने शिकायत की थी कि मेरा मन एकाग्र नहीं होता, हालाँकि बहुत प्रयत्न करता हूँ। हुजूर ने फ़रमाया कि मन कैसे एकाग्र हो, दूसरा विवाह बुढ़ापे में किया हुआ है। डाक जब पढ़ चुके तो वर्षा ज़ोर से आ गई। कटाई बन्द कर दी गई और कटी हुई फ़सल के गट्ठर बाँधकर एक जगह एकत्र करने लगे। आधे घण्टे के बाद वर्षा बन्द हो गई। फिर हजूर रात के दस बजे तक बाहर खेतों में कटाई करवाते रहे। यहाँ तक कि सब खेतों की कटाई समाप्त हो गई और सारी फ़सल खलियान में आ गई। हुजूर को कड़े परिश्रम का अभ्यास है। आप परिश्रम से जी नहीं चुराते। न मौसम की ख़राबी की परवाह करते हैं। रात को सरदार भगत सिंह व आहलूवालिया साहिब लगभग 11 बजे पधारे। हुजूर के दर्शन को गये। हुजूर 12 बजे तक उनको समय देते रहे। अपने दिन-भर की थकावट व नींद की कोई परवाह नहीं की। सुबह 8 बजे फिर संगत को दर्शन देने और काम पर जाने को तैयार थे और मजा यह कि सुबह के भजन का भी नाग़ा नहीं करते।

13 अप्रैल आज बहुत भीड़ है। लोग सब ओर से आ रहे हैं। हुजूर कार में बैठकर फ़सल की कटाई देखने बाहर गये परन्तु 12 बजे के लगभग वापस आ गये। अब लोगों को समय दे रहे हैं। शाम के साढ़े तीन बजे सत्संग आरम्भ हुआ। पहले मारू राग में से 'काम क्रोध परहर पर निंदा "7 लिया गया। इस शब्द में आन्तरिक रूहानी यात्रा की चर्चा है। पहले जिज्ञासु को काम, लोभ, अहंकार और निन्दा इत्यादि छोड़ने के लिये कहा गया है। जिससे कि वह आन्तरिक यात्रा के योग्य हो जाये और फिर कहा गया है कि भ्रम का संगल तोड़ दो। इसका दूसरी जगह भी बताया है कि: ''पूर्व हो पश्चिम को आवे, रव शष दोहां इक्तर मिलावे।'' दक्खन से जो चढ़े सुमेर, आवे फिर दक्खन के फेर। पुरियाँ सात ऊपर कमलासन, तित्थे पारब्रह्म का आसन। जिन्ह हीरे रतने माल परोई, नानक कहे उदासी सोई।' यह भी आन्तरिक यात्रा की ओर संकेत है। हुजूर ने फ़रमाया कि नाम से तात्पर्य किसी शब्द से नहीं परन्तु उस नाद से है जो अन्तर में हर घड़ी हो रहा है और जो गुरु का असली रूप है। गुरु देह ही नहीं है। एक बार तुलसी साहिब ने हाथरस में यह शब्द उच्चारण किया, 'रहूं री बिदेह देह दरसाऊँ' ho° बीबी फूलाबाई सत्संगिन वहाँ उस समय उपस्थित थी। कहने लगी कि साहिब जी आप तो भले-चंगे, हट्टे-कट्टे, सामने बैठे दिखाई देते हो। फिर बिदेह कैसे हो ? साहिब जी महाराज ने उत्तर दिया कि अरी सुसरी! तू क्या जाने सन्तों की गति को। आ मुझको पकड़। उस समय बीबी ने दोनों बाँहें फैलाकर बहुत कोशिश की कि साहिब जी को बाँहों से पकड़ ले, परन्तु सफल नहीं हुई। साहिब जी बहुत हँसे और फूलाबाई चरणों पर गिर पड़ी। इस पर हुजूर ने फ़रमाया कि सतगुरु वह शक्ति है जो हर जगह उजाड़ों-पहाड़ों में अपने सेवक के साथ उपस्थित हैं, वरना अन्त समय सेवक की कैसे सँभाल करें। जो सत्संगी लोग आजकल फ़ौज में गये हुए हैं जब वे कष्ट में गुरु को याद करते हैं तो गुरु उनकी सहायता करते हैं। उनके चाहे लाखों सेवक हों, सबके संग रहते हैं। मुक्ति के लिये केवल दो ही चीजें आवश्यक हैं, नाम और गुरु! कबीर साहिब ने फ़रमाया है, 'नाम बिना मुक्ति नहीं, सन्त बिना नहीं नाम 🖰

14 अप्रैल को बहुत-से लोग जो वैशाखी मनाने आये थे, चले गए। फ़सल की कटाई चल रही है। शाम को हुजूरी वाणी में से 'सुरत संग सतगुरु धोवत मन को 122 लिया गया। हुजूर ने फ़रमाया कि सन्त दृष्टि से, सिर पर हाथ रख कर और वाणी-वचन द्वारा जीव पर दया कर सकते हैं। सरदार गुलाब सिंह जी ने बताया कि सूक्ष्म शरीर नौ तत्त्वों का होता है, पाँच सूक्ष्म तत्त्व और चारों अन्त: करण। कारण शरीर केवल पाँच कारण तत्त्वों का होता है। सरदार बलवन्त सिंह रावलपिण्डी वाले ने सत्संग में बताया कि एक आदमी और उसकी पत्नी दोनों ने हुजूर से नाम ले रखा था, परन्तु अपने लड़के से चोरी जोकि देव-समाजी था। वे दोनों तो मृत्यु को प्राप्त हुए, परन्तु उस देव-समाजी के एक लड़का था जो गुजर गया और उसको स्वभावत: बड़ा दु:ख हुआ। एक दिन वह सरदार साहब के पास आया और कहने लगा कि रात को एक अद्भुत घटना देखी। रात को स्वप्न में क्या देखता हूँ कि एक सूने व पहाड़ी जंगल में अकेला भटक रहा हूँ और अपने लड़के का नाम लेकर पुकार रहा हूँ। वृक्षों से पूछ रहा हूँ कि तुमने मेरा लड़का देखा है। इसी दशा में भटकते-भटकते एक मैदान में जा निकला। जहाँ एक शामियाना लगा हुआ था और पण्डाल बन रहा था। कुछ लोग जो वहाँ थे उन्होंने कहा कि तुम ज़रा ठहरो। महाराज जी सत्संग के लिये आ रहे हैं। थोड़ी देर में हुजूर पधारे और मुझे नाम लेकर पुकारा और कहा कि तुम मेरी ओर देखो। जब आँखें उठाकर देखा तो महाराज जी के फैलाये हुए हाथ के बाजू में से बिजली का-सा प्रकाश निकल रहा था और उनकी आँखों के नूर से पण्डाल में प्रकाश ही प्रकाश था। उस प्रकाश को देखकर दिल से सारा मोह निकल गया।

महाराज जी ने फ़रमाया कि देखो अब सत्संग होनेवाला है। तुम सत्संग सुनकर जाना। इतने में मेरी आँखें खुल गई। जो हुज़ूर का हुलिया वर्णन किया वह हुज़ूर महाराज जी से मिलता था और उस देव-समाजी ने हुज़ूर को पहले कभी नहीं देखा था।

15 अप्रैल को कर्नल सैंडर्स साहिब भी सत्संग में उपस्थित थे। शाम को छ: बजे के लगभग श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से शब्द पढ़ा गया। भाणा के विषय में (राजी-ब-रज़ा रहने पर) मालिक की मौज़ में ही ख़ुश रहने पर। हुज़ूर ने 16 अप्रैल 1943

फ़रमाया कि रोग, दु:ख-सुख, ग़रीबी और अमीरी को सन्तोष, शान्ति व 100 धन्यवाद के साथ भोग लेना चाहिये। सतगुरु सूली की सूल करके भुगतवाते हैं। अत: बाबा जी महाराज के समय में एक बीबी की दाढ़ में सख़्त दर्द हो रहा था। लोग बार-बार बाबा जी महाराज की हुजूरी में जाकर प्रार्थना करते थे परन्तु बाबा जी टस से मस नहीं होते थे। अन्त में एक प्रेमी सत्संगी के हठ करने पर उन्होंने फ़रमाया कि उस बीबी ने पहले जन्म में एक लड़का जेवर के लालच में मार डाला था। उसका बदला वह लड़का दाढ़ में कीड़ा बनकर ले रहा है। क्या यह गुरु की दया नहीं है कि उस बच्चे का पूरा-पूरा बदला

सत्संग के बाद हुजूर गेहूँ की फ़सल कटवाने खेतों में चले गए। वहाँ से नहीं दिलवाया गया ? आकर रात के दस बजे तक डाक देखते रहे।

16 अप्रैल से 22 अप्रैल तक मैं डेरे से अनुपस्थित रहा। 22 अप्रैल की शाम को हुजूर की सेवा में उपस्थित हुआ तो प्रोफ़ेसर जगमोहन लाल साहब अमेरिका की डाक सुना रहे थे। अमेरिका के किसी सत्संगी ने लिखा था कि वह शारीरिक रोगों का इलाज आत्मिक-शक्ति से कर रहा है। उसको उत्तर दिया गया कि ऐसा करने से आत्मिक उन्नित में बाधा पड़ती है। इसके बाद शाम को भोग डालने के बाद श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से छोटा-सा शब्द लिया गया, जिसका तात्पर्य यह था कि यदि वाहेगुरु को मिलना है तो अहम् का नाश करो।

23 अप्रैल को हुज़ूर ने एक मेम को नाम दिया। फिर डाक देखी। शाम को स्वयं हुजूरी वाणी में से 'जग में घोर अंधेरा भारी 123 शब्द का सत्संग किया। हुजूर ने फ़रमाया कि पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ, पाँच कर्मेन्द्रियाँ और चारों अन्त:करण अर्थात् मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार, यह सब चौदह मनुष्य के शत्रु हैं। ये सब मनुष्य से बुरे कर्म करवा कर फिर धर्मराय के दरबार में उसके विपरीत गवाही देते हैं। यही बात श्री गुरु ग्रन्थ साहिब व मौलाना रूम की मसनवी में आई है। जिस संसार में जीव एक दूसरे को खा रहे हैं, वहाँ अँधेरा नहीं तो और क्या है ? क्योंकि अनाज के दानों, पौधों तथा जानवरों में भी आत्मा है। ईश्वर सर्वव्यापक है। लोगों ने इस परदेस को अपना देश समझ रखा है। इसलिये इसी के लिये लड़ते मरते हैं और मर कर यहीं पैदा होते हैं तथा दु:ख-सुख भोगते हैं। सन्त कहते हैं कि इस परदेस को छोड़कर सत्तलोक निश्चल धाम में चलकर बसो। आजकल हुजूर का स्वास्थ्य कुछ बिगड़ा-सा रहता है। कमजोरी मालूम पड़ती है। हुजूर ने फ़रमाया कि तुम मेरी बाहरी सूरत देखकर कहते होंगे कि अच्छा स्वस्थ पुरुष है, परन्तु मेरे अन्दर बिलकुल ताक़त नहीं रही। जिससे हम सबको बहुत ही रंज और दु:ख हुआ।

24 और 25 अप्रैल मासिक सत्संग के दिन थे। संगत बहुत कम आई क्योंकि लोग फ़सल काटने में व्यस्त थे। बादल छाये हुए थे। 24 अप्रैल शाम को सत्संग में 'गुरू गुरू मैं हिरदे धरती 24 पढ़ा गया। हुजूर ने फ़रमाया कि हज़रत बायजीद बुस्तामी जब कभी समाधि में जाते तो मस्ती में कह उठते - मैं ख़ुदा हूँ, मैं ख़ुदा हूँ। इससे मौलवी लोग आग-बबूला हो गये। उनके शिष्यों ने उनका ध्यान इस ओर आकर्षित किया तो आपने फ़रमाया कि अब जब कभी मैं ऐसी बात मुँह से निकालूँ तो तुम मुझे अपनी मन-पसन्द सज्ञा देना। सो एक बार मस्ती में उनके मुख से वही वचन निकलने लगा, 'मैं ख़ुदा हूँ , मैं ख़ुदा हूँ । इस पर चेलों ने अपनी-अपनी लाठियों और चाकुओं से उन पर वार किये। किसी ने गर्दन पर, किसी ने सिर पर, किसी ने हाथ इत्यादि पर। दिन चढ़े जब हज़रत का ध्यान नीचे उतर आया तो देखा कि जिस शिष्य ने शरीर के जिस भाग पर छुरी मारी थी वह छुरी हज़रत बायजीद को न लगी बल्कि उस शिष्य के अपने ही उसी अंग पर लगी और वह जख़्मी हो गया।

25 अप्रैल को जेम्स परवुड जालन्धर छावनी में पधारे। 'नाम निर्णय'²⁵ का शब्द लिया गया, 'काया कामण अत सुआल्यो पिर वसै जिस नाले।'

26 अप्रैल को हुजूर ने नाम दिया। कोई 129 बीबियाँ थीं, जिनमें से लगभग 29 की आत्माएँ नाम देते ही सिमटकर प्रकाश में चली गई। हुजूर ने फ़रमाया कि ये उनके हृदय की सादगी व पवित्रता का फल है।

27 अप्रैल को मेम साहिबा जाने से पहले हुजूर से विदाई की आज्ञा लेने गई। मैंने अनुवादक के रूप में काम किया। मेम साहिबा को बताया गया कि सिमरन करते समय किसी बाहरी ध्यान की ज़रूरत नहीं। यदि मन सिमरन में नहीं लगता हो तो मन को ठहराने के लिये सतगुरु-स्वरूप का ध्यान दे दो। परन्तु किसी फ़ोटो, तस्वीर या मूर्ति का ध्यान मना है। क्योंकि बेजान जानदार को नहीं खींच सकता। जो महात्मा अन्दर खण्डों-ब्रह्माण्डों पर जाता है, उनके स्वरूप का 27 अप्रैल 1943

ध्यान करना चाहिये। उनकी मूर्ति या फ़ोटो का ध्यान बिलकुल व्यर्थ है और पुराने गुजरे हुए महात्माओं जैसे राम चन्द्र जी, कृष्ण जी, कबीर साहिब, गुरु नानक देव जी, हजरत ईसा मसीह के फ़ोटों का ध्यान बिलकुल व्यर्थ है। उनकी तस्वीरें अलग-अलग देशों में अलग-अलग ढंग से बनती हैं और कलाकार अपनी कल्पना के अनुसार उनके नक़्श व रंग इत्यादि बनाता है और यदि उन महात्माओं की असली तस्वीरें भी हों तो भी तस्वीर बेजान है, जानदार को आकर्षित नहीं कर सकती।

हुजूर ने फिर फ़रमाया कि मैं सारा उपदेश पाँच नाम का और शब्द सुनने का तरीक़ा एक ही बार इसीलिये बता देता हूँ और इसलिये कहता हूँ कि अभ्यासी को अपने अभ्यास में कुछ समय शब्द सुनने पर भी देना चाहिये ताकि यदि अभ्यासी की मौत आ जाये, तो मौत से पहले वह अघ्ट-दल कमल में पहुँचकर खींचने वाले शब्द को सुने, तो फिर उसको जन्म न लेना पड़े, क्योंकि मुक्ति शब्द में है। असल में पहले मन और रूह को इकट्ठा करके नौ द्वारों अर्थात् आँखों के निचले भागों में से ध्यान को निकालकर आँखों के पीछे जमा कर लेना चाहिये, फिर शब्द सुनना चाहिये तािक शब्द साफ़-साफ़ और आकर्षित करनेवाला हो और आत्मा को ऊपर खींचे। चाँद लोक से नीचे शब्द रस तो देता है परन्तु आत्मा को ऊपर नहीं खींचता। जैसे कि एक गाय का बछड़ा बँधा हुआ है। यदि गाय को खोल भी दें तब भी वह कहीं भाग नहीं सकती, क्योंकि उसका प्यार बछड़े में है। इसी प्रकार जब तक मन का प्यार दुनिया के सामानों व रिश्तेदारों में है, शब्द उसको कैसे उठाये। जब सबका प्यार छोड़कर आत्मा सूक्ष्म देश को पार करेगी तो शब्द आत्मा व मन को उठाने लगेगा।

मेम साहिबा ने पूछा कि सुबह जब मैं सोकर उठती हूँ तो मुझे उदासी-सी मालूम होती है। मैंने तो डॉक्टरी विचार से कह दिया कि अवश्य किसी शारीरिक दुर्बलता या रोग के कारण होगा। परन्तु हुजूर ने बड़े पते की बात कही और तुरन्त कही। यह कि जब सांसारिक लोग नींद से जागते हैं तो उनका मन अपनी-अपनी उस चीज़ या सम्बन्धी का ध्यान करके तुरन्त मग्न हो जाता है, जिससे उसका लगाव और प्यार है। चूँिक मेम साहिबा सांसारिक लगावों से स्वतन्त्र हैं, उनके मन को जागने पर किसी ऐसे सहारे के न मिलने की वजह से सूनापन मालूम होता है। इसलिये तबीयत में गिरावट यानी ख़ुशी का अभाव रहता है। ज्यों-ज्यों अभ्यास करके अन्दर शब्द और गुरु से प्रीति लगती जायेगी यह दूर होता जायेगा। मेम साहिबा कल पहाड़ को खाना हो जायेंगी।

आज शाम को श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से गुरु राम दास जी का शब्द पढ़ा गया 'नाम मिलै मन त्रिपतीऐ बिन नामैं धृग जीवास। 🗗 देखो गुरु साहिब के मन में नाम का कितना प्रबल प्यार था। हम लोग हैं कि संसार का प्यार मन से निकालना हमारे लिए अति कठिन हो गया है। आज एक सुनार ने, जो अमृतसर का रहनेवाला है, शिकायत की कि मेरा लड़का मेरी आज्ञा में नहीं रहता। हुजूर ने जवाब दिया कि तुम उसकी परवाह न करो। यह सांसारिक सम्बन्ध केवल धोखा व माया का जाल हैं। लेन-देन से पैदा हुए हैं। जब लेना-देना निपट गया तो कौन बाप कौन बेटा। इसी विषय में हुजूर ने एक वार्ता, शेर सिंह सवार की, जोकि रावलपिण्डी फ़ौज में नौकर था, बताई कि वह अपने वेतन का कुछ भाग फ़ौज के बनिये के पास जमा करा देता था। होते-होते यह रक़म 2,000 के लगभग हो गई। उस समय शेर सिंह को एक लड़ाई में सीमा की ओर जाना पड़ा। वहाँ जाकर अचानक उसकी घोड़ी, जिस पर वह सवार था, ऐसी मुँहज़ोर हो गई कि दुश्मन की फ़ौज की ओर भाग निकली, जिसका परिणाम यह हुआ कि पठानों की गोलियों ने दोनों को छलनी कर दिया और दोनों वहीं ढेर हो गये। शेर सिंह के घर वालों को बनिये के पास रखी अमानत का पता नहीं था। वे बाक़ी सामान तो ले गये परन्तु अमानत बनिये के पास रही। उसने अपनी बहियों में जमा-ख़र्च कर ली कि वह लावारिस मर गया। उसके बाद 20-25 वर्ष का समय बीत गया। बनिया रावलपिण्डी के बड़े दुकानदार से सौदा इत्यादि ख़रीदा करता था। वह दुकानदार एक बार गंगा-स्नान को गया और वह बनिया वहाँ से काम समाप्त करके अपने ज़िले सहारनपुर में आ चुका था। दुकानदार रास्ते में उस बनिये से मिला। बनिया उसको बाग़ों की सैर करवाने ले गया। फिर घर ले आया और खीर इत्यादि उत्तम भोजन उसके आगे खाने के लिये रखे। अभी दुकानदार भोजन कर ही रहा था कि साथ वाले कमरे में से रोने-पीटने की आवाज़ आई। दुकानदार चौंका तो बनिये ने बताया कि उसका 18 वर्ष का लड़का चार-पाँच दिन पहले मर गया था और उसकी विधवा स्त्री रो रही है। उस पर दुकानदार बहुत क्रोधित हुआ कि तुमने ग़ज़ब किया। तुम बड़े पत्थर-दिल हो कि तुम्हारे जवान बेटे की मृत्यु हो जाये, पीछे विधवा छोड़ जाये और

27 अप्रेल 1943

तुम हमको ऐसे-ऐसे खाने खिलाओ। बनिया हँसा। उसने कहा, मुझे बेटे के मरने का गम नहीं है। जब मेरा बेटा बीमार हुआ तो मैंने उसका बहुतेरा इलाज किया। अन्त में जब वह मरने के क़रीब था तो एक मौलवी साहिब को धागा तावीज करने के लिये घर लाया गया। उसने तावीज करके दिया। मैंने उसको ढाई रुपये दिये तो लड़का हँसा। मौलवी ने कहा कि देखो, तुम्हें मेरे तावीज से फ़ायदा हो गया। इस पर लड़के ने कहा, हाँ, पक्का फ़ायदा हो गया। जब मैंने पूछा तो कहने लगा कि अब मेरी मौत का वक्रत क़रीब है, मुझे पहले जन्म का सारा हाल मालूम है। मैं वही शेर सिंह हूँ। जितना रुपया तुमने अमानत का ख़र्च किया था वह अब पूरा हो चुका है, केवल ढाई रुपये मौलवी जी को देने बाकी थे। यह जो मेरी पत्नी है, यह वही घोड़ी है जो मेरी मृत्यु का कारण बनी थी। अब यह सारी आयु विधवा होकर रोयेगी। न तुम मेरे बाप हो, न मैं आपका लड़का। मैं तो वहीं शेर सिंह सवार हूँ। इतना कहकर लड़के ने दम तोड़ दिया। सो दुनिया के सम्बन्धी लेन-देन के कारण आते हैं। लेना-देना पूरा हो गया, बिछुड़ गये, रिश्ता ख़त्म हो गया।

हुजूर ने फ़ैसला किया कि हर बुधवार को मौन व्रत धारण करेंगे। यह फ़ैसला उनके स्वास्थ्य के लिये बहुत जरूरी था और बहुत पहले से हो जाना चाहिये था। आज बुधवार है। हुजूर विश्राम कर रहे हैं। मैं अमृतसर डेरे का काम करके शाम के 7 बजे वापस आ गया। 29 अप्रैल को सत्संग में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से गुरु अर्जुन देव जी का शब्द 'बिरखें हेठ सभ जंत इकट्ठे '28 पढ़ा गया, जिसमें कर्म दार्शनिकता पर रोशनी डाली गई। सरदार गुलाब सिंह जी ने कहा कि सब शास्त्र, वेद और दूसरी धार्मिक पुस्तकें इस पर सहमत हैं कि कर्म का फल ज़रूर भोगना पड़ेगा। यह मनुष्य की ग़लती है कि वह सोचता है कि 'एह जग मिट्ठा अगला किन डिट्ठा।' भगवद् गीता में लिखा है कि सौ कल्प गुज़र जाने पर भी कर्म का फल भोगना पड़ता है। 998 चौकड़ी युगों का एक कल्प होता है। हुजूर ने फ़रमाया कि पहले जन्म के संस्कारों के कारण मनुष्य की बुद्धि भी भ्रष्ट हो जाती है। जब भीष्म पितामह अन्त समय में बाणों की शैय्या पर लेटे हुए ज्ञान की बातें कर रहे थे तो द्रोपदी देखकर हँसी। भीष्म ने पूछा कि हँसी की क्या बात है ? वह बोली कि जब दुर्योधन की सभा में आपके सामने मुझे नंगा करने की कोशिश की जा रही थी तो आप चुप थे, उस समय आपका ज्ञान कहाँ गया था। भीष्म ने कहा कि बेटी! मैं दुर्योधन का अन्न खा-

खाकर बुद्धि भ्रष्ट कर चुका था। इसी तरह जब बुरे कर्मों का दौर आता है तब बुद्धि भी अपना असर नहीं करती। मनुष्य बुद्धि के तर्क को नहीं मानता, मन के कहे में आ जाता है। कर्म का फल अवतारों तक को भोगना पड़ता है। रामायण में आया है कि 'सिय रघुबीर कि कानुन जोगू। करम प्रधान सत्य कह लोगू' 🗗

सरदार गुलाब सिंह जी ने बताया कि राजा भोज ने ज्योतिषियों से पूछा कि उसने अपने पूर्व जन्म में कौन-कौन सा शुभ काम किया था जिसके बदले में उसको राज्य का सुख मिला ? ज्योतिषियों ने कहा कि इस शहर में फलाँ एक शूद्र-स्त्री है, उससे जाकर पूछो। जब उस शूद्र-स्त्री के पास राजा गया तो उसने कहा कि अमुक पहाड़ी पर एक साधु धूनी रमाये बैठा है, उसके पास जाओ। अत: राजा साधु के पास गया। उस समय साधु ने अपना ध्यान विष्णुपुरी ले जाकर वहाँ से विमान उतारे और राजा को उसमें बैठा कर बैकुण्ठ में ले गया। वहाँ सुन्दर महल तैयार हो रहे थे। पूछने पर बताया गया कि यह महल राजा भोज के लिये बनाये जा रहे हैं। जब दोनों वापस उतरे तो साधु ने कहा, राजन्! पहले जन्म में में, तुम और वह शूद्र-स्त्री भाई-बहन थे और वह बुढ़िया जो पहाड़ों में नग्न पागल होकर घूम रही है, हमारी माता थी। हमारा पिता छोटी उम्र में ही गुज़र गया था। एक बार हम दो दिन से भूखे थे। बचपन का ज़माना था। हमारी माँ कहीं से आटा माँगकर लाई, जिससे उसने चार रोटियाँ पकाईं। जब एक-एक रोटी चारों में बँट गई तो एक साधु–महात्मा द्वार पर आकर भीख माँगने लगा। हमारी माता ने कहा हम स्वयं भूखे हैं तुम्हें रोटी कहाँ से दें और क्रोध में उसकी चादर खींचकर उसे नग्न कर दिया। साधु शान्ति वाला था, चुप रहा। फिर हमारी बहन ने कूड़े-करकट का टोकरा साधु पर फेंक दिया। मैंने चूल्हे में से जलती लकड़ी लेकर साधु को मारी। परन्तु तुमने सोचा कि यह साधु अवश्य बड़ा भूखा होगा जो डटकर खड़ा है। तुमने अपनी रोटी में से आधी रोटी उसको दे दी। उसका फल तुम्हें राज्य मिला। मुझे गर्म आग के सामने धूनी से शरीर को तपाने का, हमारी बहन को शूद्र का और माता जी को जंगलों में फिरने का काम मिला। सो कर्म का फल हरएक जन्म में असर करता है। मनुष्य-जन्म में अच्छे कर्म करने चाहिये।

सत्संग के बाद मौसम कुछ ठण्डा हो गया। हुजूर राय साहब के थड़े पर आकर बिराजमान हुए और अन्धेरा होने पर वहाँ से चले गए। हुजूर ने फ़रमाया कि पाँच-पाँच, छ:-छ: जन्म पहले के सम्बन्ध वाले जीव लेन-देन के कारण उनके आसपास जमा रहते हैं।

30 अप्रैल से यह नियम लागू कर दिया है कि लोग हुजूर के दरवाजे के सामने सुबह जमा न हों बल्कि बाहर सत्संग हॉल में जमा हों और हुजूर वहाँ सुबह एक घण्य पधारें, वहाँ दर्शन दें और लोगों की प्रार्थनाएँ सुनें। इस तरह सुबह की भीड़-भाड़ व शोर-शराबा रुक गया। शाम को 'कबीर साखी-संग्रह' में से 'सेवा' का अंग लिया गया। हुजूर ने फ़रमाया कि पूर्ण सन्तों की प्रारब्ध नहीं रहती। केवल देखने के लिये प्रारब्ध रह जाती है। इसलिये ज्योतिषी उनकी जन्म-कुण्डली देखकर प्रारब्ध कर्म का अनुमान नहीं लगा सकते। फ़रमाया कि जब उनकी टाँग की हड्डी टूटी तो उनको पाँच वर्ष कष्ट उठाना था, जो केवल पाँच महीने में भुगतवा कर दूर किया गया। पहले तो आपके शरीर के रहने की कोई आशा न थी। डॉक्टर लोग निराश हो गये थे। परन्तु जब बाबा जी को तार दी गई कि आपका शरीर समाप्त होनेवाला है तो उन्होंने अन्तर-दृष्टि से देखकर फ़रमाया कि नहीं जाता। इसी प्रकार कई सत्संगियों ने अलग-अलग घटनाएँ वर्णन कीं कि किस प्रकार सतगुरु ने अपनी दया से कठिन समय में सांसारिक मामलों में भी उनकी सहायता की। हुजूर ने फ़रमाया कि एक बार बाबा जी महाराज महिमासिंहवाला, ज़िला लुधियाना में हुजूर के यहाँ पधारे और अपने कमरे में लेटे हुए थे। जैसे कोई नींद में बातें करता है। बातें कर रहे थे कि हुजूर उनके कमरे में आये और चुपके से एक कोने में बैठ गये। जब बाबा जी महाराज नींद में से उठे तो हुजूर ने पूछा कि आज हुजूर कहाँ गये थे और किससे बातें कर रहे थे। तो बाबा जी महाराज ने पूछा कि क्या तुमने सारी बातें सुन लीं ? उनके जवाब देने पर कि हाँ सुन लीं, बाबा जी ने फ़रमाया कि किसी से कहना नहीं। आजकल हमारे फ़ौजी सेवक माला कुण्ड लड़ाई में घिरे हुए हैं उनको हौंसला देने के लिये गये थे। इसी प्रकार गुरु अर्जुन देव और काबुल के दुकानदार, जिसका तराजू का बट्टा पाँच पैसे भर कम था, उनकी चर्चा चल पड़ी।

हुजूर कल सुबह प्राईवेट कमरे में एक जाट से बातें कर रहे थे। हुजूर के पास हँसी की कहानियों का, जो न समाप्त होनेवाला भण्डार है, उसमें से यह कहानी सुनाई कि एक जाट ने अपनी दाढ़ी दो सौ रुपये में बेच दी और नाई ने वह दाढ़ी काट कर अलग रख दी। उसके बाद बनिये ने अपनी दाढ़ी बेचने का

सौदा 1,000 रुपये में किया और रुपया ले लिया। जब नाई उसकी दाढ़ी काटने लगा तो बनिया बोला कि अरे, यह तो बादशाह की दाढ़ी है यदि काटेगा तो बादशाह फाँसी पर लटका देगा। इस पर नाई डरा और बनिये को एक हजार रुपया भी हाथ लग गया और दाढ़ी भी रही। इस पर जाट को बहुत क्रोध आया। कहने लगा मेरी दाढ़ी का दो सौ और बनिये की दाढ़ी का एक हजार ? में नहीं लेता, यह लो अपने रुपये और वापस करो मेरी दाढ़ी। अत: जाट ने दो सौ रुपये वापस कर दिये। दाढ़ी भी गई और रुपये भी।

1 मई को महन्त इन्द्र सिंह, जो ऐबटाबाद गाँव का था, का मृतक भोग था। महन्त इन्द्र सिंह का नियम था कि जाड़े के आरम्भ में ऐबटाबाद से आ जाता और सिरसे मिल में जाकर बेलनों में गन्ने देने का काम करता और इतनी मेहनत से करता कि सारा दिन सुबह से शाम तक अपनी जगह से न हिलता। हुजूर उससे प्रसन्न थे। उसकी मौत डेरे में हुजूर के चरणों में हुई। बीमारी से तंग आकर एक दिन उसके कहने पर उसकी चारपाई उठाकर हुज़ूर के द्वार के सामने रख दी गई। जब हुजूर सुबह को बाहर आये तो कहने लगा कि या मेरा इधर फ़ैसला कर दो या उधर। अत: एक-दो रोज़ में वह चल बसा। मृतक के भोग में पहले नवें गुरु का शब्द 'गुन गोबिंद गायो नहीं ' पढ़ते हैं। उसके बाद गुरु अमरदास जी की 'सद' पढ़ते हैं, जोकि उनके ज्योति-ज्योत समाने के हाल के बारे में है। उन्होंने हुक्म दिया कि हमारे मरने पर कोई न रोये क्योंकि में अपने मित्र, सृष्टि के कर्ता को मिलने जा रहा हूँ, मुझे ख़ुशी है। ऐसा सुना है कि हुजूर बाबा जी महाराज ने अपनी चढ़ाई से कुछ समय पहले फ़रमाया कि यदि कोई मनुष्य परदेस में बहुत-सा रुपया कमा कर घर को जानेवाला हो तो यदि कोई उसको रोके तो उसको कितना बुरा लगेगा। ऐसे ही हमने भजन-सिमरन की दौलत इकट्ठी कर ली है। अब हमारी अपने देश जाने की तैयारी है। कोई हमें यह न कहे कि और यहाँ रहो। 'सद' के बाद राग माला पढ़ी जाती है। जिसमें छ: राग- भैरव, मालकौस, हिण्डोल, दीपक, श्री राग, मेघ राग और उनकी पाँच-पाँच रागनियाँ और आठ-आठ राग हैं।

आजकल सिरसा जाने की तैयारियाँ हैं, फिर देहली और पिसावा जायेंगे।

2 मई इतवार को फिर भोग का शब्द सरदार भगत सिंह जी ने पढ़ा। सरदार साहिब ने फ़रमाया कि यह शब्द नवीं पातशाही ने उस समय उच्चारण किये थे जबिक उनके वध का हुक्म हो चुका था और एक तरह से वह स्वयं ही सिर देने के लिये गए थे। उनको मरने का कोई ग़म व डर मरने का नहीं था। हुजूर ने फ़रमाया कि सन्त किसी को, जो कि उनको हानि पहुँचाता है, शाप नहीं देते। इसी को स्पष्ट करने के लिये सरदार साहिब ने बताया कि हजरत अली को लड़ाई में शत्रु के हाथों घातक ज़ख्म आया तो शत्रु को भी घातक ज़ख्म लगा था। उसको भी बन्दी बनाकर लाये। हजरत अली को ज़ख्म के कारण बहुत प्यास लगी थी। उनके लिये शर्बत का प्याला लाया गया, तो उन्होंने कहा कि उसकी ज़रुरत मुझ से ज्यादा है, उसको पिला दो। सो वह प्याला उस व्यक्ति को पेश किया गया परन्तु उसने पीने से इनकार कर दिया। इस विचार से कि उसमें कहीं जहर न मिला दिया गया हो। जब हजरत अली के पास प्याला वापस लाया गया तो हजरत ने फ़रमाया कि यदि वह मर जाता तो मैं उसको पहले स्वर्ग में भेजकर स्वयं पीछे जाता। शेख़ सादी ने फ़रमाया है:

शुनीदम कि मरदाने राहे ख़ुदा दिले दुश्मनाँ हम न करदंद तंग। तुरा के मुयस्सर शवद ईं मुकाम कि बा दोस्तानत ख़िलाफ़ अस्तो जंग। अर्थात् , सुना है कि गुरुमुख लोग शत्रुओं का भी दिल नहीं दुखाते परन्तु तुम्हें वह पदवी कैसे मिल सकती है जबिक तू मित्रों के भी विरुद्ध है और उनसे शत्रुता रखता है।

आज सत्संग जल्दी समाप्त कर दिया गया। एक सत्संगी ने लिखा कि एक अभ्यासी ने उसको बताया कि अभ्यास की सफलता के लिये ये तीन चीज़ें बड़ी जरूरी हैं। लंगर से रोटी न खाओ। किसी को न अपना कपड़ा दो न लो। किसी को अपने कमरे में न आने दो। हुजूर ने फ़रमाया कि है तो सच, परन्तु गृहस्थियों से यह बातें निभ नहीं सकतीं।

3 मई को हुजूर शाम को रेलवे स्टेशन ब्यास पर रेलवे ट्रक में सिरसा के लिये लकड़ियाँ लदवाने गए। वहाँ से नौ बजे आकर एक भोग की रस्म अदा की। फिर 10 बजे के बाद भोजन करके लकड़ियाँ लदवाते रहे। यहाँ तक कि ढाई बज गये, उस समय हुजूर ने विश्राम किया। परन्तु साढ़े चार बजे फिर जाग उठे क्योंकि सिरसा जाना था।

अध्याय 6 देहली के रास्ते सिकन्दरपुर और पिसावा के दौरे की घटनाएँ

हुजूर का सिरसा का सफ़र और वहाँ निवास

4 मई को सुबह साढ़े पाँच बजे मोटर कार में सवार होकर ठीक 1 बजे दोपहर को सिरसा के सत्संग-घर में पहुँच गये। रास्ते में दो-दो मिनट के लिये जालन्थर शहर, फ़िल्लौर व लुधियाना ठहरे। मलोट मण्डी साढ़े ग्यारह बजे पहुँचे तो गर्मी, धूप और लू सताने लगी। मलोट से आगे डबवाली और सिरसा तक सब रेगिस्तान है। पानी की कमी है। लोग धूप में फ़सलें काट रहे थे। अभी बहुत-सा अनाज बाहर खेतों में था जो जमींदारों के घरों में नहीं पहुँचा। सिरसा सत्संग-घर में दो-चार मिनट बातें करके, ग्रेवाल मिल्स में आये। वहाँ एक-दो साथी मिले, उनसे थोड़ी देर बातचीत करके सिकन्दरपुर आये। रास्ते में मल्हड़सर का इलाक़ा आता है, जहाँ कमाद, गेहूँ और ज्वार की फ़सल काफ़ी होती है। वास्तव में मल्हड़सर संस्कृत शब्द मल-हर-सर होगा अर्थात् मैल दूर करनेवाला तालाब। मानो इस क्षेत्र में पूर्व काल में हिन्दुओं के समय में एक प्रसिद्ध तालाब था जिसका नाम मल्हड़सर था। तालाब तो अब कहीं दिखाई नहीं देता परन्तु नाम चला आता है।

सिकन्दरपुर में अच्छे, बड़े-बड़े और ऊँचे कमरे हैं, इसिलये गर्मी कुछ कम महसूस होती थी, परन्तु यहाँ लुधियाना, जालन्धर और अमृतसर की अपेक्षा गर्मी बहुत अधिक है। दोपहर को नींद का आना कठिन है। हम सब लोग स्नान व भोजन करके सो गये। हुज़ूर रात-भर के जागे हुए थे। ख़ूब सोये। रात को 9 बजे जागे।

110 5 मई, 1943 को हुजूर ने फ़रमाया कि मुझे यहाँ डेरे से अधिक आराम है। मैं स्वयं भी ऐसा ही महसूस करता हूँ। शाम को हुजूर आँगन में चौकी पर आ बिराजे। हम सब लोग उनके चरणों में दरी पर बैठ गये। इधर-उधर की बातें होती रहीं। इतने में लाला राम दास, जोिक सिरसा में कोर्ट इन्सपेक्टर हैं और हुजूर के पुराने सेवक हैं तथा हुजूर के पोते सरदार चरन सिंह वकील, दोनों ताँगे में सिरसा से आये। उनसे उनके विभागों की बातें होती रहीं। सुबह सरदार पुरुषोत्तम सिंह अम्बाले से वापस आ गये और यह ख़ुशख़बरी सुनाई कि वह लेफ़्टिनैण्ट के ज़बानी इण्टरव्यू में पास हो गये हैं। 132 में से 11 उम्मीदवार चुने गए। अब सरकार को कमीशंड अफ़सरों की ज़रूरत कम होती जाती है। यह तो आरम्भिक बोर्ड था। अब अन्तिम बोर्ड शायद तीन-चार हफ़्ते में देहरादून में होगा।

आज सुबह 8 बजे हुजूर खिलवाड़े को देखने गये। वहाँ से वापस आकर बाहर के आँगन में शाम की तरह कुर्सी पर बिराजमान हुए। हुजूर के परिवार के लोग और उनके सुपुत्र सरदार बचिन्त सिंह उपस्थित थे। सरदार सतनाम सिंह का सबसे छोटा बालक खेलता-खेलता कभी हुजूर के जूते पर सिर रखता, कभी हुजूर के ऊपर चढ़ने की कोशिश करता। हुजूर उसे बड़े प्यार से देखते। हजरत मुहम्मद साहिब के विषय में भी ऐसी ही कहानियाँ मशहूर हैं कि उनको अपने 'नवासों', हसन और हुसैन से बड़ा प्यार था। फिर सर कोलिन गारबेट का प्रेम-नामा हुजूर को सुनाया गया, जिसमें उन्होंने बताया है कि वह क़दम-क़दम पर महाराज जी की सहायता को महसूस करते हैं। यही हाल सब सत्संगियों का है। हर रोज़ ऐसे पत्र आते रहते हैं कि किस प्रकार हुजूर अपने सेवकों की सांसारिक तथा परमार्थी दु:ख-तकलीफ़ में दूर-दूर के स्थानों पर सहायता व रक्षा कर रहे हैं। 12 बजे के लगभग यह सभा समाप्त हुई। महाराज जी अपने कमरे के अन्दर चले गए।

6 मई शाम को 5 बजे हुजूर सिरसा में संगत से मिलने जा रहे हैं। शाम के 6 बजे केरे से होकर हम लोग सिरसा सत्संग-घर पहुँच गये। हवा गर्म थी। वहाँ जाकर दूध सोडा पिया। इसके बाद मैं और सरदार चरन सिंह, एस. डी. ओ. साहिब से मिलने चले गए। वे बड़े प्रेम-भाव से मिले। जब वापस आये तो सत्संग

में 'धुन सुन कर मन समझाई" का शब्द पढ़ा जा रहा था। हुजूर ने फ़रमाया कि ख़ुदा तो इनसान के शरीर में है, परन्तु वह उसको बाहर जंगलों, पहाड़ों और अरब देश के मैदानों में खोजता फिरता है। एक सैयद साहिब ठेकेदारी करते थे। महाराज जी, जोकि अफ़सर इंचार्ज थे, से प्रार्थना की कि मेरे बिल का शीघ्र भुगतान कर दिया जाये क्योंकि मैं हज यात्रा को जा रहा हूँ। हुजूर ने रुपया दे दिया तो वह ठेकेदार ख़ुश होकर हुजूर से पूछने लगा कि मेरे लायक वहाँ की कोई सेवा हो तो हुक्म करें ? हुजूर ने उत्तर दिया कि वहाँ के ख़ुदा को मेरा सलाम कह देना। इस पर ठेकेदार ने हैरान होकर पूछा कि क्या वहाँ कोई और ख़ुदा है ? इस पर हुज़ूर ने फ़रमाया कि फिर तुम वहाँ क्या ढूँढने जा रहे हो ? जब सैयद साहब वहाँ से वापस आये तो उनसे पूछा कि क्या मक्के में ख़ुदा मिला ? उन्होंने कहा कि ख़ुदा तो वहाँ कहीं नहीं देखा।

सत्संग के बाद हम सब लोग सिकन्दरपुर वापस आ गये। जहाँ पर हुजूर रात के साढ़े दस बजे तक आँगन में बैठे रहे। बन्दरों की चर्चा चल पड़ी। हुजूर ने फ़रमाया कि बन्दर पकड़ने का सबसे आसान ढंग यह है कि उसके सामने भंग के लड्डू , जिनमें खाने की वस्तु मिली हो, डाल दो। खाते जायेंगे और सोते जार्येंगे। फिर कुछ भी उनसे कर लो।

सुबह 7 बजे के क़रीब हुज़ूर, सरदार हरबन्स सिंह, मैं और भाई शादी बकबोर्ड में सवार होकर दड़बी देखने गए। रास्ता बड़ा ऊबड़-खाबड़ था तथा मोटर कार के लायक न था। बहुत मोड़-तोड़ आते रहे। कई जगह से रास्ता तंग था। दड़बी, सिकन्दरपुर से पूर्व की ओर तथा थेहड़ी रसूलपुर से उत्तर की ओर है। हुज़ूर ने जो मकान ख़रीदा है, वह गाँव के इसी ओर के सिरे पर है और वहाँ बागड़ी हिन्दुओं का मोहल्ला है। मकान के अन्दर आँगन है। वहाँ चारपाइयाँ बिछी थीं। वहाँ कुछ ठण्डक थी, बाहर गर्मी और धूप थी। वहाँ से निपट कर हम सब बड़े भाई साहिब के साथ, जो हमसे पहले ही अपने ताँगे में सवार हो चुके थे, उनके घर पर गये। वहाँ जाकर खाना खाकर लेट गये। दोपहर को गर्मी व धूप बहुत थी परन्तु उनके कमरे ठण्डे थे। मैं तो वहाँ ख़ूब सोया और शाम के 6 बजे हम सब वहाँ से चल कर वापस सिकन्दरपुर आ गये।

7 मई को सुबह साढ़े पाँच बजे मोटर कार में सामान लाद कर में, हुजूर, सरदार पुरुषोत्तम सिंह व भाई शादी सिरसा को चल दिये और रास्ते में सत्संग-घर भी नहीं गये, बल्कि सीधे रेलवे स्टेशन पहुँचे। वहाँ गाड़ी लेट थी। वहाँ हुज़ूर प्लेटफार्म पर कुर्सी पर बिराजमान रहे। बीबियाँ और पुरुष आसपास इकट्ठे हो गये। मुझे कुर्सी पर बैठने का हुक्म दिया। लाला कुंज लाल, वकील भी हिसार से आये हुए थे। हमें सेकेंण्ड क्लास का एक पूरा डिब्बा मिल गया। सिरसा में रेलवे स्टेशन पर मिस्टर सोहन सिंह भण्डारी और कृष्ण लाल, भटिण्डा से लकड़ी लदवा कर आ पहुँचे। लाला कुंज लाल तो हिसार में उतर गये। वहाँ बहुत-से सत्संगी दर्शनों को आये थे। वहाँ से सरदार जगजीत सिंह को नई देहली में एक तार भेजा गया कि शाम को गाड़ी पर देहली रेलवे स्टेशन पर हुजूर के लिये मोटर कार भेज दें। सरदार साहब और उनका सारा परिवार हुजूर से बड़ा प्रेम रखता है और हुजूर ने भी मुझसे स्वयं अपने मुखारबिन्द से कहा कि मुझे उनसे प्रेम है। रास्ते में भिवानी स्टेशन के क़रीब सबने अपने डिब्बे में ही खाना खाया। धूप बड़ी तेज़ थी और गर्मी तथा रेत का ज़ोर था। रेत छिद्रों में से अन्दर आकर गिर रही थी। हर एक-आध घण्टे के बाद तौलिये से सीट को झाड़ना पड़ता था। हुजूर लेट गये। मैं और पुरुषोत्तम दूसरी सीट पर एक-दूसरे की ओर टाँगें करके लेटे रहे और सोने की कोशिश करते रहे। रास्ते में दादरी का स्टेशन आया, जहाँ कि मिस्टर डालिमया ने कुछ दिन पहले ही सीमेण्ट का कारख़ाना लगाया है और अब वहाँ चहल-पहल है। आख़िर शाम के 3 बजे हमारी गाड़ी रिवाड़ी पहुँच ही गई।

वहाँ से एक गाड़ी देहली को 2 बजे जा चुकी थी। अब साढ़े चार बजे से पहले कोई गाड़ी न थी। सेकेंण्ड क्लास में कुछ भीड़ मालूम होती थी, परन्तु एक टिकट कलेक्टर साहिब सौभाग्य से आ गये और इंटर क्लास के सब फ़ौजी निकाल दिये। डिब्बा ख़ाली हो गया। गर्मी बड़ी थी। अन्त मे रेल रिवाड़ी से चल दी। इस ट्रेन में एक सरदार साहिब गुड़गाँव जा रहे थे। रास्ते भर हुजूर से सवाल पूछते रहे। कहने लगे कि एक सिक्ख कहता था कि मुझे गुरु नानक साहिब के दर्शन होते हैं। हुजूर ने जवाब दिया कि गुरु नानक साहिब, प्रभु में समा कर, उसका रूप हो चुके हैं। उन्हें इस संसार में क्या करना है। उस सिक्ख से कह दो

कि अब गुरु नानक साहिब के दर्शन हों तो उनसे नम्रता से पूछे कि आपका कौन-सा धाम है ? मुझे कब वहाँ ले चलोगे ? मुझे क्या करना चाहिये ? यदि गुरु नानक साहिब उनके सवालों का जवाब दें तो वह समझ ले कि अवश्य वह बड़ा भाग्यवान् है कि उसको परम-सन्त गुरु नानक साहिब के दर्शन हुए। परन्तु यदि वे चुप रहें और उसके सवालों का जवाब न दें तो समझे कि मन का धोखा है। मन की किल्पत मूर्ति, जिसको वह गुरु नानक साहिब मानता है, उसके सामने आती है, गुरु नानक साहिब नहीं आते। चेतन के लिये चेतन का ध्यान ज़रूरी है, न कि जड़ का। जड़ चेतन को नहीं खींच सकता।

देहली छावनी से बाबू लोग सौदा इत्यादि लेने देहली जा रहे थे। कुछ के हाथों में थेले थे। हमारे डिब्बे में घुस आये। टिकट बाबू आ गया। उसने सबको चार्ज किया। हुजूर ने फ़रमाया कि इसी तरह जो परमार्थ नहीं कमाते, वे रास्ते में अटकेंगे। रेलवे स्टेशन पर सरदार साहिब की कार तैयार थी। वहाँ से हम सब सवार होकर नं. 7, दिरयागंज पहुँच गये। बाबू हेमचन्द्र जी भार्गव के पाँव में सूजन थी, चल-फिर नहीं सकते थे। हुजूर भी जब सिरसा से चले तो पाँव में बड़ा जख़्म था। देहली आकर अधिक हो गया। बाबू हेमचन्द्र जी को कुछ आराम हो गया। वह चल-फिर सकते थे। कुछ प्रेमी लोगों ने मुझे बताया कि हुजूर ने बाबू जी का बोझ अपने ऊपर ले लिया है। भगवान ही जाने। बाबू जी ने बड़ी आवभगत की। पीने को बर्फ़ का पानी, सरदाई, लस्सी, दूध, सोडा इत्यादि। खाने को देहली के रिवाज के अनुसार पक्का खाना व मिठाइयाँ। जिसको मालिक धन दे और साथ ही ख़र्च करने का दिल दे, वह बड़ा भाग्यशाली है। नहीं तो दुनियादार हर प्रकार के तरीके से दौलत इकट्ठी करके भोग-विलास तथा बुरे कामों में ख़र्च करते हैं। देहली में हर रोज सुबह व शाम को सत्संग होता रहा।

9 मई इतवार की शाम को हुजूर ने नामदान दिया। 100 के क़रीब स्त्री-पुरुषों ने नाम लिया। देहली के हिन्दू लोग या तो कामकाज में मस्त हैं या मूर्ति-पूजा में। नगर की जनसंख्या की अपेक्षा उनकी हाज़री इतनी नहीं थी जितनी कि उम्मीद हो सकती थी। सुबह 11 बजे सर श्रीराम साहिब देहली क्लाथ मिल वाले आए। एक घण्टा हुजूर से परमार्थी बातचीत करके विदा हुए। उन्होंने कहा कि वे 114

10 मई 1943

अधिक समय जनता के कार्यों के लिये देते हैं, मिल का काम दूसरों को सौंप दिया है। यह विचार उनको मुबारिक हो और पूरा हो। ऐसे पुरुषों की इस देश को बड़ी आवश्यकता हैं, जो सच्चे दिल से लोगों का भला करने की कोशिश करते हैं। उसी शाम को एक और मिल के मैनेजर साहिब अपनी धर्मपत्नी के साथ, हुजूर को मोटर कार में अपने निवास-स्थान पर ले गये। हुजूर ने वापसी पर फ़रमाया कि ये पति-पत्नी, दोनों प्रेमी और खोजी हैं।

हुजूर का पिसावा का दौरा

10 मई, 1943 को दरियागंज देहली से हमारा सामान ताँगों में लदवा कर, श्री अमर नाथ भार्गव की देख-रेख में 8 बजे रेलवे स्टेशन को रवाना कर दिया गया। हम सब लोग सवा नौ बजे के लगभग कार और ताँगों में, पिसावा जाने के लिये रेलवे स्टेशन पर आ गये। श्री अमरनाथ भार्गव ने हमारा सारा सामान फ़र्स्ट क्लास के रिज़र्व डिब्बे में लदवाया हुआ था, टिकट ले रखे थे। हम सब उनके प्रेम और मेहरबानी के बड़े आभारी हैं। हमें जाते ही आराम से जगह मिल गई, यद्यपि गाड़ी में बड़ी भीड़ थी। हमारे साथ दोनों भार्गव भाई व मेहता साहिब फ़ोटोग्राफ़र भी थे। इंटरक्लास में बीबी लाजवन्ती व बीबी रक्खी यात्रा कर रही थीं। परन्तु उनके डिब्बे में इतनी भीड़ थी कि तिल रखने को जगह न थी। बहुत-से सत्संगी स्त्री-पुरुष दर्शनों के लिये, प्लेटफ़ार्म पर उपस्थित थे। धूप तेज़ थी। महाराज जी ने आज्ञा दी कि हम यह नहीं सहन कर सकते कि हम लोग अन्दर छाया में बैठे रहें और तुम लोग धूप में खड़े रहो। सब अपने-अपने घरों को जाओ। सो बहुत-से लोग मत्था टेककर, घरों को लौट गये। मैंने रेलवे पुस्तक भण्डार पर जाकर ई.आई.आर. और बी.बी. एण्ड सी.आई. के टाईम टेबल माँगे, परन्तु सब ख़त्म हो चुके थे। उर्दू का समाचार-पत्र भी कोई नहीं मिला, क्योंकि पहले दिन इतवार था। अंग्रेज़ी समाचार-पत्र लिया और हुज़ूर को अख़बार में से यह ख़ुशख़बरी सुनाई कि इंग्लैण्ड के बादशाह ने हमारी सरकार की अफ्रीका में लड़ने वाली फ़ौजों को बधाई का सन्देश भेजा है कि उत्तरी अफ्रीका जर्मनी से स्वतन्त्र करा लिया गया है।

ख़ुरजा के स्टेशन पर पिसावा के रईस और ज़मींदार राव बहादुर शिवध्यान सिंह साहिब, हुजूर के स्वागत को आये हुए थे। एक हाथ में हरी–हरी ककड़ियों का छोटा-सा बण्डल जिसमें पतली-पतली और नरम-नरम ककड़ियाँ, पतले-पतले साँपों की तरह, लटक रही थीं। दूसरे हाथ में बारीक लाहौरी नमक की पुड़िया थी। हुजूर को मत्था टेककर हमारे डिब्बे में आ बैठे। बहुत-सी संगत यहाँ उतर गई। उनके लिये दो-तीन हाथी व बैल-गाड़ियाँ उपस्थित थीं। पिसावा यहाँ से कच्ची सड़क के रास्ते 8 मील दक्षिण-पश्चिम को है। परन्तु हमें दो रेलवे स्टेशन और आगे जाना था क्योंकि सोमना से 14 मील पक्की सड़क पिसावा पहुँचा देती है। यह सड़क देहली से कलकत्ता जाने वाली ग्राण्ड ट्रंक रोड से निकलती है। हुजूर देहली से हम सबके लिये खाना साथ लाये थे। यह निश्चय किया गया कि भोजन सोमना के विश्राम-गृह में किया जाये, क्योंकि गाड़ी एक बजे सोमना पहुँच जाती है। जब सोमना पहुँचे तो हमारे लिए तीन मोटर कारें उपस्थित थीं, परन्तु सामान भी अधिक था। विश्राम-गृह में भोजन करने के लिये स्थान न था। अन्त में सामान कारों में रख कर और कुछ सामान नौकरों को देकर, कि ताँगों में रखकर ले आर्ये, हम पिसावा को चल दिये।

जिस कार में हुजूर और मैं थे उसको ख़ुद राव साहब चला रहे थे। एक तो जनाब ने मोटर चलाने का अभ्यास कई दिनों से छोड़ा हुआ था, दूसरे हुजूर की मौजूदगी की वजह से, मस्त हो रहे थे। कुछ दूर जाकर पानी उबलने लगा और धुआँ निकलने की बू आने लगी। उतरे तो देखा कि बाल-बाल बचे। ब्रेक पहिये से जाम हो चुकी थी और पिछला बायाँ पिहया घसीटा जा रहा था। जनाब अपने प्रेम में हुजूर से बातचीत कर रहे थे और पिहया बाहर गिरनेवाला था। ऐसा गर्म था कि हाथ नहीं लगाया जा सकता था। आख़िउर दूसरी कार को ख़ाली करवा कर हुजूर, मैं और राव बहादुर चल पड़े तिक जो लोग पीछे रह गये हैं उनके लिये यही कार दोबारा भेज देंगे। जब पिसावा की आबादी के क़रीब पहुँचे तो बड़ी भारी भीड़ थी। एक फाटक रेल का, लोगों ने जान-बूझ कर बन्द कर दिया था कि कार रुके और वे हुजूर के दर्शन कर सकें। उन लोगों के बीच में से निकलकर राव बहादुर के निवास-स्थान से परे दोनों ओर स्त्री और पुरुष हजारों की संख्या में खड़े थे। हर तरफ़ से 'राधास्वामी' तथा 'पा-लागन' की आवाजें आ रही थीं। मेहता साहिब उतर कर, अपना कैमरा ताने, फ़ोटो ले रहे थे। रव

^{*5} मील 8 किलोमीटर के बराबर होता है।

10 मई 1943

116 बहादुर मुग़ल बादशाहों के समय के, ख़ानदानी रईस व ज़मींदार हैं। उनका निवास-स्थान एक बड़े क़िले की तरह है, जिसमें बहुत-सी इमारतें, मैदान, चबूतरे, बारादरियाँ, अतिथि-गृह व रहने के मकान हैं। अमीरी ठाठ हैं। हुजूर उतरते ही सत्संग में तशरीफ़ ले गए , जहाँ हजारों की संख्या में बच्चे, लड़िकयाँ, स्त्रियाँ, पुरुष बैठे थे। मैं सामान सँभालता रहा। दूसरी कार जो बिगड़ गई थी, वह भी सौभाग्य से आ गई। यहाँ पंजाब से ज्यादा तेज धूप व गर्मी है। हम सबने खाना खाया। हुजूर ने विश्राम किया।

मुझे राव बहादुर साहिब ने एक अकेला कमरा अपने गुड़ख़ाने में रहने के लिये दिया और गुड़ख़ाने के नीचे एक तहख़ाना है जिसमें मेरे बाकी साथी भी ठहराये गए। हुजूर के लिये दोपहर को बारादरी, जिसके चारों ओर बरामदा और ऊपर नीम की छाया है, निश्चित की गई और रात के लिये एक चौबारा जिसके सामने व दोनों ओर खुले-खुले सहन हैं, दिया गया। राव साहिब ने कृपा करके मेरे कमरे की खिड़की में खस की टट्टी लगवा दीं, जिस पर नौकर कभी-कभी पानी छिड़कता रहता है। परन्तु मुश्किल यह है कि उसका एक द्वार उस कमरे की ओर खुलता है जिसमें गुड़ का गोदाम है। इसलिये गुड़ की हल्की-हल्की गन्ध हर वक़्त दिल व दिमाग़ को ताज़ा रखती है। दूसरे आजकल गर्मी के मौसम की मिक्खियाँ गुड़ की गन्ध पर मस्त होकर इस कमरे में हर समय नाचती रहती हैं। जब मैं खाना खाकर चारपाई पर लेटता हूँ तो वे ग़लती से यह मान लेती हैं कि मैं गुड़ का ढेला हूँ।

जब मुझे इस कमरे में ठहरे दो घण्टे हो गये तो एक ब्राह्मण देवता हाथ में खद्दर का थैला, बग़ल में चादर दबाये, बिना झिझक अन्दर आ घुसे और कपड़े उतारने लगे। क्योंकि धूप का समय था, ऐसा मालूम होता था कि या तो उन्होंने मुझे देखा ही नहीं, यदि देखा है तो उन्हें कमरे में मेरी मौजूदगी की परवाह नहीं। मैंने धीरे से कहा कि महाराज, इस कमरे को ताला लंगेगा तो फिर आपको कष्ट होगा। परन्तु उन्होंने मेरी इस बात को नहीं समझा और न ही मेरी इस दलील को, कि उनको तकलीफ़ होगी, माना। क्योंकि शायद उन्होंने सोचा होगा कि यदि ताला अन्दर से लगा तो हम दोनों अन्दर होंगे। इस हालत में हम दोनों को एक-सी तकलीफ़ होगी और यदि ताला बाहर से लगा तो उनका सामान बड़ा

सुरक्षित रहेगा। मैं इसी उधेड़बुन में था कि किस तरह इस देवता को यहाँ से विदा करूँ कि मेरा नौकर आ गया। उसने जो दलील दी वह मेरी निसबत अधिक व्यावहारिक थी। मेरी दलील जबानी जमा-ख़र्च थी। उसने आव देखा न ताव, आते ही ब्राह्मण देवता का सामान बाहर रख दिया और बोला कि आपके लिये सामने स्थान है। क्योंकि ब्राह्मण देवता को सामान से जुदाई अच्छी न लगती थी, मेरी जुदाई उनके लिये सहनीय हो गई। परन्तु चलते हुए मेरे कम्बख़्त नौकर ने, ब्राह्मण देवता का सोटा न देखा। वह मेरे कमरे में रह गया जिसका बुरा परिणाम अभी तक भुगत रहा हूँ , क्योंकि वह देवता समझते हैं कि उनकी जायदाद इस कमरे में भी है और कभी-कभी अन्दर आ जाते हैं।

तीसरा गुण जो इस कमरे में है, वह यह कि इस कमरे में एक मोरी है, जिसके कारण मैंने इस मोरी वाले भाग को स्नानगृह बना लिया है और एक ठण्डे पानी की सुराही भी रख ली है। परिणामस्वरूप यह कमरा प्यासे लोगों का केन्द्र बन गया है। चूँिक इस कमरे में एक-दो फालतू चारपाइयाँ और कुछ अलमारियों में यात्रियों का कुछ सामान भी रहता है, इसलिये इस कमरे में अच्छी ख़ासी चहल-पहल रहती है। यदि मिक्खयाँ व गर्मी किसी कारण से अपने कर्तव्य का पालन करने में सुस्ती करती हैं तो दूसरे लोग उनकी कमी पूरा कर देते हैं। इस पर तुर्रा यह है कि राव साहिब आज दोपहर के बाद दो बजे के लगभग, जब मैं खाना खाने के बाद आराम के लिये लेटने को तैयार हो रहा था, कुछ लड्डू लेकर आ गये और उनको मेरे आराम के लिये कमरे में एक छोटी-सी चिमनी (शैल्फ) पर रख गये। यदि कोई कमी थी तो बिलकुल पूरी हो गई। मिक्खयों के लिये कई सामान खाने-पीने व आनन्द के हो गये। ख़ैर, इस सांसारिक स्वार्थ को छोड़कर आत्मिक कार्य, जिसके लिये हुजूर यहाँ पधारे हैं, उसका वर्णन करना भी जरूरी है। हर रोज़ सुबह 8 बजे और शाम के 6 बजे सत्संग रहता है। इसके इलावा जिज्ञासु लोग हुजूर से बाक़ी समय में भी मिलकर लाभ उठा सकते हैं। यहाँ श्री ग्रन्थ साहिब की वाणी पंजाबी में होने की वजह से हुजूर उसका पाठ नहीं करवाते। हुजूरी वाणी में से 'यह तन दुर्लभ तुमने पाया ', 'जग में घोर अंधेरा भारी 3 और कबीर साखी-सग्रंह में से 'सुमिरन का अंग 4 पढ़े गए।

11 मई शाम को तुलसी साहिब के दोहे पढ़े गए। सब लोगों ने सुनकर लाभ उठाया। राव बहादुर साहिब ने प्रार्थना की कि उनके क़िले जैसे महल की 118

11 मई 1943

चारदीवारी में जो नीम के वृक्ष उगे हुए हैं, उनका भी उद्धार किया जाये। हुजूर ने दयालता से फ़रमाया कि उनके नीचे नाम दिया जायेगा तो फिर कैसे उनका उद्धार न होगा ? इसी प्रकार घोड़े, बैलों, आमों के वृक्षों इत्यादि का हुजूर निर्णय करेंगे। यहाँ आम बहुत होता है। ख़ूब फलता और फूलता है, क्योंकि यहाँ पर कुएँ का पानी पृथ्वी की सतह से केवल 20 फ़ुट पर होगा। जमुना और गंगा नदियों के बीच में यह प्रदेश है और जमुना नदी यहाँ से 5-6 मील होगी। गंगा नदी की नहर की शाखा इस प्रदेश को सींचती है। अत: पानी की अधिकता है।

12 मई को हुजूर और उनका स्टाफ़, दो कारों पर सवार होकर पिसावा की आबादी में से गुजरा। मेहता साहब, कश्मीरी फ़ोटोग्राफ़र ने स्थान-स्थान पर फ़ोटो लिये। आदमी, बच्चे, बूढ़े सब अपने-अपने घरों से निकलकर, दर्शनों को भागे। कई एक ने फूल बरसाये। एक दुकानदार ने फूलों का हार हुजूर को पहनाना चाहा, जो हुजूर ने नियमानुसार उसी के गले में डाल दिया। थोड़ी देर में डेरे के सब्ज़ी वाले भाई मिलखी राम वही हार गले में डाले, आ गये। कहने लगे कि हुजूर यह हार दुकानदार ने मुझे दे दिया। हुजूर ने चुपके से फ़रमाया कि दुकानदार को क़द्र नहीं। यह नुक़्ता विशेषकर सत्संगियों के लिये नोट करने का है। मलिक राधाकृष्ण साहिब का तार मुलतान से कल आया। हुजूर ने हुक्म दिया कि उनको सारा हाल राव बहादुर साहिब के प्रेम-भाव का लिखो।

शाम के सत्संग में हुजूरी वाणी में से 'नाम निर्णय' का शब्द पढ़ा गया। हुजूर 13 मई की सुबह को यहाँ 6 बजे चल कर, 8 बजे की गाड़ी ख़ुरजे से पकड़ कर, 11 बजे देहली पहुँच जायेंगे और वहाँ शाम को एक कारख़ाना देखेंगे।

शाम को वहाँ पूर्व के रिवाज के मुताबिक़ बुधवार के दिन देहाती बाज़ार लगा, जिसमें बिसाती का सामान, सब्जियाँ, खद्दर, धोती, साड़ियाँ इत्यादि बिकने के लिये आईं। बाजार शाम के साढ़े सात बजे समाप्त हो गया।

13 मई सुबह को हुज़ूर ने बुलन्दशहर से आये हुए लोगों को नाम दिया। मेहता साहिब ने हमारी कुटिया की, जहाँ हम ठहरे हुए थे, फ़ोटो ली। फिर रथ का फ़ोटो लिया गया। यहाँ के रथ पंजाब के रथों से ज्यादा आराम देनेवाले हैं अर्थात् , रथ की सतह बड़ी खुली और आयताकार होती है, जिसमें दो आदमी लेट सकते हैं। रथ के नीचे गद्दा लगा होता है और क़रीब एक-एक फ़ुट चारों

ओर तार-सा लगा होता है जिससे सवारी यदि सो भी जाये तो नीचे न गिरे। रथ चलाने वाला, इस पालकी से बाहर बैठकर, बैल हाँकता है। आज मेहता साहिब रावलपिण्डी लौट गये।

आज शाम को कबीर साहिब का शब्द 'कर नैनों दीदार महल में प्यारा है ' िलया गया। मनुष्य के शरीर में जितने चक्र हैं, उनमें नीचे का चक्र अपने ऊपर के चक्र से ताक़त लेता है और सारे चक्र दिमाग से ताक़त लेते है अर्थात् सतलोक से। जैसे कबीर साहिब ने लिखा है कि सूर्य और चन्द्र मण्डल को पार करो, वैसे ही गुरु नानक देव जी ने लिखा है:

पूरब हो पच्छम को आवे। रवि शश दोहां इकतर मिलावे॥ दक्खन से जो चढ़े सुमेर। आवे पर-दखन के फेर॥ पुरियाँ सात उत्ते कमलासन। तित्थे पारब्रह्म का आसन॥ जिन हीरे रतने माल पिरोई। नानक कहे उदासी सोई॥

हुजूर ने फ़रमाया कि आत्मा की चार चालें हैं : 1. चिऊंटी चाल- जब तक आत्मा व मन सिमटकर सूर्य तथा चन्द्र को पार नहीं कर लेते 2. मकड़ी चाल- जबिक आत्मा शब्द को पकड़कर ब्रह्म तक जाती है 3. मछली चाल-पारब्रह्म से आरम्भ होती है। 4. विहंगम (पक्षी) चाल- जो सतलोक में है। पारब्रह्म में दो अक्षर हैं। एक को छोड़ना है। एक को पकड़ना है। गुरु नानक-'जे तूं पढ़या पण्डित बीना दुइ अक्खर दुइ नावा। प्रणवत नानक एक लंघाए जे कर सच समावां। 18 फिर कहा है कि 'बावन अच्छर लोक त्रै सभ कछु इन ही माहें। ए अक्खर खिर जाहेंगे ओय अक्खर इन मह नाहें।"

एक व्यक्ति ने सत्संग में खड़े होकर पूछा कि तक़दीर और तदबीर में से कौन बड़ा है ? जवाब दिया गया कि पहले जन्म में जो-जो कर्म तदबीर के सिलसिले में किये गए अब वही तक़दीर बन गये हैं। उनको ज़रूर भोगना पड़ेगा। किसी तदबीर से उनको बदल नहीं सकते। हाँ, जब तदबीर पहले जन्म में की थी उस वक्त इख़्तियार था अच्छे कर्म करने का। जैसे, किसान का इख़्तियार है कि अपने खेत में गेहूँ बोये या जौ। मगर जब फ़सल पक गई तो वही उसकी तक़दीर बन गई। जिसने जौ बोए हैं वह गेहूँ नहीं खा सकता। हाँ, आगे उसके हाथ में है कि जौ बीजे या गेहूँ। परन्तु उसको इस फ़सल में तो जौ ही खाने पड़ेंगे।

120

14 मई संक्रान्ति को पिसावा के लोगों को नाम दिया गया जिनमें बहुत-से राव साहब के सम्बन्धी थे। कुल 400 स्त्री-पुरुषों को नामदान दिया गया। एक आदमी ने प्रश्न किया कि इस प्रकार तो सारे संसार की आत्माएँ यहाँ से सतलोक चली जायेंगी और यह लोक ख़ाली हो जायेगा। परन्तु यह हिसाब का सवाल है। यदि असीम में से सीमित घटायें तो बाक़ी भी असीम ही रहता है। शाम को हुजूरी पोथी में से शब्द पढ़ा गया। हुजूर ने फ़रमाया कि गुरु-भक्ति क्या है ? काम, क्रोध आदि पाँच विकारों को छोड़ना। रात को मैं व दूसरे लोग आम लंगर में खाना खाने गए। पहले मैं हुजूरी लंगर में खाना खा रहा था। वहाँ खाने का प्रबन्ध बहुत उत्तम था। आटे में घी डालकर तन्दूरी रोटियाँ पकाई जा रही थीं, जोकि पक कर रेशम की तरह से नरम होती थीं। उनके साथ कद्दू व आलू की सब्ज़ी थी, जिनके बनाने में ख़ूब घी डाला गया था। उसके साथ शलग़म व आम का आचार तथा मुरब्बा इत्यादि और लखनऊ के सफ़ेद ख़रबूजे भी मिलते थे। एक विशेष प्रकार की दही का मट्ठा भी शकोरों में दिया जा रहा था, जिसको सन्नाटा कहते हैं, क्योंकि उसमें काली मिर्च इतनी अधिक थी कि एक घूँट पीने से ही शरीर में सन्नाटा पैदा हो जाता था। मेरा शकोरा भी सन्नाटे से भरा गया। परन्तु जब मैंने अपने पास वाले को एक घूँट पीकर सन्नाटा लेते हुए देखा तो मेरी हिम्मत शकोरे को छूने की नहीं हुई और उसने भी दूसरा घूँट लेने की हिम्मत नहीं की। इस इलाक़े के लोग पीते होंगे। यह प्रदेश हिन्दू जाटों का है। राव बहादुर साहिब उच्चकोटि के ज़मींदार हैं और सुना है कि वह गाँव उनकी जायदाद है। आसपास के बड़े-बड़े जमींदारों से उनका बड़ा भाई-चारा तथा मेल-जोल है। स्वयं राव बहादुर के गाँव पिसावा में तीन पत्तियाँ हैं। दो पत्तियाँ राव साहिब के चम्रेरे भाइयों की हैं और उनकी पत्ती नहर से सिंचाई होने के कारण बड़ी उपजाऊ है। राव साहिब का व उनकी बिरादरी वालों का आपस में बड़ा भाई-चारा तथा मेल-जोल और प्रेम-प्यार है। राव साहिब के लंगर व मेहमानों की आवभगत व सत्संग का प्रबन्ध इत्यादि, सभी काम इनकी बिरादरी के लोग बड़े प्रेम से कर रहे हैं। यह सब राव साहिब की उदारता के कारण है। आपस में तनाव, दुश्मनी व ईर्ष्या-द्वेष नहीं है जैसे कि पंजाब के देहात में देखे

जाते हैं। बड़े आराम व शान्ति से जीवन व्यतीत होता है। बहुत-से सम्बन्धियों ने नाम ले लिया है। राव बहादुर साहिब ने खुले दिल से हजारों रुपये हुजूर की संगत की सेवा में ख़र्च कर डाले हैं। उनकी बीबी, बच्चे, सब ही प्रेम से भरपूर हैं। उनकी सुपुत्री बीबी कृष्णा ने हुज़ूर की महिमा में शब्द बना रखे हैं जो सत्संग में पढ़े जाते हैं और लोग ख़ुश होते हैं।

15 मई, 1943 सुबह को कोई सत्संग न था। हुजूर का समय राव बहादुर साहिब के सम्बन्धियों व कुछ बचे हुए अभिलाषियों को नाम देने के लिये नियुक्त हो चुका था। 10-11 बजे के बीच में हुजूर को सारे हथियार, बन्दूक व पिस्तौल आदि दिखाये गए , जिनकी संख्या काफ़ी थी। सुना है राव साहिब का छोटा लड़का बड़ा निशानेबाज़ है। शाम को 6-7 बजे सत्संग किया। कई सन्तों, दादू दयाल, पलटू साहिब व तुलसी साहिब की वाणियाँ पढ़ी गईं। दादू दयाल का प्रसिद्ध शब्द 'जानै अंतरजामी अचरज अकथ अनामी' पढ़ा गया। 'नौ लख कँवल जुगल दल अन्तर द्वादस साहिब स्वामी' का अर्थ फ़रमाया कि नौ द्वारों को पार करके 'कँवल' अर्थात् आँखों के बीच से गुजर कर सहस्र-दल कमल में पहुँचो जिसको द्वादस कँवल भी कहते हैं, अर्थात् दस आवाजें वहाँ की, मन और सुरत या ज्योति और निरंजन, इस प्रकार 12 कमल वहाँ हैं। पलटू साहिब की वाणी में से 'उलटा कूवा गगन में तिस में जरै चिराग'। शब्द पढ़ा गया। ज्ञान समाधि, सुन्न समाधि और सहज समाधि, यह तीन प्रकार की समाधियाँ बताई गई हैं। इसके पश्चात् तुलसी साहिब के छन्द जो घट रामायण के आरम्भ में ही हैं, पढ़े गये। 'सम सील लील अपील पेलै "2 का अर्थ यह है कि तीसरे तिल के ऊपर विष्णु-चक्र या नील-चक्र को, जो पहुँच से बाहर है, जीत ले। 'धरि गगन डोरि अपोर' का मतलब उस शब्द से है जो सहस्र-दल कमल से त्रिकुटी तक ले जाता है अर्थात् वह शब्द धरन और गगन के बीच डोर है।'अतूल कँवला" का अर्थ पारब्रह्म का कमल है जो कि मानसरोवर के बीच में है जिसमें से होकर ऊपर को रास्ता जाता है। 'जब ठाट घाट वैराट कीन्हो मीन जल कमला कली' का अर्थ है कि जब तक मैंने विराट को पार नहीं किया था तो मैं समझती थी कि यही सबकुछ है और उस पर ऐसी आशिक़ थी कि जैसे मछली पानी पर और भँवरा कमल पर। परन्तु जब सतलोक पहुँची तो पता चला कि यह दुनिया यानी विराट संसार धोखा और स्वप्न है।

122 16 मई, 1943 को सुबह 9 बजे मोटर कार में बैठकर हुजूर पिसावा से सोमना को चल दिये। गाड़ी एक घण्टा लेट थी। हम सोमना के रेलवे स्टेशन पर 7 बजे पहुँच गये। हुजूर प्लेटफार्म पर कुर्सी पर बिराजमान हुए, मैं व गाई शादी पेट-पूजा का इंतजाम करने लगे। इधर-उधर नजर दौड़ाई, पर स्टेशन पर न किसी हलवाई की और न ही किसी मेवा, फल बेचने वाले की दुकान थी। परन्तु स्टेशन के सामने एक हलवाई की-सी दुकान नजर आई। वहाँ गये तो दुकान में केवल पेड़े थे जिनमें मीठा भरा हुआ था। हलवाई को मनाया कि हमारे लिए आटे की पूरी व आलू की सब्ज़ी जिनमें मिर्च न हो, तैयार कर दो। अत: पूरियाँ तैयार हुईं और सबको खिलाई गईं। अच्छी ख़ासी थीं। हुन्रूर ने भी दो पुरियाँ खाई। रास्ते में एक ख़रबूजे वाले से एक रुपये के ख़रबूजे लिये जो कि मेरे व भाई शादी के भाग्य में खाने नहीं लिखे थे, क्योंकि जिस टोकरी में वे रखे थे वह हमने फिर नहीं देखी। पता नहीं कहाँ गई। राव बहादुर साहिब ख़ुरजा के स्टेशन पर उतर गये क्योंकि उनको सत्संग का सामान वापस व्यास के लिये बिल्टी करवाना था। हमने ख़ुरजा में एक-दो अख़बार लिये और शर्बत पिया। सेकेंड क्लास में काफ़ी भीड़ थी। देहली में सरदार जगजीत सिंह की कार में हुजूर दरियागंज पहुँचे क्योंकि सरदार साहिब से वायदा हो चुका था कि हुजूर दिन व रात उनके मकान पर, जो कर्ज़न रोड, नई देहली में है, विश्राम करेंगे, इसलिये हुजूर संगत को दर्शन देकर बीबी रक्खी और लाजवन्ती के साथ नई देहली को चल दिये। मैं और भाई शादी दरियागंज में रहे। हुजूर शाम को 6 बजे फिर वापस पधारे। मैंने डाक सुनाई। 7 बजे सत्संग हुआ। हुजूर 1 बजे के क़रीब वापस नई देहली चले गए।

17 मई, 1943 को मैं और सरदार साहिब, सुबह साढ़े छ: बजे, ताँगों में सामान लाद कर देहली रेलवे स्टेशन को चल दिये। जब वहाँ सामान उतार रहे थे तो हुजूर भी आ पहुँचे। दोनों बीबियों को बम्बई एक्सप्रेस में सवार कराया गया। हमारी गाड़ी में सवा घण्टा बाक़ी था। इसिलये छोटी लाईन के प्लेटफ़ार्म पर एक घण्टा कुर्सी पर बैठे हुजूर संगत को दर्शन देते रहे। मैं व भाई शादी दूसरे प्लेटफ़ार्म पर खाने-पीने में मस्त रहे। वहाँ मिस्टर अमर नाथ की कृपा से हमें सैकिण्ड क्लास का पूरा डिब्बा मिल गया। मिस्टर भार्गव रिवाड़ी तक हमारे साथ

थे। यात्रा में कोई काट नहीं हुआ। रिवाड़ी से गाड़ी बटलनी थी परन्तु सैकेड क्लास में कोई जगह न थी। इसलिये हम फर्स्ट क्लास के डिब्बे में बैठ गये। एस्ते में खाना खाया। यात्रा में खाने का बड़ा आनन्द आया क्योंकि बाबू हैमचन्द्र जी ने कई प्रकार की सिब्तयों टोकरी में डालकर दी थीं। गर्मी चौरों पर थी। रुस्ते में जाटू-साने पर एक सैकेंड क्लास का डिब्बा खाली हो गया। मैं और पुरुषोच्य सिंह उसमें चले गये। हुतूर फर्स्ट क्लास में टिकट बदलवा कर वहीं रहे। गर्मी जोरों पर थी। कई बार लैमनेड पिया और खरबूने भी खाये गये। खुदा-खुदा करके शाम को साढ़े छ: बजे सिरसा के स्टेशन पर आ पहुँचे। वहाँ संगत ने हमारा सामान उठाकर कार व ताँगों में लाद दिया। हुत्तूर सत्संग-चर पथारे। वहाँ बर्फ वाला दूध सोडा पीकर बड़ा आनन्द आया। वहाँ से सवार होकर शाम के 8 बजे सिकन्दरपुर आये, जहाँ हुतूर बाहर के सहन में कुसी पर बिराजमान हुए। हम आसपास नीचे दरी पर बैठ गये। बड़ा सुहाबना मौसम था। गर्मी बिल्कुल न थी। उण्डी हवा चल रही थी। चाँदनी रात थी। हुतूर कारतकारों से काम-काज की वार्ते करते रहे लेकिन हम सब खाना खाकर सो गये।

18 मईं, 1943 – सुबह को यह निश्चय हुआ कि हुजूर मोगा व अम्बाला की बजाय, लाहौर के रास्ते जायें, क्योंकि हुजूर के दाँतो में तकलीफ़ है। इसिल्ये डॉ. जलालुद्दीन साहब, डेण्टिस्ट को जवाबी तार दिया गया कि हुजूर 20 मई को लाहौर जायेंगे और डेरे में भी ख़बर दे दी गई है। अब 10 बजे हुजूर खिलयानों को देखने गए हैं। मैं डाक लिख रहा हूँ। शाम को 8 बजे के करीब हुजूर फिर खलवाड़े घानी देखने गए और कई लोग साथ थे। अनाज के गट्ठरों से भूसा और अनाज को साधारण तरीके से अलग नहीं किया जाता। बिल्क एक ट्रैक्टर मिट्टी के तेल से चलता है, जैसे कि कंकर की सड़कों को बनानेवाला इंजन। उसके पहियों में थोड़े-थोड़े फ़ासले पर लोहे की छुरियाँ-सी लगी होती हैं जो भूसे को काटती हैं और अनाज को अलग करती हैं। इस ट्रैक्टर के पीछे जंजीर से एक लोहे की सलाख़ चलती है। इस सलाख़ में लोहे के पतले-पतले पहिये लगे हैं, जो फिरते हैं और भूसे को बारीक करके बैठाता आये। इससे आठ दस घंटों में लगभग 80 गट्ठरों में से अनाज को अलग किया जा सकता है। रात के दस बजे हुजूर

19 मई, 1943 — सुबह 9 बजे हुजूर फिर खलवाड़े चले गए। मैं घर पर डाक निकालता रहा। पण्डित नत्थूराम जी शुक्ल कान्यकुब्ज ब्राह्मण हैं। उन्होंने मुझे ब्राह्मणों की जातियों का ब्योरा दिया जो बड़ा रोचक है। उनके कहने के अनुसार ब्राह्मण दो भागों में बँटे हुए हैं। यह उनके प्रान्तीय रहन-सहन के अनुसार है। दक्षिण देश में द्राविड़ी ब्राह्मण हैं। उत्तरी भारत में गौड़। द्राविड़ी ब्राह्मणों की पाँच जातियाँ हैं – गुजराती, मराठी, तिलंग, तामिल और दरावन। उत्तरी भारत के ब्राह्मणों की दो बड़ी जातियाँ हैं – सारस्वत और गौड़। सारस्वत शब्द सरस्वती नदी से निकला है जो किसी समय सिरसा के पास बहती थी। सरस्वती नदी के उत्तर में पंजाब और कश्मीर इत्यादि में जो ब्राह्मण लोग हैं उनको सारस्वत कहा गया।

फिर गौड़ ब्राह्मणों की दो बड़ी जातियाँ हैं- गौड़ और सनाड्य। सनाड्य ब्राह्मण अधिकतर मेरठ की किमश्नरी में बसते हैं। गौड़ के चार भाग हैं- गौड़, कान्यकुब्ज, सीथल, उत्कल। गौड़ तो राजपूताना, बागड़, आगरा डिवीजन, मेरठ डिवीजन, रुहेल खण्ड में रहते हैं। कान्यकुब्ज ब्राह्मण लखनऊ से बनारस तक आबाद हैं। वाजपेयी, शुक्ल, पाठक, मिश्र, द्विवेदी, त्रिवेदी, चतुर्वेदी सब कान्यकुब्ज की शाखाएँ हैं। वास्तव में कान्यकुब्ज की दो बड़ी शाखाएँ हैं, कान्यकुब्ज की दो बड़ी शाखाएँ हैं, कान्यकुब्ज और सरजूपारी अर्थात् सरजू नदी के पार रहनेवाले। सीथल ब्राह्मण बिहार में रहते हैं। उनकी दो बड़ी शाखाएँ हैं, झा और ओझ। अत: पण्डित जनार्धन वैद्य लाहौरी झा ब्राह्मण थे। उत्कल उड़ीसा को कहते हैं। उत्कल के दो बड़े गोत्र ठाकुर, सानियाल बंगाल में हैं। 'ठाकुर' को बिगाड़ कर 'टैगोर' बना लिया। 12वीं शताब्दी में राजा लक्ष्मण सैन बंगाल वाले ने लखनऊ की ओर से पाँच कान्यकुब्ज ब्राह्मण बुलाकर यज्ञ के समाप्त होने पर उनको पदिवयाँ दी— चटोपाध्याय, मुखोपाध्याय, बन्दोपाध्याय, चक्रवर्ती, और भट्टाचार्य। जो ब्राह्मण उन पाँचों में सबसे विद्वान था उसको चक्रवर्ती की उपाधि दी। जो सबका आचार्य अर्थात् पूज्य

था उसको भट्टाचार्य कहा गया। अब यह नाम बिगड़कर चैटर्जी, मुकर्जी और बैनर्जी बन गये। पेशवा महाराष्ट्री चितपावन ब्राह्मण थे। मोंजे, अन्ने, सावरकर, चायकर, गोखले, तिलक, यह सब महाराष्ट्री ब्राह्मण हैं। आयर, आयंगर, आचार्य, शास्त्री यह दक्षिण ब्राह्मण हैं।

शाम को 5 बजे हुजूर सिरसा सत्संग-घर सत्संग करने गये। मैं वहाँ पर राय साहब, लाला आत्मा राम रईस (सिरसा) की बारात का जुलूस देखता रहा जिसमें कि हाथी, घोड़े और बिग्चयाँ थीं।

अध्याय 7

डेरे में निवास का हाल

लाहौर के रास्ते वापसी यात्रा

20 मई को 5 बजे सुबह मोटर कार में बैठकर डेरे के लिये चल दिए। लाहौर होते हुए अमृतसर, डेरे जाना था। कोटकपूरा से फ़रीदकोट होते हुए फ़िरोजपुर पहुँचे, वहाँ से क़सूर मिलयानी होकर सीधे मालरोड पर डॉक्टर जलालुद्दीन, डेण्टिस्ट की दुकान पर गये। रस्ते में कोई सत्संगी न मिला क्योंकि किसी को हमारे इस प्रोग्राम का पता नहीं था। हुजूर ने दाँत निकलवाया। दाँत निकलवाने के बाद डॉक्टर साहब के यहाँ एक-आध घण्टा ठहरे, जिससे ख़ुन का बहना बन्द हो जाये। डॉक्टर साहब बड़े भले आदमी हैं। बड़े प्रेम से मिलते हैं। वहाँ ही मियाँ फ़ख़रुद्दीन साहब, जो मेरे भाई के अफ़सर हैं और नहर विभाग में सुपरिण्टेण्डिंग इंजीनियर हैं, पधारे। उनसे मिलकर बड़ी प्रसन्नता हुई। उन्होंने 'बताया कि वह भी जून के पहले सप्ताह में डलहौजी जा रहे हैं और 'स्वास्तिका' में ठहरेंगे। डॉक्टर से होकर सीधे रावी रोड सत्संग-घर पहुँचे। वहाँ एक नया चौकीदार था। सब सामान धूल से भरा हुआ और सब कमरे मिट्टी से अटे पडे थे। उनको जल्दी-जल्दी साफ़ किया गया। हुजूर ने पलंग पर विश्राम किया। हम लोग खाना सिरसा से लेकर आये थे, वहाँ खाया। क्योंकि रात के सब जागे हुए थे, ख़ूब सोये। शाम के 4 बजे संगत लाहौर में आनी शुरू हुई। हुजूर उनको दर्शन देकर 6 बजे डॉक्टर साहिब के मकान पर दाँत बनवाने गए। वहाँ से दाँत लगवा कर 7 बजे अमृतसर की ओर चल दिये। आजकल लाहौर में मोटर कार, लारी इत्यादि की बड़ी चैकिंग है। रावी रोड पर पुलिस ने हमारी कार को रोका और परिमट देखा। फिर बड़े डाकख़ाने के पास पुलिस पैट्रोल की पड़ताल कर रही थी। अमृतसर में स्वर्गीय लाला दुनी चन्द नागपाल के मकान पर गए क्योंकि लाला साहब अमृतसर सत्संग के बड़े प्रेमी सेवादारों में से थे। उनका देहान्त

अचानक हुआ। किसी को उनकी बीमारी का भी पता न चला। वहाँ आधा घण्टा टहर कर रात को 9 बजे डेरे आ गये। 20 मई को पहली बार इस गर्मी में दोपहर के समय सख़्त लू चली। भाव यह कि अब से गर्मी जोरों से पड़ने लगी है।

हुजूर का डेरे में निवास

क्योंकि राय साहिब के दामाद और उनके शेष सम्बन्धी शादी के अवसर पर आये हुए थे, हुज़ूर ने 21 मई की शाम को हुज़ूरी वाणी में से 'जग में घोर अंधेरा भारी भी श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से पाँचवीं पातशाही का शब्द 'पाठ पढ़यो अरु बेद बीचारयो " पढ़ाया और सत्संग किया। हुज़ूर ने फ़रमाया कि जग में यूँ तो देखने में सूर्य का उजाला है। अँधेरा सोचने वाले के लिये है क्योंकि इस सृष्टि में जीव जीवों को खा रहे हैं। पानी में नौ लाख प्रकार के जीव हैं। वहाँ उनके लिये कोई ख़ुराक नहीं हैं। बड़े जानवर छोटों को खाते हैं और छोटे कीड़े-मकौड़ों को। इसी प्रकार पृथ्वी पर भेड़, बकरियाँ, गाय, भैंस इत्यादि घास-फूस वनस्पति खाती हैं, जिनमें जान है और शेर, भेड़िये उनको खाते हैं। चिड़ियाँ कीड़े-मकौड़े खाती हैं, चिड़ियों को बाज खा जाते हैं और मनुष्य सब को खा जाता है। जितने अनाज के दाने हैं, सबमें आत्मा है। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में आया है, 'जेते दाणे अंन के जीआं बाझ न कोय' । ऐसे ही श्रुति में आया है कि आत्माएँ इस संसार से शरीर को छोड़कर देवयान और पितृयान मार्ग को पार करके फिर सूर्य और चाँद की किरणों के रास्ते इस संसार में उतरती हैं और फलों तथा अनाज इत्यादि में प्रवेश करती हैं। रस इन्हीं के कारण है। जब पुरुष इन फलों तथा अनाज इत्यादि को खाते हैं और स्त्रियों के पास जाते हैं तो उनके वीर्य द्वारा वह रूह गुज़र कर माता के गर्भ में प्रवेश करती है। हर आत्मा अपने कर्मों के अनुसार पशु, पक्षी, घास, वृक्ष, हैवान या इनसान की योनि में जाकर पैदा होती है। मतलब यह है कि इस संसार में विचारशील व्यक्ति के लिये अँधेरा है। किसी जगह अमन-चैन नहीं। इनसान से नीची योनियों में तो शारीरिक आराम भी नहीं है। मनुष्य इस सृष्टि में सबसे उत्तम है। इसको निचली योनियों के मुक़ाबले में अधिक आराम है। परन्तु कौन मनुष्य है जो दावा करे कि वह इस संसार में सुखी है। किसी को कोई दु:ख है किसी को कोई। मानो यह संसार दु:खों का घर है। यहाँ कर्म प्रधान है। जैसे-जैसे इस संसार के लोग काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार के फन्दे में फँसकर, कर्म करते हैं, दु:खी होते जाते हैं। सुख

का रास्ता यह है कि इस संसार में फिर न आयें और वह पूरे गुरु और नाम की कमाई के बिना सम्भव नहीं है। तीर्थ, व्रत, दान-पुण्य, यज्ञ, जप-तप, धर्म-पुस्तकों को पढ़ना निस्सन्देह अच्छे कर्म हैं परन्तु उनका फल इस संसार के आवागमन से मुक्ति नहीं। उनका फल अगले जन्मों में इस संसार में या स्वर्ग इत्यादि में मिल जाता है परन्तु स्वर्ग से भी इस संसार में वापस आना पड़ता है। केवल नाम की कमाई ऊँचे रूहानी देशों को ले जाती है, जहाँ से कि फिर नहीं आना पड़ता।

22 मई को सुबह हुजूर ने कुछ स्त्री-पुरुषों को नामदान दिया। शाम को सत्संग हुआ 'सतगुरु का नाम पुकारो' और 'चरन भए संत बोहिथा तरे सागर जेत '5 इसके बाद डाक सुनाई।

24 मई सोमवार को सुबह 9 बजे मोटर कार में मैं हुजूर के साथ अमृतसर गया। वहाँ हुजूर तो अपने कमरे में चले गए, मैं इम्पीरियल बैंक में काम करने गया। वहाँ से दो बजे वापस आया। खाना खाया। हुजूर ने 4-5 बजे के बीच अमृतसर के सत्संगियों को ऊपर छत्त पर दर्शन दिये। इसके बाद लाला दुनी चन्द नागपाल के भोग की रस्म पर कार में गये। वहाँ भोग-वाणी पढ़ी गई। वहाँ से रात के 9 बजे के क़रीब वापस आ गये। 25-26 मई को घुमान गाँव में सत्संग करने गये।

27 मई को 10 बजे के क़रीब हुज़ूर घुमान से वापस आये। थोड़ी देर बाद आराम करके बलोचिस्तान के स्त्री-पुरुषों को नामदान दिया। कई दिनों की डाक इकट्ठी हो गई थी, वह सुनी। उसके बाद पटवारी व जैलदार के साथ जमीनों का बखेड़ा निपटाते रहे। शाम के छ: बजे के सत्संग में पधारे। सत्संग में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से राग रामकली से चेतावनी का शब्द 'ज्यों आया त्यों जावह बौरे ज्यों जनमे त्यों मरण भया ै पढ़ा गया। हुजूर ने फ़रमाया कि जो आदमी बिना नाम के मरते हैं उनकी आत्मा बाईं ओर काल के मुख में जाती है और काल उनको चबाता है तो आँखों में आँसू और कभी-कभी डर से दस्त निकल जाता है। परनु मरने वाला दुःख का वर्णन करने लौट कर नहीं आता। सतगुरु और शब्द, ब्रह्म तक तो अलग-अलग रहते हैं। परन्तु पारब्रह्म में सतगुरु और शब्द दोनों एक हो जाते हैं। शरण का अर्थ यह है कि नौ द्वारों से मन और आत्मा को समेटकर चन्द्रमा से परे ले जाना, जहाँ कि सतगुरु का सूक्ष्म स्वरूप है। सरदार

गुलाब सिंह साहिब ने फ़रमाया बिना 'सम' और 'दम' के न तो सुरत-शब्द योग और न ही कोई और योग सफल हो सकता है। 'सम' का अर्थ है मन को रोकना है और 'दम' का अर्थ है इन्द्रियों का दमन, जिससे वीर्य का तत्त्व निकलकर दिमाग़ में, माथे में, ओजस बनता है, जो कि हरएक अंग को ताक़त और बल देता है तथा चेहरे और माथे को नूर देता है। जहाँ तक हो सके, वीर्य को सुरक्षित रखना चाहिये ताकि ओजस बने। हुजूर ने फ़रमाया कि ब्रह्मचर्य हर आयु में लाभदायक है। जवानी में रखा जाये तो कुन्दन है परन्तु बुढ़ापे में भी स्वास्थ्य और भजन के लिये लाभदायक है। फिर कहा कि स्कूलों और कॉलेजों में सच्चे गृहस्थ-मार्ग की शिक्षा नहीं दी जाती।

सत्संग के समाप्त होने पर एक सत्संगिन ने अपनी माँ की सँभाल के बारे में जिक्र किया कि किस प्रकार अन्त समय हुजूर ने उसको दर्शन दिये। लाला बिशन दास पुरी ने अपनी माता की मृत्यु का जि़क्र किया जिनका हाल ही में स्वर्गवास हुआ था कि हुज़ूर ने उनको और उनके पिता को भी अन्त समय में दर्शन दिये अर्थात् दोनों का उद्धार हो गया। हुजूर ने फ़रमाया कि ऐसा अकसर

शाम को मुझे बुलाया। मनीआर्डरों पर हस्ताक्षर करवाये गए। हुजूर ने फ़रमाया कि उनको पेट में जलन-सी रहती है। परन्तु काम इतना है कि दवाई करने का समय नहीं मिलता और यह फ़रमाया कि गुजारा चल रहा है, वक़्त गुज़र रहा है। सरदार जोध सिंह ने बलवर्धक दवाई बताई। कल सुबह हुज़ूर जालन्थर शहर तशरीफ़ ले जा रहे हैं।

28 मई को 6 बजे सुबह हुजूर के साथ मोटर कार में जालन्धर गये। कार सरकारी न थी, बल्कि मुन्शीराम सैनी कपूरथला वाले के लड़के ने नई ख़रीदी थी। सीधे सरदार भगत सिंह वकील की कोठी पर गये। वहाँ से हंसराज गोयल, प्लीडर का मकान देखकर कन्या महाविद्यालय में बीबियों को मिलने गए। प्रिंसिपल साहिबा बड़ी नेक स्त्री हैं। हुजूर से बड़े प्रेम-भाव से मिली। वहाँ से बस्ती शेख़ां में, जहाँ कि कोई शादी थी, गये। वहाँ क़व्वाली सुनाई गई। क़व्वाल हुजूर के दर्शन से बहुत ख़ुश हुए। वहाँ से शहर में आकर, ज़मीन, जो सत्संग-घर के लिये ख़रीदी गई है, वह देखी। यह जमीन बस्ती शेख़ां और शहर के बीच मिशन अहाते के पास है। यह समतल नहीं है। समतल करने में भी लागत

130

29 मई 1943 आयेगी। परन्तु यह जमीन बड़ी मुश्किल से मिली, वरना डी. ए. वी. कॉलेज वाले ख़रीदना चाहते थे। वहाँ से सरदार साहिब के मकान पर पानी पीकर है 12 बजे पहुँच गये। राय बहादुर लाला शंकर दास आये हुए थे। दर्शन करके शीघ्र ही लायलपुर लौट गये।

शाम को 6 बजे सत्संग हुआ जो सरदार कृपाल सिंह लाहौरी ने किया। सरदार साहिब ने फ़रमाया कि सन्त-सतगुरु किमशंड अफ़सर की तरह होते हैं। हुजूर ने फ़रमाया, नहीं, स्टाफ़ अफ़सर की तरह होते हैं। सरदार साहिब ने फ़रमाया कि सन्त दर्शन से, हाथ सिर पर रख कर और वाणी-वचन से जीव पर दया करते हैं। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'दरसन भेटत पाप सभ नासह" पढ़ा गया था। सत्संग के बाद हुजूर सेवा में बैठे और उसके बाद रात के दस बजे तक डाक सुनते रहे।

29 मई को दोनों समय, सुबह व शाम, सत्संग हुआ। सुबह के वक़्त 'गुरू गुरू में हिरदे धरती 'ह पढ़ा गया। 'आत्म-परमात्म नहीं मानूं' आत्म से मतलब है सहस्र-दल कमल। परमात्म से मतलब है त्रिकुटी या पारब्रह्म। योगियों के अनुसार इनके यही अर्थ हैं। शाम के समय सत्संग हुआ 'काल ने जगत अजब भरमाया। मैं क्या क्या करूं बखान॥^{१७} हुजूर ने बताया कि दुनिया में तीन प्रकार के लोग हैं। बेवकूफ़, जो कि मूर्ति-पूजा व दरियाओं में नहाना मुक्ति समझते हैं। बुद्धिमान, जो पढ़ने-पढ़ाने को मुक्ति का साधन मानते हैं। तीसरे, बीच के लोग जो कभी मूर्खों से मिल जाते हैं, कभी विद्वानों से और जप, तप, संयम इत्यादि कर्मों में मुक्ति मानते हैं। यह सब धोखे में हैं। उनकों कर्मो का फल जरूर मिलेगा, परन्तु फिर-फिर इस दुनिया में जन्म लेंगे। पूरे गुरु व नाम के बिना मुक्ति नहीं।

एक अहमदी साहिब ने सत्संग में उठकर सवाल किया कि आप क़ुरान मजीद को ख़ुदा की किताब मानते हैं या नहीं। जवाब मिला कि ख़ुदा के यहाँ तो कोई जबान नहीं। जितनी किताबें, ग्रन्थ, वेद, शास्त्र, इंजील, क़ुरान इत्यादि हैं सब इनसानों की बनाई हुई हैं। अधिक से अधिक यह कह सकते हैं कि उन्होंने ख़ुदा के कहने के अनुसार उनको बनाया, परन्तु किताबों में ख़ुदा नहीं, ख़ुदा इनसान में है, न कि धर्म-ग्रन्थों या मन्दिरों, मसजिदों, ठाकुरद्वारों व गुरुद्वारों में।

30 मई को सुबह नौ बजे सत्संग हुआ। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'बिख बोहिथा लादया" और हुजूरी वाणी से भादों का महीना पढ़ा गया। जैसे कि भादों

में मलेरिया बुख़ार में इनसानों को प्यास और जलन लगती है वैसे ही दुनिया में तीन तापों- आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक और आशा-तृष्णा से लोग बीमार हैं। इच्छा रूपी प्यास कभी नहीं मिटती। जितना अधिक बुझाने का प्रयत्न करता है उतनी अधिक भड़कती है। इसी कारण जीव आवागमन के चक्र में फिर रहा है। कादियानी साहिब ने सवाल किया कि मैं इस आवागमन को इस तरह से नहीं मानता कि रूह आदमी से निकलकर हैवान या परिन्दों में जाती है। हुजूर ने फ़रमाया कि हमें अपने बहुत-से जन्मों का ज्ञान है और हमारा तजुर्बा है कि रूह आवागमन के घेरे में है। क़ुरान मजीद ने वेद की तरह 'ला इल्लाह' कह दिया, अर्थात् अल्लाह से परे कुछ नहीं। जैसे वेद ने 'नेति-नेति' कह दिया। सन्त क़ुरान व वेद से आगे गये हैं। मौलाना रूम ने अपनी मसनवी चौथी मंजिल से शुरू की है। क़ुरान शरीफ़ पहली मंजिल यानी अल्लाह तक का हाल बतलाता है।

30 मई शाम को एक हिन्दुस्तानी कर्नल साहिब अपनी बीवी साहिबा के साथ डेरे में तशरीफ़ लाये और सत्संग-हाल देखकर व हुजूर के दर्शन करके

31 मई को हुजूर ने 300 के क़रीब स्त्री-पुरुषों को नामदान दिया। बरख़ुर्दार सफ़र अल्ला खाँ ने हरड़ खाने की तरकीब नीचे लिखकर भेजी है और बताया है कि किस-किस मौसम में किस-किस चीज़ और अनुपात के साथ हरड़ की ख़ुराक खानी चाहिये:

	त्रिफला	
मौसम का नाम	मात्रा	अनुमान
चैत्र, वैशाख	भुनी हुई काली हरड़ 6 माशे	शहद ख़ालिस 6 माशे
ज्येष्ठ-असाढ़	Chatan his " Mil bridge.	क़न्द स्याह 6 माशे
सावन-भादों	TOTAL PARTY SINGS OF ABOVE	नमक लाहौरी 6 माशे
आसोज-कार्तिक	ANTERNA DE LA PROPERTIE	मिश्री सफ़ेद 6 माशे
मगसिर-पोह	"	जंजील 6 माशे
माघ-फाल्गन		फ़लफ़ल दराज 6 मारे

132

1 जून, 1943 शाम के छ: बजे बहुत-से लोग अपने-अपने घरों को चले गए हैं। डेरे की आबादी पहले जितनी ही हो रही है। हुजूर की मेहनत को देखिये कि दोपहर के डेढ़ बजे जब नाम दे चुके तो उसके बाद कार में रेलवे स्टेशन ब्यास पर सड़क पर काम करनेवालों का निरीक्षण करने गये। वहाँ से आकर एक-दो सत्संगियों को विदा किया। फिर नहाये और खाना खाया।

2 जून सुबह हुजूर ने सत्संग किया। फिर डाक सुनी और फिर हुजूर ने एक सत्संगी की शादी की। शादी में केवल दो मिनट लगे होंगे। न कोई पोथी पढ़ी गई न मन्त्र। हुजूर ने दुल्हा-दुल्हन को अपने पास बुलाया और उनको प्रसाद दिया और फ़रमाया कि जाओ, तुम्हारी शादी हो गई। असल में शादी क्या है ? अगर दुल्हा-दुल्हन एक-दूसरे से शादी करने में राजी हैं और उनमें प्रेम-प्यार है तो बस शादी है। बाक़ी सब बन्दोबस्त सोसाइटी ने इसलिये रखा है कि शादी का इश्तहार हो जाये और शादी जल्दी न टूट सके। बाक़ी सब रस्में हैं और धर्म के ठेकेदारों ने अपनी शान बढ़ाने के लिये तथा रुपया कमाने के लिये बना रखी हैं। शादी के बाद, एक और मियाँ-बीवी में, जो अपने माँ-बाप की बेवकूफ़ी से आठ-नौ साल से अलग रह रहे थे, समझौता करवाया। मज़े की बात यह है कि मियाँ-बीवी में कोई ख़ास अनबन न थी। पित व पत्नी दोनों के पिता बड़े कटुभाषी अर्थात् बदज़बान थे। उन दोनों में अनबन होने के कारण पित-पत्नी दोनों सजा पा रहे थे।

शाम के पाँच बजे हुजूर कार में कपूरथला तशरीफ़ ले गये। वहाँ कई सत्संगियों के घरों में हुजूर ने चरण डाले। फिर लाला हीरानन्द के लड़के की शादी पर सेहराबन्दी से पहले श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से छोटा सा शब्द 'इस गुफा मह अखुट भंडारा''' पढ़ा गया। सेहराबन्दी हुई। भगत सिंह और मिस्टर आहलूवालिया बरख़ुर्दार गुरुदयाल सिंह के साथ जालन्थर से कार में आये थे। सेहराबन्दी के बाद एक घोड़ी, जो सरदार साहिब ख़रीदना चाहते थे, उसको देखा। फिर सरदार साहिब हमारी कार में डेरे आ गये। सरदार साहिब ने रास्ते में हिन्दू औरतों की मोहब्बत का क़िस्सा सुनाया कि एक औरत का पित मर गया, लोग सहन में इकट्ठे हो गये। औरत की ज़िन्दगी दूभर थी। उसने सोचा कि यदि सहन में गिरती हूँ तो मुश्किल है, इसलिये घर की दूसरी ओर तीसरी

मंजिल से छलाँग लगाकर जान दे दी। हुजूर ने फ़रमाया कि क्या पता धर्मराज उनको इकट्ठा रखेगा या कर्मों के अनुसार अलग-अलग जन्म देगा। ऐसा ही प्रेम-भाव मैंने एक मुसलमान औरत में भी देखा है। प्रेम किसी जाति की जागीर नहीं। प्रेमी रूहें हरएक जाति व देश में मिलती हैं।

में कल अमृतसर डेरे के काम से गया। शाम को साढ़े छ: बजे वापस आया। हुजूर ने कल शाम सत्संग सरदार गुलाब सिंह से श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'सावन हरिया बन' करवाया कि अधिकारी पर ही नाम व सत्संग का प्रभाव पड़ता है। जो पात्र नहीं उनके ऊपर प्रभाव नहीं पड़ता है। जैसे सावन का बादल सब्ज़ी व पेड़-पौधों को हरा-भरा कर देता है, परन्तु आक इत्यादि सूख जाते हैं। हुजूर ने पंजाबी मुहावरा फ़रमाया, 'कर्म हीन जन जावे। रुस जावे या मक्खी खावे'। बिना भाग्य के कुछ नहीं मिल सकता।

4 जून शाम को हुजूरी वाणी में से 'गुरुमता अनोखा दरसा¹² शब्द पढ़ा गया। गुरु-मता मन-मत के विरुद्ध है। जब मन की मत को छोड़ दें तो गुरु-मत आ गई और गुरुमत कहाँ से शुरू होती है। वह बिन्दु जहाँ मन और सुरत जाकर शब्द को स्पर्श करते हैं, तीसरे तिल में हैं। अर्थात् गुरुमत तीसरे तिल से आरम्भ होता है। उसके आगे सहस्र-दल कमल है, जिसमें हज़ार बत्ती का प्रकाश है। जिसको वेदों में 'सहस्र शीर्ष: पुरुष: सहस्राक्ष: सहस्त्रपात' करके वर्णन किया है कि भगवान् के हज़ार सिर और हज़ार पाँव हैं और क़ुरान में 'ला इल्लाह इल इल्लाह' कहा गया है। वहाँ हजारों ऋषि-मुनि ज्योति पर मोहित हुए बैठे हैं और हजारों फुलवाड़ियाँ खिली हैं। वहाँ पहुँचकर अभ्यासी सात विलायत की बादशाहत पर ठोकर मारता है और वहाँ जाकर काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार वश में होते हैं। उसके तीन भाग हैं। झंझरी दीप, सहस्र-दल कमल और सेत सुन। उससे आगे बंकनाल में से गुज़र कर ब्रह्म का देश आता है। दोनों के बीच बड़ी भारी रचना है, जिसके वर्णन के लिये अनेक ग्रन्थ चाहियें। ब्रह्म के भी तीन भाग हैं। गगन, त्रिकुटी और गुरु-पद। गुरु-पद की शोभा अनन्त, अपार है। ब्रह्म के देश में हरएक जीव के संचित कर्मों का ख़जाना जमा रहता है और जब तक गुरु से शब्द का ख़ज़ाना न मिल जाये तब तक ब्रह्म से आगे पार जाना सम्भव नहीं। इसलिये ब्रह्म के देश में हरएक जीव को बहुत समय तक ठहरना

6 जून 1943

पड़ता है। इसलिये कहा है, 'ज्यों फेरत पान तमोली, यों धुन घट सूरत रोली।"3' जैसे गले हुए पान को पनवाड़ी काट-काट कर अच्छा भाग रख लेता है वैसे ही रूह के सब कर्म वहाँ कट जाते हैं।

सत्संग के बाद हुजूर रात के डेढ़ बजे तक डेरे के प्रबन्ध के विषय में बातचीत करते रहे। कल शाम को श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से सत्संग हुआ। उसके बाद हुजूर सेवादारों को जो सड़क पर राख डाल रहे थे, दर्शन देने गए, क्योंकि डेरे की सड़क बैलगाड़ियों, ताँगों, मोटर कारों के लिये बिलकुल ख़राब हो गई है। हुजूर ने सत्संग में बीबियों को कहा कि जब मैं कर्ही अपने काम में बैठा होऊँ तो उस समय मेरे आसपास मत जमा होना। इससे मुझे कष्ट होता है और मुझे नाराज होकर तुम लोगों को हटाना पड़ता है। क्या तुम चाहती हो कि मेरे क्रोध की किरणें तुम्हें लगें ? सत्संग में मैं प्रेम-भाव में लीन होता हूँ और प्रेम से सत्संगत को देखता हूँ। उस समय मेरे दर्शन करो, उसमें सबका लाभ है।

एक सत्संगी को उसके पत्र के उत्तर में कहा गया कि यदि मन सिमरन में लगता हो तो ध्यान या शब्द की ओर आकर्षित होने की जरूरत नहीं। यदि मन सिमरन को छोड़कर बाहर जाता हो तो सतगुरु के कल्पित स्वरूप का ध्यान करो। यदि फिर भी बाहर जाता हो तो साथ शब्द भी दे दो।

एक सत्संगी ने कहा कि गैर-सत्संगी कहते हैं कि जो शब्द तुम सुनते हो यह नाद नहीं बल्कि ख़ून के दौरे की सरसराहट या हवा की गूँज है। हुजूर ने जवाब दिया कि यदि यह दोनों बातें ठीक मान भी ली जायें तो भी चिदाकाश के परे प्राण नहीं जाते। इसलिये वहाँ के शब्द के विषय में यह नहीं कहा जा सकता कि वह प्राणों की सरसराहट या हवा की गूँज है।

6 जून की सुबह इतवार होने के कारण अमृतसर, जालन्धर तथा लाहौर से बहुत-से सत्संगी दर्शनों के लिये आए। सुबह आठ बजे हुजूरी वाणी में से 'राधास्वामी धरा नर रूप जगत में ¹¹⁴ पढ़ा गया। सरदार भगत सिंह ने कहा **कि** जपजी साहिब में भी गुरु के वचन मानने की बड़ी महिमा की गई है। 'मंने की गत कही न जाय। जे को कहै पिच्छै पछुताय'। जब तक रूह अन्दर जाकर सतगुरु के नूरी स्वरूप को न देख ले, चन्द्र चकोर जैसी प्रीत नहीं आ सकती। किसी ने पूछा कि क्या मेसमरेजम वाले सत्संगी आत्माओं को बुला सकते हैं ?

उत्तर मिला, नहीं। बल्कि भूत-प्रेत, देवी-देवता भी उन्हीं कमज़ोर जीवों को सता सकते हैं जो उनसे डरते हों। जो उनसे न डरे उसका कुछ नहीं बिगाड़ सकते। मुहावरा- 'भूत-प्रेत परौहना जो मंने उसको मारे'। इसी प्रकार कहावत है कि एक व्यक्ति भैरों की पूजा किया करता था। उसके भाई ने भैरों को बहुत-सी गालियाँ दीं। दूसरे दिन पूजा में भैरों ने अपने सेवक को कहा कि तुम्हारे भाई ने मुझे बहुत-सी गालियाँ दी हैं। मैं तुम्हारे बच्चों को मार डालूँगा। सेवक ने नम्रता से कहा कि मेरा क्या दोष है, मेरे भाई को मारो, जिसने तुम्हें गालियाँ दी हैं। भैरों ने कहा कि वह तो हमसे डरता नहीं, इसलिये हम तुमसे बदला लेंगे।

आज हुजूर बड़े व्यस्त रहे। उन्होंने अपने मोटर ड्राइवर को छुट्टी दे दी। इसके बाद उनके निजी मेहमान लुधियाना से तशरीफ़ लाये। शाम को उनको सत्संग सुनाया क्योंकि वे बे-सत्संगी थे। सत्संग में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का शब्द 'जगजीवन साचा" पढ़ाया गया। हुजूर ने फ़रमाया कि कभी-कभी अवतारों को भी कर्मों का हिसाब देना पड़ता है। केवल गुरु ही इस हिसाब से बचा सकते हैं। सतगुरु सूरमा हैं और शहंशाह हैं। हुज़ूर ने स्वर्गीय बाबा काहन, पेशावर वाले की लम्बी कहानी सुनाई कि बाबा साहिब मस्ती की हालत में रहते थे और उनको अपने शरीर की परवाह न थी। चादर के एक कोने में रोटी बँधी होती, दूसरे में विष्टा लगी होती। एक बार बाबा काहन की हुजूर के साथ नौशहरा से पेशावर जाने की इच्छा थी। परन्तु 12 बज गये और बाबा काहन स्टेशन को जाने का नाम नहीं लेता। बार-बार कहने पर कहता कि मैं जरनैल हूँ जब तक मैं नहीं जाऊँगा, गाड़ी नहीं आयेगी। जब गाड़ी के समय के बाद रेलवे स्टेशन पर पहुँचे तो पता लगा कि गाड़ी लेट है। गाड़ी में टिकट लेकर बैठ गये। पेशावर छावनी पर उतरना था। हुजूर के मिस्तरी के पास, जो दूसरे डिब्बे में बैठा था, सबके टिकट थे। वह तो उतर गया परन्तु बाबा काहन न तो स्वयं उतरे और न हुज़ूर को उतरने दिया। बार-बार कहते कि मैं जरनैल हूँ। मेरी फ़ौज आयेगी तो उतरूँगा। अभी मेरी फ़ौज नहीं आई। इस तरह बातें होते-होते गाड़ी चल दी और पेशावर का स्टेशन आ गया। सब लोग उतर गये। परन्तु बाबा काहन डिब्बे के दरवाजे के सामने रास्ता रोककर खड़े हो गये कि न तो मैं स्वयं उतरूँगा, न मैं तुमको उतरने दूँगा क्योंकि अभी मेरी फ़ौज नहीं आई। जब सब यात्री उतर चुके तो सफ़ाई वाले कुली आ गये। अंग्रेज लोग बाबा जी के बहुत श्रदालु थे। 136

12 जून 1943

11 जून 1943

स्टेशन मास्टर वग़ैरह को पता लगा, वह भी आ गये। अच्छी ख़ासी दो सौ के क़रीब भीड़ इकट्ठी हो गई। तब बाबा जी ने कहा कि मेरी फ़ौज आ गई, अब उतरुंगा। अत: रेलवे स्टेशन से क़ाबली दरवाज़े को चल पड़े, रास्ते में बाबा जी और हुजूर की तकरार हो गई। बाबा कहने लगा कि जाओ मैं तुम्हारे साथ नहीं जाता और अलग रास्ते चल दिये। हुजूर आगे गये। विचार आया कि महात्मा को बिना किसी बात के नाराज़ किया। चलो लौटकर मना लायें। देखते क्या हैं कि बाबाजी सामने से यह कहते आ रहे हैं कि सिक्ख कहता है कि बाबा को मना लायें। बाबा कहता है कि चलो सिक्ख को मना लायें। हुज़ूर हैरान थे कि यह तो दूसरे रास्ते से गये थे यदि ताँगे में भी आते तो आधा घण्टा लगता, यह कैसे यहाँ पहुँच गये ? ख़ैर, बाज़ार में फिरते रहे। पानी पिया, इतने में वापस नौशहरा को जानेवाली अन्तिम गाड़ी का समय हो गया तो हुजूर ने कहा कि बाबा मुझे जाने दो। गाड़ी निकल जायेगी, कोई ताँगा भी स्टेशन तक नहीं मिलेगा। बाबा ने कहा कि फ़िकर मत करो, एक ताँगा केवल तुम्हारी इन्तिज़ार में अड्डे पर ख़ड़ा है। जब तक तुम न जाओगे, न जायेगा। हुजूर अड्डे पर आये। वहाँ केवल एक ही ताँगा था। उस पर सवार होकर स्टेशन पर आ गये।

रात को सरदार हरबन्स सिंह की सुपुत्री की सगाई की रस्म सरदार इन्द्र सिंह के सुपुत्र के साथ, जो फ़ौज में लैफ़्टिनैण्ट हैं, हुई। सुबह 7 बजे राव बहादुर शिवध्यान सिंह पिसावा के रईस की सुपुत्री की मंगनी सरदार चरन सिंह जी के साथ हुई। उपस्थित जन तथा हुजूर महाराज जी प्रसन्न थे और दोनों घरानों को बधाई दे रहे थे। हुज़ूर ने कहा कि जैसे इन दो की पत्रियाँ आपस में मिलती हैं, वैसे बहुत कम मिलती देखने में आई हैं। सरदार साहब ने कहा कि जैसे यह मोतियों की जोड़ियाँ हैं वैसे ही उनको सेहरा देना। हुजूर ने उत्तर दिया कि जो मौज मालिक की। कीता लोड़ीऐ कंम सो हर पह आखीऐ।''' हुजूर का कल लाहौर सत्संग के लिये जाने का विचार है। वहाँ से बुधवार या बृहस्पतिवार को वापस आर्येगे। मैं बृहस्पतिवार दस जून को लुधियाना से वापस आ गया। हुज़ूर अभी तक वापस नहीं आये।

11 जून नौ बजे के क़रीब हुजूर लाहौर शेख़्पुरा होकर वापस पधारे। आते ही न तो आराम किया न पानी पिया। डाक माँगी, डाक तीन-चार दिन की

इकट्ठी हो गई थी, उसमें काफ़ी समय लग गया। शाम को 7 बजे सत्संग सरदार गुलाब सिंह ने रामायण के उत्तरकाण्ड में से किया। कल्याण पत्रिका जोकि गोरखपुर में छपती है, उसमें उत्तरकाण्ड रामायण में से शत पाँच चौपाई टीका करके छपवाई है, जोकि अच्छी धार्मिक चीज़ है। उसमें से मानसिक रोगों का वर्णन पढ़ा गया। बड़े-बड़े रोगों, काम, क्रोध आदि के अतिरिक्त, गोस्वामी जी फ़रमाते हैं कि पराये सुख को देखकर जलना और पराई निन्दा, वैर, विरोध यह सब मानसिक रोग हैं। बहुत-से सांसारिक जीवों को तो इनका पता ही नहीं, फिर उनको इनके इलाज का ख़याल कैसे आये। जिनको पता है वे इलाज जानते है। विषयों की आशा छोड़नी चाहिये और आशा, मनसा, तृष्णा त्याग देनी चाहिये। गुरु-भिक्त से असाध्य रोग दूर हो जाते हैं और मन के स्वास्थ्य के ये लक्ष्ण हैं कि दिन पर दिन वैराग्य बढ़ता जाये और विषय-वासना कम होती जाये। हुज़्र ने फ़रमाया कि औरतों में ईर्ष्या की बीमारी आम है। एक और नुक़्स औरतों में यह भी है कि जब उनकी रूहें अभ्यास में तरक़्क़ी करके अन्दर जाने लगती हैं तो किसी प्यारे की मौत या किसी सांसारिक हानि को दिल में रखकर चिन्तामग्न हो जाती हैं और दिल के घाट पर उतर आती हैं। सारा किया-कराया नाश हो जाता है और चीखती हैं। यह ठीक नहीं। जब हम गृहस्थ हैं और ब्याह शादी में ख़ुशी से फूल-फूल कर बैठते हैं तो हमें यह भी समझना चाहिये कि गृहस्थ में मरना, रोग, बीमारी, हानियाँ भी होंगी। उनको दिल में जगह नहीं देनी चाहिये। मालिक का हुक्म मान कर सब्न करना चाहिये। यह महकमा और है तथा भजन-सिमरन का महकमा और है। यह नहीं हो सकता है कि जो व्यक्ति नेक-पाक हो और भजन करता हो उसको दुनियावी दु:ख न आयें, वह तो पिछले जन्म के कर्मों के कारण आयेंगे ही। हाँ आगे इस जन्म के अच्छे कर्म फल देंगे।

डलहौज़ी जाना एक सप्ताह के लिये स्थगित हो गया है क्योंकि डेरे के बहुत-से काम अभी बाक़ी हैं। उनको समाप्त करके जाना होगा। आजकल गर्मी बहुत है। डलहौज़ी जाने के दिन यही हैं, परन्तु हुज़ूर डेरे के लाभ को सबसे प्रथम रखते है।

12 जून शाम को शनिवार होने के कारण अमृतसर, लाहौर, जालन्धर के सत्संगी, सत्संग के समय आ गये और हुजूरी वाणी में से यह शब्द लिया गया

13 जून को हुजूर महाराज जी सारा दिन काम में लगे रहे। डेरे के हिसाब-किताब की पड़ताल की। सुबह को पत्र इत्यादि लिखवाते रहे। शाम को सरदार गुलाब सिंह जी ने सत्संग किया और फ़रमाया कि कृपा या दया तीन प्रकार की है। एक ईश्वर की कृपा, जिसने मनुष्य शरीर प्रदान किया, फिर गुरु की कृपा, जिसने अन्दर जाने का रास्ता बताया, तीसरी आत्मा की दया अर्थात् इनसान का नेक चलन रह कर भजन-सिमरन करना। इस तीसरी दया के बिना पहली दो

गये और ख़ाली रह गये। इसलिये जो लोग सन्तों की संगति में रहते हैं उनके

लिये सावधानी से रहना ज़रूरी है।

दया काम पूरा नहीं कर सकतीं, जब तक स्वयं इनसान पुरुषार्थ न करे। इसके बाद हुजूर पधारे और फ़रमाया कि जो शब्द मामूली आता है वह खींच नहीं सकता जैसे गाय के बच्चे को रस्सी से बाँधकर गाय को खुला छोड़ दें तो भी वह कहीं नहीं जा सकती, क्योंकि अपने बच्चे के प्यार की जंजीर से बाँधी है। इसी तरह यह रूह दिमाग से उतर कर आँखों में से होती हुई शरीर के रोम-रोम में व्यापक है और इतने पर ही बस नहीं। शरीर से बाहर स्त्री, बेटे, यार-दोस्त, रिश्तेदार, जायदाद, रुपया, पैसा, देश, घर इत्यादि हजारों मुहब्बतों में जकड़ी हुई है। जो मनुष्य इतनी जंजीरों में जकड़ा हो, वह कैसे आजाद हो ? इसलिये शब्द रूह को कैसे खींचे, जब तक कि वह इन जंजीरों को तोड़कर आँखों में इकट्ठी न हो। फिर कबीर साहिब की वाणी में से 'विरह' का अंग लिया गया। हुजूर ने फ़रमाया कि सन्तों को हुक्म है कि जो जीव प्रेमी और विरही है, उसको लाओ, बाक़ियों को छोड़ दो। फिर फ़रमाया कि चार सन्तों की वाणियाँ पढ़ने के योग्य हैं, गुरु नानक साहिब, कबीर साहिब, तुलसी साहिब और स्वामी जी महाराज की वाणी, आजकल के हालात को देखते हुए, सब वाणियों से ऊँची और सरल हैं।

14 जून को वर्षा हुई। मौसम ठण्डा हो गया। हुजूर 'गुरुमत सिद्धान्त' का मसौदा ठीक करने में लगे रहे। चार बजे ढिलवाँ डिपो में सिरसा सत्संग-घर के बरामदे के लिये दयार की लकड़ी, स्लीपर देखने गये। वहाँ दयार का स्लीपर 9' × 10" × 5" फ़ुट का 22-23 रुपये से कम नहीं मिलता था। वह भी बहुत कम मात्रा में। इसलिये जगाधरी आदमी भेजा कि वहाँ से लेकर सीधा सिरसा पहुँचा दे। वहाँ से 9 बजे के लगभग वापस आकर फिर 'गुरुमत सिद्धान्त' का मसौदा देखने लगे। कल संक्रान्ति है, अमृतसर जाना है।

15 जून संक्रान्ति को सुबह 8 बजे सत्संग हुआ। सत्संग के बाद डाक सुनी। एक ने पत्र में लिखा था कि वह रिश्वत नहीं लेता, परन्तु अफ़सर उससे ख़ुश नहीं। उत्तर दिया गया कि भजन करते रहो। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से पाँचवीं पातशाही का शब्द लिया गया:

पाणी पक्खा पीस दास कै तब होह निहाल। राज मिलख सिकदारीआं अगनी मह जाल। संत जनां का छोहरा तिस चरणी लाग।

मायाधारी छत्रपति तिन्ह छोडी त्याग।

संतन का दाना रूखा सो सरब निधान।

गृह साकत छतीह प्रकार ते बिख् समान।

भगत जना का लूगरा ओढ नगन न होई।

साकत सिरपाओ रेसमी पहरत पत खोई।

साकत स्यों मुख जोरिए अध वीचों ट्रटै।

हर जन की सेवा जो करे इत ऊतिह छूटै।

सभ किछ तुम्ह ही ते होआ आप बणत बणाई।

दरसन भेटत साध का नानक गुण गाई।

शाम के 4 बजे अमृतसर को रवाना हुए। रास्ते में जंडियाला से आगे जाकर मोटर कार के अन्दर के पंखे का चमड़े का पट्टा टूट गया। मालूम हुआ कि गर्मी के कारण चमड़ा ख़ुश्क हो गया और टूट गया। उसकी जगह रस्सी लगाकर कार को चलता किया और शाम को साढ़े पाँच बजे सत्संग-घर में पहुँच गये। मैं पट्टा लेने चला गया। जो पट्टा दो रुपये में आता था, उसके 45 रुपये दुकानदार ने माँगे। वहाँ से आकर सत्संग सुना। फिर हुजूर सत्संग-घर में सेवा में बैठे। अन्त में रात के साढ़े दस बजे डेरे वापस आये।

16 जून को सुबह 8 बजे हुजूर एक मुसलमान साहिब, रेलवे इंजीनियर की ख़बर लेने गए क्योंकि उनका सन्देश आया था कि वह बीमार है। वह बड़े जवान, मज़बूत और प्रभावशाली अफ़सर थे। बड़े सभ्य और हमदर्द। जब उनसे मिले तो उनकी टाँगे इतनी कमज़ोर थीं कि चल नहीं सकते थे। चेहरे पर उदासी, होश-हवास कम। कहने लगे चार महीनों से बीमार हूँ, पहले डॉक्टरी इलाज किया, फिर देहली गया। देहली में एक हकीम का इलाज किया, वहाँ भी कुछ आराम नहीं हुआ, तो यहाँ वापस आ गया। डॉक्टर को हम डेरे से अपने साथ ले गए थे। उन्होंने ध्यान से देखा और फ़रमाया कि आपको उच्च स्क्तचाप (हाई ब्लड प्रैशर) है, आपके लिये दूध की लस्सी लाभकारी होगी। परन्तु आपकी टाँगे काँपती हैं, फिर भी आप गर्म मसाला,पालक और टमाटर न खायें। आपको पेशाब में सफ़ेदी आती होगी, यह रगों, पट्ठों की बीमारी है। इलाज मुश्किल है। हाँ, यदि हुजूर दया कर दें तो और बात है। एक बनिया होती–मरदान से अपने पागल लड़के को लेकर

आया हुआ है। हुन्त्र ने मेरे सामने फ़रमाया कि दया ही गई तो ठीक हो जायेगा, फ़िकर न करें। अब डॉक्टर साहिब दबाई कर रहें हैं। आजा है कि रोग दूर हो जायेगा। ऐसे सैकड़ों उदाहरण हैं कि डॉक्टरों ने जवाब दे दिया, परन्तु हुन्द्र ने दया कर दी।

हुजूर आज भी 'गुरुमत सिद्धान्त' को पढ़ रहे हैं और बड़े मग्न हैं। शाम के छ: बजे डाक सुनी और उसके बाद 7 बजे के लगभग सत्संग में तज़रीक़ ले गये। हुजूर ने फ़रमाया कि मैं अपना भजन-सिमरन छोड़कर साध-संगत की सेवा करता हूँ परन्तु हमेशा यह हालत नहीं रहेगी। वह समय आयेगा जब तुम लोग मेरे से बात करने के लिये कठिनाई से वक़्त पा सकोगे। फिर भाई हुक्म सिंह का क़िस्सा सुनाया कि उसने प्रेम में आकर बीवी-बच्चे छोड़ दिये और स्वयं डेरे में रह कर भजन-सिमरन करने लगा और जब अन्दर दृश्य देखता तो बाहर जोश में आकर कहने लगता। कई बार हुजूर बाबा जी महाराज ने उसको समझाया कि यह ख़ुशी अपने अन्दर हजम करो, परन्तु उससे न हो सका। अन्त में उसके दृश्य बन्द कर दिये गए मगर वह भजन बराबर करता गया। 1918 में जब इंफ्लुएंजा की बीमारी फैली तो वह बीमार हो गया। हुजूर से विनती की कि मुझे चरणों पर मत्या टेकने की इजाजत दी जाये, परन्तु हुजूर ने जवाब दिया कि मैं किसी से चरणों पर मत्था नहीं टिकवाता। इस पर उसने कहा कि यदि यह आपके चरण हैं तो मत्था नहीं टेकता, यदि बाबा जी महाराज के चरण हैं, तो मैं मत्था टेकता हूँ। हुजूर लाजवाब हो गये और मत्था टेकते ही उसके अन्दर के नजारे खुल गये। फिर कहने लगा कि शब्द पढ़ो। बस लोग शब्द पढ़ने लगे, उसने चोला छोड़ दिया। जैसे कि बाप अपने लड़के की कमाई, रुपया-पैसा उसको नहीं देता, ऐसा न हो कि कहीं खो दे या फॅंक दे। इसी तरह सतगुरु अपने सेवकों के भजन-सिमरन को जमा करते हैं, ताकि वह उसको कहीं खो न दें, अन्त समय देते हैं। सत्संग के बाद हुजूर राय साहब के थड़े पर आकर बिराजमान हुए और बार्ते करते रहे।

कल डाक में एक लड़के का ख़त आया कि वह परीक्षा में तीसरी बार फ़ेल हो गया है। हुज़ूर ने उत्तर लिखवाया कि उसको चाहिये कि मेहनत करता रहे, कभी-न-कभी ज़रूर सफल हो जायेगा। फिर फ़रमाया कि यही हाल परमार्थ में है। सत्संगी को चाहिये कि लगा रहे। मालिक देख रहा है कि मेरा बन्दा मेरे 142

18 जून 1943

17 जून 1943

इन्तिजार में है, कभी तो दरवाजा खोलेगा। सतगुरु शिष्य की कमाई जमा रखते हैं, ताकि वह कहीं खो न दे। अन्त समय देते हैं।

17 जून को शाम के सत्संग में दो शब्द हुजूरी वाणी के पढ़े गए। 'चुनर मेरी मैली भई। अब का पै जाऊँ धुलान॥'20 मन मैला है, जब तक मन सफ़ेद न हो जाये मालिक का दीदार न कर सकेगा और जब तक दीदार न हों, चौरासी लाख योनियों में फिरना बन्द नहीं हो सकता। रूह घाट-घाट पर चुनरी धुलाने के लिये गई अर्थात् तीर्थ, व्रत, पूजा, पाठ, तप, यज्ञ, हवन, सबकुछ करके देखा, परन्तु मन मैले का मैला रहा। अन्दर में रोशनी न हुई। तुलसीदास जी ने भी रामायण में यही लिखा है कि रूह अविनाशी ईश्वर की अंश है, परन्तु माया के हवाले कर दी गई है। माया ने इसको तन-मन के पिंजरे में क़ैद कर लिया है। काल ने काम, क्रोध, लोभ इत्यादि में फँसा दिया है, जिनका मैल मन पर चढ़ने से रूह अपवित्र हो गई है। धोने वाला केवल सतगुरु है। उसके धोने का और कोई उपाय नहीं, सिवाय इसके कि जहाँ कहीं पूरे सतगुरु का सत्संग हो, वहाँ जाकर रूह और मन को धुलाया जाये। दूसरे शब्दों में धोने की विधि बताई है कि रूह और मन को सतगुरु के चरणों में रख दिया अर्थात् रूह व मन को नौं द्वारों से समेटकर अन्तरी सतगुरु के चरणों तक पहुँच गये। वहाँ शब्द से मिल गये और धीरे-धीरे ऊपर को चढ़ते गये। यहाँ तक कि 'सेत सुन्न' अर्थात् पारब्रह्म में पहुँचकर चुनरी सफ़ेद हो गई। जब चुनरी सफ़ेद हो गई तो मालिक से मिलने के योग्य हो गई। हुजूर ने फ़रमाया कि सन्तों को हुक्म नहीं कि ज़बरदस्ती रूहों को यहाँ से सतलोक में ले जायें, क्योंकि काल ने सत्पुरुष से कई युगों की भक्ति करने के बाद तीन वर प्राप्त किये हुए हैं। पहला यह कि किसी को अपने पहले जन्म की ख़बर न हो, यदि पहले जन्म की ख़बर हो कि कौन-कौन से बुरे कर्म की क्या-क्या सजा अब इस जन्म में भुगत रहे हैं तो कोई भी पाप न करे। सब लोग ईश्वर से जा मिलें। दूसरे यह है कि सन्त करामात न दिखायें, वरना सन्तों के लिये क्या कठिन था कि किसी जगह मुर्दे को ज़िन्दा किया, दूसरी जगह अंधे को सुजाखा कर दिया। इस प्रकार हजारों-लाखों आदमी उनके पीछे लग जाते हैं। तीसरे यह है कि जहाँ भी में किसी रूह को रखूँ वहाँ ही वह ख़ुश रहे अर्थात् एक मोरी का कीड़ा भी मरना नहीं चाहता, अपने हाल में ख़ुश है।

फिर फ़रमाया कि जिसके हृदय में सन्तों ने नाम का बीज बोया, वह अवश्य एक-न-एक दिन सतलोक पहुँचेगा। किसी की ताक़त नहीं कि उसको रोक सके। हाँ, जल्दी या देर से पहुँचना उसके शौक़ व मेहनत पर निर्भर है, क्योंकि सन्त किसी को जबरदस्ती खींचकर नहीं ले जाते, जब तक उसकी अपनी इच्छा वहाँ जाने की न हो। सत्संग का क्या मतलब है ? यही कि जीवों में वहाँ जाने का शौक़ पैदा हो और इस संसार से वैराग्य पैदा हो।

18 जून को हुजूर महाराज हिसाब इत्यादि को देखने में तल्लीन रहे। इसके बाद डाक सुनी, शाम को सत्संग हुआ। साधु दरबारी दास ने भाई गुरदास जी की वारां में से शब्द सुनाये 'जे गुरु सांग वरतदा सिक्ख सिदक न हारे। ''। हुजूर ने फ़रमाया कि परीक्षा के वक्त कोई विरला ही पास होता है, जैसे कि स्वयं भाई गुरदास जी बिलकुल पूरे न उत्तर सके, जब गुरु हरगोबिन्द साहिब ने उनको घोड़े ख़रीदने के लिये काबुल भेजा। उन दिनों नोट नहीं होते थे, मोहरें और रुपये खच्चरों पर लाद कर ले गये। काबुल में ख़ेमे लगा दिये और जब घोड़ों वाले पठानों से सौदा करके ख़ेमे में से रुपये निकालने गये तो क्या देखते हैं कि रुपयों की बजाय ईंटें और रोड़े भरे हैं। डरे कि पठान लोग मार डालेंगे। इसलिये ख़ेमे के दूसरी तरफ़ से भाग कर काशी (बनारस) पहुँच गये। हुजूर ने फ़रमाया कि यदि वह भरोसे वाले होते तो उन्हीं ईंटों और रोड़ों को रुपये की तरह गिन कर पठानों को दे देते।

इसी प्रकार वेद व्यास जी के सेवक जैमिनी जी, जो 'पूर्व-मीमांसा दर्शन' के लेखक हुए हैं, उन्होंने व्यास जी से अपनी किताब की तारीफ़ की। व्यास जी ने कहा कि अच्छी है, परन्तु अमल करना किठन है। जैमिनी जी ने उत्तर दिया कि कोई मुश्किल नहीं। तब व्यास जी ने फ़रमाया कि परीक्षा लेकर देख लेंगे। इस प्रकार एक रात जवान औरत बन कर जैमिनी जी की कुटिया के पास रोने-पीटने लगे। ऋषि जैमिनी जी से कहा कि मैं रास्ता भूल गई हूँ, मुझे रात अपनी कुटिया में रहने दो। उसने उत्तर दिया कि मैं रास्ता भूल गई हूँ, मुझे रात अपनी कुटिया में रहने दो। उसने उत्तर दिया कि मैं तो औरतों की शक्ल तक नहीं देखता। तुम यहाँ नहीं ठहर सकती। औरत ने जवाब दिया कि यदि मुझे जंगली जानवर रात को खा गये तो पाप तुम्हारे सिर पर आयेगा। इस पर ऋषि ने कहा कि अच्छा, तुम इस कमरे में चली जाओ और अन्दर से कुंडी लगा लो। यदि मैं भी आऊँ तो भी न खोलना। रात को ऋषि जी की आँखों के आगे उसी औरत की शक्ल आने

20 जून 1943

शर्मिन्दा हुआ। गुरु ने कहा कि किताब लिखनी और बात है, उस पर अमल करना और बात है।

इस व्याख्यान के बाद हुजूरी वाणी में से 'सतगुरु का नाम पुकारो। सतगुरु को हियरे धारो॥" का शब्द पढ़ा गया। हुजूर ने ख़ुद खोलकर समझाया। सतगुरु का नाम पुकारो से मतलब है, जो नाम सतगुरु ने बताये हैं, उनका सिमरन करो। सतगुरु जो वर्णात्मक नाम सिमरन करने के लिये सेवक को बताते हैं, वे निजी नाम हैं अर्थात् सतलोक तक जितनी मंजिलें रास्ते में आती हैं, उनके धनियों के निजी नाम हैं। जब किसी को उसके अपने नाम से आवाज दी जाती है तो वह आकर्षित होता है। वैसे ही जब निजी पाँच नामों का सिमरन किया जाता है तो अन्दर के देशों के मालिक (अधिष्ठाता) आकर्षित होते हैं और धीरे-धीरे सिमरन करनेवाले की आत्मा को अन्दर आकर्षित कर लेते हैं। यह लाभ सिफ़ाती (गुण प्रकट करनेवाले) नामों के जपने में नहीं है। राम, रहीम, गिरधारी, मुरारी इत्यादि सब सिफ़ाती नाम हैं। यदि किसी व्यक्ति को उसके सिफ़ाती नाम से पुकारा जाये तो वह आकर्षित नहीं होता। 'सतगुरु को हियरे धारो' का तात्पर्य है कि सिमरन जब पूर्ण हो जाये तो ध्यान करो। वैसे ही तुलसी साहिब जी ने फ़रमाया है:

छछ्छा छिन छिन सुरित सँवार लार दृग के रही। तन मन दर्पण माँज साज सुरित से गही। लगन लगै लख पार सार तब पाइआ। अरे हाँ रे तुलसी संत चरन की धूर नूर दरसाइआ।

अर्थात् हर समय रूह को आँखों में इकट्ठा करने का यत्न करो। जब टकटकी लग जायेगी, तो असलियत का पता लग जायेगा। फिर ध्यान के विषय में तुलसीदास जी ने रामायण में फ़रमाया है कि 'श्री गुरु पद नख मिन गन जोती। सुमिरत दिव्य दृष्टि हिय होती॥' अर्थात् गुरु के चरणों के नाखून का ध्यान भी जब अन्दर आ जाये तो अन्दर प्रकाश ही प्रकाश हो जाता है। सत्संग के समाप्त होने के बाद जो मिस्तरी, मजदूर इत्यादि डेरे की नालियाँ बना रहे हैं, उन्हें मजदूरी दी गई। सरदार साहिब, सरदार भगत सिंह व वैद्य जी भी आज दोपहर तशरीफ़ लाये थे। रात के दस बजे वापस चले गए।

20 जून इतवार की शाम को हुजूर ने स्वयं सत्संग फ़रमाया और हुजूरी वाणी में से 'तुम साध कहावत कैसे। मैं पूछूँ तुम से ऐसे 'ठ शब्द पढ़ा गया। हुजूर ने फ़रमाया कि साधु को चाहिये कि यदि किसी के यहाँ सत्संग करने जाये तो उससे केवल किराया व रोटी ले। यदि यूँ ही फिरता हुआ जाये तो उसका कोई हक़ नहीं कि सत्संगियों से किराया ले। फिर फ़रमाया कि साधुओं को चाहिये कि छ: घण्टे हर रोज भजन करें। इससे उनका अपना भी बनेगा और जो दूसरों का खाना पड़ता है उस कर्जे का भी भुगतान होता जायेगा। सरदार गुरबचन सिंह साहिब, रिटायर्ड स्टेशन मास्टर ने फ़रमाया कि हुजूर ने बड़ी दया करके सात जन्म का कोढ़ सात रातों में उनको स्वप्न की हालत में भुगतवा दिया।

अध्याय 8 डलहौज़ी के दौरे का हाल हुजूर का डलहौज़ी का सफ़र और वहाँ निवास

21 जून, 1943 सुबह पौने पाँच बजे हुजूर कार में नहर के रास्ते डलहौज़ी रवाना हुए। अज़ीज़ काका रघुवीर सिंह, हुज़ूर महाराज जी का पड़पोता भी मेरे साथ कार में बैठा था। जब जी. टी. रोड़ रईया पर पंहुँचे, जहाँ से कि नहर की पटरी की तरफ़ मुड़ना था, तो सरदार भगत सिंह जालन्धर से कार में आ पहुँचे। कहने लगे कि कल शाम को पेट में दर्द हो गया था, नहीं तो कल ही आ जाता। उन्होंने हुजूर को ख़मीरा गाओज़बान अम्बरी पेश किया कि रोज़ चार माशे ख़ाली पेट खाकर, ऊपर से दूध पी लिया करें। वहाँ से नहर की पटरी पर हो गये। रास्ते में धरदेव, महता, घुमान, वण्डाला की संगतों को दर्शन देते हुए सात बजे गुरदासपुर के सामने पटरी पर पहुँच गये। हुजूर ने कह रखा था कि गुरदासपुर की संगत को दर्शन देंगे। इसलिये पटरी से बाँये हाथ को चल पड़े। मौसम अच्छा था। उजाला हो गया था। रास्ते में सड़क पर वृक्ष थे और उनमें आमों के वृक्ष भी थे, जिनमें ख़ूब हरे-हरे आम लदे हुए थे। मालूम होता था कि अब के यहाँ आम की फ़सल अच्छी है। गुरदासपुर बड़ा हरा-भरा व ठण्डा शहर है। हमें लाला ईशरदास, एडवोकेट की कोठी पर जाना था। विचार था कि वहाँ संगत जमा होगी। मैं गुरदासपुर दस माह रहा हूँ। कई बार एडवोकेट साहिब की कोठी देखी होगी, परन्तु रास्ता भूल गया। अन्त में पूछते-पूछते वहाँ पहुँच गये। वहाँ तो सन्नाटा छाया हुआ था। दरवाजा खटखटाया तो बीबी जी ने कहा कि वकील साहिब के बड़े भाई का देहान्त हो गया। वह तो अमृतसर गये हैं और हुज़ुर के आने का यहाँ किसी को पता नहीं। इसलिये वहाँ से पठानकोट को रवाना हो गए और चक्की की चौकी पर पूरे पौने आठ बजे पहुँच गये। अभी

सर्विस के जाने में डेढ़ घण्टा बाक़ी था। शंकर सिंह के साथ जवाली, जिला काँगड़ा से बहुत-से मर्द व बीबियाँ दर्शनों को आये हुए थे। सड़क वही थी। इसलिये हुजूर को क़रीब के मैदान में कुर्सी पर बैठा कर सारी संगत आस-पास बैठ गई। मैं और ड्राइवर दामोदर पीछे कार के पहरे पर रहे। मैं तो पास की दुकान पर कुछ खाने चला गया। हुजूर पौने नौ बजे उठकर कार के क़रीब आ गये। अन्त में सवा नौ बजे फाटक खुला, मगर सिवाय हमारी कार के न कोई लारी, न कोई दूसरी कार डलहौजी की तरफ़ जा रही थी। हुज़ूर ने फ़रमाया कि आज सवा लाख ही जायेंगे। रास्ते में दुनेरे से जरा इधर बरख़ुर्दार का जी मितलाने लगा। कार खड़ी की गई। फिर आगे चले। मैं भी ऊँघता था और काका तो कभी सोता था कभी जागता। अन्त में दुनेरे पहुँचे। लैमनेड पिया। यहाँ गर्म-गर्म जलेबियाँ और बेसन सबने पसन्द किया। यहाँ शहरों के मुक़ाबले घी की मिठाई अच्छी मिलती है, क्योंकि विलायती घी का इस्तेमाल नहीं करते। वहाँ से साढ़े दस बजे चल पड़े। रास्ते में मैं व हुजूर, बरख़ुर्दार का ध्यान चील के वृक्षों, पहाड़ियों के घरों, उनकी छोटी-छोटी गाय-बकरियों की ओर दिलाते गये, जिससे कि उसका जी न मितलाये। अन्त में वह सो गया। न उसने पहाड़ों के नज़ारों की परवाह की, न पहाड़ियों के घरों की। बनीखेत के पास सर्दी सुहावनी महसूस हुई। डाकख़ाने पर बहुत-सी संगत जमा थी। एल्समेयर में ख़ूब ख़ामोशी और ठण्डक थी। यह मौसम हमें, जोिक नीचे की गर्मी से आये हुए थे, बड़ा अच्छा लगा। कोठी की ख़ामोशी दिल को खींचने वाली थी। अभी तक डलहौज़ी में गहमागहमी नहीं हुई। सब सड़कों पर ख़ामोशी है। दोपहर को लू नहीं, केवल शाम को नवम्बर जैसी सर्दी होती है।

शाम को कर्नल मार्टन भी पधारे। वह बनारस से पन्द्रह दिन की छुट्टी पर ग्रेंडव्यू होटल में ठहरे हुए हैं। उन्होंने अर्ज की कि काम की अधिकता की वजह से और काम नया होने की वजह से इनको मन के एकाग्र करने में मुश्किल होती है। हुजूर ने फ़रमाया कि जब मन ख़ाली हो, सिमरन किया करो और यह जो मुश्किल है उस वक़्त तक मुश्किल है जब तक तुम ज़रा अन्दर जाकर सतगुरु के स्वरूप का दर्शन नहीं करते, क्योंकि उस समय तक तुम्हें अकेले सफ़र करना पड़ता है। उसके बाद सफ़र आसान हो जायेगा और अन्तर में रस आयेगा,

22 जून 1943

क्योंकि वह दुनिया यद्यपि मायामय है फिर भी इस दुनिया से हजारों गुना ज्यादा सुन्दर है। यहाँ यह हाल है कि यदि यहाँ से कलकत्ता जाना हो तो शरीर को उठाकर रेल या हवाई जहाज़ में ले जाना पड़ता है। वहाँ सूक्ष्म मण्डल में केवल ख़याल की धार से एक जगह से दूसरी जगह पहुँच जाते हैं। वहाँ की रचना में इस तरह जल्दी-जल्दी तबदीली अर्थात् परिवर्तन नहीं है और मरते समय यहाँ का कोई मसाला साथ नहीं जाता। केवल भजन-सिमरन ही साथ जाता है।

कर्नल साहिब ने बताया कि जो फ़ौजी जापान की क़ैद में हैं, उनसे पत्र-व्यवहार करने में बड़ी मुश्किल होती है और ब्रिटिश सरकार उसका बदला नहीं ले सकती, क्योंकि ब्रिटिश सरकार के पास जापानी क़ैदी बहुत ही कम हैं और जापानी सिपाही के पास अपना सामान इतना भारी नहीं होता। वह हमारे सिपाहियों की अपेक्षा जल्दी-जल्दी चल फिर सकता है और खाने में चावलों के एक पैकेट पर सात दिन निकाल लेता है। यदि हिन्दुस्तान में मोटर कार और रेलगाड़ियाँ बनाने के कारख़ाने पहले से बने होते तो अंग्रेजों को लड़ाई में बड़ी सहायता मिलती। सत्संग की किताब, 'द पाथ ऑफ़ द मास्टर्स', जोकि फ्राँस की लड़ाई से पहले छपवाई गई थी, अभी तक उसकी बहुत-सी कापियाँ फ्राँस में हैं। मैंने विनती की कि लड़ाई में किताबें बरबाद हो गई होंगी। हुज़ूर ने फ़रमाया शायद लड़ाई के बाद मिल जायें।

हुजूर डलहौजी की कोठी की ख़ामोशी और मौसम के सुहावनेपन से बहुत ख़ुश हैं और फ़रमाया कि यहाँ शब्द ज़ोरों पर है। यहाँ दो-चार दिन तक सत्संग बिलकुल नहीं करेंगे, आराम करेंगे। इसके बाद भी सप्ताह में दो बार संत्सग किया करेंगे।

22 जून की सुबह हुजूर चम्बे की सड़क पर थोड़ी दूर सैर करने गये। फिर वापस आकर कोठी के बरामदे में अख़बार पढ़ते रहे। मैंने सन्देह प्रकट किया कि मिस्टर चर्चिल का जनरल वेवल को भारत का वायसराय नियुक्त करना, यह ज़ाहिर करता है कि यदि अंग्रेज इस लड़ाई में जीत गये तो काँग्रेस और उसके साथ ही हिन्दुओं का मिलयामेट कर देंगे। हुजूर ने फ़रमाया यह मुमिकन नहीं। 11 बजे कर्नल मार्टन साहिब पधारे। उससे पहले हुजूर सिन्धियों को नामदान देते रहे।

कर्नल साहिब ने बताया कि उनका ख़ानदानी घर पश्चिमी आयरलैण्ड में था, जो उनके ख़ानदान ने प्रसिद्ध प्रिन्स रंजी के पास बेच दिया था। अब लड़ाई के बाद पेंशन लेकर उत्तरी आयरलैण्ड में आबाद होंगे। उनकी बीबी विलायत में हैं और 'नाम' लेना चाहती है। एक लड़का इटली में क़ैद है। दूसरा फ़ौज में लेफ्टीनैण्ट है। कुछ जख़्म बर्मा और अराकान में आये थे, जिसकी वजह से वह छुट्टी लेकर बम्बई के सूबे में पहाड़ पर है। कर्नल साहिब ने बताया कि इंग्लैण्ड में आजकल एक आदमी के लिये एक मुर्गी का अण्डा और एक बालिश्त से कम भेड़ का मांस तथा थोड़ा-सा और मांस मिलता है। यदि चार-पाँच लोग इकट्ठे होकर रहें तो गुजारा कर लेते हैं, वरना अकेले आदमी को पेट-भर खाना नहीं मिल सकता। विलायत में जिस व्यक्ति की आय 45 हज़ार पौण्ड वार्षिक है, उसको 40 हज़ार पौण्ड वार्षिक इनकम टैक्स में देने पड़ते हैं, जो आय का 90 प्रतिशत है। भारत में आय का 93 प्रतिशत टैक्स देना पड़ता है। यदि लड़ाई तीन साल तक चलती रही तो लोगों का क्या हाल होगा ? कुछ भूख से मर जायेंगे और कुछ लड़ाई से।

दोपहर को लाला रला राम जैनी, रिटायर्ड सीनियर सब-जज तशरीफ़ लाये। उनके जाने के बाद दो साधु आ गये, जोिक अच्छे-ज्ञानी मालूम होते थे। एक माई ने अर्ज की कि मेरा जवान लड़का (जो उपस्थित था) एक साल से बीमार है, कोई दवा असर नहीं करती। हुज़ूर ने कहा, मालिक की मौज पर रहो और मालिक के चरणों का ध्यान करो और फिर हुजूरी बाणी में से 'गुरू की मौज रहो तुम धार" का शब्द पढ़कर सुनाया कि हर हालत में मालिक का धन्यवाद करना चाहिये। कुछ लोग मुसीबत में ख़ुदा को गालियाँ देने लग जाते हैं। क्या उससे मुसीबत टल जाती है ? उल्टे बुरे बनते हैं। हुजूर ने फ़रमाया कि मन बड़ा दुश्मन है और यह शब्द सुनाया :

जब धार त्रिदंड फिरे नगना मुख ऊपर सीस जटान धरे। अथवा गिरि कन्दर बीच सिल पै थित होइ थित विरछ तले। तत वेद पुराण सिद्धान्त पठे उपवास धरे तीथौँ बिचरे। मन में जब भोगन की रित है तब ए सभ किंचित नाहि करे।

मुल्तान के एडवोकेट मलिक राधा किशन ने अपने पत्र में विरह के शब्द

23 जून 1943

लिखकर भेजे। हुजूर ने हुक्म दिया कि अपनी तरफ़ से यह शब्द लिखकर भेज दो :

हम तरसत तुम दरस को तुमरो हियो कठोर, शीघ्र कृपा तुम करो मिलि बैठ एक ठौर। दूसरा शब्द जरा कठिन है:

150

आवन कह गये बीजना, आये न बाज आहार, अजाभक्ष भेजो नहीं, द्वादस करें आहार।

यह इसी तरह है जैसे फ़ारसी जानने वाले कहते हैं-'यारे मन दर आबे इज्जत रफ्ता अस्त। मन ग़रीबम दर जमिस्ताने हिसार'।

23 जून को सुबह ग्यारह बजे मैं हुजूर के ड्राईंग रूम में डाक पढ़ रहा था। कर्नल मार्टन साहिब पधारे। उन्होंने कहा कि उनकी दो लेडी रिश्तेदार नाम लेना चाहती हैं, परन्तु विलायत में होने की वजह से नहीं आ सकर्ती।

कर्नल साहिब ने बताया कि इंग्लैण्ड में मई, जून, जुलाई, अगस्त, सितम्बर, अक्तूबर और नवम्बर के महीनों में ऐसा सुहावना मौसम होता है कि सारी दुनिया में नहीं पाया जाता। यहाँ पंजाब में नवम्बर से मार्च तक अच्छा सुहावना मौसम होता है।

शाम के छ: बजे वृन्दावन के सोबती-हरी-जी अपने पाँच-छ: सेवकों के साथ पधारे। उनका जाहिरी-व्यवहार सच्चे साधुओं और महात्माओं जैसा पाया गया। उन्होंने अपनी मान-बढ़ाई की कोई परवाह न की और अपने सेवकों की उपस्थित में हुजूर को नम्रतापूर्वक प्रणाम किया और बड़ा प्रेम-भाव प्रकट किया। साथ कुछ फल-फूल लाये थे। हुजूर ने यह कहकर मना किया कि मैं गृहस्थ हूँ, आप त्यागी हैं। गृहस्थ का धर्म हैं कि साधुओं की सेवा करे, न कि उल्टा साधुओं से ले। ख़ैर हुजूर ने भी उनको आम इत्यादि पेश किये, जोकि वे प्रसाद के रूप में अपने साथ ले गये। उनकी इच्छानुसार हुजूर ने कबीर साहिब का शब्द 'कर नैनों दीदार महल में प्यारा है' पढ़ाया और ख़ूब व्याख्यान किया। फ़रमाया कि संस्कृत को देववाणी इसलिये कहते हैं कि संस्कृत वर्णमाला के बावन अक्षर पिण्ड के निचले छ: चक्रों में मिलते हैं। गुदा चक्र में चार, स्वाद चक्र में छ:, नाभी चक्र में आठ, हृदय चक्र में बारह और कण्ठ चक्र में सोलह, दो छटे चक्र में, बाक़ी चार अन्त:करण के

चार दल कमल में। मगर, क्योंकि पिण्ड स्वयं नाशवान है, प्रलय में नष्ट हो जायेगा, इसलिये यह बावन अक्षर भी नाशवान हैं। इसलिये क़बीर साहिब ने फ़रमाया है, 'बावन अच्छर लोक त्रै सभ कछु इन ही माहें। ए अक्खर खिर जाहेंगे ओय अक्खर इन मह नाहें 'वे दो अक्षर पारब्रह्म में हैं, जिनमें से एक तो निचली सृष्टि का इन्तिजाम करता है, दूसरा ऊपर के देशों को ले जाता है। सब सन्तों ने अपने-अपने कलाम में इन दो अक्षरों का वर्णन किया है।

हुंजूर ने बताया कि जब वे गलीयूं में नौकरी करते थे, तो एक बार उनको बहुत अच्छी सुगन्ध आने लगी, जिससे उनका मन मोहित हुआ जाता था। आगे चल कर देखा कि एक कश्मीरी महात्मा रास्ते पर बैठे थे। हुजूर, अदब से, घोड़े से उतर कर उनके पास गये। वह महात्मा खिलखिला कर हँस पड़ा और बोला कि ख़ुशबू लेनेवाली नाक भी कोई-कोई होती है। फिर फ़रमाया कि काल और माया ने यह धोखा किया है कि ब्रह्माण्ड के छ: चक्रों का अक्स अण्ड में और अण्ड के छ: चक्रों का अक्स पिण्ड में बना कर, लोगों को उनमें भटका दिया। आँखों से ऊपर नहीं जाने दिया। हुजूर ने स्पष्ट करके बताया मगर यहाँ उसको लिखने की ज़रूरत नहीं कि कौन-कौन से चक्र का अक्स, कहाँ-कहाँ है।

सत्संग के बाद लाला अर्जनदास, एक्ज़ीक्यूटिव इंजीनियर, अमृतसर निवासी भी तशरीफ़ लाये और हुजूर के साथ सैर को गए। रास्ते में हुजूर ने फ़रमाया कि इस दुनिया के जाल से निकलना बड़ा मुश्किल है। पहले तो लोगों को दुनियावी धन्थों से ही फ़ुर्सत नहीं कि विचार करें कि कहाँ से आये हैं और कहाँ जायेंगे। यदि किसी ने विचार किया भी हो तो फिर मजहब की जंजीरें तैयार हैं। जिस धर्म में कोई पैदा हुआ, उसी को सच्चा समझकर मरने के बाद मुक्ति का विश्वास करके बैठ गया। आगे रूहानी तलाश की जरूरत नहीं समझी। जो बिरले भाग्यशाली कामिल फ़क़ीरों की संगत में आये, उनको असली भेद का पता लगा। वे चौरासी से छूटकर अनन्त ख़ुशी में जा समाये।

24 जून को ग्यारह बजे रियासत चम्बा की कौंसिल के मेम्बर साधु राम साहिब व कर्नल मार्टन तशरीफ़ लाये। दीवान साहिब ने बताया कि उनका नया जन्म हुआ, क्योंकि उनको मैनिनजाईटिस हो गया था। उसके बाद सात बजे हुज़्र बीबी कमल, जोकि डेरा इस्माइल खाँ की रहनेवाली हैं, की कोठी पर तशरीफ़ 152

ले गये। वहाँ एक बीबी ने ग्रामोफ़ोन के रिकार्ड लगाये। पहला कबीर साहिब का था 'आज प्रीतम मेरे घर आये, कहत कबीर धन भाग हमारे।'' दूसरा शब्द 'पिया मिलन को जाना, पी की नगरिया, कठिन डगरिया, पल-पल पग फिसलाना। पिया मिलन को जाना है। तीसरा शब्द 'घूँघट के पट खोल री हैं चौथा शब्द 'जादू' है।

इसके बाद हुज़ूर ने बीबी के पित से, जोकि अभी तक सत्संगी नहीं हैं, मगर बड़े शरीफ़ व मिलनसार व्यक्ति हैं, फ़रमाया कि कोई वस्तु हमारे साथ नहीं जाती, अन्त समय केवल तमाशा ही पल्ले रह जाता है। इसका मतलब यह नहीं कि इनसान को यदि परमात्मा ने धन-दौलत व पदवी दी है, तो उनको छोड़ दे, बल्कि उनसे फ़ायदा उठाये। आराम करे, मगर दिल में यह ज़रूर याद रखे कि चार दिन का खेल है, यहीं छूट जाना है। अपना परलोक भी सुधारे, वरना अन्त समय यमदूत आकर जान निकालेंगे और धर्मराज के दरबार में पकड़ा जायेगा। वहाँ कौड़ी-कौड़ी का हिसाब लिया जायेगा- जैसे हज़रत ईसा ने ईंजील में कहा है कि हिसाब पाई-पाई का होगा। यदि नाम व सतगुरु की शरण इस जिन्दगी में ली होगी तो धर्मराज के पास नहीं जाना पड़ेगा। उसके कर्मों का लेखा धर्मराज की कचहरी से सतगुरु के हाथों में चला जाता है। हुज़ूर ने बताया कि उनका अपना नज़दीकी रिश्तेदार, जिसकी धर्मपत्नी सत्संगिन थी, बिना नाम के गुज़र गया। बेचारा पुलिस में अफ़सर था। कई बार उसकी पत्नी ने उसको सत्संग में ले जाने की कोशिश की, मगर मन्द भाग्य से यही कहता, "अभी धोबी ने कपड़े धोकर नहीं दिये, अभी कोट सिल कर नहीं आया''। अन्त समय यमदूतों ने आ घेरा। लगा चीखने, 'काके की माँ यह देख, मेरे हाथ जला दिये। ओह! मुझे न मारो, मैं कमज़ोर हूँ, मर जाऊँगा।' मगर अब क्या होना था, जब चिड़ियाँ चुग गईं खेत।

यह दुनिया शहद की कटोरी के समान है। जो मक्खी शहद के बीच में लालच करके आन उतरी, उसके पंख चिपक गये, शहद भी न खा सकी और मर भी गई। जो मक्खी शहद के किनारे बैठी, वह शहद भी खा गई और उड़ भी गई। यही हाल सत्संगी का होना चाहिये। दुनिया में ज्यादा आसक्त न हो। वापसी पर रास्ते में पहाड़ी औरतें नये-नये पहाड़ी ढंग के कपड़े पहने,

काली जाकेट पहने, चाँदी के जेवर से लदी हुई मिलीं। मालूम हुआ कि आज

बनीखेत में मेला हो रहा है। ये लोग वहाँ से वापस आ रहे हैं। भाई शादी जो औरतों से शुरू से ही नफ़रत करता है, मज़ाक़ के अन्दाज़ में फ़रमाने लगे, पुरुषों ने स्त्रियों को क़ाबू करने के लिये उनकी नाक में नथ और कान में मुर्कियाँ डाल दी हैं, तािक अगर जरा अकड़ें तो फ़ौरन नाक या कान दु:खा दिया। बागड़ में पाँव में भारी-भारी कड़े डालते हैं, जिससे कि औरत कहीं भाग न जाये और अंग्रेज़ लोग 3 इंच ऊँची एड़ी की जूती पहनाते हैं, जिससे कि आज़ादी से चल फिर भी न सके। एक गाँव का रहनेवाला, अपनी नौजवान बीबी के साथ, लाहौर शहर की सैर के लिये आया। उसने देखा कि जवान-जवान लड़िकयों के पाँव में ऊँची-ऊँची एड़ी के सैंडल हैं। चुनांचे अपनी बीबी को भी इसी तरह की पोशाक़ पहनाई। अनारकली में बीबी लड़खड़ाती चली जा रही है। रास्ते में केले का एक छिलका किसी दुष्ट ने जमीन पर फैंक दिया था। उस पर बीबी का पाँव पड़ा और कमर के बल गिरी। एक भला-मानस सिक्ख पास से गुज़रा और बोला-बीबी मालूम होता है कि तुम तो शहर की रहनेवाली नहीं, पहले ऊँची एड़ी की जूती से चलना सीखो। बीबी ने जवाब दिया कि यह तो इन्होंने (पित) जबरदस्ती पहना दी। यह सब क़सूर इनका है।

25 जून को ग्यारह बजे कर्नल साहिब विदा लेने आये। हुजूर से समय लेकर अभ्यास की बातें पूछते रहे। तुलसी साहिब ने कहा है कि 'गगन द्वार दीसे इक तारा, अनहद नाद सुने झंकारा'। उस तारे में ध्यान जमाना है। जब वह तारा फटता है तो आत्मा अन्दर तारा-मण्डल में प्रवेश करती है।

हुजूर ने शाम को फ़ारसी के चुने हुए पदों में से कुछ पद स्वयं अपने मुखारिबन्द से पढ़कर लोगों को सुनाये जोिक मौलाना रूम की मसनवी में से थे, जिनका मतलब यह था कि दुनिया एक कुआँ है और शब्द उस कुएँ में रस्सी है। आत्मा को चाहिये कि रस्सी को पकड़कर कुएँ से बाहर आ जाये और काम-क्रोध से बचे।

हुजूर ने फ़रमाया कि डोंगा गली में बारक मास्टरी का एक चौकीदार था। उसने बताया कि एक मशहूर संन्यासी (जड़ी-बूटियों का जानकार) आया, उसने कहा कि मेरी मदद करो। चौकीदार मान गया तो संन्यासी ने पचास गज लम्बी रस्सी और एक कुतिया मँगवाई और उसका एक सिरा एक पौधे के तने से बाँध

दिया और पास कुतिया बाँध दी। दूसरे सिरे को तान कर ज़ोर से झटका दिया तो बेल उखड़ गई। उसकी जड़ में से फन वाला साँप अचानक फन ताने हुए निकला, फिर नीचे बैठ गया। संन्यासी का मतलब था कि साँप काटे तो कुतिया को काटे न कि संन्यासी को। संन्यासी बूटी लेकर कहने लगा कि एक हज़ार रुपये का काम कर चला हूँ। वैसे भी गिलयों में चिरायता, इसबगोल, रत्नज्योत और कठ आम होते हैं। मच्छरों को मारने का पाउडर, जो शरीर पर छिड़कते हैं, तम्बाकू व कठ को महीन पीस कर बनाते हैं।

26 जून शाम को सर गुज्जरमल, अमृतसर वाले, तशरीफ़ लाये और कुछ साधु-महात्मा भी आये। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'पाठ पढ़यो अर बेद बीचारयो''' और मारू राग में से भी एक शब्द 'गुरु गोपाल गुरु गोविंदा'' पढ़ा गया। हुजूर ने फ़रमाया जो महात्मा अन्दर खण्डों-ब्रह्माण्डों पर जाता हो, वही दूसरे को ले जा सकता है। उसी को ही गुरु कहते हैं। लेकिन ऐसे महात्मा बहुत कम मिलते हैं और हमें उनकी पहचान भी नहीं है।

हुजूर ने फ़रमाया कि देवी व देवताओं को पूजना ऐसा ही है, जैसा कि कोई आदमी अपने नौकर की सेवा में लग जाये। यह सब देवी-देवता आत्मा की सेवा के लिये नियुक्त किये गए हैं, न कि आत्मा के पूजने के लिये। आत्मा के पूजने के लिए केवल परमात्मा है, पूर्ण गुरु के बिना परमात्मा का मिलना असम्भव है।

शाम को हुजूर सर गुज्जरमल के साथ सैर को गये। सर गुज्जरमल ने पृछा कि ज्योतिष-शास्त्र कहाँ तक ठीक है ? हुजूर ने जवाब दिया कि यह भी एक साईंस है। इसमें तीन तरह से ग़लती होने की सँभावना है। एक तो जन्म का समय अधिकतर ठीक मालूम नहीं होता, कुण्डली ही ग़लत बनती है। दूसरे, इस ज्ञान के माहिर, जो लालच न करें, कम मिलते हैं। तीसरे, पण्डित लोग पैसे के लालच से लोगों की तसल्ली के लिये, कुण्डली को ठीक नहीं पढ़ते और कह देते हैं कि फ़लां ग्रह का फ़लां उपाय करो। अमुक जाप कराओ या अमुक दान-पुण्य करो। यह केवल तसल्ली है। ग्रह का प्रभाव नहीं हट सकता। ग्रह तो वृक्ष, घास-फूस, फल, पौधे, जानवर इत्यादि सब पर असर करते हैं। उनका असर भजन-सिमरन से ही कुछ कम होता है। वरना सबको कर्मों का नतीजा, जिसके ग्रह केवल इशारा या जाहिर करने वाले हैं, भोगना पड़ेगा। ग्रह-चाल सही है।

27 जून सुबह हुजूर लाला अर्जुन दास, इंजीनियर की कोठी पर गये। वहाँ शेख़ फ़जलुद्दीन भी आ गये। इधर-उधर की बातें होने लगी। वहाँ एक घण्टे तक रहे। लाला अर्जुन दास को उनकी कोठी की मरम्मत के विषय में और नई कोठी की नींव के विषय में सलाह देते रहे कि लकड़ी के तख़्वे- जो कमरों के फ़र्श में लगते हैं- के जो जोड़ होते हैं, उनके नीचे पत्थर के रोड़े ज़रूर होने चाहियें तािक जोड़ गलें नहीं। वरना फ़र्श की नमी से यह जोड़, विशेषकर पहाड़ों में, गल जाते हैं। लकड़ी के तख़ों के पास हवा आने-जाने का इन्तिजाम ज़रूर करना चाहिये तािक दुर्गन्थ न फैले। फिर फ़क़ीरों का ज़िक्र चल पड़ा। हुजूर ने फ़रमाया कि जिन्दा हकीम, जिन्दा हािकम और जिन्दा फ़क़ीर फ़ायदा देता है। लोग मरे हुए फ़कीरों की क्रबों पर सिर-माथा रगड़ते हैं और आशीर्वाद लेने जाते हैं। यह सब भूल है, 'जिये पित्र न पूजई मोये श्राद्ध कराई'।

भाई शादी ने फ़रमाया कि हुजूर जब सक्खर व सिरसा इत्यादि को जाते थे, तो वहाँ के मस्त फ़क़ीर बड़े ख़ुश होकर हुजूर को सलाम करने आते। रास्ते में मिलते तो कहते कि रब्ब की मोटर कार आ रही है। ख़ुशी में नाचते। गोया फ़क़ीर सब एक हैं। उनमें दुनियादारों की तरह मज़हबों के पक्षपात का भेदभाव नहीं होता। हुजूर ने फ़रमाया कि रीति-रिवाज (कर्मकाण्ड) हरएक मज़हब के भिन्न-भिन्न हैं, परन्तु रूहानियत सबकी एक हैं, फ़क़ीर शरीयत (कर्मकाण्ड) को नहीं तोड़ते।

शाम को सत्संग हुआ। 'जग में घोर अंधेरा भारी ¹⁴ शब्द हुजूरी वाणी में से लिया गया। जगत में अँधेरा इसलिये है कि जल और थल दोनों में जीवों का भोजन जीव है। 'जेते दाणे अन्न के जीआं बाझ न कोय' जीवों को मारने का पाप उनके तत्त्वों के कम व अधिक होने के अनुसार होता है। आदमी में पाँच तत्त्व हैं। उसको मारना सबसे बड़ा पाप है। उससे नीचे जानवर चार तत्त्व वाले, फिर पक्षी तीन तत्त्व वाले, फिर कीड़े-मकौड़े दो तत्त्व वाले, फिर सब्जियाँ एक तत्त्व वाली। सब्जियों का खाना पाप तो है, परन्तु सब से कम और उनके बिना गुजारा नहीं हो सकता।

28 जून की सुबह को हुजूर सैर करने नहीं गये। फ़रमाया कि हाजमा ख़राब हो रहा है। एक बार फ़रमाया कि ज्योतिषी लोगों का कहना है कि मेरा हाजमा सदा अमर जीवन पाते हैं।
इन्हीं दिनों में दो पत्र हुजूर को आये हैं, एक वजीराबाद से दूसरा फ़िरोजपुर
से, जिनमें दो बीबियों के अन्त समय का हाल लिखा है कि किस तरह हुजूर ने
दया से उनकी अन्त समय सहायता की। हालाँकि उन्होंने कुछ भजन-सिमरन
नहीं किया था, क्योंकि छोटी उम्र थी। एक बीबी ने कहा कि सतगुरु आ गये हैं।
जब उसके रिश्तेदारों ने कहा कि हमको दिखाई नहीं देते तो बहुत हँसी। लोग
बड़े हैरान हुए। यह कैसी रूह है कि मौत आ गई और हँसती है।

आजकल हुजूर सार बचन वार्तिक को पढ़ रहे हैं और बड़े ध्यान से उसको पढ़ते हैं। जल्दी-जल्दी पृष्ठ नहीं उलटाते। फ़रमाया कि बहुत वर्षों के बाद यह पुस्तक पढ़ने का अवसर मिला है। डेरे में तो अवसर नहीं मिलता।

30 जून की शाम को हुजूर कुछ भेखी साधुओं के साथ सतधारा की ओर सैर को तशरीफ़ ले गए। सतधारा पर जाकर एक पत्थर पर बैठ गये और कहने लगे कि आप लोग साधु हैं और वाणी में आया है 'साधु चरण अठ-सठ से उत्तम। भूमि पवित्र जहाँ पग धरते'। एक साधु ने कहा कि भिक्त के बिना ज्ञान ऐसा ही है जैसा कि एक सुन्दर औरत, बिना वस्त्र-ज़ेवर के। हुजूर ने उत्तर दिया कि यह ठीक है। परन्तु भिक्त गुरु से मिलती है। पहले गुरु-भिक्त, फिर नाम-भिक्त और नाम-भिक्त का फल ज्ञान है। तुलसी साहिब ने कहा:

राम कृष्ण से को बड़ो, तिन्हीं भी गुरु कीन। तीन लोक के नायका, गुरु आगे आधीन॥⁹ साधु ने कहा कि गृहस्थ मार्ग भी उत्तम हैं, जैसा कि गुरु नानक देव जी ने कहा है :

रूहानी डायरी भाग 1

गृहस्थ में जो रहे उदास, कह नानक हम ताके दास।²⁰

हुजूर ने जवाब दिया कि यह तो ठीक है, परन्तु यह बड़ा कठिन है, सतगुरु की बिख़्शिश के बिना नहीं हो सकता। गृहस्थ काजल की कोठरी है। किसी बुद्धिमान ने कहा है, ''काजल की कोठरी में कैसो ही सयानो बड़ो। काजल की एक रेख लागत पर लागत है''।

फिर हुजूर ने रास्ते में फ़रमाया कि जब सन्त धुर-धाम पहुँच जाते हैं तो जैसे कोई सिपहसालार मुल्क फ़तह करके ख़ुशी का नारा लगाता है, कभी-कभी सन्त भी धुर-धाम पहुँचकर नारा लगाते हैं। जैसे पलटू साहिब ने कहा है:

कोटिन जुग परलय गई हमहीं करनेहार। हमहीं करनेहार हमहिं करता के करता।

और गुरु नानक देव जी ने फ़रमाया :
रूप हमारा अचरज किहए, हम होत अचरज बानी।
किरन हमारी सब घट पसरी, कला सकल घट तानी।²²

फिर हुजूर ने रूस के जार पीटर का उदाहरण दिया कि जब वह इटली में जहाजों का काम सीखने गया तो मज़दूरों का भेष बना लिया और रूस से निकाले हुए रूसी उसकी असलियत को न जानते हुए उसके दोस्त बन गये। जब वह काम सीख कर रूस वापस जाने लगा तो वे मज़दूर कहने लगे कि जाना तो हमें भी था, मगर क्या करें, बादशाह ने हमें देश से निकाला हुआ है। पीटर ने कहा कि तुम मेरे साथ चलो, मेरी बादशाह से जान पहचान है। मैं तुम्हें बचा लूँगा। जब वहाँ गये तो देखा कि पीटर मज़दूर स्वयं बादशाह है। यही हाल सन्तों का है।

1 जुलाई शाम को हुजूर ने कचहरी वाले मैदान में अंग्रेजी काँटे पर वजन किया। हुजूर का वजन 1 मन 23 सेर के लगभग था। हुजूर ने फ़रमाया कि बहुत साल हुए तब वजन लिया था। पाँच सेर वजन कम हो गया है। पिछले साल डलहौजी में बेहद बरसात थी। उस समय हुजूर की सेहत कमज़ोर हो गई थी। सैर के बाद हुजूर अपनी कोठी के मैदान में कुर्सी पर बिराजमान हो जाते हैं और सत्संगी बैंचों पर बैठ जाते हैं। आज हुजूर ने बताया कि विद्यार्थी जीवन में उन्होंने 'मण्डली' नाम की एक हिन्दी पुस्तक पढ़ी थी, जिसमें मौसमों की बाबत भविष्यवाणी करने का ढंग दर्ज था कि फ़लाँ वक्त फ़लाँ दिन ऐसी शक्ल का बादल फ़लाँ दिशा में हो तो उसके बाद फ़लाँ समय ऐसा मौसम होगा। हुजूर ने उस ग्रन्थ में से दो-एक दोहे सुनाये, उनमें से एक यह था:

तित्तर खम्भी बद्दली रंन मलाई खाय। ओह बरसे ओह उधले कदी न ख़ाली जाय। 23

हुजूर ने हुक्म दिया कि उस पुस्तक की तलाश करो और गिरधर कवि की कुण्डिलयाँ भी मँगवाओ। दयालबाग़ के एक सत्संगी ने कहा कि राधास्वामी मत ऐसा-ऐसा है इत्यादि। हुज़ूर ने फ़रमाया कि मैं राधास्वामी मत को मज़हब नहीं बनाना चाहता। यदि मजहब बना दिया जाये तो दूसरे मजहब वाले हिन्दू, मुसलमान, ईसाई, जैनी, यहूदी इत्यादि इससे लाभ नहीं उठा सकेंगे। जैसे वे मजहब हैं वैसे ही यह हो जायेगा। रूहानी मत तो रूहानी फ़िलॉसफ़ी है और क़ुदरती साईंस है, जोकि हरएक मज़हब की जड़ है और हरएक मज़हब इस फ़िलासफ़ी का अपना है। इसलिये सब मज़हब वाले इससे लाभ उठा सकते हैं। इस तरीक़े को अपनाने से किसी का धर्म नहीं बिगड़ता। हिन्दू-हिन्दू रहकर, मुसलमान मुसलमान रहकर, ईसाई ईसाई रहकर सुरत-शब्द का अभ्यास कर सकता है। हरएक मज़हबं के कर्मकाण्ड रीति-रिवाज अलग-अलग हैं और इसीलिये मज़हबों में आपस में शत्रुता है। राधास्वामी मत का कोई कर्मकाण्ड या रीति-रिवाज नहीं है। इसी तरह सिक्ख मत, जैसे कि गुरु साहिबान ने अपने श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में प्रकट किया है, एक रूहानी फ़िलासफ़ी और कुदरती साईंस है। हम लोगों ने उसको मज़हब बना लिया और रूहानी तरक़्की रुक गई। गुरु साहिबान के समय में हिन्दू , मुसलभान उनकी रूहानी शिक्षा से बराबर लाभ उठाते थे। सुरत-शब्द के अभ्यास की तरफ़, जिसकी श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में शिक्षा है, अब हमारा ध्यान कम हो गया है।

4 जुलाई को सुबह 8 बजे हुजूर सैर को तशरीफ़ ले गये। रास्ते में भाई शादी ने कहा कि एक बूढ़े पण्डित का लड़का आर्य-समाजी हो गया। जब वह घर आया तो उसका बूढ़ा बाप ठाकुरों की पूजा कर रहा था। लड़के ने कहा कि पत्थरों को क्यों पूजते हो। ये ठाकुर कैसे हैं कि न इनका सिर न इनका पैर। इस पर बूढ़ा पण्डित बड़ा नाराज हुआ :

पण्डित-मुल्ला-मशालची तीनों बेईमान। लोकां भेजन चानने आप अंधेरे जान वि इसी तरह सुथरे फ़क़ीर ने कहा : माला लक्कड़ ठाकुर पत्थर तीर्थ सभ्भे पानी, नामे बाझों सुथरया चारों वेद कहानी वि

शाम को सवा छ: बजे सत्संग हुआ। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से गुरु अमर दास जी का शब्द पढ़ा गया। इसके बाद हुजूर सैर को तशरीफ़ ले गये और आकर कोठी के सहन में कुर्सी पर बिराजमान हुए। सत्संगी सामने दरी बिछाकर बैठ गये। वहाँ से सवा नौ बजे, रेडियो पर ख़बरें सुनने, अन्दर आ गये। कई सत्संगी नीचे मैदानों से आज यहाँ आये।

एक सत्संगी बहुत सख़्त बीमार है। उसके बचने की आशा नहीं है। किसी ने आज शाम की सैर के समय हुज़ूर से कहा कि वह इस बात का गुस्सा करता है कि उसकी जान हुज़ूर महाराज जी ने क्यों नहीं बचाई। हुज़ूर ने फ़रमाया कि अगर गुस्सा करेगा तो आगे जाकर भी दुःख उठायेगा। "ऐ बुलबुल तू नालां दम दर गुलो फरो बन्द-नाज़ुक मिजाजे शाहां ताबे सुखुन नदारद"। 16 नादान बुलबुल, तू क्यों रोती है ? दम साध ले क्योंकि बादशाहों का मिजाज नाज़ुक होता है और बात बर्दाश्त नहीं कर सकता।

5 जुलाई को सुबह हुजूर रोज की तरह सैर को नहीं गये। फ़रमाया कि सुस्ती-सी मालूम होती है। मैं अकेला सैर करके दस बजे के लगभग लौटा तो हुजूर के पास बरामदे में एक जटाधारी बाबा जी, जो पहले भी आया करते थे तथा कुछ सत्संगी भाई-बहनें भी उपस्थित थे। हुजूर आजकल चरनदास जी का ग्रन्थ भिक्तसागर पढ़ रहे हैं। हुजूर ने फ़रमाया कि चरनदास जी ने योग-मुद्रा, प्राणायाम आदि साधनों का वर्णन किया है, जो बहुत कठिन हैं, क्योंकि योगियों ने आत्मा के साथ मन व प्राणों को भी ऊपर ले जाने की कोशिश की है। हालाँकि प्राण जड़ हैं, उनको ऊपर खींचने की ज़रूरत नहीं थी, परन्तु मन व आत्मा की गाँठ बँधी है, मन व आत्मा को इकट्ठे साथ ले जाना है। हुजूर ने

महात्मा चरनदास जी की वाणी में से चाचरी मुद्रा यानी तीसरी मुद्रा पढ़कर सुनाई, जिसमें लिखा था, अभ्यासी को चाहिये कि नाक के अगले भाग से चार उँगल आगे ध्यान जमाये। धीरे-धीरे उसको तत्त्वों के रंग दिखाई देने लगेंगे। फिर ध्यान का पीछा करता-करता नाक के अगले भाग तक ले आये तो तारा मण्डल, सूर्य, चाँद दिखाई देंगे। इस मुद्रा से सख़्त मेहनत करके योगी सहस्र-दल कमल तक जाता है। हालाँकि हुजूर ने फ़रमाया कि सुरत-शब्द के अभ्यास से सगुण ब्रह्म यानी सहस्र-दल कमल में पहुँचना आसान है। वहाँ एक हजार बत्ती की ज्योति जल रही है। बीच में बड़ी ज्योति है। नीचे अमृत है। बड़ी ज्योति में से गुज़रना पड़ता है। गुरु की सहायता के बिना सहस्र-दल-कमल को पार करना असम्भव है, क्योंकि वहाँ बहुत-सी ऋद्धियाँ-सिद्धियाँ और माया इसको रोकने के लिये तैयार हैं। उसको पार करके बंकनाल में भी माया का सख़्त जाल है। उसके पार ब्रह्म में युगों-युगों से ऋषि-मुनि पड़े हैं। वहाँ सारे संचित व क्रियमान कर्म काटकर आगे जाने का रास्ता मिलता है। पारब्रह्म से बराबर अखण्ड ध्यान लग जाता है और वहाँ से सतलोक दिखाई देता है। ऐसे, जैसे कि एल्समैयर के बरामदे से खड्डों के पार बर्फ़ वाले पहाड़ सफ़ेद-सफ़ेद नज़र आते हैं। जब सन्त अनामी में जा समाते हैं तो फिर ख़ुशी का नारा लगाते हैं। चुनांचे, हुजूर ने घट रामायण में से तुलसी साहिब का शब्द 'अमर बूटी मोरे यार, प्यारे पिया ने दई ¹²⁷ पढ़वा कर सुनवाया। अमर बूटी से तात्पर्य शब्द है। फिर उसके बाद तुलसी साहिब का एक और शब्द चौपाइयों में पढ़वा कर बताया कि सन्तों में कैसी दीनता और विनम्रता होती है। 'तुलसी तुच्छ कुछ नहीं जाने, चरण शरण सतगुरु रते माने '28 इत्यादि। इसके बाद पलटू साहिब का शब्द 'कोटिन जुग परलय गई हमही करनेहार। हमही करनेहार हमिंह करता के करता' 🕫 इसी विषय पर पढ़ा। 'देवतन की नानी' से तात्पर्य है, माया। इसके बाद दादू दयाल का शब्द 'जाने अंतरजामी अचरज अकथ अनामी '30 पढ़ा गया। अन्तर्यामी का अर्थ है, जो अभ्यासी अन्दर जाता है वही जानता है। द्वादस कमल से तात्पर्य सहस्र-दल कमल है, जिसमें दस आवाजें, ज्योति और ब्रह्म हैं। एक सत्संगी ने कहा कि आज तो बहुत-से शब्द पढ़े गए। तो हुजूर ने उत्तर दिया कि भाई, जब कोई सर्राफ़ आता है तब ही जौहरी हीरे-जवाहरात निकाल कर दिखाता है। खद्दर के ग्राहक को मख़मल कौन दिखाता है ? (बाबा जी की तरफ़ इशारा था।)

शाम को श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'बिखै बन फीका त्याग री सखीऐ नाम महारस पीओ '31 पढ़ा गया। शब्द में जो रस है, वह दुनिया के किसी पदार्थ में नहीं। इस बात का सुनना आसान है पर विश्वास आना मुश्किल। जब विश्वास हो गया तो सच्चा परमार्थी बन गया।

इसके बाद सैर में एक सिक्ख सज्जन भी शामिल हो गये। हुजूर रास्ते में फ़रमाने लगे कि अभी तो सिक्ख क़ौम देश के मामलों और पार्टी-बाज़ी में लगी है। जब सत्संग फैलेगा तो उनकी आँखें खुलेंगी और वह देख सकेंगे कि श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की फ़िलासफ़ी कितनी ऊँची है, सैर से आकर फिर नौ बजे तक हुजूर चरनदास जी की पुस्तक का अध्ययन करते रहे।

7 जुलाई को शाम के सात बजे महात्मा चरनदास जी की वाणी में से 'शील का अंग'32 लिया गया। उनके अनुसार शील बाक्री सब सत्गुणों की जननी है। ब्रह्मचर्य के बिना न जप, न तप, न यज्ञ, न दान फल देते हैं। इन्द्रियों का दमन करना भजन-अभ्यास की बाड़ है। जब बाड़ ही न रही तो खेती उजड़ जायेगी। ब्रह्मचर्य हर आयु में लाभदायक है। यदि जवानी में रखा जाये तो अकसीर है, परन्तु बड़ा मुश्किल है। इसके बाद कबीर साहिब की वाणी में से भी 'शील का अंग' लिया गया। जो आठ तरह के काम से मुक्त हो, वह जितेन्द्रिय है। अर्थात् पहले औरत का ध्यान आना, दूसरे औरतों की बातें करना, तीसरे औरतों की बातें सुनना, चौथे एकान्त में बात करना, पाँचवे उससे हँसना, छठे उससे खेलना, सातवें उसको छूना और आठवें उससे भोग करना। मानो, औरत का ध्यान आना भी काम में शामिल है। परन्तु ब्रह्मचर्य की पदवी उसको मिलती है, जिसको मालिक स्वयं दे। हरएक के लिये यह मुमिकन नहीं। 'ई सआदत बज़ोरे बाजू नेस्त। ता न बख़्शद खुदाए बख़्शंदा'। अ यह गुण ख़ुद नहीं आ सकता, जब तक कि दाता दयाल दया न करे। 'साचे साहिबा क्या नाहीं घर तेरै। घर त तेरै सभ किछ है जिस देह सो पावै।'अ

हाफ़िज़ साहिब ने कहा है:

दर कुए नेक नामी मारा गुज़र न दादन्द, गर तूं नमे पसन्दी तग़ीर कुन क़जारा।35

मैंने नेकनामी के कूचे में कदम नहीं रखा, अगर तुझे यह बात पसन्द नहीं तो मेरी मौत को टाल दे।

सत्संग के समाप्त होने पर एक क्लर्क ने, जो ऐबटाबाद से आया था, प्रार्थना की कि हुजूर मुझको बाक़ी क्लर्कों ने दुश्मनी करके लड़ाई में समुद्र पार भिजवाने का हुक्म करवा दिया है और मैं जल्दी ही जज़ीरा साईप्रेस को जाने वाला हूँ। हुजूर ने फ़रमाया कि ज़रूर जाओ। डरो मत। लड़ाई में जाओगे तो शायद तरक़की का मौका मिल जाये और यह कहावत भी है कि 'कुबड़े को लात मारी गुन आ गई'। मौत का वक़्त निश्चित है। उस वक़्त चाहे कहीं भी हो, मौत नहीं टल सकती। महाराजा रणजीत सिंह के समय में एक सिक्ख ने, जो ज़िला हज़ारा में पठानों के साथ लड़ाई करने गया था, ज्योतिषी से पूछा कि मेरी मौत कहाँ आयेगी। ज्योतिषी ने कहा कि समुद्र में। वह हज़ारा में एक नाले के पास जख़्मी हो गया और बचने की आशा न रही। उसने साथियों से पूछा, इस नाले का क्या नाम है ? वह बोले, 'समुद्र' बस मर गया।

सैर में हुजूर ने एक भैंस को देखकर फ़रमाया कि भैंस बहुत जल्दी मनुष्य से प्यार करने लग जाती है। शादी ने कहा कि हुजूर आपका काला घोड़ा, सिरसा में जब आप उस पर से उतरते थे तो आपके पीछे-पीछे जाया करता था। जब आप धीरे-धीरे चलते, वह धीरे-धीरे चलता । हुजूर ने जवाब दिया कि कई बार ऐसा भी हुआ है कि सवार लड़ाई में मारा गया, परन्तु घोड़ा वहीं उसके पास खड़ा रहा।

आगे जाकर एक खेत को देखकर फ़रमाया कि साँगली में ज्वार, चरी हर मौसम में बो देते हैं। एक खेत से ज्वार काट रहे हैं, दूसरे में बो रहे हैं। जब वर्षा हो, ज्वार बो देते हैं। वहाँ की ज्वार लेसदार होती है। इसलिये उसकी रोटी पतली भी पक जाती है। वैसे पहाड़ की मक्की भी लेसदार होती है। इसलिये उसका आटा ठण्डे पानी से गूँध लेते हैं। पहाड़ पर गेहूँ आठ-दस माह में पकता है। सर्दी में बो देते हैं। ऊपर से बर्फ़ पड़ जाती है। जब बर्फ़ पिघल जाती है तो गेहूँ के पौधे जमीन से फूट-फूट कर निकल आते हैं।

9 जुलाई को सुबह धुन्ध ज़्यादा थी। कपड़े भीग रहे थे। इसलिये कोई भी सैर को नहीं जा सका। ग्यारह बजे के क़रीब एक जैनी साधु मुँह पर पट्टी बाँधे

हुजूर से मिलने आया। ये लोग दरी या मूंज के फ़र्श पर नहीं बैठते। अत: इस महात्मा के लिये दो छोटे-छोटे लकड़ी के फट्टे मँगवाकर उनको बिराजमान करवाया गया। उनकी बातों से मालूम होता था कि वे पहले से हुजूर को जानते हैं। बोली, बागड़ या देहली के आसपास की है। हुंजूर डाक सुनते रहे। महात्मा बैठे रहे। अज़ीज़ रघुवीर ने कभी भी मुँह पर पट्टी वाला साधु नहीं देखा था। वह बड़े ध्यान से देखता और मुझसे पूछता कि यह कौन है ? मैं कहता चुप, फिर तशरीफ़ लायेंगे। शाम को महात्मा चरनदास जी की वाणी में से भक्तों की महिमा और भक्तों के लक्षण पढ़े गए। हुजूर ने फ़रमाया कि साधु ऐसे होते हैं ''सौ साँठ गांठ कुपीन में साध न मानें संक, आत्म रस माते फिरें गिनें इन्दर को रंक''।" फिर कहा कि पोठोहार के इलाक़े का एक निंहग पोहूसिंह कहा करता था कि तड़के उठकर भजन करनेवाला, बिच्छू होता है। कभी डंक भी मार देता है। एक जटाधारी साधु जिसका पहले भी जिक्र आ चुका है, हुजूर के सामने कुर्सी पर बैठा, वाणी सुन रहा था। कहने लगा कि कहावत है कि भगवान की बाँधी तो उसके भक्त छुड़ा देते हैं। परन्तु भक्तों की बाँधी भगवान भी नहीं छुड़ाता। इस पर हुजूर ने गुरु अर्जुन साहिब का क़िस्सा सुनाया कि एक बार गुरु साहिब लाहौर में संगत के साथ भाई बुद्धू जी के घर खाना खाने तशरीफ़ ले गए। खाने पर एक सिक्ख देर से पहुँचा। बाहर का दरवाज़ा बन्द था, उसको किसी ने नहीं खोला, वह बाहर ही रहा। जब खाना ख़त्म हो चुका तो गुरु साहिब ने ग्रन्थी को हुक्म दिया कि अरदासा साधो। तो भाई बुद्धू ने प्रार्थना की कि मेरा आवा ईंटों का पक जाये, तो इतने में वह सिक्ख भी आ धमका, जो दावत से वंचित रह गया था। बोला, जी आवा नहीं पकेगा। गुरु साहिब ने फ़रमाया कि "अच्छा भाई, कच्चा ही पक्के के भाव बिक जायेगा'' मानो गुरु साहिब ने अपने भक्त के वचन को रह नहीं किया।

फिर फ़रमाया कि मुक्ति चार प्रकार की है- सामीप्य, सालोक्य सारूप्य सायुज्य। मगर सन्त किसी मुक्ति को नहीं माँगते। संसार में चार पदार्थ हैं-धर्म, अर्थ, काम, तथा मोक्ष। सन्त इनको भी नहीं माँगते। पलटू साहिब ने कहा है, 'संत न चाहैं मुक्ति को नहीं पदारथ चार'।³⁷ 164

13 जुलाई 1943

11 जुलाई को मलिक साहिब मुलतान से तशरीफ़ लाए। कल महात्मा चरनदास जी की वाणी में से त्वचा और मन का अंग लिया गया। त्वचा का स्वाद अधिकतर काम पर आधारित है। त्वचा का स्वाद छोड़ना एक कठिन काम है। मन हमेशा एक-रस नहीं रहता; कभी जोगी है, कभी मस्त, कभी दु:खी है, कभी सुखी, कभी लालच में, कभी क्रोध में, कभी काम में, कभी अहंकार में, कभी लोभ में। उसको बिना अभ्यास के एक-रस रखना, असम्भव है। जब तक ऊपर के देशों का स्वाद नहीं आयेगा, इस संसार के भोग मन को खींचकर उसकी हालत बदलते रहेंगे।

कल गुजरात के जिले धानावाली से एक बीबी का ख़त आया कि एक सत्संगी की मौत पर हुजूर ने भली प्रकार सँभाल की और सत्संगी ने मौत से पहले सब सत्संगियों को बुलाकर विदा ली और कहने लगा कि सतगुरु आ गये हैं, अब मेरी तैयारी है।

आज शाम सरदार बहादुर मक्खन सिंह की चाय, हुजूर के यहाँ थी। फिर छ: बजे सत्संग हुआ। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'बिख बोहिथा लादया दीआ समुंद मंझार' का शब्द और हुजूरी वाणी में से 'धन्य धन्य धन धन्य पियारे। क्या कहूं महिमा शबद की॥ 139 पढ़े गए। दोनों शब्दों का मतलब नाम अर्थात् धुनात्मक नाम पर ज़ोर देना है, जिसको श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में और सन्तों की दूसरी वाणियों में भी शब्द कहकर वर्णन किया गया है। वही जटाधारी महात्मा भी सत्संग में आये हुए थे। फ़रमाया कि फ़क़ीर चार प्रकार के होते हैं- रेख, भेख, देख और लेट अर्थात् पहले वे जिनके भाग्य में धुर-धाम जाना लिखा होता है। दूसरे उदासी संन्यासी इत्यादि साधु। तीसरे वे जो गृहस्थ आश्रम को छोड़कर दर-दर माँगने लग जायें। एक दरवाजा छोड़कर सौ दरवाज़े देखें। चौथे वे जो खा-पीकर लेट जाते हैं।

हुजूर सत्संग के बाद सैर, सैर के बाद नौ बजे रेडियो की ख़बरें सुनते हैं। हुज़ूर ने फ़रमाया कि "दुख सुख किहए मित्र पास, रोग वैद्य के पास। दुश्मन पास गरजिए, तीनों आयें रास''।

13 जुलाई को कबीर साहिब के साखी-संग्रह में से 'सत्संग की महिमा' का शब्द पढ़ा गया। जैसे नदी नालों का गन्दा पानी गंगा से मिलकर गंगा-जल बन जाता है। इसी तरह अच्छी संगति का अच्छा असर होता है। शेख़ सादी ने

गिले खुश्बूऐ दर हमाम रोजे, रसीद अजदस्ते महबूबे बदस्तम्। ब गुफ़तम कि मुश्की अंबरे या अबीरी, कि अज़बूए ख़ुश्बूए तू मस्तम। गुफ़ता मन गिले नाचीज बूदम, व-लेकिन मुद्दते बा गुल निशस्तम। जमाले हम-नशीं दर मन असर कर्द, वगरना मन हमा ख़ाकम कि हस्तम।¹¹

एक दिन स्नानालय में एक सुगन्धित मिट्टी का टुकड़ा मेरे प्रियतम के हाथों से मेरे हाथ में आया। मैंने उससे पूछा कि तू अम्बर है या कोई और इत्र, क्योंकि तेरी मनमोहक सुगन्धि से मैं मस्त हुआ जाता हूँ। उसने जवाब दिया कि मैं तो तुच्छ मिट्टी का टुकड़ा था, परन्तु कुछ दिन मुझे फूल के साथ रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मेरे साथी के गुणों का प्रभाव मुझ पर पड़ा, नहीं तो मैं वहीं तुच्छ मिट्टी हूँ जो कि था।

आज दोपहर को डाक देखी। उसके बाद शाम को छ: बजे गुरु राम दास जी का शब्द 'हर कीआं कथा कहाणीआं गुर मीत सुणाईआं 142 पढ़ा गया। हुज़ूर ने फ़रमाया कि आत्मा मृत्यु के समय शरीर से स्वयं नहीं निकल सकती, या तो उसको यमदूत निकालते हैं या सतगुरु। नाम वालों के बिना, सबकी आत्माएँ यमदूत निकालते हैं और बड़ी तकलीफ़ होती है। जटाधारी बाबा जी सत्संग में मौजूद थे, पूछने लगे कि मौत के समय अक्सर लोगों के या तो आँखों से पानी आता है या दस्त निकल जाता है। इसका क्या कारण है ? हुजूर ने ज़वाब दिया जब रूह को काल कब्जे में लेता है तो डर के मारे कुछ लोगों के दस्त निकल जाते हैं, कुछ के आँसू। काल त्रिलोकी नाथ अथवा तीनों लोकों का मालिक है। 'जगत चबेना काल का कुछ मुख में कुछ गोद'। अ

सैर के बाद हुजूर सहन में कुर्सी पर बैठ गये। गीता की चर्चा चल पड़ी कि हिन्दुओं में गीता की बहुत महिमा है। हुजूर ने फ़रमाया कि गीता जो कहती है कि दोनों आँखों के बीच में देखो, उस पर अमल कोई नहीं करता। ध्यान की पाँच मुद्राएँ- भूचरी, खेचरी, चाचरी, गोचरी इत्यादि हैं। इन में से तीसरी मुद्रा अर्थात् चाचरी सबसे बेहतरीन हैं और चरनदास जी के ग्रन्थ में से चाचरी मुद्रा का हाल निकलवा कर पढ़वाया कि इस तरह ध्यान जमाने से, तत्त्वों का रंग, तारा, सूर्य इत्यादि नज़र आ जाते हैं। यही आरम्भ में सन्तमत का भी तरीका है।

15 जुलाई आजकल डलहौजी एजेन्सी वाले सरदार साहिब मक्खन सिंह जी हुजूर से अक्सर मिलते रहते हैं। सैर में भी उनसे मुलाक़ात हो जाती है। बड़े उदारचित्त पुरुष हैं। कल शाम सैर में मिल गये। हुजूर को और हुजूर के सत्संगियों को अपने घर चाय के लिये बुलाया। बड़ी जिद्द की, अन्त में हुजूर को मानना पड़ा। 20-22 तारीख़ के क़रीब उनके निवास-स्थान पर चाय के लिये जाना होगा।

आज शाम को वह सत्संग में तशरीफ़ लाये और लुधियाना के एक सरदार साहिब और जैन मत के एक पूज्य महात्मा जी भी, जिनका जिक्र पहले आ चुका है, आये। हुजूर ने श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से दो शब्द 'काया कामण अत सुआल्यो ¼ और 'रामा रम रामो सुन मन भीजै 🕫 पढ़कर ख़ूब व्याख्यान किया कि सबकुछ इनसान की काया में ही है। बल्कि सारी सृष्टि और स्वयं परमात्मा भी इनसान के अन्दर मिलेगा। यह श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का मूल सिद्धान्त है। आज सुबह सैर में एक सरदार साहिब अपनी दुनियावी बातें करते रहे। जब वह चले गए तो एक सत्संगी ने शिकायत की कि देखो इन्होंने सिवाय दुनियावी बातों के कोई रूहानी बात नहीं की। हुज़ूर साहिब ने फ़रमाया कि यह सच है परन्तु उसको फ़ायदा तो हो गया।

कल शाम हुजूरी वाणी में से बारहमाहा, माह आसाढ़ व सावन पढ़े गए। सावन माह में सत्संगी और गैर-सत्संगी की मौत में अन्तर बताया गया है कि सत्संगी मौत के समय गुरु के साथ जाते हैं और गैर-सत्संगी यमदूतों के साथ दु:ख उठाते हैं। आसाढ़ माह में स्वामी जी महाराज ने वर्णन किया है कि जब जवान आदमी की शादी हो जाती है तो वह औरत के प्यार में, माँ-बाप को भूल जाता है। हुजूर ने फ़रमाया, ''पैसा पीर, रन्न गुर, जिधर आखे उधर टुर''।

16 जुलाई को संक्रान्ति थी। शाम को छ: बजे श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से बारहमाहा, गुरु अर्जुन देव जी, का पाठ पढ़ा गया। डलहौजी से सरदार बहादुर व कुछ सिक्ख भाई आये हुए थे। हुजूर ने ख़ूब ज़ोर से व्याख्यान किया और फिर एक रानी साहिबा व सरदार बहादुर साहिब हुजूर से उनके ड्राईंग रूम में, रात के नौ बजे तक, बातचीत करते रहे और हुजूर को 18 जुलाई रात्रवार के पाँच बजे, सारी संगत के साथ, अपने मकान पर सत्संग करने के लिये, आमन्त्रित कर गये।

17 जुलाई को श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से राग मारू महला तीसरा 'जगजीवन साचा एको दाता' तथा हुजूर स्वामी जी महाराज की वाणी में से 'गुरु क्यों न सम्हार। तेरा नर तन बीता भर्म में भ लिये गए। इसके बाद वर्षा के कारण हुजूर सैर को, सवा आठ बजे तशरीफ़ ले गए। आकर ख़बरें सुनीं।

आज शाम को सवा पाँच बजे हुजूर एल्समेयर से सरदार बहादुर मक्खन सिंह की कोठी पर तशरीफ़ ले गए। सारी संगत वहाँ पहुँच गई थी और भी लोग बुलाये गए थे। लाहौर हाईकोर्ट के जज सरदार तेजा सिंह और दीवान बहादुर माधो राम, चम्बा वाले इत्यादि। पहले तो शब्द-कीर्तन रागियों ने किया। दो हारमोनियम, एक सारंगी, तबले वाला। पहले तो श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'सुण सखीए मेरी नींद भली मैं आपनड़ा पिर मिलया। भ्रम खोयो सांत सहज सुआमी परगास भया कौल खिलया⁷⁴⁸ गाया। फिर रागियों के लीडर, गद्य में व्याख्यान भी देने लगे। पहले एकादशी के व्रत व करवा चौथ के व्रत के बारे में चर्चा की। बेशक सच्ची एकादशी, हरि-नाम की धुन जो अन्तर में हो रही है, उसको सुनना ही है। उसके बाद 'मोहन घर आवो करौं जोदरीआ 🚧 सुनाया। फिर 'कोई आण मिलावै मेरा प्रीतम प्यारा हों तिस पह आप वेचाई '50 शब्द की दो-तीन कड़ियाँ गाई। बीच में गुरु गोरखनाथ व उसके चेलों, झंगड़नाथ वग़ैरह का, गुरु नानक साहिब से संवाद, छेड़ दिया। हालाँकि गुरु गोरखनाथ, गुरु नानक साहिब के समय से, बहुत पहले हो चुके थे और इन दोनों महात्माओं का आपस में संवाद जो ग्रन्थों में दर्ज़ है वह अन्तरी स्थानों पर हुआ न कि इस भौतिक संसार में, मगर रागी जी ने उसको इस संसार में बयान किया। इसके बाद राजा शिवनाथ के सतगुरु नानक देव जी के दर्शनों के प्रति वैराग्य व तड़प का वर्णन करते हुए बीच में विरह व प्रेम के राग भी गाये गए। ''मोह लागती तालाबेली, बछड़े बिन गाय अकेली'' और पाँचवीं पातशाही का दोहा 'तू चौ सज्जण मैंडया डेई सिस उतार। नैण महिंजे तरसदे कद पसी दीदार।'51 इसको मिर्जा-साहिबाँ की तर्ज पर गाया। जैसे देहाती लोग मिर्जा-साहिबाँ गाते हैं, लम्बी आवाज से, मगर अच्छा गाया। इसके बाद जब राजा शिवनाथ को गुरु नानक के दर्शन हुये तो विसाल का वही शुरू वाला शब्द गाया, 'सुण सखीए मेरी नींद भली।' राग के अन्त में सारंगी वाले रागी ने वायलिन बजाई और ख़ूब बजाई। मैंने वायलिन कई बार लाहौर में सुनी मगर रस नहीं आया। या

तो यहाँ यह बात थी कि यहाँ वायिलन के साथ-साथ हारमोनियम व तबले भी बजते थे और वहाँ अकेला वायिलन सुना था। बम्बई में ताजमहल होटल में भी वायिलन सुना, मगर आनन्द नहीं आया।

इसके बाद हुजूर ने श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से दो शब्द लिये। 'इस गुफा मह अखुट भंडारा। तिस विच वसै हर अलख अपारा ¹⁵² और 'पाठ पढ़यो अर बेद बीचारयो निवल भुअंगम साधे ¹⁵³ और शब्द-धुन की ख़ूब व्याख्या की और गुरु की ज़रूरत का वर्णन किया। इनसान सारी सृष्टि से उत्तम हस्ती है। इसके लिये अपने से निचले जीव-जन्तु जैसे गाय, गरुड़, साँप, तुलसी, पीपल इत्यादि पूजना, बड़ी मूर्खता है और हानिकारक है क्योंकि जो जिसको पूजेगा उसी का रूप हो जायेगा, ''जहाँ आसा तहाँ बासा''। उसके बाद बताया कि इनसान दूसरे इनसान को पूजे तो क्यों पूजे, जब सब इनसान बराबर हैं। मगर जो इनसान अपना परदा अन्तर में खोलकर कुल मालिक से मिल चुका हो, वह सब इनसानों से उत्तम है, वही हमारा आन्तरिक परदा खोलकर, हमें परमात्मा से मिला सकता है। फ़ारसी लेखकों मौलाना रूम, शम्स तबरेज की उक्तियाँ दीं। दूसरे शब्द में हुजूर ने बताया कि कर्म-धर्म से जीव की मुक्ति नहीं होती। सिवाय साध-संगत और आन्तरिक शब्द-धुन के मुक्ति का और साधन बिलकुल नहीं है।

सत्संग के बाद सरदार बहादुर जी के होनहार साहिबजादों ने फ़िल्म दिखाई। पहले तो चम्बा के रावी नदी के निकलने के स्थान, मणि-महेश के सफ़र के नजारे दिखाये। चम्बे से परे रावी नदी का पानी साफ़-सुथरा और चमकदार दिखाई देता है और रावी के ऊपर दो-तीन जगह रिस्सयों के पुल हैं। आगे जाकर दो नाले मिलकर रावी नदी बन जाती है और कई छोटी-छोटी नदियाँ भी आ मिलती हैं। कई झरने भी दिखाये। मणि-महेश से आगे कैलाश पर्वत, 19 हजार फुट की ऊँचाई पर है। उसका रास्ता भी दिखाया। दस हजार फुट की ऊँचाई से ऊपर वृक्ष नहीं थे। केवल घास वाली चट्टानें थीं। मगर कुछ स्थान मनोहर व सुन्दर थे। कमल के फूल बड़े-बड़े लाल रंग के इस तरह लगे हुए थे कि जमीन नजर नहीं आ रही थी। मानो लाल फूलों की क्यारियाँ थीं। कैलाश से बीस मील इधर, दो शिवजी के मन्दिर हैं, जोकि बारह सौ साल पहले के बने हुए हैं। वहाँ शिवजी महाराज का

नन्दी बैल धातु का बना हुआ, मन्दिर के आगे खड़ा दिखाई देता है। भेड़ें, बकरियाँ चरती दिखाई देती हैं। एक पुजारी मन्दिर के दरवाज़े के बाहर खड़ा घड़ियाल बजा रहा है। वहाँ सब सुनसान मालूम होता है, कोई आबादी दिखाई नहीं देती। बर्फ़ के बड़े-बड़े पहाड़ (Glacier) या काली चट्टानें, सर्दी से जली हुई, दिखाई देती हैं। कैलाश के नीचे एक साफ़-सुथरी चमकदार झील हैं, जिसको मानसरोवर कहते हैं और जहाँ साधु-महात्मा स्नान करने जाते हैं लेकिन बड़ी सर्दी है क्योंकि जो लोग वहाँ चलते-फिरते नज़र आये, उन सबने ऊनी लबादे, ऊनी पायजामे, टोपे पहने हुए थे। मणि–महेश के परे, गद्दियों की फ़िल्म भी देखी। जहाँ गद्दी मर्द, औरतें अपने अद्भुत पहनावे में दिखाई दिये। लड़िकयों, औरतों, मर्दों की कमर में काली ऊनी डोरी लिपटी हुई थी। उन्होंने लम्बे-लम्बे ऊनी कोट पहने हुए थे। पास भेड़ें चर रही थीं। इसके बाद लड़ाई की फ़िल्म दिखाई। हवाई जहाजों का हवा में उड़ना, उनके द्वारा शहर डैनज़िंग पर बमों का गिराया जाना, पोलैण्ड व जर्मनी की हद व लड़ाई के शुरू में हदबन्दी; डैनज़िंग शहर के पास समुद्र में पोलैण्ड वालों का क़िला, जिस पर सात दिन तक जर्मनी हवाई जहाज, बमबारी करते रहे; तारपीडो का जहाज़ में लगना और जहाज़ का फटना, सब दिखाया। रात के 11 बजे हम सब वहाँ से वापस आए।

19 जुलाई को वर्षा का ज़ोर रहा। शाम को सवा छ: बजे श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से मारू शब्द में से 'जहं देखा तहं दीन दयाला' पढ़ा गया। जिसका संक्षेप में मतलब यह है कि जब तक अपने अन्तर में उस परमात्मा को न देख लें, हमारा बाहर का यह कहना बेकार है कि परमात्मा सर्वव्यापक है। जिसको अन्तर में परमात्मा के दर्शन हुए, वह कह सकता है कि यद्यपि परमात्मा सब जगह है और हरएक इनसान के अन्दर युक्ति से उपस्थित है, फिर भी मनुष्य जन्मता—मरता है। परमात्मा उसके अन्दर होता हुआ भी, उससे अलग है। फिर सवाल पैदा हुआ कि परमात्मा है क्या? जवाब— वह निर्मल ज्योति जो सब जीव—जन्तुओं को जीवन देनेवाली है, वह शब्द अथवा अनहद शब्द है यानी आत्मा उसको सुन सकती है। 'सबद रसाल रसन रस रसना'। इर रसाल का अर्थ है मीठा। शब्द ऐसा स्वादिष्ट है कि उसका स्वाद, जबान बयान नहीं कर सकती या यूँ कहो कि वह सब रसों से मीठा रस है। उसका रस लेना चाहिये। आगे

चल कर शब्द को और खोलकर बताया गया है कि पाँच शब्द मनुष्य के अन्तर में बजते हैं 'चतुरदास हाट दीवे दुय साखी' चौदह मण्डल हैं, किनमें सूर्य व चाँद दीपक की तरह हैं। 'सेवक पंच नाहीं विख चाखी'। जो पाँच शब्द का अभ्यास करता है, वह सांसारिक भोगों की तरफ़ नहीं जाता।

20 जुलाई को सावन की पँचमी थी। शाम को सत्संग के बाद हलवे का प्रसाद बाँटा गया और सत्संग में तुलसी साहिब के 'रत्न सागर' में से 'मरने के समय रूह किस तरह खिंचती है '58 पढ़ा गया। जिस रास्ते से रूह आती है उसी रास्ते से वापस जाती है। रूह सतलोक, निज धाम से आकर दसवें द्वार, पारब्रह्म में उतरी। फिर वहाँ से उतर कर दोनों आँखों के पीछे तीसरे तिल पर ठहरी। रूह सूर्य की तरह है। तीसरे तिल से रूह की किरणें, नाभि से टकरा कर, सारे शरीर में फैलती हैं और सारे शरीर को जीवन देती हैं। उन किरणों के पाँच सूक्ष्म तत्त्वों पर पड़ने से प्राण बनते हैं, जैसे शाम को सूर्य छिपने के समय सब जीव-जन्तु घर की तरफ़ मुँह करते हैं वैसे ही जब रूह शरीर को छोड़ने लगती है तो हरएक चीज अपने असल में मिलना चाहती है। प्राण, तत्त्व इत्यादि सब भागने लगते हैं क्योंकि सब रूह के आसरे, शरीर में ठहरे होते हैं। लेखक ने इस जगह पंतग उड़ाने वाले का उदाहरण दिया है कि जैसे खेलते समय पतंग उड़ाने वाला, डोर दे-देकर, पतंग को बढ़ाता है और पतंग बहुत ऊँची चढ़ जाती है, उसी तरह रूह, मन व प्राण जिन्दा शरीर में ख़ूब तन-तन कर, रोम-रोम में फैले हुए हैं। फिर जैसे खिलाड़ी खेल के समाप्त होने पर पतंग की डोर को समेटकर, उसका गोला बनाकर, पतंग के साथ, जमीन पर रख देता है, उसी तरह जिन्दगी के ख़त्म होने पर रूह सिमटकर पहले नाभि में इकट्ठी होती है, उस समय नाड़ी (नब्ज़) छूटने लगती है, फिर सिमटते-सिमटते तालू में आ जाती है तो शरीर से बेसुध हो जाती है और उस समय बहुत घबराहट होती है। तालू से तात्पर्य वह स्थान है जहाँ दोनों आँखों, दोनों कानों, मुँह और नाक के छिद्र अन्तर में मिलते हैं। उस समय ज़रूरत है कि कोई हौसले वाला अभ्यासी, मरने वाले के पास हो और रोना-चिल्लाना बिलकुल बन्द हो। लोगों की भीड़-भाड़ न हो और वे आदमी, मरने वाले को , नाम और गुरु का ध्यान करने को कहें ताकि उसको सांसारिक सम्बन्ध भूलकर, गुरु का ध्यान आये। आगे जाकर तीन रास्ते हैं।

दायाँ, बायाँ और दरिमयाना। सतगुरु दाईं ओर सफ़ेद स्थान पर बैठक रखते हैं। काल यानी त्रिलोकीनाथ, बाईं तरफ़ श्याम स्थान पर खड़ा है और रूह को बीच के रास्ते से जाना है। वहाँ पहुँचकर, बुद्धि आ मिलती है और बुद्धि में सारी उम्र के कर्मों का तत्त्व खिंचकर संकल्प बनता है। यदि मरने वाले को सतगुरु का ध्यान भूल गया तो उस संकल्प के अनुसार उसको वापस आना पड़ता है और काल उसको कब्जे में ले लेता है और उस समय मारे डर के आँखों से पानी बहने लगता है, पाखाना निकल जाता है। परन्तु अभ्यासी सत्संगी की रूह को सतगुरु बाईं ओर जाने से पहले सँभाल लेते हैं व काल की तरफ़ नहीं जाने देते। इसके बाद रूह सतगुरु के पीछे-पीछे खींची चली जाती है। हुजूर ने फ़रमाया कि वह दृश्य देखने लायक होता है, जब सतगुरु रूह को खींचे लिये जाते हैं। यदि रूह की इच्छा दुनिया में है तो फिर ज्यादा ऊँचे कैसे जा सकेगी ? यदि रूह की इच्छा दुनिया में नहीं है तो फिर उड़ती चली जायेगी, कहाँ तक उड़ जायेगी, यह उसके प्रेम, प्रीति, शौक़ और कर्मों पर निर्भर है। सैर में, हुजूर ने फ़रमाया कि जो लोग आत्महत्या करते हैं, वे ज़रूर सीधे नरक में जाते हैं। यदि पूरा गुरु नहीं मिला तो वह काल के जाल से बाहर नहीं ले जा सकता। अपने स्थान तक, जहाँ कि उसकी अपनी रसाई है, मरने के समय सेवक की रूह को ले जायेगा। अन्त में दोनों वापस आयेंगे और फिर जन्म-मरण में आ जायेंगे।

21 जुलाई को बाक़ी का प्रसंग तुलसी साहिब के रत्नसागर से समाप्त किया गया। अपने सेवक 'हिरदे' के प्रश्न पर हुजूर साहिब ने फ़रमाया कि जीव ब्रह्म का अंश नहीं है, जैसे कि साधारणतया माना जाता है, बल्कि जीव सतनाम का अंश है। हाँ, सतनाम ने इसको ब्रह्म के हवाले कर दिया है। ब्रह्म के पास केवल तीन चीज़ें हैं- सृष्टि को पैदा करना, पालना और फिर मारना। इस ब्रह्म को कोई ख़ुदा कहता है, कोई परमेश्वर, त्रिलोकीनाथ, कोई भगवान्। परन्तु किसी को दयाल, सतनाम और सत्पुरुष का पता नहीं क्योंकि ब्रह्म या काल या त्रिलोकीनाथ नहीं चाहता कि लोगों को इसका पता चले। यदि पता लग गया तो जीव उसके देश को छोड़कर सतलोक में चले जायेंगे। उसका देश सूना पड़ जायेगा। इसलिये सतनाम के जो अवतार हैं और जिनको सन्त कहते हैं, उनका 'मिशन'

172

यहाँ आबाद रहें। इसके बाद तुलसी साहिब जी फ़रमाते हैं कि पिण्ड प्रधान यानी बुद्धि तन में रहती है और हर बुद्धि कर्म-सारणी है यानी कर्मानुसार बनती है। जैसे जिसके पहले जन्मों के संस्कार हैं वैसे ही उसकी बुद्धि है। जीव बुद्धि के अधीन है। मौत के समय बुद्धि घबराहट में समाप्त हो जाती है। जब सार आभास अर्थात् रूह सिमटकर आकाश में जाती है तो काल उस पर बुद्धि छोड़ देता है। कई लोगों का अनुभव होगा कि किसी समय जब हम सोये हुए अचानक जागते हैं तो पता नहीं लगता कि हम कहाँ हैं और क्या समय है ? यह क्यों है ? रूह पहले जागी, बुद्धि पीछे रह गई। स्मरण-शक्ति खो गई। फिर धीरे-धीरे बुद्धि जागती है तो याद आती जाती है। आदमी को पता लगता जाता है कि मैं कहाँ हूँ। इस प्रकार होता है, जब रूह मरने के बाद आकाश में जाती है। जब रूह को बुद्धि मिलती है तो साथ ही इस जन्म के कर्मों का प्रभाव आ जाता है और उसके अनुसार मरने वाले में संकल्प यानी इच्छा पैदा होती है। यदि उसको बाल-बच्चों का मोह है तो उसको विचार आता है कि चलूँ , मेरे बाल-बच्चे तो रोते होंगे, उनके पास जाऊँ। परिणाम यह है कि मर कर फिर वहाँ ही दूसरे रूप में जन्म ले लेता है मानो आशा-तृष्णा के बस होकर बुद्धि मलीन यानी सांसारिक संकल्प पैदा हो गया। मौत के बाद अन्तर में अँधेरा होता है और अँधेरे में रास्ता नहीं मिलता। काल अष्ट-दल कमल की पंखुड़ी में से आवाज़ देता है कि इधर आ जाओ। रूह उधर जाती है तो सीधी काल के मुँह में। वह उसे चबा डालता है तो डर के मारे, दस्त निकल जाते हैं या आँसू निकल आते हैं। घर वाले पास बैठे होते हैं परन्तु वापस आकर बता नहीं सकता। इस डर से केवल सन्त ही बचा सकता है। इसी विषय पर मौलाना रूम ने अपनी मसनवी में लिखा है :

आवाजें गूलां शुद आवाजे आशना, आशनाऐ को कशद, सूऐ फ़ना। आवाजे दारद कि ए फलां, सूऐ मन आईद, ईनक कारवाँ।" अर्थात् , यह काल की आवाज होती है जो किसी जाने पहचाने 'मित्र या सम्बन्धी' की-सी लगती है और मृत्यु की ओर खींचती है। आवाज आती है 'ऐ भाई, इधर आ बाक़ी सब भी यहीं हैं'।

इसके बाद उसको खींचते हुए नरक में ले जाते हैं। बहुत सारे नरकों में से तीन नरक, तुलसी साहिब ने वर्णन किये हैं। अगन खम्ब (अग्नि खम्ब) नरक, कुम्भी (कुम्भी पाक) नरक, अघोर (रौरव) नरक। इन नरकों में लोग कल्पों तक पड़े रहते हैं। नौ सौ अठानवें चौक़ड़ी युग का, एक कल्प होता है। वहाँ से सन्त ही निकालते हैं या जब सजा की मियाद ख़त्म हो जाती है तो उसके कमों के अनुसार उसको वृक्ष, कीड़ा, मकोड़ा, पक्षी इत्यादि का जन्म दे देते हैं।

24 जुलाई को कल की दावत की तैयारियाँ हो रही हैं। कल हुजूर का जन्मदिन डलहौजी में मनाया जायेगा, जिसमें लगभग 50 मेहमान ख़ासतौर पर बुलाये गए हैं और शेष सब सत्संगिनों और सत्संगियों को भोजन दिया जायेगा। आज हुजूरी वाणी में से भादों और आसोज के महीने लिये गए। कल श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'जो तुध करणा सो कर पाया। भाणे विच को विरला आया' और परसों कबीर साहिब की वाणी में से 'कर नैनों दीदार महल में प्यारा है ' ए थे। डाक में आजकल 20-25 पत्रों से कम पत्र नहीं आते। मेरा बहुत-सा समय पत्रों को लिखने में लग जाता है। आज हुजूर को एक घण्टा केवल डाक सुनने में लगा। सत्संग के बाद हुजूर सैर को तशरीफ़ ले गये और रास्ते में किसी ने कहा कि यहाँ के मन्दिर की मूर्ति एक हजार रुपये की आयेगी। हुजूर ने फ़रमाया:

पाहन केरी पुतरी, ताको नाम जगदीश। मोल लिया बोले नहीं, खोटा बिसवे बीस॥⁶²

हुजूर मूर्ति-पूजा के विरुद्ध हैं, फ़रमाया कि छ: शास्त्रों में से किसी में भी मूर्ति-पूजा का आदेश नहीं। छ: शास्त्र फ़िलासफ़ी के ग्रन्थ हैं। फ़रमाया कि सन्तों-महात्माओं की एक घड़ी की संगति, सौ साल की मन-बुद्धि की पूजा से अच्छी है क्योंकि यदि रास्ता पूर्व को है और वह पश्चिम को दौड़ता है तो जितना दौड़ेगा उतना ही मंजिल से दूर होता जायेगा। यदि सीधे रास्ते पर क़दम-क़दम भी चलेगा तो कभी न कभी पहुँच जायेगा। किसी सत्संगी ने कहा कि मैं

नाम लेने से पहले हर रोज़ दो-ढाई घण्टे दरवाज़ा बन्द करके मूर्ति-पूजा किया करता था। हुजूर ने उत्तर दिया कि यह नाम मिलना, उसी करनी का फल है।

25 जुलाई को हुजूर का जन्मदिन, डलहौज़ी में मनाया गया। पहले तो सूर्य ख़ूब जोर से निकला हुआ था, परन्तु फिर दस-ग्यारह बजे के लगभग वर्षा शुरू हो गई। इसलिये अन्दर बरामदे में संगत के भोजन का प्रबन्ध किया गया। सत्संगी और सत्संगिनें सब खाना खाकर, साढ़े बारह बजे दोपहर तक निपट गये थे। उनके इलावा, डलहौज़ी के कुली, सौ के क़रीब आ गये। उनको भी भोजन दिया गया। इतने में जो मेहमान बुलाये गए थे, वे आने शुरू हो गये। उनकी संख्या पचास के लगभग थी। तीन जगह उनके खाने का प्रबन्ध किया गया। एक मेरे दफ़्तर में, दूसरा हुजूर के भोजन के कमरे में, तीसरा बड़ा प्रबन्ध कोठी के बाहर बरामदे में किया गया। मेहमानों में लाहौर हाईकोर्ट के जज सरदार बहादुर तेजा सिंह, सरदार मक्खन सिंह व दीवान बहादुर माधो राम चम्बा निवासी भी शामिल थे। भोजन बड़ा स्वादिष्ट था। भोजन के बाद, अंगूर और क़लमी आम भी थे। सब मेहमान प्रसन्न होकर हुजूर से आज्ञा लेकर, शाम के तीन बजे विदा हो गये। इसके बाद छ: बजे शाम को सत्संग शुरू हुआ। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'जगजीवन साचा एको दाता। गुर सेवा ते सबद पछाता ¹⁶³ लिया गया। हुज़ूर ने फ़रमाया कि गुरु नानक साहिब का मत सुरत-शब्द अभ्यास का था और यही हुज़ूर राधास्वामी दयाल का मत था। चुनांचे, इसके बाद हुजूरी वाणी में से 'धन्य धन्य धन धन्य पियारे। क्या कहूं महिमा शब्द की ⁴ पढ़कर बताया गया कि वह भी शब्द की ही महिमा करते हैं, जोकि हर समय इनसान के अन्दर हो रहा है। 'छिन छिन रक्षा हो रही' का अर्थ यह है कि जब शब्द की धार पीछे हट जाती है तो तुरन्त मृत्यु हो जाती है। यह शब्द ही है जिसने पाँच तत्त्वों को मनुष्य के शरीर में मिलाकर रखा हुआ है। मिट्टी का शत्रु पानी, पानी का शत्रु अग्नि, और अग्नि का शत्रु हवा और हवा का शत्रु आकाश है। 'बिन शब्द फिरें भरमातियाँ' का अर्थ है कि शब्द के बिना चौरासी लाख योनियों में जाना पड़ता है। हुजूर ने जोगियों का सवाल, गुरु नानक देव जी की वाणी में से पढ़कर सुनाया :

कित बिध पुरखा जनम वटाया। काहे कौ तुझ एह मन लाया। कित बिध आसा मनसा खाई। कित बिध जोत निरंतर पाई 🏁

गुरु नानक साहिब ने जवाब दिया कि : सतगुर कै जनमे गवन मिटाया। अनहत राते एह मन लाया॥ मनसा आसा सबद जलाई। गुरुमुख जोत निरंतर पाई॥⁶⁷

सत्संग के बाद माछीवाड़ा निवासी राम प्रताप ने एक फ़ारसी ग़जल पढ़ी जोकि सब लोगों ने पसन्द की। हुजूर बहुत ख़ुश हुए और नकदी के अतिरिक्त उसको विशेष रूप से प्रसाद दिया गया। उसके बाद सैर को तशरीफ़ ले गये।

रास्ते में फ़रमाया कि 'नानक गुरु न चेतनी मन आपणै सुचेत। छुट्टे तिल बुआड़ ज्यों सुंत्रे अंदर खेत 'ब बुआड़ तिल वह पौधा है जिसमें फल नहीं आते और जिसको ज़र्मीदार खेत में छोड़ देते हैं, काटते नहीं। इसी तरह जो मनुष्य बिना गुरु के अपने मन-बुद्धि से भजन-सिमरन करता है, उसको कोई लाभ नहीं। वह बुआड़ तिल की भाँति है।

26 जुलाई को, क्योंकि बे-सत्संगियों को नाम के विषय में समझाना था, इसलिये हुजूरी वाणी में से 'नाम निर्णय' लिया गया। हुजूर ने फ़रमाया कि जो शब्द ज़बान से या गले से या नाभि से बोला जा सके, वह सब वर्णात्मक ही होगा। जो धुनात्मक है, वह इनसे ऊपर है। वह इस दुनिया की ध्वनियों की भाँति, हवा का गुण नहीं।

अध्याय १

डेरे में निवास का हाल

हुजूर की डेरे को वापसी और वहाँ निवास

27 जुलाई को सुबह 8 बजे कार से हुज़ूर पठानकोट व अमृतसर के रास्ते डेरे की ओर चल दिये। रास्ते में बकलोह, पठानकोट की संगत को दर्शन देते हुए हुज़ूर गुरदासपुर के एडवोकेट लाला ईशर दास नागपाल की कोठी में तशरीफ़ ले गए थे। वहाँ सब सत्संगी इकट्ठे हो गये थे। वहाँ सबसे मिलकर धारीवाल मिल के क्लर्कों इत्यादि को, जोकि एक वृक्ष के नीचे सत्संगियों के साथ बैठे थे, दर्शन देकर बटाला में लोहारों की दुकानों पर आकर ठहरे। वे मुसलमान हैं परन्तु हुजूर से भाई शादी के नाते प्रेम रखते हैं। भाई शादी तो लोहे का सामान ख़रीदने के लिये उनके गोदामों को देखता रहा। हुजूर उनके ऊपर के कमरों पर, जहाँ कि हवा अच्छी आती थी, तशरीफ़ ले गये। मैं मोटर कार के पास रहा। वहाँ से कुछ सामान ख़रीद कर, हम ढाई बजे के क़रीब, अमृतसर की ओर चल दिये। वहाँ सत्संग–घर में बाजा बज रहा था। पता लगा कि सत्संगी स्वयं बाजा बजा रहे हैं। बीन बाजा था। वहाँ बड़ी गर्मी थी और हमें, जोकि डलहौजी की ठण्डी हवाओं से आये थे, विशेषकर अधिक लगी। मैं तो कपड़े उतार कर नहाया और बाद में भोजन करके लेट गया। हुज़ूर भी मेरे सामने वाले कमरे में निचली मंज़िल में ही बिराजमान रहे। भोजन के बाद आधा घण्टा आराम किया। फिर शहर से सत्संगी आ गये। पाँच बजे सत्संग आरम्भ कर दिया। मैं तो लेटा ही रहा, बहुत गर्मी लग रही थी। परन्तु हुजूर ने लेटने का नाम नहीं लिया, न गर्मी को ही महसूस किया। रास्ते में, मैं और भाई शादी तो दो बार कार से उतर कर पेशाब करने गये और डेरे में भी खाते-पीते रहे। परन्तु हुजूर ने न तो खाया-पिया, न पेशाब की जरूरत महसूस की, न अमृतसर आकर आराम किया। इस प्रकार के परिश्रम ने हुजूर के सत्संग को वर्तमान प्रतिष्ठा तथा मान्यता तक पहुँचाया है। हुजूर के परिश्रम का अनजान व्यक्तियों को तो क्या, बहुत-से सत्संगियों को भी पता नहीं। वहाँ डेढ़ घण्टा सत्संग करके फिर हुजूर सेवा पर बैठ गये। वहाँ से आठ बजे चले। बड़ी भीड़-भाड़ थी। अमृतसर पर हुजूर की विशेष दया है। डेरे आकर हुजूर राय साहिब के बाग़ के दालान में पधारे और वहाँ भी क़रीब एक घण्टा बातचीत करते रहे। कोई थकावट महसूस न की। रात के दस बजे के बाद वहाँ से गये।

28 जुलाई की सुबह को हुजूर ने तीन दिन की डाक सुनी। लोग बड़ी संख्या में आ रहे हैं। शाम को श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'सूरत देख न भूल गवारा। मिथन मोहारा झूट पसारा" शब्द पढ़ा गया।

29 जुलाई को जन्म-दिन हैं। आज सुबह 6 बजे, एक घण्टे से अधिक देर, आँधी और वर्षा रही। सुबह साढ़े नौ बजे के क़रीब जब वर्षा रुक गई तो सत्संग हाल के अन्दर सत्संग आरम्भ हुआ। लोग ब्यास रेलवे स्टेशन से पैदल आ रहे थे, क्योंकि वर्षा के कारण कोई ताँगा स्टेशन पर नहीं मिलता था। शब्द था 'सतगुरु का नाम पुकारो'।' तात्पर्य यह है कि सतगुरु जो नाम देते हैं, उसका सिमरन करो। हुजूर ने फ़रमाया कि केवल सिमरन से ही सूर्य व चन्द्र-मण्डल पार करके रूह तीसरे तिल पर पहुँच जाती है और बहुत-सी सिद्धि शिक्त प्राप्त हो जाती है। सत्संग के बाद बलसराय की रागी पार्टी ने शब्द सुनाये, 'डंडौत बंदन अनिक बार सरब कला समरथ। डोलन ते राखो प्रभु नानक दे कर हत्थ' फिर 'मोरी रुण झुण लाया भैणे सावण आया।' फिर 'हीनड़ी जात मेरी नादम राया। छीपे के जनम काहे कौ आया।'

रागियों की दूसरी पार्टी वड़ाइच गाँव से थी। उन्होंने 'गुरु ग़रीब निवाज निमानयों के मान', 'सा धरती भई हरआवली जित्थै मेरा सतगुरु बैठा आय।" 'भई परापत मानुख देहुरीआ। गोबिंद मिलण की एह तेरी बरीआ।" 'नाल प्यारे दे नेहं लगो मेरा' फिर एक शब्द 'जित्थै जाय बहै मेरा सतगुरु सो थान सुहावा राम राजे। '* पढ़ा। अच्छा होता अगर यह लोग श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के शब्दों को जिस राग में गुरु साहिब जी ने अलापा है, उसी राग में सुनाते। मगर उसके लिये राग विद्या की जानकारी जरूरी है, जोकि लोगों में नहीं है।

शाम को 5 बजे सत्संग शुरू हुआ। फिर कवि-दरबार लगा। भिन्न-भिन्न व्यक्तियों ने अपनी-अपनी कविताएँ सुनाईं। उनमें से एक नारोवाल के सरदार

साहिब का पंजाबी शब्द बहुत पसन्द किया गया, क्योंकि उसका स्वर बहुत अच्छा लगा। उसने यह शब्द 'आया आप करतार सावन सिंह सरदार' की लय पर गाया। उसके बाद लाला राम प्रताप माच्छीवाड़ा वाले ने रिन्द कवि की एक फ़ारसी की ग़ज़ल पढ़ी। उसके पढ़ने का ढंग बहुत पसन्द किया गया। उसके बाद सरदार काहन सिंह जी ने ख़्वाजा हाफ़िज की ग़जल 'तालवे इश्कम मरा-व दरदो बार दरमा चेहकार। चूंकि अन्दर हर दो आलम यार मी वाइद मरा-वा बहिश्तो दोजाखो बा हूरो बा गुलमां चेहुकार' पढ़ी। यह सभा अँधेरा होने से थोड़ी देर पहले ख़त्म हो गई।

30 जुलाई शाम को सत्संग में तीसरे गुरु साहिब की वाणी 'दुनीआ न सालाहे जो मर वंत्रसी। लोक न सालाहे जो मर खाक थीई " पढ़ी गई। हुज़ूर ने फ़रमाया कि जिज्ञासु को चाहिये कि न दुनिया से प्यार करे, न दुनिया वालों से, बल्कि सतगुरु से प्रेम करे। नहीं तो दुनिया की मोहब्बत से नर्क-स्वर्ग और आवागमन के चक्कर में पड़ेगा। किसी मरने वाले के सारे काम कभी पूरे नहीं हुए। जो काम अधूरे रह जाते हैं उनका ख़याल लेकर मरने से, फिर उनको पूरा करने के लिये जन्म लेना पड़ता है।

31 जुलाई को सुबह साढ़े सात बजे सत्संग आरम्भ हो गया। भादों का महीना हुजूरी पोथी में से पढ़ा गया। 'दौ' का अर्थ है बुख़ार में जो प्यास और भड़क महसूस होती है। भादों में मलेरिया बुख़ार का जोर होता है। इसी तरह मनुष्य-जन्म में तीन ताप- आध्यात्मिक, आधिभौतिक तथा आधिदैविक और पाँच दोष- काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार आदि का ज़ोर है। 'कलजुग कर्म धर्म नहिं कोई। नाम बिना उद्धार न होई 🗥 अर्थात् , धुनात्मक नाम या शब्द के बिना, इस आवागमन के चक्कर से नहीं छूट सकते।

शाम के साढ़े छ: बजे फिर श्री गुरु ग्रन्थ साहिव में से चौथे गुरु साहिब की वाणी से 'हर कीआं कथा कहाणीयां गुर मीत सुणाईआं"। लिया गया। हुजूर ने ख़ानख़ानाँ की कहानी सुनाई और फ़रमाया कि वह गुरु तेग़ बहादुर से बड़े प्रेम से मिलते थे। इसी प्रकार गुरु अर्जुन देव जी और मियाँ मीर में बड़ा प्यार था क्योंकि जो लोग सतलोक में जाते हैं, चाहे वे किसी धर्म के हों उनमें आपस में प्रेम-भाव होता है। 'गुरमुख सखी सहेलीआं'। यसाध संगत की महिमा का वर्णन करते हुए हुजूर ने फ़रमाया कि एक लाला जी किसी आसामी से क़र्ज़ा प्राप्त करने गये, बड़ी

कठोरता से क़र्ज़ा वसूल किया। इसलिये आसामी ने लाला जी का बिस्तरा गाँव से उसके घर तक ले जाने से इनकार कर दिया। एक महात्मा ने लाला जी की घवराहट देखी और कहा कि मैं ले चलता हूँ। लाला जी ने पूछा कि क्या मज़दूरी लोगे, तो महात्मा ने कहा कि मज़दूरी कुछ नहीं लूँगा। केवल यह शर्त है कि या रास्ते में तुम हरि-कथा करना, मैं सुनूँगा या मैं हरि-कथा करुँगा, तुम सुनना। लाला जी ने कहा अच्छा मैं सुन लूँगा। मन में सोचा कि चलो बिस्तरा तो घर तक पहुँच जायेगा। इसकी बक-बक भी सुन लूँगा। क्या हानि है ? रास्ते में महात्मा लाला जी को हरि-कथा सुनाते रहे। बिस्तरा घर छोड़कर वापस लौटकर आ रहे थे कि फिर विचार आया कि वह भी क्या याद करेगा। फिर लौट गये और लाला जी को कहा कि तुम्हारी मौत आठ दिन में हो जायेगी। तुम्हें यम के दूत 'धर्मराज' की कचहरी में ले जायेंगे। वहाँ तुम्हारे लेखे में कोई अच्छा काम नहीं निकलेगा। केवल यह दो घड़ी की 'हरि कथा' जो मैंने तुम्हें सुनाई है, निकलेगी। तुमसे पूछा जायेगा कि तुम्हें इसका फल पहले लेना है या पहले नर्क भोगना है। तुम हरि-कथा का फल पहले माँग लेना और कहना कि सूक्ष्म देश में, जहाँ आकर महात्मा भजन करते हैं, वहाँ ले चलो। अत: ऐसा ही हुआ। यमदूत धर्मराज की आज्ञा से उसको महात्मा के पास छोड़ आये और यह कह आये कि दो घड़ी में हम आयेंगे तुम आ जाना। दो घड़ी के बाद लाला जी को यमदूतों ने दूर से संकेत करके बुलाया। परन्तु महात्मा ने कहा कि मत जाओ। वे यहाँ हमारे पास नहीं आ सकते। जैसे श्री गुरु ग्रन्थ साहिव में

जह साधु गोविंद भजन कीरतन नानक नीत। णा हौं णा तूं णह छुटह निकट न जाईयो दूत।13

बस वे यमदूत निराश होकर चले गए। लाला जी नरकों से बच गये। यह दो घड़ी के सत्संग का फल था।

इसी प्रकार हुजूर ने फ़रमाया कि सांसारिक जीव कैसी अज्ञानता में सोये हैं। जबिक उनको अपने घर से दूसरे शहर में जाना हो तो पहले से यात्रा की तैयारियों, खाने आदि के इन्तिजाम के लिये, सोचते हैं और परदेस में जहाँ जाकर सराय, होटल इत्यादि में ठहरना होता है, उसका प्रबन्ध कर लेते हैं। परन्तु परलोक यात्रा की कोई चिन्ता नहीं करते। जैसे श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में लिखा है:

जो घर छड गवावणा सो लग्गा मन माहें। जित्थै जाय तुध वरतणा तिस की चिंता नाहें।¹⁴

1 अगस्त को सुबह नौ बजे सत्संग आरम्भ हुआ। अब की बार लोगों की 1 अगस्त को सुबह नौ बजे सत्संग आरम्भ हुआ। अब की बार लोगों की भीड़ 30-40 हजार के क़रीब होगी। लोगों का समुद्र-सा प्रतीत होता था लेकिन सत्संग सभी शान्ति से सुनते रहे, जिससे प्रगट होता था कि हर वर्ग व हर प्रकार के स्त्री-पुरुषों को सत्संग सुनने का चाव है। हुजूर भी देख-देख कर प्रसन्न होते हैं कि धीरे-धीरे लोग धर्म की ओर आ रहे हैं, मांस व शराब छोड़ रहे हैं, और धर्म-कर्म का चाव रखते हैं। हुजूर महाराज जी के ऊँचे व सच्चे उपदेश से, सत्संगियों की संख्या हर महीने बढ़ती जा रही है। अब की बार एक हजार स्त्री-पुरुषों ने नाम लिया।

पहले हुजूरी वाणी में से 'शब्द बिना सारा जग अंधा' ि लिया गया। शब्द-अध्यास के बिना बुद्धिमता, चतुराई तथा सब उपाय, बेकार हैं। संसार में आकर वही बुद्धिमान, वही भाग्यशाली, वही इज्जत वाले हैं जो पूरे गुरु से नाम लेकर, अन्तर में आत्मा व मन को समेटकर, शब्द को पकड़ते हैं। बाक़ी सब काल, कर्म व आवागमन के जाल में फँसे हैं और मरने के बाद यमदूतों के हाथों से बेइज्जत किये जायेंगे। जैसे श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में आया है 'विण नावें कैसी पत सारी'। ि

आजकल उस परमेश्वर, कुल मालिक की इतनी दया है कि न केवल शब्द अभ्यासियों की अन्त समय रक्षा की जाती है बल्कि प्रेमी-भक्तों के निकट सम्बन्धियों को भी सहायता मिलती है। भिन्न-भिन्न स्थानों से हर रोज पत्र आते हैं, उनसे यह बात बिलकुल साफ़ है कि जब किसी प्रेमी-सत्संगी का लड़का, बाप, माता इत्यादि बिना नाम के मरने लगते हैं, तो मालिक अन्त समय उनकी सहायता करता है और मरने वाला स्वयं इसके बारे में बताकर जाता है। इस सम्बन्ध में लाहौर के वकील ख़लीफ़ा निहमत राय ने मेरे सामने बताया कि प्रोफ़ेसर गुलशनराय के देहान्त के समय हुजूर ने उनको दर्शन दिये और प्रोफ़ेसर साहिब ने ख़लीफ़ा साहिब को बताया कि उनको हुजूर महाराज जी के दर्शन हो रहे हैं। क्या वजह ? उन्होंने हुजूर से उपदेश नहीं लिया था, परन्तु उनकी स्त्री हुजूर की सेविका थी। उससे उसके पित को भी लाभ हुआ। हुजूर ने फ़रमाया

कि सन्तों के ही नहीं प्रेमी भक्तों के माता-पिता, सम्बन्धियों, उनके मित्रों आदि को भी उनकी भक्ति का लाभ पहुँचता है।

इसके बाद श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से मारू राग में से पाँचवें गुरु साहिब का शब्द 'आद निरंजन प्रभ निरंकारा' लिया गया। इस शब्द में सन्तमत के नियमों व कर्म के सिद्धान्त पर अच्छी तरह व्याख्यान किया गया।

2 अगस्त को हुजूर चार बजे तक नामदान देते रहे। भोजन तक नहीं किया। फ़रमाया कि जब इन लोगों (नाम लेनेवालों) ने नहीं खाया तो मैं कैसे खाना खाऊँ। हुजूर ने ऐसे कड़े परिश्रम द्वारा सत्संग की उन्नति की है और आम लोगों के लाभ के लिये अपने आपको कष्ट दिया है इसका दुनिया को कुछ पता नहीं है। दुनिया राजनैतिक नेताओं, समाज-सुधारकों, दानी लोगों, गुणी-ज्ञानियों को तो जानती है, परन्तु हुजूर की मौन-सेवा का, जिससे आत्माओं को वास्तव में लाभ पहुँचाया जा रहा है, दुनिया को पता नहीं।

3 अगस्त मंगलवार को शाम के छ: बजे श्री गुरु ग्रन्थ साहिब से मारू राग का शब्द 'काम क्रोध परहर पर निंदा "8 लिया गया। 'भ्रम का संगल तोड़ निराला'19 का तात्पर्य है कि मनुष्य के शरीर में जो आँखों से नीचे छ: चक्कर हैं, जिनमें योगी लोग प्राणायाम के द्वारा जाते हैं, वे अक्स का भी अक्स हैं, यानी ब्रह्माण्ड के छ: चक्रों का अक्स पिण्ड में पड़ता है और पिण्ड के छ: चक्रों का अक्स अण्ड में पड़ता है। इसी भ्रम के संगल को मौलाना रूम ने अपनी मसनवी में 'बदन का सन्दूक' कहा है। और परमात्मा से प्रार्थना की है, 'ऐ ख़ुदा बगुमार कौमे रहम-मन्द। ताज सन्दूके बदन मारा खंरद'। अर्थात् ऐ मालिक तू अपने दयाल सन्तों को भेज जोकि हमें इस शरीर के बन्धनों से मुक्त करें। सन्त सत्संग सुनाकर और सिमरन करा कर मनुष्य को इस 'शरीर के संदूक' से निकालते है। सत्संग द्वारा वैराग्य पैदा करके सांसारिक बन्धनों को ढीला करते हैं और सिमरन से मन को एकाग्र करके आँखों के पीछे इकट्ठा करवाते हैं। इसी प्रकार धीरे-धीरे अभ्यास द्वारा ध्यान की धारायें शरीर को छोड़कर आँखों में इकट्ठी होने लगती हैं। सत्संग के बाद लैम्प जला कर, तीन दिन की डाक सुनाई गई। रात के साढ़े नौ बज गये। पहले हुजूर का विचार 5 अगस्त को आठ बजे, डेरे से डलहौज़ी को चल देने का था, परन्तु सरदार भगत सिंह साहिब को कुछ कागजों की खोज थी, जोकि जरूरी थे। इसलिये विचार बदलना पड़ा।

अध्याय 10 डलहौज़ी की यात्रा का हाल हुजूर की डलहौज़ी-यात्रा और वहाँ निवास

6 अगस्त, 1943 सुबह के 5 बजे जबिक भारी वर्षा हो रही थी तथा बड़ा अँधेरा था, हम सब अमृतसर के रास्ते डलहौज़ी की ओर चल दिये। रास्ते में ब्यास स्टेशन से निकलकर ख़ाली मैदान जो पुल के सामने आता है, उसमें घुटनों से ऊपर तक पानी था। बड़े ज़ोर से बह रहा था और बड़ा अँधेरा था। हाफ़िज़ के कथनानुसार, 'शबे तारीक व बीमे मौज व गर्दाबे चुनीं हाइल' अर्थात् काली रात, लहरों का डर और सिर पर तूफ़ान मॅंडराता हुआ। वहाँ से रईया तक बहुत वर्षा हो रही थी। परन्तु हुजूर ने फ़रमाया कि हमने नहर के एस. डी. ओ. को वचन दिया था कि उसके घर होकर जायेंगे। वहाँ से उनके बँगले पर गये। वहाँ सब सो रहे थे। अन्त में दो स्त्रियाँ निकर्ली। पता लगा कि साहिब बहादुर तो बाहर हैं। कहीं नहर का नाका टूट गया है। वहाँ पाँच मिनट ठहर कर सीधे अमृतसर की ओर चले। अमृतसर पहुँचते-पहुँचते कुछ उजाला हो गया परन्तु वर्षा हो रही थी। वहाँ कोई नहीं मिला। वहाँ से आगे बटाला की सड़क पर गये तो चारों ओर खेतों में पानी ही पानी देखा। ज्यों-ज्यों पहाड़ के निकट होते जाते थे, वर्षा का ज़ोर अधिक होता जाता था। गुरदासपुर से निकलकर चारों ओर पानी ही पानी था। पठानकोट में तो वर्षा की कोई सीमा न थी। वहाँ सवा आठ बजे पहुँच गये। पता लगा कि आठ बजे की सर्विस डलहौज़ी से सकुशल आ चुकी है। जान में जान आई कि अब सीधे बिना किसी रुकावट के बारह बजे तक डलहौज़ी पहुँच जायेंगे। परन्तु 'मा दर चेह ख़्यालेम व फ़लक दर चेह ख़याल' अर्थात् हम कुछ और सोचते हैं और भगवान कुछ और ही। चक्की पर गये तो वर्षा बराबर हो रही थी। वहाँ और कोई लारी या कार ऊपर जानेवाली दिखाई नहीं दी। ठीक नौ

बजे हम आगे निकल कर दुनेरे दस बजे पहुँच गए। वहाँ वर्षा नहीं थी परन्तु पता चला कि चौतीसवें मील पर सड़क पर बड़े-बड़े पत्थर गिरे पड़े हैं। एक मज़दूर नंगे सिर वहाँ से बारूद लेने आया। बारूद से पत्थरों को टुकड़े-टुकड़े करके सड़क को साफ़ किया जायेगा। बारूद दुनेरे डाकख़ाने के पीछे, खड्ड से पार, एक कुटिया-सी में रखते हैं। हम वहाँ दो घण्टे रुके।

रूहानी डायरी भाग 1

वहाँ से बारह बजे, सड़क साफ़ होने पर सर्विस शुरू हो गई। अभी ऊपर की सर्विस नहीं आई थी। जब चौंतीसवें मील पर पहुँचे, वहाँ की सड़क साफ़ हो चुकी थी और दोनों सर्विस एक-दूसरे के पास से गुज़र रही थीं। वहाँ हमारे साथ की दो लारियाँ तो गुज़र गईं परन्तु हमारी मोटर फेल हो गई। वहाँ बड़ी चढ़ाई है। मोटर बजाय आगे के, पीछे को जाती है। पहाड़ के मज़दूर खड़े हैं, लेकिन हमारे बुलाने की परवाह नहीं करते। हम कहते हैं कि जरा आकर मोटर कार को धक्का लगाओ पर उनको परवाह ही नहीं। वे लोग पैसे के बिना कोई काम करने को तैयार नहीं होते, क्योंकि उनको कश्मीरी मज़दूरों की तरह सब काम पैसे के लिये करने की आदत पड़ गई है। उनके विचार में हमदर्दी के लिये काम करना मूर्खता है। जैसे कि किसी कश्मीरी मज़दूर को, जो कि धूप में बैठा था, किसी ने कहा कि मियाँ! यहाँ छाया में आ जाओ। बोला, क्या मज़दूरी दोगे। सो वहाँ हमें एक घण्टा रुकना पड़ा। ख़ैर, मोटर कार को समतल स्थान पर ले जाकर फिर ज़ोर से ऊपर चढ़ाया तो चल पड़ी। अब यह बात भाई शादी के लिये बहुत चिन्ता का कारण हुई कि कहीं ऊपर से सर्विस हमारी कार से न टकरा जाये। बहुतेरा भाई शादी को विश्वास दिलाया कि वह तो डेढ़ बजे चलेगी। तब तक हम बनीखेत पहुँच जायेंगे। परन्तु उसकी घबराहट दूर न हुई। आँखें हरएक मोड़ पर ऊपर को देखती हैं। अन्त में भाग-दौड़ करके बनीखेत की चौकी पर आ गये। वहाँ अभी सर्विस आई भी न थी। ऊपर जाकर हमें रास्ते में मिली। वहाँ से एजेन्सी से गुजर कर अंग्रेजी कब्रिस्तान के पास पहुँचे तो फिर इंजन ने जवाब दे दिया। अब तो ऐसा लगता था कि चलेगा ही नहीं। इस समय सवा दो बज चुके थे। स्कूल के लड़कों की छुट्टी हो चुकी थी। वे भी तमाशा देखने के लिये इकट्ठे हो गये थे। दो-तीन पथिकों को मनाया कि भाई कार को धक्का लगाओ। इंजन कुछ दूर खींचता, फिर बन्द हो जाता और मोटर नीचे को सरकती तो हम पत्थर लेकर दौड़ते कि उसके पहियों

7 अगस्त, 1943 को हुज़ूर ने श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के श्री राग महला 5 में से बड़ा कठिन शब्द लिया। इस शब्द में आन्तरिक रूहानी यात्रा की तुलना सावन के महीने में किसानों के हल जोतने और पहलवानों के दंगल-जिसको पंजाबी में छिंझ कहते हैं- से की गई है:

पै पाय मनाई सोय जीओ। सतगुरु पुरख मिलाया तिस जेवड अवर न कोय जीओ। गोसाई मिहंडा इठड़ा। अंम अब्बे थावो मिठड़ा।

मेरा मालिक प्यारा, माँ-बाप से भी अधिक प्यारा है। 'तेरै हुकमे सावण आया' अर्थात् तेरी आज्ञा से मुझे मनुष्य-जन्म मिला तो मैंने शब्द-अभ्यास किया और नाम का बीज बोया, इस आशा पर कि भगवान् दया करके इसे बोहल यानी खिलवाड़ा अथवा फ़सल का बड़ ढेर बना देंगे।

'गुर दीबाण कवाय पैनाईओ¹³ अर्थात् गुरु ने मुझे अपनी दीवानी की पदवी बख़्शी।'हौं होआ माहर पिंड दा बंन आंदे पंज सरीक जीओ ¹⁴ अर्थात् मैं गाँव का चौधरी बन गया और पाँचों शरीकों यानी शत्रुओं को बाँधकर ले आया। तात्पर्य यह है कि मैं अपने पिण्ड यानी शरीर का ज्ञाता बन गया और काम, क्रोध इत्यादि पाँचों शत्रुओं को क़ैद कर लिया।

हौं आया साम्है तिहंडीआ। पंज किरसाण मुजेरे मिहंड़िआ।

साम्है तात्पर्य सावन या शरन यानी तेरी शरण में आया। पाँच विकार मेरे मुज़ारे अथवा आज्ञाकारी बन गये, अब कोई कान नहीं हिला सकता और सारा गाँव सुख से बस रहा है। 'नौ निध नाम निधान हर मैं पल्ले बद्धा छिक जीओ 'यानी मैंने नाम को कस कर पल्ले बाँध लिया, फिर आगे, 'पै कोय न किसै रआणदा" यानी अब कोई विकार आक्रमण करके नहीं सताता। 'पियालया' यानी पातालों में।

हों गोसाईं दा पहलवानड़ा। में गुर मिल उचदुमालड़ा है

मैं ख़ुदा का पहलवान हूँ । गुरु की कृपा से मेरी कलग़ी लम्बी हो गई। 'सभ होई छिंझ इकट्ठीआं दयु बैठा वेखें आप जीओ' अर्थात् आन्तरिक लोकों में सब पीर, पैग़म्बर, औलिया, अवतार, ऋषि-मुनि इकट्ठे हैं और वह कुल मालिक उनको देख रहा है। 'मल लत्थे लेंदे फेरीआं ' मल से तात्पर्य पीर-पैग़म्बर इत्यादि जो कि अन्तर में चक्कर लगा रहे हैं। 'निहत्ते पंज जुआन में गुर थापी दित्ती कंड जीओ ' जब मैंने पाँचों विकार जीत लिये तो गुरु ने मेरी पीठ ठोकी। 'मै जुग जुग दयै सेवड़ी। गुर कटी मेहडी जेवड़ी।' सेवड़ी अर्थात् में परमात्मा की सेवा करता हूँ। गुरु ने मेरी चौरासी की जंजीर काट दी है। अब मैं दुबारा जन्म न लूँगी। 'हाँ बाहुड़ छिंझ न नचऊ....'।'

8 अगस्त, 1943 को कुछ प्रोफ़ेसर व सरदार बहादुर तशरीफ़ लाये। उनके लाभ के लिये हुजूर ने 'नाम निर्णय करूँ' शब्द और 'रामा रम रामो सुन मन भीजै" और 'जिन तुम भेजे तिनै बुलाए" पढ़वाये। इस प्रकार शाम के साढ़े आठ बजे तक उनको बतलाते रहे। हुजूर ने फ़रमाया:

> चतुर चुप कर रहे, चतुर के बचन पछाने, चतुर चुप कर रहे, सभा बेगानी जाने। चतुर चुप कर रहे, चतुर जब होए अकेला, चतुर चुप कर रहे, गुरु के आगे चेला।

9 अगस्त 1943

(कुछ व्यक्ति अकेले बोले चले जाते हैं या बैठे-बैठे बातें करते रहते हैं।) एक तरख़ान निचली कोठी में ठहरा हुआ है। जब इंजीनियर साहिब उसको निकालते हैं तो कहता है कि मैं बीबी जी की आज्ञा से ठहरा हुआ हूँ जब बीबी जी निकालती हैं तो कहता है कि इंजीनियर साहिब की आज्ञा से मैं यहाँ हूँ। हुजूर ने यह कहानी सुनाकर फ़रमाया कि एक ठगनी अच्छे वस्त्र पहन कर, राजा के महलों में गई। कहने लगी, मैं बुआ जी हूँ। राजा के परवानों को बुआजी को रोकने का साहस न हुआ। रानी जी ने विचार किया कि राजा साहिब की बुआजी होगी। राजा ने समझा कि रानी साहिबा की बुआ जी होगी। राजा ने समझा कि रानी साहिबा की बुआ जी होगी। बुआ जी का आदर-सम्मान होने लगा। कई वर्ष मजे करती रही। एक बार घर से बुआ जी का सन्देश आया कि मंगलू मर गया। इस पर राजा ने शोक प्रकट किया, इस पर मन्त्री ने पूछा कि यह मंगलू कौन था ? अन्त में बुआ जी से पूछा गया तो कहने लगी कि वह तो मेरा गधा था।

9 अगस्त, 1943 शाम के सत्संग के बाद हुजूर सैर को गये और उनका काँटे पर वजन किया गया। शाम के सत्संग में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब से 'काया कामण अति सुआल्यो पिर वस्सै जिस नाले' पढ़ा गया। सुआल्यो का अर्थ है सुन्दर। गुरु साहिब का मतलब है कि मनुष्य के शरीर में परमात्मा रहता है और मनुष्य की रूह भी उसके अन्दर ही है। कहने का अभिप्राय यह है कि पित-पत्नी एक ही सेज पर लेटे हैं, परन्तु युग बीत गये, पित-पत्नी का मिलाप नहीं हुआ। इसके बाद हुजूरी वाणी में से कार्तिक का महीना पढ़ा गया, जिसमें लिखा है कि प्राणी के शरीर में बारह बड़े स्थान हैं यानी कमल हैं। हुजूर ने फ़रमाया कि मनुष्य को अपनी क़द्र नहीं, यह तो सत्पुरुष का पुत्र है। जब आत्मा पारब्रह्म में जाकर मन व माया के परदों से स्वतन्त्र होती है तो आत्मा का अपना प्रकाश बारह सूर्य का होता है। उस समय उसको गुरुमुख कहते हैं और उसे हंस गित प्राप्त हो जाती है। जैसे सुन्दर किव ने कहा है:

एक समय वन में बसते मृगराज की नार ने केहर जायो। कै कारण पाली के हाथ पड़ियो उन लाय के मेडी के सँग रलायो। भूल गयो कुल के पराक्रम को हंडू भयो हरी दूब चरायो। ऐसे ही सुन्दर आत्मा आपको भूल संग शरीर के जीव कहायो। हुजूर ने फ़रमाया कि दुनिया, फ़क़ीरों से माया के भोग और पदार्थ माँगती है, जबिक फ़क़ीरों से ऊँचे रूहानी स्थानों की यात्रा का मार्ग यानी उस यात्रा के लिये सहायता माँगनी चाहिये, जिससे इनसान दुनिया से छुटकारा पा सके, वरना दुनियादारों का यह हाल है कि दुनिया में पैदा हुए, दुनिया खाई, दुनिया भोगी, दुनिया से प्यार रहा और मर कर फिर दुनिया में ही पैदा हो गए।

एक सत्संगी ने कहा कि मुझे कारोबार की अधिकता के कारण, सत्संग में आने का समय नहीं मिलता। हुजूर ने फ़रमाया कि दुनिया के काम तो ख़त्म नहीं होंगे, हम ख़त्म हो जायेंगे। 'कारे दुनिया कसे तमाम न कर्द' यानी संसार का काम किसी ने ख़त्म नहीं किया 'धन्था किने न जितया सब धन्थे जिती' सत्संगी को चाहिये कि दुनिया का काम करता हुआ सत्संग व भजन के लिये समय निकाले। जैसे कि एक सवार घोड़े को पानी पिलाने के लिये रहट पर ले गया। घोड़ा रहट की चीं-चीं की आवाज से घबराता और पानी के पास न जाता या जब रहट बन्द हो जाता तो पानी न आता था। इसलिये घोड़े को जबरदस्ती रहट की चीं-चीं में पानी पिलाना पड़ा। ऐसे ही दुनिया के कामों का हाल है।

कल से वर्षा दिन-रात बड़े जोरों से हो रही है। डलहाँजी वाली सड़क बड़ी जल्दी रुक जाती है। आज डाक शाम के पाँच बजे आई। हुजूर ने कल से हुजूरी वाणी में से 'सुरत-संवाद' आरम्भ करा रखा है जिसका सार यह है कि किसी समय सारे संसार की रूहें कुल मालिक में समाई हुई थीं। जब मृष्टि रची गई तो जो रूहें इस समय त्रिलोकी में हैं, यह काल भगवान् के हवाले कर दी गई क्योंकि चेतन के बिना काल की सृष्टि वीरान पड़ी थी, अर्थात् इस त्रिलोकी में पहाड़, समुद्र, पृथ्वी इत्यादि तो काल ने बनाए परन्तु वृक्ष, पशु, पक्षी, हैवान, मनुष्यों के बिना सारी सृष्टि बिना आबादी के पड़ी थी। इस त्रिलोकी को बिना रूहों के कैसे आबाद करता। अब यह मूल्यवान पूँजी जो कुल मालिक दयाल ने काल को दी, काल ने बड़े प्रबन्ध व चतुरता से ऐसी घेर कर रखी है कि कोई रूह लौटकर दयाल में न जा सके, क्योंकि यदि ऐसा हो तो उसकी त्रिलोकी में चहल-पहल कम हो जाये। काल ने दयाल का पता ही नहीं दिया। सबको अपनी भिक्त में लगा दिया। इस प्रकार सारी दुनिया का ख़ुदा काल भगवान् ही है। सन्तों ने आकर दयाल का पता दिया है।

12 अगस्त 1943

'सुरत-संवाद' में यह चर्चा है कि समय के सतगुरु और सुरत-शब्द के अभ्यास के बिना इस त्रिलोकी से निकलकर जाना असम्भव है और शेष जितने कर्म-धर्म, नमाज, रोजा, संध्या, यज्ञ, तप, दान, तीर्थ, मूरत, व्रत इत्यादि हैं, इनसे चौरासी का चक्कर नहीं छूट सकता। हाँ, अच्छे कामों का बदला काल भगवान् स्वर्ग या इस दुनिया में राजा, महाराजा, सेठ-साहूकार, आलिम-फ़ाजिल, गुणी-ज्ञानी बनाकर दे देता है। परन्तु अपने दायरे से बाहर नहीं निकलने देता। सन्त ही जीव को इस दायरे से बाहर कर सकते हैं।

'सुरत-संवाद' के अन्तिम भाग में स्वामी जी महाराज ने पाँचों रूहानी मंजिलों की, जोकि प्राणी के अन्दर हैं, चर्चा की है। दूसरी मंजिल त्रिकुटी है जिसमें महाकाल ने अपना अंश रखा हुआ है क्योंकि इससे नीचे की सारी त्रिलोकी को उत्पन्न करना और प्रलय में समेट लेना उसका काम है। त्रिकुटी में गुरु का रूप शब्द होता है। इसलिये कहा है कि ''गुरु ने बताया गुरु का नाम''। सृष्टि की उत्पत्ति त्रिकुटी से होती है और उसी में समा जाती है। हुजूर ने फ़रमाया कि जो ऊपर के रूहानी देशों के हंस हैं यानी जो रूहें उन देशों में हैं, उनको अधिकार नहीं कि सतलोक या उससे परे जा सकें, क्योंकि वे हंस उन देशों की रौनक़ के लिये रखे हुए हैं। हाँ, जो रूहें इस दुनिया में सुख-दु:ख उठाकर ऊपर जाती हैं, वे अनामी तक जा सकती हैं। यह उनका विशेष अधिकार है।

12 अगस्त, 1943 को 'सुरत-संवाद' का शेष भाग समाप्त किया गया। वर्षा कल रात, आज सारा दिन और आज रात जोरों से हो रही है। सब कमरे टपक रहे हैं। कहीं-कहीं अंश, कहीं-कहीं बंस। अंश से मतलब है हहें जोकि इस दुनिया से अभ्यास करके सतलोक पहुँची। बंस वह रूहें जो हमेशा सतलोक में रही और रहेंगी।

15 अगस्त, 1943 को राय साहिब अपने बेटे के साथ पँज पुल व बकलोह के रास्ते दो घोड़ों या टट्टूओं पर सवार होकर डलहौज़ी से पठानकोट जा रहे थे कि पँज पुल के बाद टट्टू से गिरे या जैसा कि वह स्वयं बतलाते हैं कि टट्टू छतरी से डर कर नीचे फिसल गया। ऊपर से वर्षा, पास में खड्ड, सड़क पर पत्थर, बहुत ही शुक्र हुआ कि केवल बाजू में चोट आई जोकि दो-चार दिन तक

ठीक हो जायेगी। हुजूर की दया, कौतुक चर्चा के योग्य है। राय साहिब तो नौ बजे के क़रीब रवाना हो गये थे। हुजूर इसके थोड़ी देर बाद सैर को निकले। दिन साफ़ था, परन्तु अभी कोठी से बीस क़दम पर गये होंगे कि लौट आये और स्नानगृह में चले गए। सबने सोचा कि पेट में गड़बड़ी है और यह कह गये थे कि पाँच मिनट के बाद चलते हैं। परन्तु बाद में स्वयं तो भजन पर बैठ गये और सैर पर जाने के लिये मना कर दिया। बहुत-से सत्संगी व सत्संगिनें दर्शनों के लिये प्रतिदिन की तरह बरामदे में इकट्ठे हो गये थे और प्रतीक्षा कर रहे थे कि हुजूर पहले की तरह बाहर आकर दर्शन देंगे, परन्तु हुजूर बारह बजे तक भजन में बैठे रहे और अन्त में सब संगत को अपने कमरे में बुलाकर दर्शन देकर विदा किया। इसी बीच में राय साहिब चोटें खाये हुए, वापस पहुँच गये। हुजूर ने दो बजे के बाद कुछ खाया-पिया होगा। अन्त में शाम को फ़रमाया कि सूली की सूल कर दी गई है। ऐसी दया हुजूर सब पर करें जैसी राय साहिब पर की गई है।

कल शाम को महात्मा चरनदास जी के 'भिक्त सागर' में से शील का अंग लिया गया। जिसका संक्षिप्त वर्णन यह है कि तीस सद्गुणों में से चरित्रवान होना सबसे उत्तम है और यदि कोई चरित्रवान है तो शेष सब सद्गुण उसमें स्वयं ही आ जायेंगे। अन्त में लिखा है:

शील गया तो सब गया, शील गया सब झाड़। भिक्त खेत कैसे बचे, टूट गई जब बाड़ ॥ 7 हुजूर ने फ़रमाया कि काम आठ प्रकार के है : नारी स्मरण, श्रवण, पुन: दृष्टि सम्भाषण होय। गुह्मवार्ता हास्य रित पुन: स्पर्शन सोय॥ ॥

आज इतवार को बहुत-से लोग सत्संग में जमा थे। हुजूर ने श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'दुनीआ न सालाहे जो मर वंञसी" शब्द पढ्वा कर बड़ा प्रभावजनक व्याख्यान दिया और फ़रमाया कि श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की फ़िलासफ़ी बहुत ऊँची, सम्मान के योग्य और धर्मों की क़ैद से छुटकारा दिलाने वाली है। फिर फ़रमाया कि कर्मों का नियम बड़ा पेचीदा है। कभी-कभी कर्म 190

16 अगस्त, 1943 शाम को वर्षा न थी, हुजूरी वाणी में से 'गुरू गुरू मैं हिरदे धरती' पढ़ा गया। शब्द लम्बा था। आठ बज गये। हुजूर ने फ़रमाया कि सन्तमत में आदि और अन्त सबकुछ गुरु ही है। इसके बाद सैर को तशरीफ़ ले गये। कल सुबह भी हुजूर ने पोथी में से 'गुरू मोहिं अपना रूप दिखाओं या पढ़वाया था। हुजूर आजकल भजन बहुत कर रहे हैं। सारा समय भजन पर देते हैं। कल रात डाक सुनी जो तीन दिन के बाद आई थी। बहुत-सी थी। आजकल रावलपिण्डी से बहुत-से पत्र आ रहे हैं कि हुजूर स्वयं पधार कर रावलपिण्डी को निहाल करें। हुजूर का सितम्बर के दूसरे सप्ताह में उधर जाने का विचार है। इस सारी डाक से यह पता चलता है कि दुनिया के लोग किस प्रकार दुःखी हैं। एक मुसलमान साहब का पत्र लाहौर से आया है, जो हुजूर का सत्संगी नहीं है। उसकी दर्द-भरी कहानी सुनकर सभी ने हुजूर से प्रार्थना की कि उसकी सहायता करें।

17 अगस्त, 1943 को भादों की संक्रान्ति थी। पहले तो प्रात: नौ बजे श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से गुरु अर्जुन देव जी का बारहमाहा पढ़ा गया। फिर स्वामी जी महाराज की वाणी में से भादों का महीना पढ़ा गया। इसके बाद शाम के चार-पाँच बजे के बीच श्री चड्ढा फ़िरोजपुरी, श्री प्यारे लाल तथा महन्त जी ने, जोकि डलहीजी में रेडक्रॉस की संगीत पार्टी में आए थे, संगत को अपने जौहर दिखाये। पहले श्री सूद ने रूढ़ानियत के गीत हारमोनियम पर गाये, जिनमें से केवल एक शेर याद है।

लाख की मैंने जहन्तुम की तदबीर, तेरी रहमत ने गवारा न किया।

इसके बाद श्री महन्त ने हँसी और रोने के विषय पर बड़ी टिप्पणी की और क्रियात्मक ढंग से हँस और रोकर अपनी थ्योरी को प्रमाणित किया। उनकी थ्योरी पाँडित्यपूर्ण है और वह यह है कि दुनिया में संस्कृत के अतिरिक्त किसी भाषा की वर्णमाला के अक्षर हँसने और रोने को नियमानुसार प्रगट नहीं करते। हँसने में अ, आ से लेकर संस्कृत के सारे स्वर और सारे व्यंजन प्रयोग में आये हैं। जैसे हँसी कभी-कभी आ हा ऊ हू इत्यादि से शुरू होती है। कहकहा लगा कर हँसने में, क्योंकि जोर ज्यादा लगता है, यह सिर्फ़ जवानों का काम है। कहकहा क से शुरू होता है। क, ख के पाँच शब्द निकालने में सबसे अधिक जोर लगता है और यह जोर बाक़ी वर्गों को निकालने के लिये कम होता चला जाता है। अन्त में प वर्ग के अक्षर बोलने में सबसे कम जोर लगता है। वृद्धे अधिकतर हँसी और बोल-चाल में प वर्ग के अक्षर इस्तेमाल करते हैं। इसलिय वृद्धों को फूसट कहते हैं और बुद्धिया को फा-फाँ क्योंकि वह फा-फाँ करके बोलती हैं। मुँह में दाँत नहीं होते। वृद्धे हँसने में भी यही अक्षर इस्तेमाल करते हैं और दूध पीता बच्चा भी जिसके मुँह में दाँत नहीं होते, पहले पहल माँ का शब्द मुँह से निकालता है क्योंकि यह शब्द बोलना उसके लिये सबसे आसान है परन्तु उसकी माँ सोचती है उसको याद कर रहा है। हँसी में अ-आ स्वर से आरम्भ करके श प स ह पर समाप्त होते हैं। परन्तु रोने में उसका उल्टा होता है। जब कभी किसी को बुरा समाचार मिलता है तो हाय इत्यादि कहता है।

श्री महन्त ने बड़ी अच्छी तरह क्रियात्मक ढंग से अपनी थ्योरी को प्रमाणित करके दिखाया और यह भी कहा है कि कुछ शक्लें जन्म से ही रोनी होती हैं। वह ख़ुशी को भी रोने की तरह प्रगट करती हैं। इसी प्रकार श्री महन्त ने भी क्रियात्मक ढंग से दिखाया कि किस प्रकार कुछ रोनी सूरतें जब किसी मित्र से मिलकर ख़ुशी को भी प्रगट करती हैं तो उनके चेहरे पर रोने के चिह्न दिखाई पड़ते है। कुछ सूरतें जन्म से मुस्कान लिये होती हैं और जब कभी किसी की मृत्यु या दुर्घटना की चर्चा भी करती हैं तो ऐसा लगता है कि हँस रही हैं।

श्री महन्त के बाद श्री चड्ढा ने चार भाषाओं यानी अंग्रेजी, उर्दू, संस्कृत और पंजाबी के वर्णमाला के अक्षरों को को अच्छी तरह गाने में सुनाया, फिर मिठाइयों और फलों के नाम, जोकि गायन विद्या में कभी नहीं आते, वह भी गाकर सुनाये। अन्त में मुकलावा (गौणा) सुनाया कि किस प्रकार पुराने समय में जविक लड़िकयों की शादी छोटी आयु में की जाती थी और मुकलावा (गौणा) शादी के तीन-चार साल बाद किया जाता था; दुल्हन नायन, देवर, ससुर के साथ अपनी सुसराल जाने से इनकार करती थी परन्तु जब बाबू यानी पित लेने आता था तो कैसे बनाव-सिंगार करके जाती थी। सुनने वाले बड़े ख़ुश हुए। फिर अंग्रेज़ी गाना जिसमें कोई अक्षर नहीं आता था केवल 'स्वर' ही था, सुनाया। उसके बाद श्री सूद ने 'सुथरे का माँगने का' खेल दिखाया। सब सुनने वाले बड़े ख़ुश हुए। हुजूर ने उनको आत्मिक विषय पर कुछ व्याख्यान दिया और अन्त में प्रसाद देकर विदा किया।

18 अगस्त, 1943 की शाम को सत्संग में घट रामायण में से संवाद प्रियलाल पढ़ा गया। तुलसी साहिब ने प्रियलाल को कहा कि गुरु दो प्रकार के होते हैं। जगत-गुरु और सन्त-गुरु या यूँ कहो कि दयाल-गुरु और देह-जात या कर्म-गुरु। जगत-गुरु तो सांसारिक सम्बन्ध हैं, जैसे माँ-बेटे का या ससुर-दामाद का। इससे कोई रूहानी लाभ नहीं होता। हाँ, गुरु जो चेले का धन माल लेता है, उसको अगले जन्म में बेटा, गधा, बैल, केंट इत्यादि बनकर देना पड़ता है। ऐसा गुरु कर्मों के घेरे में है। इसलिये शिष्य की मुक्ति कैसे कर सकता है। दूसरे सन्त, गुरु या दयाल-गुरु जोकि स्वयं कर्मों के चक्कर से बाहर होते हैं और दूसरों को उस चक्कर से निकाल सकते हैं। वास्तव में गुरु का रूप शब्द है और चेला आत्मा है। गुरु तो साक्षात् भगवान् हैं।

'सतगुरु सत्पुरुष आप है स्वामी' जिसका पता केवल सन्त देते हैं। वरना सारी दुनिया का परमात्मा निरंकार निर्वाणी या काल है, जिसकी तीन कला ब्रह्मा, विष्णु और शिव हैं और जिसको ज्योति-स्वरूप भगवान् कहा है। उसके दस अवतार आये हैं। उसको शिवशिक्त या पुरुष प्रकृति कहा है। इस दुनिया की सब रूहें उसके सुपुर्द हैं। वह उनको अलग-अलग देहों में डाल कर, सुख-दु:ख दे सकता है परन्तु नाश नहीं कर सकता। सन्त या कामिल फ़क़ीर उन रूहों को ज्योति-स्वरूप भगवान् से छुड़ाने के लिये आते हैं।

सत्संग के बाद इधर-उधर की बातें होती रहीं। हुजूर ने फ़रमाया कि स्वामी जी की आयु तीस वर्ष की थी, जब हुजूर साहिब जी महाराज तुलसी साहिब ने चोला छोड़ा। स्वामी जी की माता और दादी, तुलसी साहिब की प्रेमी-सेविकाएँ थीं और तुलसी साहिब अक्सर स्वामी जी के घर आया-जाया करते थे। एक बार हुजूर ने एक बीबी धनवन्ती को, जोिक अस्सी-नब्बे साल की थी, देखा। उसने बताया कि बचपन में उसने तुलसी साहिब को स्वामी जी के घर आते देखा था। परन्तु उस समय उसको यह समझ नहीं थी कि यह कोई सन्त-महात्मा हैं। तुलसी साहिब ने स्वामी जी की माता को यह वर भी दिया था कि तुम्हारे घर परम सन्त पैदा होंगे, जिनसे संसार को बड़ा लाभ होगा।

19 अगस्त, 1943 को 'घट रामायण' में से गुसाई प्रियलाल जी का प्रंसग चलता रहा। प्रियलाल जी ने कहा कि मैं तो कृष्ण का उपासक हूँ और ठाकुरों के बिस्तर, बर्तन-भोजन, जिनसे ठाकुरों को भोग दिया जाता है, किसी को छूकर, अपवित्र नहीं करने देता। तुलसी साहिब ने फ़रमाया कि जब तुम जानते हो कि परमात्मा सर्वव्यापक और सर्वशक्तिमान है तो जो तुम्हारे अन्दर परमात्मा है उसको मूर्ति के अन्दर वाले परमात्मा से अलग व नीचा समझकर, परमात्मा का अपमान करते हो क्योंकि तुम कहते हो कि हम किसी प्राणी को, ठाकुरों के खाने-पीने की चीजों को छूने नहीं देते। इसका मतलब यह है कि मनुष्य मूर्ति से निकृष्ट सिद्ध हुआ। मूर्ति पवित्र, मनुष्य अपवित्र। यह तुम्हारी कैसी भूल है। फिर जड़ को चेतन से बड़ा मानते हो। मूर्ति-पूजा तो किसी वेद या शास्त्र में नहीं बताई गई। यह तो नीच निकृष्ट धर्म है। इसको प्राणी ही बनाता है, प्राणी ही पूजता है। प्राणी में ही पाँच तत्त्व पूर्ण हैं, मूर्ति में केवल एक तत्त्व है। तुम पाँच तत्त्व वाले का अपमान करके एक तत्त्व वाले का आदर करते हो। वेदों-शास्त्रों में लिखा है 'जो ब्रह्मण्डे सोई पिण्डे' यानी जो सृष्टि में है वही मनुष्य के शरीर में है। इस प्रसिद्ध नियम को झूठा ठहराते हो। स्वयं परमात्मा मनुष्य के शरीर में रहता है परन्तु मूर्ति जड़ है। असली मन्दिर या ठाकुरद्वारा मनुष्य का शरीर है। उसको अपवित्र ठहरा कर मूर्ति की पूजा करते हो। अपने अन्दर से परमात्मा को नहीं खोजते। मूर्तियों में परमात्मा को ढूँढते हो। इसके बाद श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से एक शब्द पढ़ाया गया जो कि मैंने पहले कभी नहीं सुना था :

ना भैणां भरजाईआं ना से ससुड़ीआंह। सच्चा साक न तुटई गुरु मेले सहीआंह।

संसार के सब सम्बन्धी नाव में बैठने वाले यात्रियों की तरह हैं। पहले तो नाव में बड़ी चहल-पहल होती है। परन्तु जब किनारा आया तो सब अपने-अपने रास्ते चले जाते हैं। इसी प्रकार दुनिया के सब सम्बन्धी अपने-अपने समय पर साथ छोड़कर चले जाते हैं। परन्तु गुरु और शब्द से मृत्यु के बाद भी जुदाई नहीं होती। 'पत्तण कूके पातणी वंञो धुक विलाड़ 'य यानी मल्लाह पुकारता है कि जल्दी दौड़ के चले आओ। 'पार पवंदड़े डिठ में सतगुरु बोहिथ चाढ़ '' यानी मैंने देखा है जो सतगुरु की नाव पर बैठ गये वे पार हो गये जैसे कि गुरु मल्लाह की तरह घाट पर खड़ा हुआ, आवाज दे रहा है : आओ जल्दी करो, जिसने पार जाना है। मैंने देखा है कि जो सतगुरु की नाव पर सवार हो गये, वे पार हो गये।

हिकनी लदया हिक लद गए हिक भारे भर नाल। जिनीं सच वर्णजया से सच्चे प्रभ नाल।

कोई मर गया, कोई मरने की तैयारी कर रहा है, कोई बोझ से दबा हुआ है। जिन्होंने सच यानी, शब्द और नाम की कमाई की वे सच्चे ख़ुदा के पास गये। तुलसी साहिब का प्रसंग फिर जारी रहा। प्रियलाल ने कहा था कि मेरा इष्ट 'राधाकृष्ण' है। उसके जवाब में हुजूर तुलसी साहिब ने फ़रमाया कि भाई देख, भागवत् पुराण में लिखा है कि चार पाण्डव नरक में गये और युधिष्ठर को स्वर्ग मिला। स्वयं ऊधो जी ने भी जब कृष्ण से मुक्ति माँगी तो ऊधो को क्या जवाब मिला कि जाकर तप करो। अत: कहते हैं कि ऊधो जी ने बद्रीनारायण में जाकर तप किया परन्तु किसी पुस्तक में नहीं आया कि उसके बाद ऊधो जी की क्या गति हुई। तुमने तो कृष्ण जी को देखा भी नहीं। तुम उनकी मूर्ति से मुक्ति की आशा कैसे करते हो ? भिक्त करके अन्दर शब्द को पकड़ो तो मुक्ति होगी।

22 अगस्त, 1943 को वर्षा होती रही।

23 अगस्त, 1943 को कड़ी वर्षा और ठण्ड है।

25 अगस्त, 1943 को वर्षा अभी हो रही है। सूर्य कई दिनों से दिखाई नहीं दिया। कल से सत्संग में कबीर साहिब के 'अनुराग सागर' की कथा आरम्भ की गई, जिसको हर धर्म के रूहानियत के इच्छुक लोगों को पढ़ना चाहिये। इसके बिना सन्तमत तथा काल और दयाल के भेद की पूरी तरह समझ नहीं आ सकती। इस भेद के ज्ञान से संसार के लगभग सब धर्म, सिवाय सन्तमत या मजहबे फुक़रा के, ख़ाली नज़र आते हैं। सब मत-मतान्तर काल को सम्पूर्ण भगवान् और कुल मालिक मानकर उसकी पूजा कर रहे हैं।

उनको उस दयाल का भेद मालूम नहीं। न यह पता है कि काल भगवान् का दुनिया से व उसकी रूहों से क्या सम्बन्ध है और न ही यह कि दयाल का इनसे क्या सम्बन्ध है।

कबीर साहिब ने इस पुस्तक में अपने गुरुमुख शिष्य धर्मदास को सम्बोधित करके समझाया है। पहले तो आरम्भ में कामिल मुर्शिद यानी सतगुरु की स्तुति और प्रार्थना की है। फिर धर्मदास के प्रश्न पर अनुरागी यानी दयाल के प्रेमियों की विशेषताएँ बताई गई हैं। उदाहरणतया वे सती या परवाने की तरह होते हैं जो तन, मन और धन, कामिल मुर्शिद पर बिलदान कर देते हैं। फिर कहा है कि मुरीद को मुर्दे की तरह होना चाहिये, तब सफलता मिलेगी। जैसे पृथ्वी या धरती है वैसे ही मुरीद को होना चाहिये। धरती पर चाहे कोई चन्दन लगाये या उस पर थूके, वह किसी का सुख या दुःख नहीं मानती। ऐसे ही मुरीद को होना चाहिये कि दुनिया का भय व आशा छोड़कर, जो गुरु या मुर्शिद आज्ञा दे, उस पर चले। जैसे हुजूर स्वामी जी महाराज ने प्रेमियों के विषय में कहा है:

जैसे जग में महा भिखारी, दीन गरीबी उन सब बिधि धारी। कोई उसको कुछ कह लेवे, मन को अपने जरा न देवे। तुम सत्संग कर क्या फल पाया, उनका सा भी मन न बनाया।

बिलकुल ऐसे ही गुण कबीर साहिब ने सच्चे सेवक में बताए हैं। कबीर साहिब की साधु यानी साधना करने वाले जिज्ञासु लोगों के लिये यह हिदायत है कि उनको पाँचों ज्ञानेन्द्रियाँ और पाँचों कर्मेन्द्रियाँ अपने वश में रखनी चाहियें और विशेषकर काम-इन्द्री, जिस के बिना अन्दर आत्मा की रसाई नहीं हो सकती।

27 अगस्त, 1943 को राय साहिब लाला गुलवन्त राय जी 17 दिन ठहरने के बाद चले गए। वर्षा लगातार हो रही है। आज क्योंकि सत्संग में शाम को कई गैर-सत्संगी सज्जन पुरुष आये थे जिनको 'अनुराग सागर' की कथा से अधिक लाभ होने की आशा नहीं थी, इसलिये हुजूरी वाणी में से 'सतगुरु का नाम पुकारो 126 पढ़ा गया। हुजूर ने फ़रमाया कि नाम तो सब जपते हैं और न करने से कुछ करना अच्छा है क्योंकि मनुष्य जन्म दुर्लभ है, बार-बार हाथ नहीं आता।

मगर सतगुरु से उसका कमाया हुआ नाम प्राप्त करके उस नाम का सिमरन करना चाहिये। सिमरन ऐसा कि मन बाहर न जाये और ध्यान दोनों भवों के बीच रहे (जैसा कि गीता में भी बताया है)। इसी विषय में हुज़ूर ने एक कहानी कही कि एक व्यक्ति, एक महात्मा की बारह वर्ष तक सेवा करता रहा। बारह वर्ष के बाद, उन्होंने एक नाम सिमरन करने के लिये दिया। जब वह वापस जा रहा था तो देखा कि दूसरे व्यक्ति भी वही नाम जप रहे हैं। उसने दिल में कहा कि मेरे साथ उस महात्मा ने बड़ा धोखा किया कि बारह वर्ष सेवा की और अन्त में वही नाम दिया जो ये लोग जप रहे हैं। वह लौटकर गया और महात्मा से शिकायत की। महात्मा ने कहा कि जाओ, अन्दर लोहे के सन्दूक में पारस पड़ा है, उसको उठा लाओ। इस पर वह व्यक्ति बोला कि यह और धोखा है, क्योंकि यदि पारस लोहे से छू जाये तो लोहा सोना बन जाना चाहिये। लोहे का सन्दूक पारस को छूकर सोना क्यों नहीं हुआ। अन्त में, वह व्यक्ति अन्दर से सन्दूक उठा लाया तो देखा कि अन्दर पारस दो तीन काग़जों में लिपटा पड़ा है। बस, महात्मा ने कहा कि यही अन्तर है। तुम्हें अपना कमाया हुआ नाम दिया है। जो लोग बिना गुरु के यही नाम जप रहे हैं, ख़ाली रहेंगे।

फिर फ़रमाया कि प्राणायाम से मन को क़ैद करना ऐसा ही है जैसे कि एक बदमाश को हथकड़ी लगाकर लाना। जब हथकड़ी खोल दी, बदमाश भाग गया। सन्त बदमाश को समझा-बुझा कर वश में लाते हैं और फिर वह सदा के लिये क़ाबू में आ जाता है।

28 अगस्त, 1943 को भी वर्षा हुई। केवल दोपहर को एक-दो घण्टे वर्षा रुकी। शाम को हुजूर ने 'अनुराग सागर' की कथा फ़रमाई। इस कथा का वर्णन करने से पहले यह बताना जरूरी है कि सुनने वाले, इन रूहानी बातों को अपनी स्थूल देह व सीमित बुद्धि से समझने का प्रयत्न न करें। सन्त कबीर ने सृष्टि के बनने का आँखों देखा इतिहास वर्णन किया है। उसको वेदों तथा दूसरी धार्मिक पुस्तकों से मिलाने का प्रयत्न भी निष्फल रहेगा क्योंकि ये सब किताबें, जिनको दुनिया के धर्म आसमानी और इलहामी कहते और समझते हैं, माया के देशों-स्थूल, सूक्ष्म, कारण तक पहुँचकर समाप्त हो जाती हैं। उनको, उनसे परे पवित्र

रूहानी देशों की उत्पत्ति और वहाँ के जीवों आदि की रचना का पता नहीं। इसलिये जिन लोगों ने वे रूहानी देश देखे नहीं उनका उन रूहानी देशों की रचना व वहाँ रूहों की बनावट आदि को, अपनी स्थूल देह पर लागू होने वाले क़ानूनों से तुलना करने की कोशिश करना व्यर्थ होगा।

कबीर साहिब कहते हैं कि देखो, धर्मदास! काल और माया रूपी ठिगनी ने बहुत भारी जाल बिछाया हुआ है। इन ठगों ने सारा संसार ठग लिया है। जीवों को आशा दे-देकर रोक रखा है। संसार में बड़े-बड़े बहादुर, सूरमा, दानी, त्यागी इत्यादि हुए, सब काल के जाल में रहे। सब लोग संसार के भोगों में उलझ गये और कोई उलट कर अपने घर नहीं पहुँचा। उसके बाद माया ने पक्षी, ब्रह्मा ने झिल्ली से लिपटकर पैदा होनेवाले यानी चौपाये, इनसान इत्यादि, विष्णु ने कीड़े, मकोड़े इत्यादि बनाये और शिवजी ने वृक्ष वनस्पति इत्यादि बनाई तथा इस दुनिया का काम चलने लगा। नौ लाख प्रकार के पानी के जीव, चौदह लाख प्रकार के पक्षी, सताईस लाख प्रकार के कीड़े-पतंगे, तीस लाख प्रकार के वृक्ष, घास, फूस और चार लाख प्रकार के इनसान, जानवर, देवी-देवता इत्यादि बनाये। मनुष्य में पाँचों तत्त्व पूरे हैं। जानवरों में आकाश तत्त्व नहीं है। पिक्षयों में मिट्टी और आंकाश तत्त्व नहीं है। कीड़े-मकोड़ों में मिट्टी, आकाश और पानी नहीं है और वनस्पति में सिवाय पानी के और कोई तत्त्व नहीं है।

इनसानों की शक्लों और आदतों में इसिलये अन्तर है कि जो इनसान जिस योनी या खानी से आता है उसकी आदतें साथ लेकर आता है। अत: जो पिक्षयों से मनुष्य बनते हैं, उनका मन पिक्षयों की तरह चंचल होता है। वे कामी, क्रोधी, दिरद्री, आलसी और नींद के प्यारे होते हैं। उनको चोरी और निन्दा पसन्द है। घर में झाड़ियों को आग लगाते हैं और भूत-प्रेतों को पूजते हैं। न ज्ञान-ध्यान की परवाह, न गुरु की। कपड़े मैले कुचैले पहनते हैं। नहाते नहीं, आँखों में नींद और मुँह से राल टपकती है। जो कीड़े-मकोड़ों से मनुष्य का जन्म पाते हैं, उनको शिकार खेलना, मांस खाना, सभा में झूठ बोलना, दान-पुण्य व दया-धर्म से घृणा, माथे पर टीका लगाना पसन्द होता है। उनके दाँत लम्बे होते हैं। जो वनस्पित से मनुष्य योनि में आते हैं वे चिड़चिड़े स्वभाव वाले होते है। राजा की नौकरी करना, सिपाही बनना, तुरेंदार पगड़ी बाँधना, घोड़े की सवारी करना, पराई औरतों से ताक-झाँक करना पसन्द होता है। वे खाते-खाते सो जाते हैं। जो जानवरों से मनुष्य योनि में आते हैं वे धर्म वाले, तीर्थ और भजन के चाहने वाले, गुरु के भक्त, धार्मिक पुस्तकों को मानने वाले, संसार के धन व स्त्री का सुख भोगने वाले, अच्छा भोजन, साफ़ पोशाक़, दान-पुण्य करनेवाले होते है। उनकी आँखों में रोशनी होती है। अधिकतर गाय के पेट से उत्पन्न होने के बाद मनुष्य जन्म पाते हैं। इसलिये हिन्दू शास्त्रों में गाय को पवित्र कहा है। मनुष्य से जो मनुष्य-जन्म में आते हैं वे बहादुर, निर्भय, मोह-माया से स्वतन्त्र, निर्दा, चुग़ली से मुक्त, ज्ञान-अज्ञान के अन्तर को जानने वाले होते हैं।

2 सितम्बर से 19 सितम्बर, 1943

हुजूर की तबीयत दो-तीन दिन से बहुत ख़राब है। 2 सितम्बर के बाद सत्संग में नहीं पधार सके। 2 सितम्बर को तबीयत बहुत ख़राब थी, फिर भी सत्संग करते रहे। इसके बाद रात को बुख़ार हो गया, जो अभी तक नहीं उतरा। बलगम भी है और रात को बुख़ार ज्यादा रहा। डॉक्टर का कथन है कि फ्लू का हमला है। मुझे भी ऐसा ही लगता है। एक बीमार सत्संगी की ख़बर लेने गये थे शायद वहीं से ले आये। प्रतिदिन रोग बढ़ता जा रहा है। डॉ. ओम प्रकाश साहिब बड़े प्रेम और श्रद्धा से इलाज कर रहे हैं। दिन-रात में तीन-चार बार फेरा डालते हैं। हुजूर को खाँसी हो रही है। बोल भारी है; गले में ख़राश है; नाक में साँस रुक कर आता है और बुख़ार है। दो और तीन सितम्बर को बुख़ार 103 डिग्री तक हो गया और उस पर पेट में जलन की वही पुरानी शिकायत भी बहुत बढ़ गई। ऐसा मालूम होता है कि जैसे हुजूर के पेट में बहुत सख़्त दर्द है और रात को बेचैनी में कभी लेटते हैं, कभी पलंग पर उठ कर बैठ जाते हैं। बुख़ार सौ दर्जे से नीचे होता ही नहीं। डॉक्टर साहिब बहुत कोशिश कर रहे हैं। हुजूर फ़रमाते हैं कि भादों का सारा महीना, उनकी सेहत के लिये ख़राब है। हुज़ूर की बर्दाश्त हद से ज़्यादा है। डॉक्टर साहिब सोडा बैइकार्ब के पानी से गरारे करवाते हैं तो हुजूर पानी को गले तक भी नहीं जाने देते। जब कहा जाता है कि गले में गरारे करो तो फ़रमाते हैं कि पानी अन्दर नहीं जाता है। जब Tinc. Benzoin (लोबान अरिष्ट) की भाप देते हैं तो दम

घुटने लगता है परन्तु तकलीफ़ को सहन करने की आदत कमाल की है। पेट में बहुत दर्द होता है परन्तु कभी मुँह से हाय की आवाज नहीं सुनी। हाँ, इतना कहते हैं कि जुकाम और बुखार से इतना कष्ट नहीं होता जितना पेट दर्द से होता है। लाहौर के योग्य डॉ. महाराज कृष्ण ने देखा और रक्त-चाप (Blood Pressure) को देखकर कहा कि इसके अनुसार आपकी आयु 60 वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिये। दिल की धड़कन भी ठीक है। 693 नम्बर की गोलियाँ देते हैं जिससे फेफड़े ठीक रहें। फेफड़े बिलकुल साफ़ हैं। डॉक्टर साहिब छाती, पीठ और पेट पर मालिश करते हैं। हुजूर ने फ़रमाया कि हमें जुशांदा उबाल कर दो, जिसकी हमें पहले से आदत है। अतः बनफशा छ: माशे, मुलहटी तीन माशे, बीदाना तीन माशे, उन्नाव तीन दाने उबाल कर देते हैं, दूध में ग्लूकोज खाँड डालकर देते हैं और पानी में भी ग्लूकोज डालते हैं। जुशांदे ने अपना प्रभाव दिखाना शुरू कर दिया है। सुबह को पाखाना अच्छी तरह आने लगा है। 6 सितम्बर को बुखार भी 100 डिग्री से अधिक नहीं हुआ। पेट के लिये कैल बिसमा पानी में घोलकर देते हैं।

7 सितम्बर, 1943 को सुबह हुजूर का बुख़ार 98.5 डिग्री हो गया। सारी रात नींद भी आई और सुबह दस्त भी खुलकर आया। आज सब सत्संगी ख़ुश हैं। हुजूर बिस्तर छोड़कर मुलाक़ात के कमरे में, सोफे पर बिराजमान हैं। ज्यादा बोलना डॉक्टरों ने बन्द कर रखा है। राधाकृष्ण मिलक साहिब ख़ूब सेवा कर रहे हैं। रात के ग्यारह-बारह बजे अपने घर जाते हैं। सुबह नौ बजे आ जाते हैं। आज हुजूर ने आजा दी कि डेरे में सत्संग बन्द कर दिया जाये और सब सत्संगियों को पत्र डील दिये जायें कि कोई भी 26 सितम्बर के सत्संग पर, डेरे आने की तकलीफ़ न करे। न कोई नाम लेने के लिये आए। हुजूर की सेहत अत्यधिक कमज़ोर है। मेरा विचार है कि अभी ज्वर एक दर्जा और गिरना चाहिये। हुजूर का पहले जैसा स्वास्थ्य होने के लिये काफ़ी समय लग जायेगा।

9 सितम्बर, 1943 सुबह को हुजूर का बुखार 98 डिग्री पर था और सब लोग ख़ुश थे। सरदार सिहब सरदार भगत सिंह जी और वैद्य सिहब जालन्धर से शाम के तीन बजे पधारे। शाम को पाँच बजे मैं हुजूर को जरूरी डाक सुनाने गया तब सरदार सिहब हुजूर को उर्दू का समाचार-पत्र पढ़कर सुना रहे थे। उस समय हुजूर ने कहा कि सर्दी महसूस हो रही है। हमारे पलंग वाले कमरे में 200

10 सितम्बर 1943

अँगीठी जला दो ताकि कमरा गर्म हो जाये। अतः हुजूर कमरा गर्म होने पर अपने पलंग पर लेट गये, परन्तु सर्दी की सख़्त शिकायत करते रहे। उनके शरीर को सेक भी दिया गया और गर्म पानी की बोतल भी रखी गई परन्तु सर्दी है कि किसी तरह रुकती ही नहीं। अन्त में शाम के लगभग आठ बजे किसी तरह शरीर गर्म हुआ तो पता चला कि 103 डिग्री का बुखार धीरे-धीरे 100 डिग्री से थोड़ा ऊपर रह गया।

10 सितम्बर, 1943 सुबह को बुख़ार 98 डिग्री था मगर कमजोरी हद से ज्यादा थी। हुजूर स्वयं मनीऑर्डरों पर हस्ताक्षर न कर सके। दोपहर के बाद मुझे बुलाया कि हमें अभी आसौज की संक्रान्ति तक तकलीफ़ रहेगी। वहाँ मलिक राधाकृष्ण और सरदार भगत सिंह जी भी थे। इसके बाद डॉक्टर बीड़ामल साहिब ने नब्ज़ देखी तो चिन्ता हुई। अमृतसर से एक योग्य डॉक्टर को भी सलाह के लिये बुलाया गया। उन्होंने दिल को ताक़त देने के लिये दवाई बताई। हुजूर को रात के बारह बजे तक तो आराम रहा, परन्तु दो बजे से चार बजे तक बेचैनी रही। कई बार लेटे और कई बार बैठे। लेटे-लेटे भी करवट बदलते रहे। अन्त में चार बजे के लगभग उठकर बैठ गये। उसके बाद हालत कुछ सुधर गई और लेट गये। हाँ, हुजूर ने कल शाम फ़रमाया कि मेरे दिल में न बेटों का मोह है न किसी और का, जब बुलावा आये, मैं जाने को तैयार हूँ , बल्कि मैं तो जाना चाहता हूँ। हम सबने विनती की कि ऐसा नहीं होना चाहिये। आप सौ वर्ष की आयु तक तो इस दुनिया में रह कर, हम लोगों को लाभ पहुँचावें। मौलाना रूम ने कहा है :

> मरग कि अज़ ऊ जुमला, ब-हैबत दर अन्द, मे-कुनन्द ई, क़ौम बर ऊ रीशख़न्द।

यानी मौत जिससे सब डरते हैं, सन्त उस पर हँसते हैं।

यह आँखों देखा है कि केवल सन्तों ने ही मौत पर विजय पाई है, वरना सब इस दुनिया से रोते हुए गए हैं। रात को 11 बजे हुजूर स्वामी जी महाराज के सार बचन में से 'दर्शन की प्यास घनेरी। चित तपन समाई 127 सरदार भगत सिंह से पढ़वाई। रात का समय था, शोर बिलकुल नहीं था, इसलिये बड़ा आनन्द आया। यह विरह और वियोग की उच्चकोटि की वाणी है।

12 सितम्बर, 1943 को हुज़ूर को कुछ आराम रहा। रात को हुज़ूरी वाणी में से 'मैं सतगुरु संग करूँगी आरती 🕫 और श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'अंदर सच्चा नेहों लाया प्रीतम आपणै 29 पढ़ा गया। अभी तक पूरा-पूरा आराम नहीं हुआ। सरदार भगत सिंह ने रात हुजूर को जो ग़जल स्वयं पढ़कर सुनाई, नीचे इसलिये लिखी जाती है कि उसमें रास्ते का भेद और मारफत के नुक्ते मिलते हैं:

करके पैदा महफ़िले अरजो समा,

ख़ुद ख़ुदाए पाक रहता है जुदा। उसके मिलने की है गो सबको उम्मीद,

पर नहीं होती मुयस्सर उसकी दीद। जब वह इनसानों को अजरोह अता,

साथ अपने है मिलाना चाहता। पैकरे खाकी में होकर आशकार,

करता है मुर्शिद की सूरत अख़्तयार। शक्ले इन्सां में वह आता है नज़र,

पर नहीं होता हक़ीक़त में बशर। पत्थरों को पूजता है इक जहाँ,

तीर्थो पर है फ़िदा ख़ुर्दो कलाँ। ग़ैर मुमिकन है मगर उसका विसाल,

कोई उसको देख पाए क्या मजाल। फिर रहे हैं सैकड़ों फ़ाज़िल व पीर,

दहर में मिलती नहीं जिनकी नज़ीर। देख लें उसको बहुत दुश्वार है,

लाख वह कोशिश करें बेकार है। हाँ वह ख़ुद चाहे तो क्या मुमिकन नहीं, उसकी दीद और वसल ना मुमिकन नहीं। आदमी के भेस में हो गर ख़ुदा, सख्त मुश्किल है उसे पहचानना। गरचे होता है वह जाते किब्रिया, खुद को हरग़िज भी नहीं कहता खुदा।

ख़ुद जो मालिक रूप होता है सदा, रूहों को मालिक से देता है मिला।

देता है रूहों को उल्फ़त का सबक़,

उनके मालिक की मुहब्बत का सबक्र।

आँखों के पीछे जो इक खिड़की है तंग,

खोलने का उसको सिखलाता है ढंग।

यह जो हैं जीनत तराज़ें आसमाँ,

मेहरो माहो अञ्जमो सय्यारगाँ।

उनके पीछे होता है उसका वजूद,

है पसे परदा उसी की बस नमूद।

जब कभी रूहें पहुँचती हैं वहाँ,

रहनुमा बनता है उनका बे गुमाँ।

हल वही करता है उनकी मुश्किलें,

तै कराता है वही सब मंजिलें।

जब हजारों बत्तियों की रोशनी,

सर बसर बनती है मशअल राह की।

रूहों को सूरज में ले जाता है वह,

सरमदी पैग़ाम दे जाता है वह।

करता है उस चाँद को उनका मर्की,

रोशनी का जिसकी अन्दाजा नहीं।

जिस जगह पर आबे कौसर है रवाँ,

साफ़ रूहें पाक होती है वहाँ।

साथ ले चलता है फिर जुलमात को,

दिन जहाँ कहते हैं आधी रात को।

रोशनीए पीरे कामिल के सिवा,

उस जगह होती नहीं कोई ज्या।

उस जगह काफ़ी नहीं ख़ुद रूह की,

बारह सूरज के बरावर रोशनी।

रूहें तै करती हैं जूँ जूँ रास्ता,

उनकी अपनी बढ़ती जाती है ज्या।

ख़त्म हो जाती है जब राहे तलब,

जा पहुँचती हैं मुक़ामें हक़ में सब।

उस जगह होती है रूहें पाक की,

सोलह सूरज के बराबर रोशनी।

उस जगह सूरज से लाखों आफ़ताब,

ला नहीं सकते ज्याए हक्र की ताब।

होती है ऐसी हक्रीक़त आशकार,

शकले हक्र करता है मुर्शिद अख़्तयार।

उस जगह आता है यह दिल को यकीं,

फ़रक कुछ हक्र और मुर्शिद में नहीं।

मुशिर्दे कामिल छुपाता है भला,

अपने दीवानों से अपना रास्ता।

जिक्र से रहती हैं रूहे मुन्तशिर,

आँख की पुतली के पीछे मुन्तज्ञिर।

और मुर्शिद के तसव्वर से दवाम,

होती है आदत ठहरने की मदाम।

203

मुशिंदे कामिल जो आए हैं कभी,
होके जीनत महफ़िले आफ़ाक़ की।
रूहों को दिखला के इक राहे अमल,
ख़ुद मिला देते हैं हक से बर महल।
मजहबों से कुछ नहीं मतलब उन्हें,
होते है यकसाँ मजहिब सब उन्हें।
वह न मजहब गर हैं न मजहब शिकन।
मजहबे मौला है उनका पैरहन।

204

आज 16 सितम्बर, 1943 को भादों का अन्तिम दिन है। सरदार हरबन्स सिंह और सरदार पुरुषोत्तम सिंह दो दिन से तशरीफ़ लाये हुए हैं। अभी भी हुजूर को बुख़ार 99 डिग्री तक हो जाता है। खाँसी भी है। सिवाय हाँलिंक्स दूध, गाय का दूध या ग्लूकोस के शरबत के, कुछ और खाने को नहीं दिया जाता। जो लोग दर्शन करने आते हैं, उन्हें बातचीत करने का हुक्म नहीं। डाक में आये आवश्यक पत्रों का ख़ुलासा जुबानी बताया जाता है। मौसम अभी तक बादलों वाला है। सर्दी बढ़ती जा रही है। डलहाँजी में आजकल जुकाम, इंफ़्लुएंज़ा और मलेरिया की बहुत शिकायत है। लोग कहते हैं कि अगले साल हुजूर को यहाँ नहीं आना चाहिये, जोिक मेरे विचार से भी ठीक है। हुजूर को 5000 फुट की ऊँचाई से अधिक ऊँचे पहाड़ व अधिक वर्षा वाले पहाड़, मेरे राय में ठीक नहीं रहेंगे। महाराज जी की बीमारी के विषय में लोगों के पत्र धड़ाधड़ आ रहे हैं। लाला बालकराम जज भी अमृतसर से पधारे हैं जो डलहाँजी आने को लिखते हैं। उनको मना कर दिया गया है।

17 सितम्बर, 1943 को हुजूर ने फ़रमाया कि एक राजा का अहलकार था जिसका काम था देश-विदेश की रिपोर्ट बादशाह को सुनाना। एक बार वह बादशाह की हुजूरी में रिपोर्ट पढ़ रहा था कि एक बिच्छू उसके कपड़ों पर से उसकी कमीज के अन्दर उतर गया और डंक मारता गया, परन्तु अहलकार ने उफ़ तक न की। उसी तरह रिपोर्ट पढ़ता चला गया। जब काम समाप्त हो गया तो

बादशाह को पता लगा। उसने कहा कि यह बात मुझसे पहले क्यों नहीं कह दी। अहलकार ने विनती की कि हुजूर, यदि मैं डंकों की तकलीफ़ के कारण अपना फ़र्ज़ पूरा करना छोड़ देता तो लड़ाई के मैदान में तलवार के आगे कैसे ठहरता। बादशाह बहुत ख़ुश हुआ। सो इन चीज़ों की वहाँ उस दरगाह में कद्र होती है। हुजूर को अब बुख़ार 98.4 डिग्री है यानी, बुख़ार क़रीब नॉर्मल है। रात को बारह बजे के क़रीब हुजूर ने करतार सिंह पाठी को आदेश दिया कि कोई शब्द सुनाओ। उन्होंने कबीर साहिब की वाणी में से पढ़ा 'मैं कैसे सोई री पिया मेरा जागे, पाँच सखी मेरे संग की सहेली उन संग मेल मिली '30। पाँच सखी का अर्थ पाँच ज्ञान-इन्द्रियाँ हैं। सास, ससुर, ननद इत्यादि से मतलब आशा, तृष्णा, माया, लोक-लाज इत्यादि हैं जो रूह को मालिक से मिलने से रोकती हैं। इसके बाद 'गुरु से लगन कठिन है भाई। जैसे पपीहा प्यासा बूँद का, पिया पिया रट लाई " पढ़ा गया। हुजूर ने फ़रमाया कि शब्द तो बीबी रुक्को पढ़ा करती थीं। अब तो हमारी बीबियाँ शब्द पढ़ने से कतराती हैं। फिर फ़रमाया और पढ़ो। अत: फिर पढ़ा 'चढ़ तरुवर दोऊ पंछी बैठे, इक गुरु एक चेला' और 'मेरी नज़र में मोती आया है "। यह शब्द पढ़ रहे थे कि हुज़ूर अन्तर्ध्यान हो गये और उनको जगाना ठीक न समझा। हम सब चले आये।

19 सितम्बर, 1943 की दोपहर को हुजूर का बुखार पूरी तरह उतर चुका था यानी 97.6 डिग्री था। दिल की धड़कन कुछ तेज थी। इसलिये डॉक्टर साहिब ने दिल की धड़कन कम करने के लिये डीजोक्सिन दवाई दी। अभी फुलका खाने को नहीं दिया जाता। केवल मूँग की दाल, सब्जी व दूध दिया जाता है। हुजूर 25 सितम्बर को डेरे जाने का विचार कर रहे हैं।

हुजूर की सेहत अब दिन-प्रतिदिन अच्छी हो रही है। कल से एक-आध पुलका खाने लगे हैं और रात को नींद भी आ जाती है। परन्तु चल-फिर नहीं सकते। रात को बारह बजे तक पलटू साहिब की कुण्डलियाँ सुनते रहे। कल रात सरदार साहिब सरदार भगत सिंह ने हुजूर से विनती की कि आप ने इस तरह सांसारिक लोगों के लिये बीमारी अपने ऊपर क्यों ली ? दुनियादारों का क्या है ? उनको दस दिन बुखार इत्यादि न आया, बीस दिन आ गया या कोई मर गया तो मर जाये, आपको क्यों इस प्रकार कष्ट उठाना पड़े। हुजूर ने जवाब दिया कि कुछ लोगों की मुसीबतें इतनी दर्दनाक होती हैं और इस तरह दर्दनाक ढंग से वर्णन की जाती हैं कि स्वाभाविक तौर पर ही दिल में दया आ जाती है। अवश्य, यह मेरा अपना तजुर्बा है कि कुछ पत्र जो हुजूर को दु:खी लोगों के आते हैं वे ऐसे दर्द भरे होते हैं कि बरबस रोना आता है।

कोई आदमी अपनी बीबी के भाग जाने की मुसीबत, कोई औरत अपने पित की बेवफ़ाई की कहानी, कोई गृहस्थ बाल बच्चेदार अपनी ग़रीबी की कहानी, इस ढंग से वर्णन करता है कि जिससे पता लगता है कि यह दुनिया दुःखों का घर है और लोग बहुत दुःखी हैं, फिर सन्तों के नम्न व नाजुक दिल पर, ऐसी आँसू भरी कहानियाँ, क्यों न असर करें।

अध्याय 11 डेरे में निवास का हाल

हुजूर की डेरे की ओर वापसी और वहाँ निवास 25 सितम्बर, 1943 सुबह नौ बजे की सर्विस में हुजूर, भगत सिंह व

वैद्य जी के साथ डलहौज़ी से मोटर कार में रवाना हो, गुरदासपुर व अमृतसर के रास्ते शाम को पाँच बजे डेरे पधारे। डेरे में बहुत-से लोग जमा थे। हुजूर के दर्शन करके हुजूर के स्वस्थ होने की ख़ुशी में फूले न समाये।

26 सितम्बर, 1943 को हुजूर सत्संग में तशरीफ़ लाये। परन्तु सत्संग स्वयं नहीं किया। अब केवल सुबह-शाम ऊपर बालकनी में से दर्शन देते हैं। कमज़ोरी के कारण नीचे नहीं आ सकते। कोई आदमी उनके पास जाकर बातचीत नहीं कर सकता।

28 सितम्बर, 1943 आजकल सरदार गुलाब सिंह जी शाम के पाँच बजे से साढ़े छ: बजे तक सत्संग करते हैं। सत्संग लालाजी की कोठी के आगे, थड़े पर होता है, जहाँ कि कीड़ों के घरौंदे हैं। उनको हटाने के लिये यह सुझाव दिया गया है कि घरौंदों को खोद कर बड़ा सारा गड्डा कर दिया जाये और वहाँ से चिकनी मिट्टी निकालकर, दिया की सूखी रेत से गड्डा भर कर, बराबर कर दिया जाये।

5 अक्तूबर, 1943 शाम को मैं साँगली के राजा साहिब का तार लेकर हुजूर के पास गया। हुजूर ने फ़रमाया कि अब आराम है। राजा व रानी साहिबा साँगली से, जनरल राजवाड़े अपनी रानी साहिबा के साथ ग्वालियर से, कर्नल सेन्डर्स शिमला से व श्रीमती डे हावड़ा से, ग्यारह अक्तूबर के बाद, जल्दी आनेवाले हैं। कर्नल साहब नौकरी छोड़कर विलायत जा रहे हैं। उससे पहले दर्शन करना चाहते हैं।

6 अक्तूबर, 1943 को सुबह दस बजे के क़रीब हुज़ूर पहली बार ऊपर की मंजिल से उतर कर, नीचे राय साहिब लाला हरनारायण के कमरे तक, 208

8 अक्तूबर 1943

तशरीफ़ लाये। पाँच-सात मिनट बैठकर वापस चले गए। सब लोग प्रसन् हुए। परन्तु सात अक्तूबर को नहीं आ सके। कहते हैं कि जीना चढ़ने-उतरने से कुछ नाफ़ हो गई (धरन पड़ गई) है। आजकल ज़रूरी डाक शाम को छ: बजे के बाद सुनाई जाती है।

8 अक्तूबर, 1943 को दशहरे का दिन था। हुजूर सुबह दस बजे के क़रीब सत्संग-हाल के बाहर, पन्द्रह मिनट के लिये कार में सवार होकर, तशरीफ़ लाये। प्रसाद बाँटा गया।

अमेरिका से मिस्टर मायर्स ने पूछा कि यदि किसी अमेरिकन जिज्ञासु को उनकी प्रार्थना पर, नाम दिये जाने की स्वीकृति सतगुरु दे दें, परन्तु नाम दिये जाने से पहले सतगुरु चोला छोड़ दें, तो क्या उसको नाम दे देना चाहिये? जवाब हाँ, क्योंकि सतगुरु शरीर नहीं है। सतगुरु वह शक्ति है जो कभी नहीं मरती, केवल स्वरूप बदलती है। इसिलये ऐसे प्राणी को नाम दे दिया जाये और उसकी सँभाल होगी। अमेरिका से दो सत्संगियों के पत्र आये कि हमें दुनिया की किसी चीज व सम्बन्धियों से प्रेम नहीं रहा। जवाब दिया गया कि यदि तुम्हें दुनिया की किसी चीज से प्रेम नहीं तो फिर तुम्हें मरने के बाद, कोई ताक़त इस दुनिया में दुबारा जन्म नहीं दे सकती।

11 अक्तूबर, 1943 को सुबह साँगली की रानी साहिबा, सर जोशी इत्यादि तशरीफ़ लाये। शाम को साढ़े पाँच बजे सरदार गुलाब सिंह जी ने सत्संग किया। हुजूर स्वयं भी अन्त में पन्द्रह मिनट के लिये तशरीफ़ लाये। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का शब्द 'चकवी नैन नींद निहं चाहै बिन पिर नींद न पाई" पढ़ा गया, जो ऊँचे दर्जे के प्रेमियों की अवस्था का वर्णन करता है। हुजूर ने फ़रमाया कि आजकल लोग चाहते हैं कि गुरु उनकी दुनियावी तकलीफ़ें दूर करें और उनके सुखी जीवन के जिम्मेदार हों। जबिक सन्त केवल भिक्त-मार्ग की शिक्षा देते हैं और परमात्मा की इच्छानुसार रहने का उपदेश देते हैं परन्तु सांसारिक जीवों का यह हाल है कि यदि लड़का मर गया, मुक़द्दमा हार गये, ग़रीबी आ गई, हानि हो गई या बीमारी लम्बी हो गई तो कहते हैं कि छोड़ो ऐसे गुरु को। मतलब यह कि जिस दुकान पर मख़मल बिकती है वहाँ से खद्दर ख़रीदना चाहते हैं। यह सौदा सन्तों के पास नहीं है।

13 अक्तूबर, 1943 आजकल हुजूर शाम के 6 बजे के लगभग पन्द्रह-बीस मिनट के क़रीब, हर रोज सत्संग में बिराजमान होते हैं। आज श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से एक शब्द 'भली सुहावी छापरी जा मह गुन गाए" का व्याख्यान स्वयं हुजूर ने किया कि उस अमीरी से जो कि विषयों-विकारों में फँसा दे, वह ग़रीबी अच्छी है जिसमें परमात्मा का नाम जपा जाये।

14 अक्तूबर, 1943 की शाम को हुजूरी पोथी में से दो शब्द लिये गये 'गुरु मेरे जान पिरान, शब्द का दीन्हा दाना' और 'खोजत रही पिया पंथ, मर्म कोई नेक न गाया "। हुजूर ने स्वयं व्याख्या की। एक सत्संगी ने विनती की कि जो गुरु उसने, हुजूर से नाम लेने से पहले धारण किया हुआ था, वह उसको सत्संग में आने से मना करता है। उस गुरु ने उसको धुनात्मक शब्द का उपदेश नहीं दिया था, केवल वर्णात्मक शब्द का जपना बताया था। जैसे 'ओऽम् नम: भगवते वासुदेवाय' या गायत्री मन्त्र इत्यादि-इत्यादि। हुजूर ने जवाब दिया कि गुरु की निन्दा तो कभी नहीं करनी चाहिये। जो जहाँ तक जानता है, वह वहाँ तक ही बता सकता है। फिर फ़रमाया:

एक अक्खर दाता जो गुर जो सेवत नहिं तास। पाय जनम सौ स्वान के बहुर सुपच घर वास।

यदि किसी उस्ताद ने हमें एक अक्षर भी बताया है तो उसकी भी निन्दा नहीं करनी चाहिये क्योंकि ऐसा करने से सौ जन्म कुत्ते के लेकर, फिर भी शूद्र के घर जन्म होता है। यदि वह गुरु डरावे तो नहीं डरना चाहिये क्योंकि सन्त-सतगुरु शेर हैं। उनकी शरण में आकर गीदड़ों, भेड़ियों का क्या डर ? यदि कोई बीमारी, मौत, तकलीफ़ इत्यादि आ जाये तो उसको उस गुरु की ओर से न समझो बल्कि अपने पिछले कर्मों का खेल समझो। एक सत्संगी के बारे में कहा गया कि वह घर-बार छोड़कर ऋषिकेश चला गया। रात को स्वप्न में हुजूर ने उसे कहा कि मुफ्त की रोटियाँ खाकर भजन नहीं बनेगा। अत: वह वहाँ से डेरे आ गया। यहाँ हुजूर ने उसे समझाया कि जो पराया खाता है उसका भजन-सिमरन नहीं बनता। तुम अपने घर जाओ, अपने लड़कों की कमाई खाओ। वह तुम्हारा अधिकार है। मौलाना रूम ने कहा है: 'दस्ते पीर अज ग़ायबाँ कोताह नेस्त'। गुरु का हाथ प्रभु के हाथ से छोटा नहीं है।

15 अक्तूबर, 1943 को जब हुजूर सत्संग में बिराजमान हुए तो साध् दरबारी दास जी गुरु महिमा में से सहजोबाई का शब्द पढ़ रहे थे। 'राम तजूँ पै गुरु न बिसारूँ। गुरु के सम हिर कूँ न निहारूँ । हुजूर ने सारा शब्द पढ़वा कर फ़रमाया कि यह बिलकुल ठीक है कि यदि परमात्मा नाराज हो जाये तो सतगुरु उसे मना लेगा, परन्तु सतगुरु ही नाराज हो जाये तो उसे कौन मनायेगा? परमात्मा ने तो चौरासी लाख योनियों में डाल दिया। गुरु ने मुक्त कर दिया। परमात्मा ने अपना आप छिपा लिया परन्तु गुरु ने उसे दिखा दिया। इसके बाद श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से बाबू गुलाब सिंह जी ने सत्संग करते हुए फ़रमाया कि मन के विकार दो प्रकार से पैदा होते हैं, संस्कार-दोष और संग-दोष से यानी कुछ बुरी आदतें हम जन्म-जन्मान्तरों से साथ लाते हैं, कुछ बुरी संगत से प्राप्त कर लेते हैं। इन सबको दूर करने के लिये महात्मा पुरुषों की संगित करनी चाहिये। सत्संग द्वारा मन से बुरी संगति व बुरे संस्कारों का प्रभाव, निकल जाता है और जब तक मन में कोई विकार उदाहरणत: काम, क्रोध, राग द्वेष इत्यादि बाक़ी हैं, धुनात्मक नाम की प्राप्ति नहीं हो सकती, न गुरु-भिक्त पूरी हो सकती है। हुजूर ने फ़रमाया कि जब तक पारब्रह्म के हौजे कौसर (मानसरोवर) में स्नान न किया जाये तब तक कर्मों की मैल दूर नहीं होती।

16 अक्तूबर, 1943 को सारी संगत ब्यास दिरया के पार, किश्तियों में सवार होकर ईंधन के लिये सरकण्डा काटने गई और शाम को अँधेरा होने के बाद यहाँ पहुँची। उसके बाद थोड़ा-सा सत्संग हुआ। हुजूर ने फ़रमाया कि सेवा का दर्जा, भजन से कम नहीं है। कल फिर जायेंगे। सुबह सात बजे जाते हैं और वहीं रोटी पहुँच जाती है। आज छ: किश्तियाँ लाये, यानी एक हजार मन के क़रीब ईंधन आ गया। कल को यदि इतना ही आ जाये तो वर्ष भर का निर्वाह हो जायेगा।

17 अक्तूबर, 1943 को छ: किश्तियाँ और लाई गईं। हुजूर स्वयं दिख के पार, ढाई बजे, तशरीफ़ ले गये। शाम के छ: बजे वापस आये। अमृतसर आदि के सत्संगी, संक्रान्ति के लिये, आये हुए थे। शाम को 7 बजे श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से कार्तिक का महीना पढ़ा गया और हलवा बाँटा गया।

18 अक्तूबर, 1943 की शाम को सत्संग में 'गुरु कहें जगत सब अंधा " और कबीर साहिब का शब्द 'मैं कैसी सोई री, पिया मेरा जागे ¹⁰ लिये गए। हुजूर ने स्वयं व्याख्यान दिया और फ़रमाया कि जिनके कर्म मन्दे हैं, वे सन्तों के वचन सुनते हुए भी नहीं सुनते। अंधाधुंध कर्म किए जाते हैं। मौत के समय पछताते हैं और धर्मराज उनको उनके कर्मों के अनुसार किसी और योनि में धकेल देता है। इस प्रकार जन्म-जन्म दुःख भोगते हैं। वास्तव में इस जीव का, सिवाय सतगुरु और शब्द के, कोई भी अपना नहीं। सम्बन्धी-मित्र तो मौत होते ही साथ छोड़ देते हैं। इन्द्रियाँ, नाक, कान आदि धर्मराज के सामने जाकर उसी के विरुद्ध गवाही देती हैं कि हमारा इसने बड़ी बुरी तरह प्रयोग किया और पाप किये। सतगुरु और शब्द के सिवाय इसका भला चाहने वाला और कोई भी नहीं परन्तु इसको उनकी कोई परवाह नहीं, झूठे रिश्तेदारों की परवाह है। न ही यह चिन्ता है कि मर कर क्या हाल होगा, कहाँ जाऊँगा ? जबिक दस दिन के लिये भी कहीं सफ़र में जाना हो तो उसके लिये सौ प्रयत्न करता है परन्तु अपने अन्तिम सफ़र की ओर से उदासीन है। उसकी कोई चिन्ता नहीं। न दान, न पुण्य, न भजन और न अभ्यास। फिर फ़रमाया कि आध घण्टे का अभ्यास सौ रुपये दान देने से अच्छा है। यदि दान किसी अधिकारी को दिया जाये तो उससे अन्त:करण निर्मल होता है, बीमारियाँ दूर होती हैं और पाप कर्म नाश होते हैं।

दूसरे शब्द में फ़रमाया कि पाँच सखी से अभिप्राय पाँच ज्ञान इन्द्रियाँ हैं, जिनके भोगों में फँसकर रूह अपने असली मालिक से उदासीन है। सास, ननद, देवरानी से अभिप्राय आशा, तृष्णा और बुद्धि है। यार से अभिप्राय मन से है। द्वादस का अर्थ सहस्र-दल कमल है जिसको बारह दल भी कहते हैं। वहाँ की दस आवाजों, सुरत और शब्द, कुल बारह हैं।

19 अक्तूबर, 1943 को शाम के 6-7 बजे के लगभग बीबी रली जी की माता जी का देहान्त डेरे में हुआ। हुजूर उससे थोड़े समय पहले, उसे देखने गए थे। जब लौटे तो उसी समय से उसकी रूह खिंचनी शुरू हो गई और ऐसे लगा जैसे कोई धीरे-धीरे सो जाये। हुजूर स्वयं उसका संस्कार के लिये गये।

20 अक्तूबर, 1943 को कर्नल साण्डर्स व मिस रुग, शिमला और कश्मीर से आये। शाम को हुजूर ने सत्संग में फ़रमाया कि जिस प्रकार बच्चे को मिठाई दो तो दोनों हाथों से परे धकेलता है परन्तु जब उसके मुँह को लगा दो तो फिर मिठाई को हाथ फैलाकर लेता है। इसी प्रकार शुरु में मन भजन-सिमरन से घृणा करता है परन्तु जब उसको रस आने लगता है, फिर दुनिया के कामों का नुक्सान होने पर भी भजन-सिमरन नहीं छोड़ता। एक बार स्टेशन मास्टर स्वर्गीय पण्डित

ब्आदिता मल भजन-सिमरन में बैठे थे कि रस आ गया और छोड़ने को जी बूजापिता पर्या । उभर ट्रेन के आने का समय था। उनकी ड्यूटी थी कि ट्रेन आने से पहले सिगनल गिरा दे और फिर रवाना कर दे। वह भजन के आनन्द में था। पुरुषा क्षित । अन्त में जब उठे तो इर ट्रेन आई और चली गई। उनको पता भी नहीं चला। अन्त में जब उठे तो इर लगा कि अब नौकरी से निकाला जाऊँगा परन्तु मालिक ने सब काम ठीक का दिया। फिर फ़रमाया कि तीन घण्टे में तो मन अपनी भाग-दौड़ ही छोड़ता है। जिसको भजन-सिमरन का रस लेना है, उसको चाहिये कि छ: घण्टे बैठे। पहले-पहले तीन-चार महीने जब तक सिमरन का रस नहीं आता, कठिन है। जब सिमरन का रस आने लगे तो काम चल पड़ता है।

22 अक्तूबर, 1943 को रात साढ़े नौ बजे राजा साहिब अपने परिवार सहित मिस्टर मेहता का बाईस्कोप का रिकार्ड जिसमें सत्संग के चलचित्र हैं हुजूर महाराज जी के साथ देख रहे हैं। आज दोपहर को सिन्धी इंजीनियर ड रू. दीवान साहिब मिस्टर भवनानी के यहाँ उनका तथा कुछ सत्संगियों का खाना था। सब मेहमान उनके यहाँ एक बजे दोपहर को पहुँच गये थे। उनमें राजा साहिब, उनके परिवार के अतिरिक्त कर्नल सेंडर्स, रानी लक्ष्मीबाई, मिस कॉलिंज, शेख निजामुद्दीन साहिब आदि भी शामिल थे। हुजूर डेढ़ बजे ब्यास रेलवे स्टेशन से माल लदवा कर वापस आ गये परन्तु अभी तक स्नान नहीं किया था इसलिये कुछ मिनट बैठकर तशरीफ़ ले गये। खाना स्वादिष्ट व्यंजनों से भरपूर था। वहाँ ढाई बज गये। दीवान साहिब स्वयं मेहमानों के सत्कार में लगे हुए थे। भोजन पर कर्नल सेंडर्स से हवाई जहाज़ की यात्रा के विषय में बातें चल पड़ीं। कर्नल साहिब विलायत जा रहे हैं। उन्होंने फ़रमाया कि हवाई जहाजों पर केवल उन लोगों को यात्रा करने की स्वीकृति मिलती है जो सरकारी काम पर जा रहे हैं। इसीलिये कर्नल साहिब समुद्र के रास्ते जायेंगे। मैंने कहा कि आजकल तो सुअंज नहर (बराहे रूम) का रास्ता भी खुला हुआ है। जवाब मिला कि हमारा जहाज दक्षिणी अफ्रीका के पास से गुज़रेगा। जहाज चलने में जब तक बहुत कम समय न रह जाये, किसी को पता नहीं लगने दिया जाता कि जहाज़ कब जायेगा। जो अफ़सर लोग विलायत जाते हैं उनको सामान ले जाने में ज़्यादा पाबन्दियाँ नहीं हैं परन्तु रेशमी कपड़ों पर 50 प्रतिशत ड्यूटी देनी पड़ती है। जो रेशमी जुराबें बीस रुपये की आती हैं वहाँ जाकर

उन पर दस रुपये महसूल (कर) के और देने पड़ते हैं। इसलिये कर्नल साहिब कोई ऐसा सामान साथ नहीं ले जा रहे। उन्होंने बताया कि मुर्गी का अण्डा बहुत कम मिलता है। मगर गवर्नमैण्ट की आज्ञा से हर घर के ख़ाली आँगन में सब्ज़ियाँ उगाना जरूरी है। इसलिये सब्ज़ियाँ मिल जाती हैं और कपड़ा भी राशन में मिलता है। एक वर्ष में एक आदमी को बीस कूपन मिलते हैं। गर्म ओवरकोट सिलवाना हो तो बारह कूपन उसी में ख़र्च हो जाते हैं। इस दृष्टि से भारत में बड़ा आराम है। कर्नल साहिब का भाग्यशाली कुत्ता 'साइमन', रानी साहिबा को दे दिया जायेगा, क्योंकि जहाज़ में ले जाने की इजाज़त नहीं है। कर्नल साहिब ने बताया कि वायसराय लिनलिथगों को भी अपने सारे कुत्ते यहाँ छोड़ जाने पड़े। फिर मैंने उनसे पूछा कि हवाई उड़ान में जब हवाई जहाज़ नीचे उतरता होगा तो दिल बैठता मालूम होता होगा। उन्होंने कहा कि यह बात नहीं है। जहाज़ का नीचे पृथ्वी की ओर आना महसूस नहीं होता। उसे धीरे-धीरे लाते हैं और ऊपर जाता हुआ भी महसूस नहीं होता। फिर मैंने पूछा कि जब जहाज ऊपर चढ़ जाता होगा तो नीचे पृथ्वी की ओर देखकर डर लगता होगा। जैसे कुतुब की लाट पर चढ़कर नीचे देखें तो डर लगता है और आदमी का सिर चक्कर खा जाता है। उन्होंने बताया कि हवाई जहाज पर ऐसा डर नहीं लगता क्योंकि जब हम किसी ऊँची इमारत से नीचे की ओर देखते हैं तो दीवार की सीधी गहराई देखकर डर लगता है परन्तु हवाई जहाज़ पर ऐसा नहीं होता क्योंकि वहाँ इमारत की ऊँचाई नहीं है, जो हमारा ध्यान ऊँचाई की ओर ले जाये।

24 अक्तूबर, 1943 को राजा साहिब अपने परिवार के साथ सिन्ध देश को तशरीफ़ ले गए। रानी लक्ष्मीबाई साहिबा ग्वालियर को तशरीफ़ ले गईं।

28 अक्तूबर, 1943 को रात को आठ बजे दीवाली का सत्संग, डेरे में सत्संग-हाल के पश्चिम में हुआ। हुजूर के ऊपर शामियाना लगा था और बिजली के कई प्रकार के रंग-बिरंगे बल्ब रोशनी दिखला रहे थे। कार्तिक का महीना 'सार बचन' नजम में से पढ़ा गया। हुज़ूर ने फ़रमाया कि दीवाली तो हमने हजारों बार कई जन्मों में देखी परन्तु जब आँखें बन्द करते हैं तो अन्दर अँधेरा है। सन्तों की दीवाली अन्दर हर स्थान पर हो रही है। यदि सतगुरु का स्वरूप देखना हो तो त्रिकुटी में जाकर देखो, जहाँ सेवक की रूह मन और माया के ग़िलाफ़ों से आज़ाद होकर, बारह सूर्यों की चमक दिखा रही है। सतगुरु सतलोक में जाकर, सत्पुरुष का रूप धारण कर लेते हैं बेशक इस दुनिया में इनसान मालूम होते हैं।

मेजर बुकेनन और उनकी मेम साहिबा भी दर्शनों के लिये तशरीफ़ लाये थे। श्री चाँदवानी, डिप्टी चीफ़, नार्थ वैस्टर्न रेलवे भी आजकल यहाँ सत्संग के लिये आए हुये हैं।

29 अक्तूबर, 1943 को शाम छ: बजे के सत्संग में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'काया कामण अत सुआल्यों " शब्द लिया गया। हुजूर ने फ़रमाया कि मनुष्य का सृष्टि में सर्वोच्च स्थान है। मनुष्य का शरीर बड़ा ही मूल्यवान है क्योंकि उसमें स्वयं परमात्मा रहता है परन्तु आश्चर्य है, यद्यपि आत्मा और परमात्मा दोनों एक ही स्थान पर हैं, फिर भी युग गुज़र गये, दोनों का मिलाप नहीं हुआ, क्योंकि मनुष्य परमात्मा को अपने अन्दर खोजने की बजाय बाहर पुस्तकों, जंगलों, पहाड़ों, तीर्थों, मूर्तियों, समुद्रों, मन्दिरों, मसजिदों और गुरुद्वारों में तलाश करता फिरता है। यदि अन्दर का भेदी गुरु मिले तो अन्दर तलाश करने का ढंग बतला दे।

30 अक्तूबर, 1943 सुबह सवा नौ बजे हुज़ूर सेवा में बैठने के लिये तशरीफ़ लाये। ग्यारह बजे तक यही काम रहा। शाम को थोड़ी-सी डाक सुनी और फिर सत्संग में तशरीफ़ ले गये। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से मारू राग में से शब्द 'काया कंचन सबद वीचारा। तित्थै हर वसै जिस दा अंत न पारावारा ¹⁰ पढा गया। जो मनुष्य शरीर पाकर पूरे गुरु से शब्द का भेद लेकर अपने अन्तर में शब्द को नहीं पकड़ता, वह अपना जन्म बरबाद कर लेता है और जब कोई सीढ़ी के डंडे से गिर जाता है तो फिर चौरासी लाख योनियों में मारा-मारा फिरता है। शब्द के बिना मन वश में नहीं आता। 'हौमै गणत गुरसबद निवारे'। किसी का मन कभी भी निचला नहीं बैठता। हर समय विचार उठाता ही रहता है। इन विचारों को सिमरन, ध्यान और शब्द के द्वारा रोकना चाहिये। यही 'हौमै गणत' है यानी हमेशा में और मेरी के विचार उठते रहना। जब ये विचार एक मिनट के लिये भी बन्द हो जायें तो अन्दर रोशनी दिखाई देती है। रज्जब जी ने कहा 'मन मूसा पिंगल भया, पी पारा हरि नाम'। फिर फ़रमाया कि सतगुरु शिष्य को नाम देकर

निश्चिन्त नहीं हो जाते। सतगुरु की असली सेवा शब्द अभ्यास है। यदि शब्द पकड़कर अन्तर में गुरु को प्रकट कर लिया तो जीवन में ही सतगुरु से प्राप्त होने वाली रक्षा की सच्चाई का पता लग जाता है, वरना गुरु तो सदैव इसके साथ शब्द-स्वरूप में रहते हैं।

31 अक्तूबर, 1943 को सुबह नौ बजे सत्संग शुरू हुआ। पहले श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से पूरे गुरु की पहचान का शब्द 'घर मह घर देखाय देय सो सतगुरु पुरख सुजाण 12 पढ़ा गया। जिसको समझाते हुए हुजूर ने फ़रमाया कि देवी-देवता सब आत्मा से नीचे हैं। स्वयं परमात्मा ने उनको शरीर का काम चलाने के लिये नियुक्त कर रखा है। मनुष्य का इन देवी-देवताओं को पूजना ऐसा ही है जैसे कोई राजा अपने नौकरों को पूजे। मनुष्य के पूजने के योग्य केवल वही महापुरुष है, जो जीते-जी परमात्मा से मिलाप कर लेता है। मनुष्य परमात्मा को नहीं देख सकता, इसलिये यह ज़रूरी है कि उन महात्माओं के पास जाकर पूछे कि तुम्हें परमात्मा कैसे मिला ? हमें भी वह साधन बताओ जिससे हमें भी परमात्मा के दर्शन हों। मौलाना रूम साहिब ने कहा है :

गोयन्द आँ सगाँ कि न रफ़्तन्द राहे रास्त, राह नेस्त बन्दा रा बजनाबे ख़ुदा-दरोग़।13

अर्थात् उन अनजान लोगों का, जो सच के रास्ते पर गये नहीं, यह कहना झुठ है कि मनुष्य के लिये मालिक से मिलने का कोई रास्ता नहीं है।

मनुष्य जीवन का उद्देश्य यही है कि परमात्मा को मिलने की कोशिश की जाये वरना यदि यह अवसर खो दिया तो फिर पता नहीं कब मनुष्य शरीर मिलेगा। सन्त-महात्मा क्या बताते हैं ? यही कि पाँच शब्दों को पकडकर परमात्मा तक रसाई प्राप्त करो। शब्द-अभ्यास के बिना, परमात्मा तक रसाई प्राप्त करना असम्भव है। इस शब्द के बाद 'सार बचन' नज़म में से 'सतगुरु का नाम पुकारो। सतगुरु को हियरे धारो "4 पर व्याख्यान किया गया।

1 नवम्बर, 1943 को बहुत-से लोग वापस चले गए। पंजाब के डायरेक्टर ऑफ़ इण्डस्ट्रीज, श्री वीरभान, आज शाम को यहाँ तशरीफ़ लाये परन्तु आज सत्संग नहीं था।

अमेरिका के एक सत्संगी ने लिखकर पूछा कि वह गाय, बैल आदि पालता है और पाल कर फिर उनको क़साइयों के पास बेच देता है। क्या वह भी पाप का भागी है या केवल वहीं जो उससे गाय आदि ख़रीद कर, मांस के लिये मारता है ? जवाब दिया गया कि यह काम छोड़ दो। हाँ, यदि पशुओं को हल आदि के काम के लिये बेचने की नीयत से पालते हो तो कोई पाप नहीं।

सिकन्दरपुर का दौरा

6 नवम्बर, 1943 को सुबह छ: बजे से थोड़ा पहले मैं, शादी, प्रिय रघुवीर सिंह और हुज़ूर कार में डेरे से सिरसा की ओर चल दिये। रास्ते में वकील सरदार भगत सिंह से खड़े-खड़े कुछ बात करके लुधियाना आये। वहाँ कई पम्पों से मोबिल ऑयल लेना चाहा परन्तु सब पम्प बन्द थे। उनके मालिक उनको ताला लगाकर चले गए थे। यद्यपि साढ़े आठ बज गये थे परन्तु अभी तक नहीं आये थे। मोगा में डॉ. प्रेमनाथ जी से मिले। डाक्टर साहिब बड़े प्रेम से मिले और हुजूर के स्वास्थ्य के विषय में बातचीत करते रहे। हुजूर ने फ़रमाया कि शरीर पर ख़ुजली की बड़ी तकलीफ़ है, तो डॉक्टर साहिब ने सलाह दी कि सलफर बिटर खायें या होम्योपैथिक दवाई का प्रयोग करें जिसमें गन्धक ज़रूर हो। वहाँ से सरदार प्रेमसिंह के घर गये। वहाँ कुछ मिनट ठहर कर मोगा से दो-तीन मील दूर ही थे कि वह लारी, जो हमने सामान मशीनरी आदि से लाद कर 5 नवम्बर की रात को ग्यारह बजे रवाना कर दी थी, टूटी-फूटी हालत में मिली। उसके टायरों के बीच के लोहे के पहिये टूट गये थे और पिछले टायर भी फट गये थे। कारण यह लग रहा था कि मशीनरी का भार, लारी के पिछले पहियों पर ज़्यादा था। इसलिये जब लारी को ठीक करवा कर चले तो मालूम होता था कि लारी के बोझ का झुकाव पीछे की ओर अधिक है और भार की अधिकता के कारण झोल खाती थी। कभी दायें हाथ, कभी बायें हाथ कच्ची सड़क पर उतर जाती थी। हमने अपनी कार सावधानी की दृष्टि से लारी के पीछे लगा दी। कोटकपूरा में रियासत के ठेकेदारों ने लारी का टैक्स लिया। मुक्तसर से आठ-नौ मील पर, जहाँ कि बड़ी नहर है और जहाँ नहर के महकमे वालों के बँगले हैं, हम सबने मिलकर रोटी खाई। वहाँ से बारह बजे के बाद चल कर मलोट आ गये। वहाँ पेट्रोल लिया। उस इलाक़े में नहर है और हरियाली है परन्तु आगे जाकर यहाँ से बीस मील पर डबवाली रेगिस्तान का

इलाका है। वहाँ न पीने का पानी है न कोई सब्जी, हरी घास तक नहीं थी। रेत के टीले और बिल, जिनमें अजवायन डालते हैं, काफ़ी देखने में आये। तेज धूप, पानी की कमी, गर्म हवा और मिट्टी थी। वहाँ से सिरसा छत्तीस मील है। सिरसा से चार मील परे नाला है जो किसी समय में बड़ा दिरया था। शायद इसी को संस्कृत की पुस्तकों में सरस्वती कहते हैं, जिसके किनारे बड़े-बड़े शहर बसे हुए थे। दिरया सूख गया और शहर उजड़ गये। केवल एक नाला है परन्तु आजकल यह भी सूखा है। उसके दोनों किनारों पर कुछ हरे-भरे खेत दिखाई दिये। वहाँ से सिरसा, शाम के छ: बजे पहुँच गये। शुक्र किया कि लारी सही-सलामत पहुँच गई वरना क़दम-क़दम पर ख़तरा था। वहाँ से चाय आदि पीकर और संगत को दर्शन देकर, हुजूर सिकन्दरपुर आ गये। लारी का सामान केरे में उतरवाया। अँधेरा होतेहोते घर पहुँच गये और हुजूर घर के आँगन में चबूतरे पर हमेशा की तरह बिराजमान हो गये। हम सब लोग दरी पर बैठे और बातें होती रही।

7 नवम्बर, 1943 सुबह हुजूर खराद की मशीन केरे में लगवा रहे हैं। आजकल हुजूर सिरसा में सुबह नौ बजे बकबोर्ड पर सिकन्दरपुर शानित आश्रम से कारख़ाने में, जो यहाँ से दो मील पर है, तशरीफ़ ले जाते हैं। यहाँ राज और मिस्त्रियों का काम देखते हैं। फिर डेढ़ बजे प्रसाद बाँट कर, भोजन करके, आराम फ़रमाते हैं। शाम को पाँच बजे के बाद अपनी इच्छानुसार बाहर निकलते हैं। इस आराम के समय में कोई भी आदमी उन्हें नहीं बुलाता। डेरे की अपेक्षा उन्हें यहाँ बहुत आराम है। शाम को साढ़े छ: बजे तक कभी काम देखते हैं व कभी सिरसा या अन्य स्थानों से आये हुए सत्सींगयों को दर्शन देते हैं। फिर साढ़े छ: बजे के लगभग घर वापस आ जाते हैं और चबूतरे पर विराजमान हो जाते हैं। आसपास सत्संगी दरी पर बैठ जाते हैं और आठ-साढ़े आठ बजे तक बातचीत होती रहती है।

9 नवम्बर, 1943 को हुजूर ने फ़रमाया कि जमींदार वे ही हैं जो अपने घर की गऊओं के बछड़ों को बैल बनाते हैं और बाहर से ख़रीदने के अधीन नहीं हैं। पंजाब में एक कहावत है कि 'बड़े लाने उनके जिनके अपने हुक्के' मगर यह ग़लत है। ठीक यह है कि 'बड़े लाने उनके जिनके अपने हिक्के' यानी बड़े लाने वाले अथवा मालदार जमींदार वे हैं जो अपने घर में ही हल चलाने वाले पशु पाल लेते हैं।

यहाँ के अराइयों ने शहर की उत्तरी दिशा में कमाद (गन्ना) की फ़सल इतनी बो दी है कि आजकल की गुड़ व खाँड की क्रीमत देखने से प्रतीत होता है कि ये लोग मालामाल हो जायेंगे। पहले यही अराई, खेती से अनजान, गन्ने का नाम तक नहीं जानते थे, भूखे और क्रर्जदार थे। आजकल गिरवी रखी हुई जमीनों को छुड़वा रहे हैं, पैसे वाले हैं। यह सब स्वयं हुजूर की स्थापित की हुई मिसाल का असर है। हुजूर ने अपने पड़ोसी जमींदारों को अपनी मिसाल से, खेती करके अमीर होने का ढंग सिखला दिया है। सरकार ने हरएक जिले में बड़े ख़र्च से जो माडल फ़ार्म स्थापित किये हैं, उनका इतना लाभ नहीं होता, जितना कि एक मेहनती, कम ख़र्च करनेवाले, तजुर्बेकार जमींदार के उदाहरण का, अपने गाँव के कृषकों पर होता है। लायलपुर कृषि महाविद्यालय में जो विद्यार्थी पढ़ रहे हैं वे अधिकतर सरकारी नौकरी के इच्छुक होते हैं। यदि उनका आदर्श अपने गाँव में कृषि के नये साधनों का प्रयोग करके पैसे कमाना हो तो इससे न केवल उनका अपना लाभ होगा बल्क सब जमींदारों का भी लाभ होगा।

10 नवम्बर, 1943 को पण्डित नत्थू राम शुक्ल, सिरसा वाले से जंत्रियों के विषय में बातचीत चल पड़ी। उन्होंने बताया कि काशी में दस साल की जंत्री विद्वान ज्योतिषी लोग इकट्ठी बना लेते हैं। फिर हर साल के शुरू होने से पहले सावन महीने के क़रीब अगले साल की जंत्री अलग छाप देते हैं। जो दूसरे शहरों के ज्योतिषी अपनी जंत्रियाँ छपवाते हैं, वे उनसे सहायता लेते हैं। कुछ तो इतना भी ख़र्च नहीं करना चाहते, क्योंकि साठ वर्ष के बाद वही दिन और वर्ष आ जाते हैं। इसलिये साठ वर्ष पहले की जंत्री निकालकर उस में अदल-बदल कर छाप देते हैं। इन साठ वर्षों में बीस वर्ष ब्रह्मा के, बीस वर्ष विष्णु के और बीस वर्ष शिव के माने जाते हैं। पाँच प्रकार के कैलण्डर हैं सूर्य, चाँद, नक्षत्र, बृहस्पति और सावन। सूर्य तो प्रविष्ट संवत है जिसमें प्रत्येक महीना संक्रान्ति से शुरू होता है और साल चैत्र की पड़वा को यानी चैत्र सुदी एकम् से शुरू होता है। चाँद का महीना एकम् विद से शुरू होता है। परन्तु साल चैत्र विद एकम् से ही शुरू होता है। सूर्य का साल 365 दिन का और चाँद का 355 दिन का होता है। मुसलमानों में क़मरी (चन्द्रमा पर आधारित) साल की प्रथा है, इसलिये उनके त्योहार हर साल दस दिन पहले आते हैं। छत्तीस सालों के बाद फ़िर वही महीने और मौसम आ जाते हैं। हिन्दुओं में हर अट्ठाईस या बत्तीस महीनों के बाद

लोन्द के कभी उनतीस, कभी तीस, कभी इक्कतीस दिन क्रमरी साल में डालकर क्रमरी साल को शमसी (सूर्य पर आधारित) साल के बराबर ले आते हैं। इसी तरह से मौसम व क्रमरी महीनों का मिलाया जाता है। अरब में मौसमों का अदल-बदल ऐसा नहीं जैसा कि हिन्दुस्तान में है, इसलिये वहाँ के विद्वानों ने लोन्द के दिन डालने की जरूरत नहीं समझी। नक्षत्र का साल अश्वनी नक्षत्र से चैत्र में शुरू होता है और बृहस्पित जब मेष राशि में आता है यानी चैत्र के महीने में, तब से बृहस्पित साल शुरू होता है। ये सब विचार भागवत पुराण के पाँचवें स्कन्ध में दिये हुए हैं। सूर्य सिद्धान्त, ब्रह्म सिद्धान्त और विशष्ट सिद्धान्त ग्रन्थों में भी जंत्रियाँ बनाने का ढंग दिया हुआ है।

11 नवम्बर, 1943 को डॉ. बलवन्त सिंह व मिस्टर राम चन्द मेहता श्रीनगर से तशरीफ़ लाये। शाम को हुज़ूर प्रतिदिन की भाँति चबूतरे पर पधारे तो बातचीत होने लगी। उन्होंने कश्मीर के भिन्न-भिन्न प्रकार के सेब दिखाये। एक तो मीठे अमरी सेब जो बाजारों में बिकते हैं। दूसरे क्वीन एपल जो खट्टे-मीठे होते हैं। तीसरे वे सेब जो बही अर्थात् नाख व सेब के पैवन्द से पैदा किये जाते है, जिनका क़द अमरी सेब से बड़ा होता है और छिलका पीला और बही से मिलते-जुलते हैं। खाने में मीठे होते हैं। उनके अतिरिक्त कुल्लू के सेब खट्टे-मीठे और शिमला के कोटगढ़ के सेब मीठे होते हैं।

एक सत्संगी ने विनती की कि लड़ाई तो लम्बी हो गई। हुजूर ने फ़रमाया कि अभी तो जापान ने रौला डालना है। आशा नहीं कि इस जाड़े में चीजों के भाव कम हों। किसी ने पूछा कि दुनिया के इन्तिजाम में सन्तों का कहाँ तक दखल है? जवाब मिला कि दुनिया का सारा काम काल और उसके कारिन्दों के हाथ में है। परन्तु सन्त शहंशाह होते हैं। जब कोई मुसीबत किसी जगह होती है तो वे कारिन्दे सन्तों से पूछ लेते हैं, सन्त दख़ल नहीं देते। सो एक बार हुजूर बाबा जी महाराज की पलटन एक छावनी में ठहरी हुई थी कि तड़के कुछ फ़रिश्ते उनके पलंग के पास हाथ बाँधे खड़े थे। कहने लगे कि हमें आदेश दिया गया है कि इस शहर में प्लेग फैलायें और साथ ही यह भी हुक्म हुआ है कि पहले आपसे पूछ लें। हुजूर बाबाजी महाराज ने फ़रमाया कि जिस तरह मर्जी हो करो, परन्तु हमारी छावनी को छोड़ देना। अत: ऐसा ही हुआ। आजकल की लड़ाई में, हुजूर के जो सेवक दूर-

दूर देशों में गये हुए हैं, हुजूर उनकी भली-भाँति रक्षा कर रहे हैं। प्रतिदिन ऐसे लोगों के पत्र आते रहते हैं, जिनसे यह साफ़ जाहिर हो जाता है। फिर हुजूर ने फ़रमाया कि मनुष्य की आयु का एक-एक मिनट हिसाब में है। बीमारी आदि पहले से ही निश्चित है। अत: मैंने पहले ही बताया था कि भादों के महीने में बीमारी आयेगी (यह क़िस्सा मेरे सामने का है, परन्तु उस समय मैंने अधिक ध्यान नहीं दिया था) और जब तक उस बीमारी की मियाद ख़त्म न हो जाये कोई दवाई, जो उसको लाभ देती हो, नहीं मिलेगी। या तो कोई ऐसा हक़ीम अथवा डॉक्टर ही नहीं मिलेगा या उसकी समझ में नहीं आयेगा। इसी तरह देहात में कोई योग्य इलाज करनेवाला नहीं होता। जिनको आराम आना होता है वे कुछ समय तक कष्ट सह कर बच ही जाते हैं। हुजूर ने फ़रमाया कि जो कुछ हो रहा है बिलकुल ठीक हो रहा है। यदि यूरोप में लड़ाई और ख़ून-ख़राबे का बाज़ार गर्म है, बंगाल में भूख से स्त्री-पुरुष व बालक मर रहे हैं, ये सब लोग उस काल भगवान् के आदेश से अपने पहले जन्मों के किये हुए कर्मों का फल भोग रहे हैं। किसी को यह शिकायत नहीं करनी चाहियें कि परमात्मा बे-इनसाफ़ या बे-दर्द है।

जनवरी-फरवरी के महीने में राव बहादुर शिवध्यान सिंह साहिब ने फ़रमाया था कि मालटे के पेड़ों की जड़ों के आसपास की मिट्टी खोद कर, झाड़-झंकाड़ साफ़ करके, शीरे में नई मिट्टी मिलाकर, जड़ें ढाँप दी जायें तो ख़ूब बड़े-बड़े मालटे आते हैं और गिनती भी ज्यादा होती है।

डॉ. बलवन्त सिंह जी ने बताया कि ग्रेप फ्रूट, जोकि चकोतरे जितना बड़ा, मालटे जैसा खट्टा-मीठा होता है और उसमें गूद्दा भी ज्यादा होता है। मलेरिया की बीमारी में कुनीन का आधा काम करता है, परन्तु देसी लोग उसकी खटाई के कारण उसको खाना पसन्द नहीं करते, क्योंकि अधिकतर पंजाबी लोग मीठे फल पसन्द करते हैं। आजकल अमेरिकन लोग हिन्दुस्तान में आये हुए हैं। वे एक-एक के आठ-आठ आने देते हैं।

12 नवम्बर, 1943 को एक साहिब ने, जोकि एक किताब लिखना चाहते हैं, हुजूर से डेरे के विषय में पूछा तो हुजूर ने नीचे लिखा हुआ जवाब, मुझसे लिखवा कर, उनको भिजवा दिया।

हेरा बाबा जैमल सिंह जी का इतिहास

राधास्वामी मत कोई धर्म नहीं, राधास्वामी नाम वाहेगुरु अकालपुरुख कुल मालिक का है। सो हरएक सन्त ने 'स्वामी' पद की बड़ाई की है कि यदि दुनिया में रूहानियत का कोई ऊँचे से ऊँचा दरजा है तो वह स्वामी पद का है। 'स्वामी' पद पर पहुँचे हुए महात्मा को परम-सन्त कहा जाता है। उस कुल मालिक के अनगिनत नाम हैं। धुर-धाम पहुँचे हुए महात्माओं ने, चाहे वे किसी जाति व धर्म के क्यों न हुए हों, अपनी-अपनी जबान में कुल मालिक के वर्णात्मक नाम रखे हैं, जैसे कि गुरु गोबिन्द सिंह साहिब ने बारह-चौदह सौ नाम जाप साहिब में रखे हैं, उनमें से कई नाम कई ग्रन्थ-शास्त्रों में नहीं मिलते। इसी तरह अलग-अलग महात्माओं ने अपनी-अपनी जबान में मनुष्य के अन्दर जो रूहानी मंजिलें हैं, के नाम रखे हैं। प्राय: हिन्दुस्तान या पंजाब में जो महात्मा हुए, उनके रखे हुए नाम संस्कृत में हैं और जो ईरान या अरब में हुए हैं, उनके रखे हुए नाम फ़ारसी या अरबी में हैं। इसी तरह हुजूर महाराज शिवदयाल सिंह जी, जो आगरे में परम-सन्त हुए हैं, उन्होंने मालिक का नाम 'स्वामी' रखा है और रूह यानी आत्मा का नाम 'राधा' रखा है। उन्होंने 'सार बचन' नज़म में फ़रमाया है 'राधा आदि सुरत का नाम। स्वामी आदि शब्द निज धाम। सुरत शब्द और राधास्वामी। दोनों नाम एक कर जानी " भाव आत्मा ने परमात्मा से मिलना है या बूँद ने समुद्र से मिलकर समुद्र होना है। सन्तमत सारी दुनिया के पहुँचे हुए महात्माओं का साँझा मत है। यह प्राकृतिक विज्ञान, प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर पूर्ण रूप से है, चाहे वह किसी देश व किसी जाति या किसी धर्म का क्यों न हो। जब अकालपुरुष एक है, हमारे हाथ, नाक, कान आदि सब अंग एक से हैं, तो यह कैसे हो सकता है कि हिन्दुओं के लिये परमेश्वर कोई और, मुसलमानों और ईसाईयों के लिये कोई और हो ? जो पहुँचे हुए सन्त हैं यद्यपि इनके लेख भिन्न-भिन्न जुबानों में हैं पर उनका मतलब एक ही है यानी जो धुर-धाम पहुँचे हुए सन्त हैं, वे किसी धर्म के क़ैदी नहीं, वे परमात्मा के भेजे हुए आते हैं। उनका उद्देश्य मज़हब बनाना नहीं, बल्कि उनका उद्देश्य चौरासी लाख योनियों के क़ैदियों को, नाम जपा कर, सचखण्ड पहुँचाने का है। यदि उनकी शिक्षा को हम ध्यान से पढें तो वह धर्मों से ऊँची होती है और वह हमें मज़हबों की क़ैद से आज़ाद करती है।

वह हमें महा-आनन्द देती है जोिक अविनाशी है। इसमें सन्देह नहीं कि उनके वेद-शास्त्र, ग्रन्थ-पोधियाँ लिखित रूप में होते हैं परन्तु उनका असली मार्ग, जिस पर वे अपने शिष्यों को ले जाते हैं; लिखने, पढ़ने और बोलने में नहीं आता। जैसा कि श्री गुरु अंगद देव जी श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में फ़रमाते हैं:

अक्खों बाझों वेखणा विण कंना सुनणा। पैरां बाझों चलणा विण हत्थां करणा। जीभै बाझों बोलणा इयों जीवत मरणा। नानक हुकम पछाण कै तौ खसमैं मिलणा।

वह सच्ची वास्तविकता न तो इन बाहरी आँखों से देखी जाती है, न इन स्थूल कानों से सुनी जाती है, न स्थूल जबान से बयान की जा सकती है। वह बोलने में नहीं आती। जो नाम मुक्ति देता है वह अलिखित (Un-written) तथा अनबोला (Unspoken) है। वह लिखने, पढ़ने और बोलने में नहीं आता। दूसरे शब्दों में यह कह लो कि नाम किसी ग्रन्थ, पोथी, वेद-शास्त्र में नहीं है। यह सब नाम की महिमा करते हैं और नाम जपने का तरीक़ा बताते हैं। नाम के लाभ बतलाते हैं परन्तु उनमें नाम की चर्चा है, नाम स्वयं नहीं है। नाम मनुष्य के अन्दर है, श्री गुरु ग्रन्थ साहिब पढ़कर देखो:

देही अंदर नाम निवासी। आपे करता है अबिनासी। नाम निधान अपार भगतां मन वस्सै॥

और

सभ किछ घर मह बाहर नाहीं। बाहर टोलै सो भरम भुलाही। सन्तों की शिक्षा जन्म-जन्मान्तर से क़ैदी रूहों को परमात्मा से मिलाती है और उनको जाति व धर्मों की क़ैद से निकालकर एक न मिटने वाली ख़ुशी में, जोकि कभी ख़त्म न हो, ले जाती है।

अब मैं स्वामी जी महाराज की चर्चा करता हूँ। हुज़ूर स्वामी जी महाराज, आगरा शहर, पन्नी गली में 25-8-1818 में पैदा हुए। आपका असली नाम शिव दयाल सिंह था। आप बैजल सेठ खित्रयों के एक प्रसिद्ध ख़ानदान से थे, जो लगभग दो सौ वर्ष पहले, लाहौर से देहली और देहली से आगरा आ गये थे। आपके पिता का नाम सेठ दिलवाली सिंह जी था। उनके दादा साहिब सेठ मलूक

चन्द जी, रियासत धौलपुर में दीवान थे। आपके परिवार में शुरू से गुरुवाणी का प्रचार चला आता था। सारे मिलकर बड़े प्रेम से हर रोज़ गुरु नानक साहिब की वाणी का पाठ किया करते थे। हुजूर स्वामी जी महाराज ने जितना समय सत्संग किया गुरु नानक साहिब, कबीर साहिब और अन्य सन्तों की वाणी का प्रचार किया; विशेषकर श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की वाणी का उपदेश मुख्य था। आगरा और यू. पी. के लोग पंजाबी वाणी नहीं समझ सकते थे बल्कि यह कहना चाहिये कि श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की वाणी इतनी गूढ़ है कि पंजाबी लोग भी इसके भेदों को कठिनाई से समझते हैं। इसलिये बहुत-से प्रेमी, स्त्री-पुरुषों ने बड़े प्रेम से प्रार्थना की कि हमें अपनी देसी भाषा से ग्रन्थ रच कर समझाओ और उन्होंने अपनी वाणी 'सार बचन' छन्द-बन्द अपने परम धाम जाने से क़रीब तीन वर्ष पहले रची थी, जिसमें सन्तमत के छिपे हुए भेदों को सरल भाषा में समझाकर वर्णन किया है परन्तु फिर भी जब तक अन्दर के पाँच शब्दों से मनुष्य परिचित न हो तब तक पूरा भेद न श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से समझ सकता है न स्वामी जी महाराज की वाणी से।

परम सन्त तुलसी साहिब जी, पूना-सतारा की गद्दी छोड़कर, हाथरस में आकर रहे। उनकी वाणी बड़ी प्रभावशाली और मशहूर है तथा रूहानी अभ्यास को बयान करती है। वह प्राय: आगरा में स्वामी जी महाराज के पास आकर ठहरते थे। दोनों का आपस में मेलजोल था। स्वामी जी महाराज के सत्संगी तो हज़ारों की संख्या में थे, परन्तु मुख्य गुरुमुख, जिन्होंने स्वामी जी के बाद उनके विचारों का प्रचार किया है, वे तीन महात्मा हुए हैं। उनमें से राय बहादुर सालिगराम साहिब आगरा में, बाबा ग़रीबदास जी देहली में और महाराज बाबा जैमल सिंह जी पंजाब में प्रचार करते रहे।

बाबा जैमल सिंह जी महाराज 1839 में गाँव घुमान, तहसील बटाला, जिला गुरदासपुर में पैदा हुए। आपके पिताजी का नाम स. जोध सिंह जी था। आप जाट ख़ानदान के थे। आपको छोटी आयु से ही साधुओं की संगत का शौक़ था। बचपन में बाबा खेमदास, एक वेदान्ती साधु से, जो उनकी बिरादरी के थे और उनके गाँव में रहते थे, वेदान्त पढ़ते रहे। उन्हीं के पास श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की वाणी पढ़ी। जब वाणी को ध्यान से पढ़ा तो यह पता लगा कि वाणी बार-बार

नाम ही नाम और शब्द ही शब्द पुकारती है तथा स्थान-स्थान पर पाँच शब्द की चर्चा उसमें आती है। यह भी निश्चित हो गया कि वे गाने, बजाने और बोलने वाले शब्द नहीं हैं। वे सारे ब्रह्माण्ड की जानों की जान हैं। उन्होंने बाबा खेमदास जी से प्रश्न करने शुरू किये। बाबा साहिब, वेदान्ती थे और शब्द-अभ्यासी नहीं थे, उन्होंने कह दिया, हमें मालूम नहीं। थोड़े समय बाद आपके पिता परम-धाम चले गए। आप महात्माओं की खोज में घर से निकले और जगह-जगह, जहाँ-जहाँ महात्मा की ख़बर सुनते, वहाँ-वहाँ जाकर उनसे पाँच शब्दों के विषय में पूछताछ करते। लेकिन किसी ने आपकी सन्तुष्टि नहीं की। फिर इसी तरह खोज करते-करते लाहौर पहुँचे, जहाँ आप कई हिन्दू और मुसलमान फ़क्रीरों से मिले। लेकिन जिस चीज़ की आपको तलाश थी, वह नहीं मिली। वहाँ से निराश होकर ननकाना साहिब गये। वहाँ जाकर भाई जोता सिंह से बाबा बालक सिंह जी, हुजूर निवासी की महिमा सुनकर हुजूर ज़िला अटक में पहुँचे। बाबा बालक सिंह जी से भी पाँच शब्द की बाबत वार्तालाप होता रहा। उस समय बाबा राम सिंह जी, भैणी साहिब वाले भी बाबा बालक सिंह जी की सेवा में थे। क्योंकि बाबा बालक सिंह जी साफ़-दिल महात्मा थे, उन्होंने कहा कि हम तो 'वाहेगुरु, वाहेगुरु' का सिमरन करते हैं। हमें पाँच शब्दों का भेद मालूम नहीं। बाबा राम सिंह जी ने कहा कि तुम इनसे उपदेश लेकर नहीं चले, ख़ाली जा रहे हो। बाबा बालक सिंह ने कहा कि यह ऊँचे सौदे के ग्राहक हैं। आप इनके दिल को ठेस न लगाओ। वहाँ से नौशहरा-पेशावर होते हुए , मरदान के इलाक़े में, एक गाँव में पहुँचे। वहाँ की धर्मशाला में एक ग्रन्थी रहते थे, जोकि अच्छे अभ्यासी थे। जब उनसे बात हुई तो उन्होंने बताया कि मुझे मेरे सतगुरु ने दो शब्दों का भेद दिया है, जिनका मैं अभ्यास करता हूँ परन्तु बाकी तीन का अभी नहीं दिया। बाबा जी यह सुनकर बड़े प्रसन्न हुए कि पहले मेरा यह विचार था कि पाँच शब्द मेरा भ्रम है। अब पता लगा कि मेरा विचार ठीक है। जिस मालिक ने आपको दो शब्द देने का प्रबन्ध किया है, वह मेरे लिए पाँच शब्द दिये जाने का प्रबन्ध करेगा।

वहाँ से वापस घर को आ रहे थे। जब ब्यास पहुँचे तो साधुओं की एक टोली हरिद्वार को जा रही थी, उनके साथ चल दिये। हरिद्वार में जाकर कई प्रकार के महात्माओं की संगत की, कई महीने वहाँ रहे मगर जिस चीज़ की तलाश थी वह न मिली। वहाँ से पता लगा कि एक बड़ा बूढ़ा साधु, यहाँ से दस-बारह कोस उजाड़ जंगल में रहता है जो आबादी में नहीं आता, न किसी को अपने पास उहरने देता है। वहाँ से ही वृक्षों के फल, बृटियाँ इत्यादि खाकर अपना गुजारा कर लेता है। आप उसके पास गये। क्या देखते हैं कि वह एक अभ्यासी महात्मा है जो दिन-रात अभ्यास में अपना समय गुजारता है। वृक्ष पर दो रिस्सयाँ लटका कर बाँधी हुई है। जब वह खड़ा-खड़ा थक जाता है तो उनका सहारा ले लेता है। जब उससे जाकर मिले तो पहले तो उसने डराया कि यहाँ तुम क्यों आये। यहाँ शेर और रीछ आते हैं। उन्होंने कहा कि जब आपको नहीं खाते तो क्या मुझे खा लेंगे? जब वह शान्त हुआ तो प्यार व प्रेम की बातें आरम्भ हो गईं। बाबा जो ने पाँच शब्द के विषय में पूछा क्योंकि उनको तो यही शौक था। उसने लम्बा साँस लेकर कहा कि जो धुन मुझको है वही आपको है। यहाँ अभ्यास करके मुझे अन्तर्यामिता और सिद्धि शक्ति प्राप्त हो गई है, लेकिन पाँच शब्द के बिना मुक्ति नहीं। मैंने अपनी अन्तर्यामिता से देखा है कि आगरा में परम सन्त जो सत्रह-अठारह साल से अभ्यास में थे, अब अभ्यास से बाहर आकर प्रचार करने लगे हैं। आप उनके पास चले जाओ। क्योंकि खड़ा रहने से मेरी टाँगें, खून उतरने के कारण, भारी हो गई है, मैं भी वहाँ पहुँचूँगा परन्तु धीरे-धीरे चल कर।

बाबा जी महाराज वहाँ से चल कर आगरा पहुँचे। परन्तु यह पता करना भूल गये थे कि वह सन्त कौन-सी गली में मिलेंगे। कई मन्दिरों, ठाकुरद्वारों और धर्मशालाओं में तलाश की परन्तु वे चिह्न, जो उसने बताये थे, न मिले। अन्त में स्नान करने के लिये यमुना नदी पर आकर सोचने लगे कि अब क्या करें, कहाँ तलाश करें ? अचानक हुजूर स्वामी जी महाराज के दो सत्संगी, उस घाट पर आकर स्नान करने लगे और स्वामी जी की बातें करने लगे। आप झट उठकर उनके पास चले गए और पूछताछ की कि वे महात्मा कहाँ रहते हैं। उन्होंने बताया कि आप पन्नी गली में चले जायें। इसी बीच शाम के सत्संग का समय हो चुका था। जब वहाँ पहुँचे तो स्वामी जी ने सत्संग शुरू किया हुआ था। बाबा जी ने जाकर चरणों में प्रणाम किया। उन्होंने पूछा कि आप कहाँ से आये हो। आपने जवाब दिया, पंजाब से आया हूँ। तो हँसकर बोले हमारे पुराने मेली आ गये। बाबा जी हैरान थे कि मैंने तो उन्हें पहले देखा ही नहीं, पुरानी मुलाक़ात कैसे ? कई महीने स्वामी जी का सत्संग सुना और पूछताछ करके अपनी तसल्ली कर ली। दिल में यह निश्चय हो गया कि इनसे बढ़कर कमाई वाले तसल्ली कर ली। दिल में यह निश्चय हो गया कि इनसे बढ़कर कमाई वाले

महात्मा नहीं मिलेंगे। लेकिन दिल में यह अटक पड़ी थी कि स्वामी जी मोने हैं, मैं सिक्ख हूँ, इनसे कैसे दीक्षा लूँ ?

एक दिन सत्संग के बाद जब सब लोग चले गये, बाबा जी और स्वामी जी अकेले रह गये, तो स्वामी जी ने पूछा अभी तुम्हारे दिल में सिक्ख और मोने के सवाल का फ़ैसला हुआ है या नहीं ? उनकी अन्तर्यामिता देखकर, बाबा जी के आँसू निकल पड़े। ख़ैर स्वामी जी ने उन्हें सन्तमत के बारे में अच्छी तरह खोलकर समझाया और कहा कि यहाँ मोने व सिक्ख का सवाल नहीं, सन्तमत की फ़िलासफ़ी ही और है। फिर स्वामी जी से उपदेश लेकर कुछ समय वहीं अकेले अभ्यास करते रहे। एक दिन बाबा जी बाग़ में अभ्यास कर रहे थे कि स्वामी जी आ गये। क्योंकि बाबा जी की वृत्ति अन्दर थी, इसलिये न उठे, न प्रणाम किया। स्वामी जी अपनी शक्ति से उनकी वृत्ति बाहर ले आये और पूछा कि बताओ, गुरु नानक का मार्ग ठीक है या नहीं। उन्होंने जवाब दिया कि रास्ता तो सोलह आने ठीक है, वृत्ति रूहानी मण्डलों पर जाती है, पर कुछ अटक पड़ती है। स्वामी जी ने कहा नहीं, तुम यह कर चुके हो और पिछले जन्म में तुम हमारे साथ थे। यह सबकुछ तुम्हारा किया हुआ है। बाबा जी ने पूछा कि इसका प्रमाण ? स्वामी जी ने कहा कि यदि प्रमाण चाहते हो तो भजन में बैठो। स्वामी जी ने भजन में बैठाकर अपना ध्यान देकर जो रुकावट थी, वह साफ़ कर दी। बाबा जी कहने लगे हमारा काम तो पूरा हो गया। अब बताईये कौन-से तीर्थ पर बैठकर अभ्यास करूँ। स्वामी जी महाराज ने फ़रमाया कि दुनिया में स्वार्थ और परमार्थ दोनों पक्ष पूरे होने चाहियें। यदि त्याग में रहोगे तो लोगों का खाना पड़ेगा। लोग माथा टेकने वाले और सेवा करनेवाले, तुम्हारे परमार्थ की कमाई लूट लेंगे। दुनिया में कोई न कोई काम करना चाहिये। हक़ की कमाई से अभ्यास पूरा होगा।

सिक्ख पलटन नं. 24 वहाँ थी। उसमें भर्ती होकर, तीन साल वहाँ सत्संग भी किया और नौकरी भी की। फिर उसी प्रकार जगह-जगह छावनियों में फिरते रहे और नौकरी भी करते रहे, अभ्यास भी करते रहे। करीब तैंतीस साल नौकरी करके रिटायर हो गये परन्तु नौकरी के बीच में भी अभ्यास करते रहे। क्योंकि आपने कमाण्ड अफ़सर और मेजर साहब को गुरुमुखी पढ़ाई थी, इसलिये वे आपका बड़ा लिहाज करते थे। जब दो-चार दिन की छुट्टी पलटन में होती तो

वक्ष वे सको अध्यास के स्थाने क्योंकि आपको एकान कार के स्थाने रियम तोने में क्यास के केनों औषड़ी आपका, अध्यास कार हुन केना का मान स्थान के हैं तक के क्यों में तो अब तम करन का तक जा क्या केना स्थान के आप तक का स्थान के कार्न में पानु केन तम क्यास क्या केना स्थान के आप तक का स्थान के कार्न मा

अवका अबद के जान के सिरा असरे में नामें हुन। जान के हा को के मांच आन हुन। हुन के अवकार नका हुनारे हैं के बारवार सिर कार्यों के आवे हैं उसी सिर्फ मारों के नाता है हैं हुन के स्थित में हुन मायद के तब हैं हिना के कारेट नाता हुन सार ने कार खाई 'बिटोपीर' बिसामें क्यांक होते हैं नाता बाह हुन को उसमें आप आ सा हैं

क्ष सम्बद्ध । १५६ को दे ही के कर दे गया उन नवस्का को काम आया। पासी मुख्य हो वालका में होंगे हुए ग्रीड के गर वट गीड में जासंग कर के लिये जाना होंगे।

अध्याय छ होते में निवास का हाता बोद हर और सोकों का दौर जब करने

क्ष सम्बद्ध अर्थ में सुन स से किया है जा है भी गर्स में एक मेंनर मंगा के सकत या है तहन तेता हैंके अपने नलीर और नुमास ने नेकलक केंद्रकरण ने नुम नेकल हैं के बुन्ति योग के बच्चार ने नाने ते ज़बतें अबें बच के लाम में बनाइते ने बत हाई करें पर्क कर के कर ही नोई की कई का के वर्त केंग होंक में बारे क्यार माद्रों के तरक में होता उसके बहुबात हम के स्थान य अवारों के पुत्र के यह दें किए का में ने हैं बार करने के लिए का मों उसे तेन सी रेहें में की रेक्ट स का जा जा जा क लक्त कर के वे वेटों य का उस दी तन में वेटे करनी वी में के मान का का का में देखा में बहा का मारे के वें तर वन हे जो जक साँच सब के तर में तरह की व क्त होन्द्र है बार कर, केन्द्र ने दी की कीने दी तर कर्न सक वितिवास में बार्न हैं कर में बेंक का नके में का सकत रेंच मोत म बई तक का मोत म होगा, उन मो। तम की में साम में त्यां अव अस्मा अने वें आता नवें की तका केवा व वे तन अ कव वं करें नहीं अनि स्थें त्यां ने में में में में के त कर है से वह देशन अन्य हुत है के तम सहित्यों ने उसन रेट सम्मानं..." के दुनों को रेने कुनों का माना तिया गा और लाद को यो एक को स्था-तर के प्रकार पाता वर्त रिकार अप के अध्यान कि रिकार कर दे हैं है गाँधी और हुज़्र का सेवक प्रीतम सिंह पहले से ही पहुँचे हुए थे। वहाँ सत्संग के बाद लोगों ने हुजूर को मिलने-मिलाने का कष्ट नहीं दिया।

यह इलाक़ा बड़ा हरा-भरा है। जमीन में नमी है, इसलिये गन्ना बारानी भूमि में ही बिना मेहनत के हो जाता है। सब लोग ख़ुशहाल हैं। सज्जन और प्रेमी प्रतीत होते हैं। चारों तरफ़ हरियाली नज़र आती है। जो आदमी सिरसा डबवाली से आया हो, उसको यह दृश्य-परिवर्तन आश्चर्यजनक लगता है। सरदार साहिब सत्संग के बाद कार में जालन्धर तशरीफ़ ले गये।

24 नवम्बर, 1943 को सुबह नौ बजे हुजूर, मुन्शी राम सैनी कपूरथला वाले की कार में गाँव सीकरी, जो यहाँ से तीन-चार मील पर है, सत्संग-घर का मौक़ा देखने तशरीफ़ ले गये। वहाँ गाँव के बाहर मास्टर जगत सिंह की जमीन पर हुजूर ने सत्संग-घर बनाया जाना पसन्द किया है। फिर वहाँ से धूल व रेत के बादलों में हुजूर पैदल सीकरी गाँव में गये, यहाँ एक जगह और आबादी में दिखाई गई। यह बहुत छोटी-सी जगह थी। यहाँ हुजूर ने एक शब्द श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से पढ़वा कर उपस्थित लोगों को समझाया कि देवी-देवताओं की मूर्तियों को पूजने से मुक्ति प्राप्त नहीं हो सकती। असली देवी-देवता तुम्हारे अन्दर हैं। वे उस समय मिलेंगे जब तुम मन और रूह को एकाग्र करके अन्दर जाओंगे, वे आत्मा के कारिन्दे (नौकर) हैं, इसलिये मनुष्य, जो परमात्मा का अंश है, जिसका दर्जा सृष्टि में सबसे ऊँचा है, अपने करिन्दों को नहीं पूजना चाहिये। बल्कि पूरे गुरु से नाम का रास्ता लेकर अन्दर रूहानी मुक़ामों पर जाना चाहिये। देवता भी इस पदवी के लिये तरस रहे हैं।

वहाँ से सीधे कार में सवार होकर बारह बजे के क़रीब ढट गाँव वापस आ गये। रास्ते में बहुत रेत थी। दो बजे सत्संग का समय था। सत्संग सुनने के लिये लाउड-स्पीकर लगाये गए थे। भीड़ पचास-साठ हजार से कम नहीं होगी। स्त्री-पुरुषों का समुद्र-सा दिखाई देता था। बड़े-बड़े मेलों में भी इतनी भीड़ नहीं देखी गई। सबने चुपचाप होकर हुजूर का सत्संग सुना। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'काम क्रोध परहर पर निंदा। लब लोभ तज होह निचिंदा ¹⁵ पढ़ा गया। इस शब्द में अन्दर की चढ़ाई का वर्णन किया गया है। हुजूर ने फ़रमाया कि जब तुम काम, क्रोध, लोभ और मोह को छोड़कर मन व रूह को इकट्ठा करो तो पहले तुम्हें बिजली की-सी रोशनी दिखाई देगी। फिर तारा मण्डल, सूर्य और चाँद, चाँद से परे स्वयं सतगुरु नूरी स्वरूप में तुम्हें मिलेंगे और शब्द का पल्ला तीसरे तिल पर पकड़ायेंगे। इस शब्द के बाद हुजूरी वाणी में से 'सतगुरु का नाम पुकारों 4 लिया गया। सत्संग साढ़े चार बजे के लगभग समाप्त हुआ। हुजूर एक घण्टा ठहर कर जालन्धर वापस सरदार भगत सिंह वकील के यहाँ रात को तशरीफ़ ले गये। 25 नवम्बर को सुबह नहा-धोकर नाश्ता करके दस बजे वहाँ से चल कर दोपहर के लगभग ग्यारह-बारह बजे डेरे आ पहुँचे।

231

हुजूर का डेरे में निवास

26 नवम्बर, 1943 डेरे में रोज़ शाम को सत्संग होता है। लोग मासिक सत्संग के लिये आ रहे हैं। कल 27 नवम्बर को सुबह-शाम दो सत्संग होंगे और प्रात: सत्संग साढ़े नौ बजे शुरू होगा।

27 नवम्बर, 1943 को दो बार सत्संग हुआ। शाम के सत्संग में हुजूरी वाणी में से 'सत्संग करत बहुत दिन बीते। अब तो छोड़ पुरानी बान' और गुरु राम दास का शब्द लिया गया। कल के सत्संग में सांसारिक चर्चा करते हुए हुजूर ने फ़रमाया कि इस संसार में कोई किसी का नहीं है। इसलिये संसार के सब रिश्ते-नाते झूठे हैं। केवल पूरे गुरु का नाता सच्चा और स्थायी है। इन झूठे सम्बन्धों के कारण मनुष्य इस संसार में बार-बार जन्मता और मरता है। जैसे मृग के प्रेम से भरत ऋषि को जन्म धारण करना पड़ा था :

एक मृग के प्रेम बस, भरत धरी फिर देह। कबीरा तिन की कौन गति, जिनके लाख सनेह॥

हुजूर ने यह भी फ़रमाया कि सभ्य-व्यक्ति सेवा करने में शर्म महसूस करते हैं, जबिक साध-संगत की सेवा से ही उनको कुछ मिलेगा और यह भी फ़रमाया कि सिमरन से ही अभ्यासी सूर्य और चन्द्र मण्डल को पार करके तीसरे तिल तक पहुँच सकता है। यदि सिमरन से मन न ठहरे तो ध्यान साथ दे दो। यदि ध्यान से भी न ठहरे तो साथ शब्द भी दे दो।

28 नवम्बर, 1943 रविवार को सुबह नौ बजे से ग्यारह बजे तक हुजूर सेवा में बैठे। इसके बाद बारह बजे सत्संग शुरू हुआ। सत्संग में भीड़ ग्यारह-बारह हजार से कम नहीं थी परन्तु कुछ सत्संगों में इससे भी अधिक हुआ करती है। आजकल सफ़र की बहुत तकलीफ़ है और हुजूर होशियारपुर के जिले में

6 दिसम्बर 1943

29 नवम्बर 1943

29 नवम्बर, 1943 सोमवार को हुजूर सुबह नौ बजे से लेकर तीन बजे तक पुरुषों और स्त्रियों को नाम देते रहे। इसके बाद पाँच बजे सेवा में आ गये। रात साढ़े दस बजे तक बातचीत भी करते रहे। मंगलवार सुबह सत्संगियों को नाम दिया। फिर शाम को सत्संग किया। फिर आठ बजे के बाद तक डाक सुनते रहे जो तीन-चार दिन से नहीं सुनी थी। कल सुबह नौ बजे अमृतसर तशरीफ़ ले जायेंगे। शाम को आठ बजे तक सारी डाक समाप्त कर दी।

1 दिसम्बर, 1943 को नौ बजे कार में डेरे से चल कर सीधे जिला कचहरी में डी.सी. आफ़िस के सुपरिटेण्डेण्ट लाला नत्थू राम के यहाँ गये। वहाँ पुलिस इन्सपेक्टर को पिस्तौल व लाइसेन्स दिखाये। दीवान भवनानी भी साथ थे। उन्होंने भी पिस्तौल तथा लाइसेन्स दिखाया। नये लाइसेन्स के लिये प्रार्थना-पन्न दिये गए। इम्पीरियल बैंक * में पाँच रुपये फ़ीस जमा कराई गई। कचहरी से सीधे इम्पीरियल बैंक हुज़ूर के साथ गये। मुझे कई काम थे। वहाँ से बारह बजे दोपहर को अमृतसर सत्संग-घर पहुँचे। हुज़ूर ऊपर की मंजिल के आँगन में धूप में बैठ गये। अमृतसर के सत्संगी आसपास जमा हो गये। मैं जाकर निचले कमरें में लेट गया, क्योंकि मुझे सख़्त बुखार हो रहा था, चार बजे तक लेटा रहा, फिर कुछ आराम महसूस किया। हुज़ूर साढ़े चार बजे सत्संग करने लगे 'बिख बोहिथा

6 दिसम्बर, 1943 की सुबह हुजूर लाहौर तशरीफ़ ले गये और वहाँ से सात दिसम्बर को वापस आ गये। (मैं एक से सात दिसम्बर तक इंफ़्लुइंजा से बीमार रहा) हुजूर बहुत थकावट महसूस कर रहे हैं।

8 दिसम्बर, 1943 बुधवार को एक मोटे-तगड़े बड़े डील-डौल वाले, सिर पर छोटे-छोटे बालों और ख़शख़शी दाढ़ी वाले महात्मा सत्संग में तशरीफ़ लाये। उनके साथ एक दुबला-पुतला लम्बा-सा सिक्ख साधु था। वे श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का आधा शब्द सुनकर चलते बने, सारा नहीं सुना। आज वे जालन्धर से अपनी स्त्री के साथ आये और पूरा सत्संग सुनकर गये। सच कहा है 'भरम भेख भरमाई है'।

12 दिसम्बर, 1943 शाम के छ: बजे, मैं एक रात के लिये लुधियाना चला गया। सोमवार 13 दिसम्बर को बम्बई एक्सप्रेस में शाम के साढ़े पाँच बजे रवाना होकर अमृतसर साढ़े छ: बजे पहुँच गया। यह अजीब बात है कि रेलवे स्टेशन लुधियाना पर इस गाड़ी को साढ़े तीन घण्टे लेट लिखा हुआ था पर दो घण्टे के बाद ही गाड़ी आ गई। यह इसलिये होगा कि मुसाफ़िर गाड़ी न चढ़ सकें क्योंकि आजकल उल्टा हिसाब हो रहा है। पहले तो रेलवे द्वारा प्रोपेगण्डा करके लोगों को कहा जाता था कि लारियों में यात्रा न करो, रेल में यात्रा करो। आजकल रेलवे लोगों को सफ़र न करने का इश्तहार देती है। यह ग़लत-बयानी शायद उसी प्रोपेगण्डे का हिस्सा होगी।

14 दिसम्बर, 1943 को हजारा सिंह के मुक़द्दमे में मेरी गवाही थी। मैंने तो उसको सच्चे दिल से समझाया कि मुक़द्दमे से दूर रहो, मगर यार लोगों ने अपने हलवे-माण्डे की ख़ातिर उसको उकसा रखा है। 14 दिसम्बर को पेशी के बाद सरदार साहिब व मिलक साहब तो किसी कार में डेरे आ गये और मुझे मेरे भाग्य पर छोड़ आये। मैं पार्सल ट्रेन में शाम के छ: बजे के क़रीब वापस ब्यास पहुँच गया। वहाँ से कार में डेरे जाते ही काम का जोर था। लोग सिरसा जा रहे थे। कोई सेवा दे रहा था। कहीं सवा ग्यारह बजे जाकर सोने का समय मिला।

लादया दीआ समुंद मंझार ै। मैं धूप में बैंच पर बैठकर धूप सेकने लगा। वहाँ से साढ़े छ: बजे चल कर रात को साढ़े सात बजे डेरे पहुँच गये।

^{*}अब स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया।

अध्याय 14 सिकन्दरपुर का दौरा हुजूर का सिकन्दरपुर का दौरा और वहाँ निवास 15 से 27 दिसम्बर 1943

15 दिसम्बर, 1943 को सुबह चार बजे सिरसा चलने के लिये उठ बैठे। सुबह साढ़े पाँच बजे डेरे से चल पड़े। रास्ते में ढिलवाँ से करतारपुर तक बैलगाड़ियों का ज़ोर था, जो मिलों में गन्ना लिये जा रहे थे। धुन्ध से कुछ दिखाई नहीं देता था। जालन्धर पहुँचे तो अभी बहुत अँधेरा था। वहाँ से चल कर कुछ मिनट फ़िल्लौर में दीनानाथ वकील के दफ़्तर के आगे ठहरे, क्योंकि लुधियाना के बहुत-से स्त्री-पुरुष वहाँ जमा हो गये थे। हमने चाय पी, वहाँ से मोगा डॉ. प्रेमनाथ जी के यहाँ गये। मगर डॉक्टर साहिब वहाँ नहीं थे। फिर कप्तान लाल सिंह के घर होते हुए कोटकपूरा में आकर रुके, जहाँ कि बहुत-सी संगत जमा थी। हुजूर ने कार से उतर कर उनको दर्शन दिये। फिर मुक्तसर में म्युनिसिपल कमिश्नर पण्डित बुधराम जी ने स्टेज सजा रखी थी, जहाँ कि बहुत-से लोग जमा थे और सामने पशुओं की मण्डी लगी हुई थी। एक ऊँट पाँच सौ से लेकर आठ सौ तक क़ीमत पाता है। वैसे ही भैंसों की क़ीमतें भी पाँच सौ रुपये से आठ सौ रुपये तक हैं। मुक्तसर से आगे मलोट, डबवाली और डबवाली से एक-दो मील आगे जाकर ड्राइवर ने चार गैलन पेट्रोल, मोटर कार में डाला। मगर आधा मील जाकर कार रुक गई। चलने से साफ़ इनकार। कई पुर्जे खोले मगर बेकार। आबादी का कहीं नामों-निशान नहीं था। पीने को पानी तक नहीं मिला। अब क्या करें ? 'न पाए रफ्तन न जाए मान्दन' यानी न जाने का रास्ता न ठहरने की जगह। सोचा कि कोई लारी आये तो उसमें हुज़ूर को सामान के साथ रवाना कर दें और हुजूर सिरसा से कोई लारी भेज दें जो हमारी कार को बाँधकर खींच ले जाये। आख़िर एक लारी डबवाली से आती दिखाई दी। जान में जान आई। उसका ड्राइवर सिक्ख था। उसने उतर कर हमारी कार की जाँच की। फिर कहा कि वैक्युम में कोई रुकावट है। कार के नीचे घुसकर देखा तो पता लगा कि वास्तव में रूई आदि के छोटे-छोटे टुकड़े इकट्ठे होकर नलकी को बन्द कर रहे हैं। ख़ैर, जब बीमारी का पता चल गया तो इलाज भी जल्दी हो गया और तीन बजे के बाद हम चल पड़े। लारी हमारे पीछे थी। पाँच बजे के क़रीब सत्संग-घर में आ गये। वहाँ आकर खाना, जो साथ लाये थे, गर्म करवा कर खाया और वहाँ से केरे मिल में आकर सामान उतारा। वहाँ एक घण्टे के क़रीब टहर कर अँधेरा होते-होते घर आ गये।

16 दिसम्बर, 1943 को दिन भर डाक का काम होता रहा क्योंकि कई दिन की डाक इकट्ठी हो गई थी। राव बहादुर सरदार सिंह ने हुजूर की पोती की शादी पर, पाँच सौ रुपये का चैक भेजा परन्तु हुजूर ने लेने से मना कर दिया कि सत्संगियों के साथ न्योता-भाजी प्यार में रुकावट डालेगा। शाम को बातचीत में किसी ने कहा कि बढ़ई, कीकर की लकड़ी काटने तराशने से बहुत घबराता है। इस पर हुजूर ने फ़रमाया कि एक बढ़ई दिरया में बहा जा रहा था। किसी ने किनारे से आवाज दी 'मेरा कोठा छत दो'। बढ़ई बोला, लकड़ी किस वृक्ष की है। उसने पुकारा कीकर (बबूल) की तो बढ़ई ने जवाब दिया कि मुझे बह जाने दो।

19 दिसम्बर,1943 रिववार शाम के साढ़े पाँच बजे हुजूर ने सिरसा सत्संग-घर में सत्संग किया। भीड़ दो-तीन सौ के क़रीब थी। मगर सिरसा के मालदार बिनये लोग सत्संग में नहीं आते। 'नाम निर्णय करूँ भाई" हुजूरी वाणी में से लिया गया। हुजूर ने फ़रमाया कि कमाई के बिना अन्दर नहीं जा सकते। चाहे कमाई इस जन्म में कर लो या अगले जन्म में, मगर जाओंग कमाई करके। एक बार एक महात्मा पुष्कर तीर्थ को जा रहे थे। किसी दूसरे महात्मा ने पूछा कि वहाँ क्यों जा रहे हो ? तो उन्होंने जवाब दिया कि पुष्कर में स्नान करके फिर मनुष्य जन्म मिलेगा तो दूसरे महात्मा ने कहा कि भाई, अब भी तो तुम मनुष्य हो, जो अगले जन्म में करना है वह अब ही कर लो।

सरगोधा से बाबू गोबिन्द राम तीन-चार बीबियों के साथ, कुछ दिनों से यहाँ आये हुए हैं। 20 दिसम्बर को एक बे-सत्संगी अफ़सर के पत्र के जवाब में हुजूर ने लिखवाया कि जब से यह दुनिया बनी है तब से हम इस दुनिया में चौरासी लाख योनियों में भटक रहे हैं और दु:ख भोग रहे हैं। मनुष्य जन्म सबसे उत्तम है, क्योंकि इस जन्म में ही चौरासी लाख योनियों में भटकने से छुटकारा मिल है, क्योंकि इस जन्म में ही चौरासी लाख योनियों में भटकने से छुटकारा मिल सकता है। मनुष्य शरीर में परमात्मा को मिलने का रास्ता है और किसी शरीर सकता है। मनुष्य शरीर में परमात्मा को मिलने का रास्ता नहीं है। देवी-में यह रास्ता नहीं है। याय, भैंस आदि जानवरों को तमीज नहीं है। देवी-देवताओं और फ़रिश्तों के शरीर में भगवान् से मिलने का रास्ता नहीं है। इसलिये देवी-देवता भी यह चाहते हैं कि हमें मनुष्य का शरीर मिले तो हम भिक्त करके आवागमन से छूट जायें क्योंकि ब्रह्मलोक से लेकर पाताल लोक भिक्त करके आवागमन से छुटकारा मिलता है। दान, पुण्य, यज्ञ, तप, संध्या, नेम, जायें तो आवागमन से छुटकारा मिलता है। दान, पुण्य, यज्ञ, तप, संध्या, नेम, कर्म-धर्म आदि अच्छे कर्म हैं जिनका अच्छा फल मिलेगा, मगर इस दुनिया में इन नेक कर्मों का फल भोगना पड़ेगा और भोग कर फिर चौरासी का चक्कर तैयार है। सिवाय (धुनात्मक) नाम के और पूरे सन्त-सतगुरु के, जीव की चौरासी काटी नहीं जा सकती।

21 दिसम्बर, 1943 की सुबह को बीबी रली, बीबी रक्खी और बहुत से सत्संगी डेरे से आ पहुँचे।

शाम को सरदार सोहन सिंह भण्डारी भी शाहजहाँपुर से तशरीफ़ लाये। हुजूर बारात की लारियों के लिये, ग्रेवाल मिल्स से सिकन्दरपुर तक रास्ता समतल और साफ़ करा कर सफ़ेदी के निशान लगवाते रहे, जिससे बिना बताये लारी वाले बारात को पक्की सड़क से सिकन्दरपुर तक ले आयें। बारात का स्वागत सिकन्दरपुर शान्ति आश्रम में होगा। सिरसा से भी लोग निमन्त्रित किये गए हैं।

23 दिसम्बर, 1943 सुबह कराची से सरदार नानक सिंह दो सत्संगियों के साथ तशरीफ़ ले आये। लाहौर से भी एक-दो आदमी आये हुए हैं। आजकल पंजाब में देहात की जिन्दगी ऐसी हो गई है कि सज्जन पुरुष का गुजारा कठिन है। शहरों में लोगों में पार्टीबाज़ी कम है। लोग कम जगह में दो या तीन मंजिले मकान बना कर गुजारा कर लेते हैं। कोई कुछ करे, दूसरा हस्तक्षेप नहीं करता। देहात में ऐसा नहीं। जमींदारों को अपने रहने व पशुओं के लिये जगह घेरनी पड़ती है। इसलिये हुजूर ने फ़रमाया कि जमींदार की दाढ़ी के नीचे सौ बीधे जमीन आती है। जमींदार का गाँव में रौब-दाब,

दबदबा न हो तो लोग न उसकी फ़सल छोड़ेंगे, न उसके पशु और न ही उसके मुज़ारों के पशु। औरतों तक को उठा ले जाते हैं।

24 दिसम्बर, 1943 की सुबह पण्डित लाल चन्द लायलपुर से तशरीफ़ लाये। शाम को सरदार भगत सिंह तथा श्री आहलुवालिया तशरीफ़ लाये। दोपहर को एक सिक्ख जैंटिलमैन ने गुरुद्वारा रीठा साहिब का हाल बताया कि पीलीभीत से आगे एक स्टेशन पीलाँवाली आता है वहाँ से गुरुद्वारे तक का चार-पाँच दिन का पैदल रास्ता है। रास्ते में घास का जंगल है। घास आदमी के क़द से ज्यादा ऊँची है। कहीं इक्की-दुक्की झोंपड़ियाँ रास्ते में नज़र आती हैं। गाइड के बिना रास्ता मिलना कठिन है। गाइड एक रस्सी लेकर एक सिरा अपने हाथ में व दूसरा यात्री के हाथ में दे देता है। वरना जंगल में दोनों बिछुड़ जायें। गुरुद्वारे में एक रीठे का वृक्ष है जिसकी एक ओर मीठे और दूसरी ओर साधारण रीठे होते हैं। महन्त साहिब मीठे रीठे पवित्र होने के कारण, चार-पाँच रुपये दर्जन बेचते हैं। आटा, दाल आदि बहुत महँगा है। लड़ाई से चार-पाँच वर्ष पहले रुपये का सात सेर आटा मिलता था। हुज़ूर ने फ़रमाया कि सन्तों की असली करामात जीवों को काल के जाल से छुड़ाकर सत्तलोक पहुँचाना है।

25 दिसम्बर, 1943 शाम के सात बजे बारात आ पहुँची। शान्ति आश्रम के बाहर के मरदाने सहन के दक्षिण की दीवार के साथ, दो शामियाने लगाकर नीचे दिरगाँ बिछा दी गईं और उन पर कुर्सियाँ और सोफ़ा सैट सजा दिये गए। सिरसा शहर के जाने-माने लोग और सरकारी अफ़सर बारात आने से पहले, तशरीफ़ ले आये थे। सरदार सेवा सिंह, सेशन जज गुलवन्तराय, दूसरे अतिथि और हुज़ूर महाराज स्वयं वहाँ उपस्थित थे। बारात के स्वागत के लिये एक मोटर कार सिरसा से, जहाँ से कुछ आगे पक्की सड़क से सिकन्दरपुर को मुड़ना पड़ता है, भेज दी गई थी। वहाँ पर साइन-बोर्ड लगा दिया गया था। बारात के आने से दो दिन पहले हुज़ूर ने स्वयं उस सड़क को ठीक करवाया था। गड्ढे आदि भरवा कर, जगह-जगह मिट्टी की बुर्जियाँ बनवा कर उन पर सफ़ेदी डलवाई ताकि रास्ते का आसानी से पता लग जाये। इस काम में तीन-चार घण्टे लगे थे। यदि हुज़ूर की आयु का विचार किया जाये तो यह कड़ी मेहनत थी, मगर इस काम के बाद भी हुज़ूर मिल में जाकर मज़दूरों और क़ारीगरों का काम देखते रहे।

बारात की लारी और कार शान्ति आश्रम के दरवाजे तक आ गई। वहाँ से सब बाराती उतर कर शामियाने के नीचे आ गये। दूल्हा फ़ौज में कप्तान है। उसके हाथ में तलवार थी। क़द लम्बा, बदन सुडौल और चेहरे से शराफ़त टपकती थी। सब बाराती शराफ़त का नमूना मालूम होते थे। थोड़ी देर सब मिल-मिला कर अपने कैम्प में तशरीफ़ ले गये। वहाँ नहाने के लिये गर्म पानी व खाने के लिए मिठाई और पीने के लिये चाय तैयार थी। गैस जल रहे थे। कैम्प में भी शामियाना लगा हुआ था, जिसके नीचे मेज-कुर्सियाँ लगी हुई थीं। वहाँ चाय का प्रबन्ध था। इसके बाद रात को दस बजे खाना शान्ति आश्रम में दिया गया।

26 दिसम्बर, 1943 सुबह हुजूर छ:-सात बजे के लगभग 'आसा दी वार' सुनने के लिये शान्ति आश्रम के अन्दर आँगन में आ बिराजे। बाराती आठ बजे तशरीफ़ लाये। दूल्हा–दुल्हन को श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के सामने बैठाया गया और आनन्द कारज से पहले हुजूर ने श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के एक शब्द का अर्थ किया। इसके बाद श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से लाँवों के शब्द पढ़े गये। रागियों ने आनन्द साहिब गाया। इसके बाद दरबारी लाल साधु ने सरदार कृपाल सिंह की लिखी हुई कविता पढ़ी। फिर सरदार भगत सिंह ने मारू राग में लिखी हुई अपनी कविता पढ़ी जिसके अर्थ बड़े गूढ़ थे। बहुत से सुनने वाले उन इशारों को, जो उस कविता में लाये गए थे, समझ नहीं सकते थे। इस रीति में तीन घण्टे लग गये। एक बजे बारात का खाना हुआ, शाम के पाँच बजे चाय और रात के दस बजे फिर खाना दिया गया। हुजूर स्वयं खाने व चाय के समय गद्देदार कुर्सी पर तशरीफ़ रखते थे। दूसरे अतिथि सत्संगी उनके पास ही दूसरी कुर्सियों पर बिराजमान थे। मैं सरदार हरबन्स सिंह तथा उनके परिवार के अतिथि-सत्कार का कायल हूँ। बहुत-से सत्संगी बिना बुलाये भी आये हुए थे। कई दूसरे व्यक्ति जो सम्बन्धित नहीं थे, खाना खाने आये। मगर उनके माथे पर कभी बल नहीं देखा। हमेशा सब आनेवालों का सत्कार करके ख़ुश होते हैं। कभी तकलीफ़ महसूस नहीं करते। ऐसा मालूम होता था कि उनके यहाँ दूध, घी, चाय तथा स्वादिष्ट भोजन का दिरया बह रहा है जिससे सब बराबर लाभ उठा रहे हैं। उनके सुपुत्र भी अतिथि-सत्कार में उनसे कुछ कम नहीं। बल्कि स्वयं हरएक अतिथि को खाना पूछते हैं। किसी को बिना खाना खिलाये या चाय पिलाये नहीं जाने देते। सच है– 'हर कि ख़िदमत कर्द ऊ मख़दूम शुद'। यदि किसी का ख़िदमत करने के कारण, ख़िदमत करवाने वाला बनने का हक़ है तो इन लोगों का जो सच्चे अर्थों में ख़िदमत करनेवाले हैं।

27 दिसम्बर, 1943 की सुबह को बारात डबवाली के रास्ते से विदा हो गई और हुजूर उसी समय बाहर कैम्प में तशरीफ़ ले गये कि जल्दी सब ख़ेमे व शामियाने बाँधकर व लारी में लाद कर, डेरा ब्यास भेजे जायें क्योंकि वहाँ बड़े दिनों के भण्डारे के कारण, संगत के रहने के लिये उनकी बड़ी आवश्यकता थी। वहाँ से दस बजे वापस आये और खाना खाने के बाद एक बजे कार से रवाना हो पड़े। सरदार भगत सिंह व मिस्टर आहलुवालिया की कार एक घण्टा पहले जालन्धर के लिये रवाना हो चुकी थी। रास्ते में शाम के चार-पाँच बजे के लगभग मोगा में, दोनों कारें मिल गईं। वहाँ सरदार प्रीतम सिंह की तबीयत का हाल पूछकर हुजूर लुधियाना, सूर्य छिपने से पहले, पहुँच गये। वहाँ बहुत-सी संगत जमा थी। वहाँ पाँच मिनट दर्शन देकर, फ़िल्लौर में वकील लाला दीनानाथ के मकान की ऊपर की मंजिल में कुछ मिनट सरदार भगत सिंह की कार का इन्तिजार किया और फिर उसके जाने के बाद, जालन्धर रात के आठ बजे पहुँच गये। वहाँ अधे घण्टे के लगभग ठहर कर, डेरे रात के नौ बजे आ पहुँचे। वहाँ बहुत-सी संगत आई हुई थी। लोगों का आना 29 दिसम्बर प्रात: बल्कि दोपहर तक जारी रहा।

अध्याय 15

डेरे में निवास का हाल

28 दिसम्बर, 1943 को दोनों समय सत्संग हुआ। सुबह हुजूर स्वामी जी महाराज की वाणी में से 'गुरुमता अनोखा दरसा। मन सुरत शब्द जाय परसा" लिया गया जिसमें सन्तों के मार्ग का वर्णन किया गया है। पहली सुन्न सहस्र-दल कमल है। शरीर में बाईस सुन्नें और अठारह बंकनाल हैं। तीसरे तिल में सतगुरु का नूरी स्वरूप, सहस्र-दल कमल में सूक्ष्म स्वरूप और त्रिकुटी में शब्द-स्वरूप है। तीन रास्ते हैं- दायाँ, बायाँ और दरिमयाना (बीच का)। दरमियाने रास्ते को सुखमना कहते हैं। बाईं तरफ़ स्वर्ग-नरक आदि का जाल है, दाईं तरफ़ बहुत देश आबाद हैं, परन्तु उनमें से ऊपर जाने को रास्ता नहीं है। बीच का रास्ता सन्तों का है। जब तक रूह ब्रह्म में नहीं जाती है और इस पर चढ़े हुये पूर्व जन्मों के सारे पाप नहीं धुल जाते हैं। रूह पारब्रह्म का प्रकाश और तेज सहारने के योग्य नहीं होती। यहाँ ब्रह्म में रूह को बहुत समय तक रह कर अभ्यास के द्वारा सब संचित कर्म यानी पुण्य और पाप, जो उसने पिछले करोड़ों जन्मों में किये हैं, साफ़ करने पड़ते हैं, क्योंकि जब से ये सृष्टि बनी है तब से हम लोग इस संसार में आये हुए हैं और इसीलिये हमारे अनिगनत जन्म हो चुके हैं। जैसे कि भगवान् कृष्ण ने गीता में कहा है। हुजूर ने फ़रमाया कि पारब्रह्म में जो किंगरी की धुन हो रही है यदि उसको आधा घण्टा भी सुन लें, तो अनेकों जन्मों का पता चल जाता है।

28 दिसम्बर, 1943 की शाम को श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से शब्द पढ़ा गया। 'दुनीआ न सालाहे जो मर वंअसी' यानी, सांसारिक वस्तुओं तथा सांसारिक जीवों से प्रेम न कर, यह सब मिट जायेंगे। गुरुमुख साधु से प्यार कर, जिससे तेरा जन्म-मरण समाप्त हो जाये। गुरुमुख साधु वह है, जो तीनों शरीरों और तीनों गुणों को पार करके पारब्रह्म में जा पहुँचा हो।

29 दिसम्बर, 1943 को एक बजे सत्संग शुरू हुआ। पचास हजार आदमी होंगे। हुजूर की आवाज लाउड-स्पीकर की सहायता से सत्संग की अन्तिम कतारों से भी परे, साफ़ सुनाई देती थी। लोग चुपचाप कान लगाकर सुनते रहे। पहले हुजूरी वाणी में से 'जग में घोर अंधेरा भारी। तन में तम का भंडारा ' और श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'बिख बोहिथा लादया ' पढ़े गए। हुजूर ने फ़रमाया कि परमात्मा न तो आसमान में है, न पुस्तकों में है बल्कि वह मनुष्य के अन्दर है। पुस्तकें उसकी बड़ाई करती हैं। उनका पढ़ना ऐसा ही है जैसे कोई बीमार अपनी बीमारी का नुसख़ा पढ़ता रहे परन्तु नुसख़े को बनाकर न खाये और बीमारी से आराम की उम्मीद रखे। सत्संग के बाद सेवा में बैठे। हुजूर ने एक सत्संगी को बताया कि माँ-बाप की सेवा भाग्यशाली जीवों को मिलती है।

30 दिसम्बर, 1943 को कोई सत्संग नहीं हुआ। हुजूर सुबह नौ बजे ही बाहर के बड़े सत्संग-हाल में नाम देने के लिये तशरीफ़ ले गये। वहाँ एक हज़ार के लगभग स्त्री-पुरुष नाम के लिये जमा थे। वहाँ से शाम के चार बजे छुट्टी कर के, हुजूर ने घर आकर, स्नान करके खाना खाया, फिर पाँच बजे सेवा में बैठने के लिये नीचे आ गये। वहाँ एक सत्संगी ने विनती की कि उसका लड़का लड़ाई में गया हुआ था। वहाँ से उसके विषय में बुरी ख़बर आई तो उसके माता-पिता व बाल-बच्चों ने बहुत ग़म किया। सबने खड़े होकर सतगुरु से प्रार्थना की कि उसके विषय में अच्छी ख़बर आये। उसके बाद उसके लड़के का बाहर से पत्र आया जिसमें लिखा था कि हुजूर ने उसको वहाँ दर्शन देकर आदेश दिया कि अपने घर जल्दी अपनी राज़ी-ख़ुशी की ख़बर भेजो। तुम्हारे घर वाले चिन्ता कर रहे हैं। सात-आठ बजे के बीच हुज़ूर फ़ारिंग होकर अपने मकान में चले गए। वहाँ मुझे नौ बजे किसी काम के लिये जाने का अवसर मिला तो पता चला कि हुजूर ने अभी खाना नहीं खाया। यह हाल हुज़ूर के कड़े परिश्रम का है जो हुज़ूर सत्संग के लिये करते हैं यहाँ तक कि रात के साढ़े नौ बजे फ़रमाया कि अब डाक देख लें। मैंने विनती की कि अभी तो आपने खाना भी नहीं खाया। इसलिये हुजूर ने यह विचार छोड़ दिया।

31 दिसम्बर, 1943 की शाम को आँखों के प्रसिद्ध योग्य डॉ. शराफ़ देहली से तशरीफ़ लाये। मैं उन्हें कुछ पहले से जानता था। उनका खाना-पीना बहुत सादा है। केवल एक सब्ज़ी और दो चपातियाँ शाम को खाते हैं। कहने लगे 1 जनवरी 1944

कि मैं देहली में सुबह नौ बजे से लेकर रात के साढ़े दस बजे तक बराबर काम करता रहता हूँ।

1 जनवरी, 1944 को सुबह ग्यारह बजे डॉ. शराफ़ हुजूर से बातचीत करने गये। वहीं सवाल जोकि हरएक पढ़ा-लिखा किया करता है कि दुनिया क्यों बनाई और जब कि परमात्मा में सब अच्छाइयाँ हैं तो उसने बुराई को क्यों बनाया ? और यदि बनाया तो बुराई का नाश क्यों नहीं कर दिया ? जिनका जवाब यह है कि मनुष्य का दिमाग़ और बुद्धि दोनों सीमित हैं। जब मन और बुद्धि की सीमा के पार जायेगा तब पता लगेगा कि जो कुछ परमात्मा ने किया है वह ठीक किया है और जो कुछ हो रहा है वह ठीक हो रहा है। फिर उन्होंने हुजूर से पूछा कि मनुष्य की ज़िन्दगी का उद्देश्य क्या है ? हुजूर ने फ़रमाया कि मनुष्य का दर्जा सृष्टि में सबसे ऊँचा है। उसके शरीर में परमात्मा के मिलने का रास्ता है। उसको चाहिये कि इस शरीर को पाकर, अभ्यास करके, अपने अन्दर परदा खोलकर रूहानी देशों में जाये। वरना उसका इस दुनिया में इनसानी चोला धारण करने का उद्देश्य समाप्त हो जायेगा और वह आवागमन से छुटकारा नहीं पा सकेगा। शाम को सत्संग में कबीर साहिब की शब्दावली में से 'कर नैनों दीदार महल में प्यारा है ¹⁵ पढ़ा गया। हुज़ूर ने उसकी व्याख्या की कि मनुष्य चोले के चार भाग हैं। आँखों के नीचे पिण्ड, उसके ऊपर अण्ड, फिर ब्रह्माण्ड और फिर सचखण्ड। जो पिण्ड के छ: चक्कर हैं वे ब्रह्माण्ड के छ: चक्करों का प्रतिबिम्ब हैं। जो ब्रह्माण्ड के छ: चक्कर हैं वे ऊपर के लोकों का प्रतिबिम्ब हैं। भाव यह कि योगी लोग, पिण्ड के छ: चक्र जो कि प्रतिबिम्ब का भी प्रतिबिम्ब हैं, की साधना में ही अपनी आयु ख़राब करते रहे। जैसा कि सूर्य का प्रतिबिम्ब पानी पर पड़ता है तो पानी में सूर्य की शक्ल कुछ-कुछ दिखाई पड़ती हैं। मगर जब पानी में पड़ रहे सूर्य का प्रतिबिम्ब दीवार पर पड़े तो शक्ल भी सूर्य से बिलकुल नहीं मिलती। ज्यों-ज्यों आँखों से ऊपर जायें, मन को ज्यादा से ज्यादा आकर्षक और सूक्ष्म रचना नज़र आती है। अण्ड लोक इस स्थूल दुनिया से हजारों गुना अधिक आर्कषक, ख़ूबसूरत और सूक्ष्म है।

2 जनवरी,1944 को, क्योंकि लोगों ने वापस जाना था, ग्यारह बजे दोपहर को सत्संग हुआ। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'हर कीआ कथा कहाणीआं गुर मीत सुणाईआं 6 लिया गया।

3 जनवरी, 1944 को डॉ. शराफ़ को दोपहर से पहले नाम दिया गया। शाम को सत्संग हुजूरी वाणी में से 'धुन सुन कर मन समझाई" और 'धन्य धन्य धन धन्य पियारे 🏿 लिये गए। 'छिन छिन रक्षा हो रही। क्या उपमा कहुं में शब्द की े का यह अर्थ किया गया कि शब्द की वजह से ही यह शरीर स्थिर है। जब मृत्यु के समय शब्द पीछे हट जायेगा तो शरीर का नाश हो जायेगा क्योंकि शरीर में जो पाँच तत्त्व यानी मिट्टी, पानी, आग, हवा और आकाश हैं ये सब एक-दूसरे के शत्रु हैं। केवल शब्द ही उनको इकट्ठा रखता है। जब मृत्यु के समय शब्द शरीर से हट जाता है तो मिट्टी पानी में, पानी आग में, आग हवा में और हवा आकाश में लीन हो जाती है और शरीर सड़ने लगता है। ऐसे ही श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में आया है 'पौण पाणी अगनी इक वासा। आपे कीतो खेल तमासा 10 हुजूर ने आज फिर दो-तीन दिन की डाक नहीं सुनी क्योंकि समय ही नहीं है। आज सुबह नाम देने के बाद कालाबाग़ व ऐबटाबाद की संगत में, प्रत्येक व्यक्ति को गुड़, मालटे और एक-एक कुरते का प्रसाद दिया गया। जितना काम हुजूर सुबह से लेकर रात के बारह बजे तक करते हैं और कोई मनुष्य इस प्रकार काम करके बहुत समय तक जीवित नहीं रह सकता। काम भी ऐसा जिसमें हर मनुष्य उनका ध्यान अपनी ओर खींचता है। घर से बाहर आये नहीं कि लोगों ने घेर लिया। स्वर्गीय साईं लसूड़ी शाह लायलपुरी सच कहा करते थे कि जिस मनुष्य के पीछे एक मक्खी लग जाये वह चैन से नहीं बैठ सकता। फिर जिस मनुष्य के पीछे सैंकड़ों मिक्खियाँ हों तो उसका क्या हाल होगा ? यह काम हुज़ूर ही कर सकते हैं। किसी दूसरे में इतनी बर्दाश्त और नम्रता कहाँ! हुजूर स्वयं मुझसे कहा करते हैं कि भई मैंने तो निर्वाह कर लिया जो मेरी जगह होगा उसका क्या हाल होगा ? दुनिया में सच्चे बहादुर और सच्चे सिपाही सन्त हैं।

आज एक यूरोपियन लेडी सत्संगिन ने हुजूर से पूछा कि ध्यान कैसे किया करें ? हुजूर ने जवाब दिया कि जिस तरह सतगुरु का स्वरूप तुम्हें बाहर से दिखाई देता है वैसा अपने अन्दर बनाने का प्रयास करो। सिमरन से ज्यों-ज्यों मन एकाग्र होगा, ध्यान बनेगा। फिर पूछा कि मन क्या है ? जवाब मिला कि ब्रह्म की किरण माया पर पड़ती है, उसका प्रतिबिम्ब मनुष्य के हृदय कमल पर पड़ता है, वह मन है। मन पाँच तत्त्वों का सतोगुणी अंश है। एक थाली में पानी लेकर धूप में रखो। सूर्य की किरणें पानी पर पड़ती हैं और पानी में से सूर्य का प्रतिबम्ब दीवार पर पड़ता है। यदि पानी खड़ा हो तो दीवार पर पड़ने वाला प्रतिबिम्ब चमकदार होता है । यदि पानी साफ़ न हो और हिल रहा हो तो प्रतिबिम्ब भी धुंघला होता है या बिलकुल दिखाई नहीं देता। यह पानी की हरकतों की कमी, वृद्धि या उसकी सफ़ाई पर आधारित है। वैसे ही यदि मन खड़ा है तो वह ज्ञानियों का मन है। यदि मन चंचल है तो वह मूखों का मन है। जब यह नीचे बुरे कर्मों में गिरता है तो मन काल का एजेण्ट है। जब यह एकाग्र होकर ऊपर के मण्डलों में जाता है तो रूह का सहायक है।

अध्याय 16 कालू की बड़ के दौरे का हाल हुजूर का कालू की बड़ की तरफ़ सफ़र, सत्संग तथा वापसी का सफ़र

7, 8 व 9 जनवरी, 1944 डेरे के इतिहास में हमेशा याद रहेंगे। जब से हुजूर डलहौज़ी में, पिछले सितम्बर से बीमार हुए, तब से उन्हें डलहौज़ी में रुचि नहीं रही है और उनको विश्वास हो गया है कि यहाँ की जलवायु उनके अनुकूल नहीं है। डॉक्टर लोग भी यही कहते हैं कि वृद्धावस्था में मनुष्य के लिये चार-पाँच हजार फुट से अधिक ऊँचाई की सर्दी, अनुकूल नहीं होती। डलहौज़ी में वर्षा बहुत होती है। आने-जाने का रास्ता टूट जाता है और बड़ा ख़तरनाक हो जाता है। इन सब कारणों को देखकर हुज़ूर ने बीबी धर्मदेवी (गाँव चलेट, तहसील ऊना) व दूसरे सत्संगियों को आदेश दिया कि कोई ऐसी जगह तलाश करो जो बहुत ऊँची न हो, जहाँ की जलवायु ख़ुशगवार हो और वर्षा की अधिकता न हो। अतएव जनवरी माह के शुरू होते ही बीबी साहिबा ने एक ऐसे स्थान का पता बताया और हुजूर ने बीबी साहिबा को कुछ और साथियों के साथ भेजा कि होशियारपुर में उनकी प्रतीक्षा करें। हुजूर छ: जनवरी को सुबह साढ़ सात बजे मुझे और भाई शादी को साथ लेकर कार में डेरे से चल दिये। जालन्धर से होकर होशियारपुर सुबह साढ़े नौ बजे सुबह गवर्नमेंट कॉलिज के प्रोफ़ेसर लेख राज के निवास-स्थान पर जा पहुँचे। वहाँ एक लारी जिसका सिक्ख ड्राइवर, बड़ा सज्जन और नेक सिद्ध हुआ, बीबी धर्मदेवी और दूसरे सत्संगियों के साथ उपस्थित था। हमने अपना सामान कार से उस लारी में रख दिया। हुजूर स्वयं ड्राइवर के साथ अगली सीट पर बिराजमान हो गये। प्रोफ़ेसर साहिब को भी हुज़ूर ने साथ चलने की अनुमित दे दी। वहाँ से दस बजे से पहले-पहले चल कर हम गगरेट, शिवबाड़ी, सवाँ, मुबारिकपुर, कुनूं की हट्टियाँ गुजर कर भरवाईं, दोपहर बारह बजे के कुछ बाद पहुँचे।

शिवबाड़ी एक घना जंगल है जिसमें एक मन्दिर है, जहाँ साधु लोग ठहरते 245

के घने झाड़-झंकाड़ों में से पहाड़ के ऊपर गये और सब मौका देखा।
अब महसूस होता था कि हुजूर महाराज जी पहले से ही इस स्थान के बारे
में निर्णय कर चुके हैं कि गर्मी का मौसम यहीं बिताया करेंगे। इसिलये लारी के
रास्ते को बड़ी सावधानी से पैदल चल कर हुजूर ने गुजरने के लायक बनवाया।
वहाँ पर पहुँचते ही आदेश दिया कि पटवारी को बुलाकर, जो जगह हमने चुनी
है, उसकी हदबन्दी करवाओ। यह पहाड़ी दो मालिकों की है। एक भाग राजपूतों
का है दूसरा ब्राह्मणों का। यह पहाड़ी पूर्व से पश्चिम तक फैली हुई है। इसकी
चोटी पर तो महन्दड़ों की झाड़ियाँ हैं और दोनों तरफ़ खेती की जगह है, गोया
घोड़े की जीन की तरह है। हुजूर ने बीस कनाल के क़रीब जमीन लेने को कहा।
पूर्व की ओर की जमीन का कुछ हिस्सा ब्रेट गाँव में है और पश्चिम की ओर का
कुछ हिस्सा भटीर गाँव में है। शाम को हुजूर सूबेदार जोधा राम के मकान पर, जो
भटीर गाँव से दो मील आगे उसी सड़क पर है, रहे। वहाँ रात को सत्संगी भजन

पास दुकानें दिखाई दी। उन दुकानों के ऊपर एक छोटी-सी पहाड़ी पर दो बड़ के

वृक्ष खड़े दिखाई दिये। बस यही हमारी मंज़िल थी। लारी को छोड़कर महन्दड़ों

मण्डली ने ख़ूब भजन गाये। हुजूर ने शाम को सत्संग किया और दूसरे दिन सुबह दस बजे के क़रीब फिर निश्चित स्थान पर पहुँच गये जहाँ पटवारियों से नपाई करवा कर, पत्थरों से हदबन्दी की गई और काग़जों व नक्शों का निरीक्षण किया गया। मालिकों को पेशगी देकर 'बयाने' की रसीद ले ली गई। दाख़िल ख़ारिज पटवारी के रजिस्टरों में चढ़वाया गया। शाम को हुजूर ने वहीं दुकानों पर सत्संग किया और आप धर्मशाला गाँव के उस भाग में, जिसको चम्बी कहते हैं, आराम करने के लिये पैदल वापस आ गये। रस्ते में बूँदा-बाँदी होने लगी और रात को हुजूर की पार्टी चम्बी में एक सत्संगी ब्राह्मण के घर पर रात बिताने पहुँच गई।

यहाँ यह बात उल्लेखनीय है कि हुजूर तथा उनके साथी अपना खाना-दाना साथ लेकर जाते हैं। केवल दूध वहाँ से ले लिया जाता है और उसकी क्रीमत दे दी जाती है। इस सारी यात्रा में सिवाय प्रोफ़ेसर लेखराज के घर के और किसी जगह हुजूर ने किसी का खाना नहीं खाया। चम्बी में रात को बूँदा-बाँदी होती रही। हुजूर का आदेश था कि सुबह साढ़े सात बजे रवाना होना है। हम साढ़े सात बजे बिस्तर बाँधकर तैयार हो गये। हुजूर इस बूँदा-बाँदी में लारी में सामान लादने के लिये पीछे छोड़कर, स्वयं पैदल रवाना हो गये।

वहाँ से चले तो हुजूर के पीछे-पीछे सत्संगियों की भजन-मण्डली भजन गाती देवी के मन्दिर तक गई। वहाँ से हुजूर एक और स्थान को देखने के लिये गए। उस जगह को देखकर भरवाई के क़रीब, जहाँ कि चिन्तपूर्णी को जानेवाली सड़क गगरेट की तरफ़ से आकर मिलती है, लारी पर सवार हो गये। रास्ते में वापसी पर भरवाई नहीं आया। भरवाई बायें हाथ पर रह गया। आगे गगरेट के पास वर्षा जोरों से होने लगी। मगर होशियारपुर पहुँचकर धूप निकल आई। होशियारपुर में हुजूर का विचार अधिक देर ठहरने का नहीं था परन्तु प्रोफ़ेसर साहिब के बार-बार कहने पर वहाँ ठहरना स्वीकार कर लिया। इसलिये हम सबने हाथ-मुँह धोकर खाना खाया। खाना खाने के बाद बहुत-से सत्संगी भाई-बहन आ पहुँचे। हुजूर उनसे बातचीत करते रहे। फिर वहाँ से अपनी कार में रवाना होकर पिपलाँवाली में बाबू देवराज अग्रवाल के घर दर्शन देते हुए, जालन्धर सरदार साहिब की कोठी पर आ पहुँचे। वहाँ केवल आधा घण्टा आराम करके वापस ब्यास डेरे में आ गये। वहाँ पहुँचते ही फिर काम शुरू कर दिया।

उस जगह को, जो हुजूर ने ख़रीदी है, 'कालू की बड़' कहते हैं। मगर पहाड़ी लोग उसे 'कालू दा बड़' या 'कालवे दी बड़' कहते हैं।

अध्याय 17 सिकन्दरपुर के दौरे का हाल

हुजूर का सिकन्दरपुर की तरफ़ सफ़र

15 जनवरी, 1944 को हुज़ूर खाना खाकर सुबह नौ बजे डेरे से कार में सिरसा की ओर चल दिये। शाम के तीन बजे सिरसा सत्संग-घर आ पहुँचे। रास्ते में मुक्तसर में माघी के मेले की भीड़ देखने में आई। बहुत-से लोग ऊँटों पर सवार थे। यह मेला सिक्खों का है। ऊँट पर आम तौर पर सरदार साहिब और उनके पीछे सरदारनी जी देखे गये। कुछ पर दो औरतें ही थीं। उनमें से अगली ऊँट को चलाती थी। ताँगे, टमटम भी दिखाई दिये। बहुत-से निहंग सिक्ख पैदल थे। कुछ के पीले कपड़े थे। मुक्तसर से रेगिस्तान का इलाक़ा शुरू हो जाता है। यह इलाक़ा मलोट मण्डी, डबवाली, भटिण्डा से बीकानेर, बहावलपुर तक सारा रेगिस्तान है। डबवाली से आगे सिरसा की तरफ़ नहर नहीं जाती। सिरसा के इलाक़े में करनाल की तरफ़ से दूसरी नहर आती है। डबवाली से परे नाली तक रेगिस्तान है। मलोट के पास ख़ानाबदोश लोग सड़क पर अपने बाल-बच्चों व माल-असबाब के साथ एक जगह से दूसरी जगह जाते दिखाई देने लग जाते हैं। उनके बाल-बच्चे अधिकतर गधों, ऊँटों पर होते हैं। एक ने रेहड़ी, जैसी कि शहरों में सब्ज़ी बेचने वाले लिये फिरते हैं, के आगे बैल जोता हुआ था, बीबी बच्चे भी उसी रेहड़ी में थे और आप पैदल जाता हुआ दिखाई दिया। ओड लोग इनमें अधिक होते हैं। सिरसा में आध घण्टे के क़रीब ठहर कर ग्रेवाल मिल्स में आ गये। वहाँ ख़ेतों और मशीनरी की देख-भाल कर, हुजूर आठ बजे के लगभग रात को सिकन्दरपुर तशरीफ़ ले गये।

हुजूर का सिकन्दरपुर में निवास

16 जनवरी, 1944 रविवार को हिसार से कुछ वकील साहिबान सत्संग सुनने के लिये तशरीफ़ लाये थे। इसलिये हुजूर ने जुकाम की तक़लीफ़ होने पर 248 भी शाम को चार-पाँच बजे के क़रीब सिरसा सत्संग-घर में जाकर हुजूरी वाणी में से 'नाम निर्णय करूँ भाई'' शब्द पढ़वा कर उसकी व्याख्या की। नाम दो प्रकार का है- एक वह है जो लिखा, पढ़ा और बोला जाये जैसे राम, अल्लाह, वाहेगुरु, ख़ुदा इत्यादि। यह भी चार प्रकार का होता है। एक बैखरी- जो ज़बान से बोला जाये। दूसरा मध्यमा- जो गले में बोला जाये। तीसरा पश्यन्ती- जिसका हृदय से उच्चारण किया जाये। चौथा परा- जो नाभी से योगी लोग हिलोर उठाते हैं। मगर सन्तों का नाम धुनात्मक अर्थात् शब्द-धारा है जिसको बाइबिल में वर्ड अर्थात् लोगोस, वेदों में आकाशवाणी या नाद और मुसलमान फ़कीरों ने, 'बाँगे आसमानी' बताया है। इस नाम और नामी में अन्तर नहीं है। जैसा कि बाइबिल में आया है, 'शब्द ख़ुदा था' (Word was God) में पहले प्रकार के नाम से न केवल ख़यालों का तबादला होता है बल्कि उसके सिमरन से मन और रूह सिमटकर नुक्ता-ए-सवैदा अर्थात् तीसरे तिल में एकाग्र हो जाते हैं, बशर्ते कि सिमरन ध्यानपूर्वक किया जाये और दोनों आँखों के बीच ध्यान रखा जाये। केवल वर्णात्मक नाम के सिमरन से ही आँखों के पीछे तारा मण्डल, सूर्य मण्डल और चन्द्र मण्डल पार किये जा सकते हैं। इसी को वेदों में देवयान और पित्रयान कहा हैं।

अब उसके आगे दूसरे नाम की आवश्यकता पड़ती है, जो वहाँ से रूह और मन को खींचकर ऊपर के लोकों में ले जाता है। गुरु का वास्तविक रूप शब्द है। सब सन्त-महात्मा शब्द में से इस संसार में आये और अपना-अपना कार्य करके शब्द में जा समाये। आवाज तो तारा मण्डल से नीचे भी सुनाई देती है, परन्तु वह खींचती नहीं क्योंकि चन्द्रलोक से नीचे-नीचे ध्यान न केवल शरीर के रोम-रोम में फैला हुआ है बिल्क वहाँ से निकलकर प्रियजनों, सम्बन्धियों, बीबी, बच्चों में बँध गया है। बिल्क उनसे परे भी देश, जाति, जायदाद आदि की असंख्य जंजीरों से जकड़ा हुआ है। सन्त जो सत्संग करते हैं, उसका यह उद्देश्य होता है कि मन को इन जंजीरों से आजाद करा कर ऊपर ले चलें। कुछ लोग यह कहते है कि हमारी रूह को खींचकर हमें अन्दर दिखा दो जिससे कि विश्वास आ जाये। यह ऐसे ही है जैसे कि एक कपड़ा, जो काँटों में उलझा हुआ हो, खींचकर काँटों से बाहर लाने की कोशिश करें तो कपड़ा निकलेगा नहीं बिल्क फट जायेगा। इस प्रकार हुजूर ने एक विद्वान् पण्डित की कहानी सुनाई, जिसने नाम लेकर पहले छ: महीनें अभ्यास किया। क्योंकि विद्वानों का मन फैला हुआ होता है, इसलिये

23 जनवरी 1944

उसके अन्दर प्रकाश नहीं हुआ। अतः सन्तों के ढंग को छोड़कर प्राणायाम में लग गया। छ: मास तक उसमें टक्करें मारीं परन्तु उसे कुछ लाभ न हुआ। फिर सन्तों के पास आया कि मुझे दिखा दो चाहे मैं मर ही जाऊँ। सन्तों ने बहुतेरा समझाया कि तुम्हारी हानि होगी परन्तु उसने एक न मानी। अन्त में उसको भजन में बैठाकर जरा ध्यान दिया तो उलट कर जा पड़ा और लगा थर-थर काँपने। सन्त अपनी शक्ति से उसे बाहर लाये और सिमरन करा कर शान किया तो कहने लगा कि धिक्कार है मुझ पर मैंने सन्तों का कहना नहीं माना। पूछा क्या हुआ ? कहा- ऐसा मालूम हुआ कि करोड़ों विजलियाँ मुझ पर टूट पड़ीं। रूह उस स्थान के प्रकाश को धीरे-धीरे सहन कर सकती है।

हरएक धर्म में जो नित्य-नेम बना रखे हैं उनका यह उद्देश्य है कि हाथ-पाँव सुन्न होने लगें और रूह व मन इकट्ठे होकर ध्यान आँखों में जमा हो। परन्तु क्योंकि नित-नेम करते समय ध्यान को खड़ा करने का प्रयत्न नहीं किया जाता केवल मुख से उच्चारण किया जाता है, मन को खुला फिरने दिया जाता है, इसी कारण हरएक धर्म के नित्य-नेम का उद्देश्य समाप्त हो गया है। संसार में सब धर्म, सब भेख वर्णात्मक नाम जपने में ही रह गये, धुनात्मक नाम तक नहीं पहुँचे।

कल रात नौ-दस बजे के क़रीब हुज़ूर के कमरे में हिसाब दिखाने गया तो वहाँ भाई शादी ने चर्चा की कि एक महा कंजूस, मगर मालदार व्यक्ति, जब मरने लगा तो उसके बेटे उसके आसपास जमा हो गये। उसने उनसे कहा कि मुझसे एक गाय का दान करवा दो। इस पर लड़कों ने कहा कि पिताजी गाय मणसने पर वापस तो नहीं आ जाओगे। क्या लाभ ? हुजूर ने फ़रमाया कि संसार में कोई किसी का नहीं है। केवल सतगुरु ही जीव के सच्चे मित्र हैं। इसी तरह भाई शादी ने कहा कि उनके गाँव की एक बुढ़िया मरने लगी तो उसने कहा कि यदि मैं मर जाऊँ तो मेरे लड़के को बता देना कि मेरा पाँच सौ रुपया खम्बे के नीचे गड़ा हुआ है। यदि जीवित रहूँ तो न बताना। यह हाल है सांसारिक सम्बन्धियों का। माँ-बाप और बेटों में जो सम्बन्ध है उससे बढ़कर क्या सम्बन्ध होगा ? ''जगत में झूठी देखी प्रीत।''

हुजूर ने ज़मींदारी के अनुभव से कहा कि जिस ज़मीन में पलाश का वृक्ष हो वह सख़्त होती है। जिस बाग़ में बकरियाँ या ऊँट रहें वह अवश्य उजड़ जायेगा और कई बातें कहीं जो मुझे भूल गईं।

23 जनवरी, 1944 रविवार को शाम के चार बजे के क़रीब, जबिक कुछ वर्षा हो रही थी, हुजूर ने सिरसा सत्संग-घर में जाकर सत्संग किया। हुजूरी वाणी में से 'जग में घोर अंधेरा भारी " और श्री गुरु ग्रन्थ साहिव में से उसी तरह का शब्द 'बिख बोहिथा लादया दीआ समुंद मंझार⁵ पढ़े गए।

24 जनवरी, 1944 सोमवार को सुबह जब हुजूर वर्कशाप को जाने लगे तो हवा चल रही थी और बादल छाये हुए थे। रात के आठ बजे हुजूर ने शान्ति आश्रम के बरामदे में सत्संग किया। रात तो बिलकुल साफ़ थी परन्तु सहन में ठण्ड थी। हुजूरी वाणी में से 'यह तन दुर्लभ तुमने पाया' पढ़ा गया। हिन्दू मत और सारे धर्मों की शिक्षा का सार तथा सबसे ऊँची और सच्ची शिक्षा, इसमें हुजूर स्वामी जी महाराज ने हिन्दू मत और दूसरे सब धर्मी की शिक्षा तथा सबसे ऊँची रूहानी तालीम का सार दिया है। आपने समझाया है कि मनुष्य शरीर चौरासी लाख प्रकार की योनियों में से गुजर कर मिलता है। मनुष्य शरीर मिलने पर आत्मा कुल-मालिक के नज़दीक से नज़दीक होती है, क्योंकि मनुष्य शरीर न केवल परमात्मा के पास जाने का रास्ता है बल्कि स्वयं परमात्मा का निवास-स्थान है। इस योनि में यदि पूरा गुरु मिल गया तो काम बन गया। गुरु पूरा वह है जो शब्द या बाँगे-आसमानी, जिसको वेदों ने नाद और बाइबिल ने वर्ड या लोगोस कहा है, का भेद बताये। किसी विशेष धर्म की क्रैद नहीं; चाहे किसी धर्म का गुरु हो। जो नाद का भेद बताये वहीं पूरा गुरु है। अब पूरा गुरु मिलने पर यदि सेवक उसकी आज्ञा के अनुसार चलता है तो भवसागर पार कर जाता है। यदि पूरा गुरु न मिला तो फिर नरक , स्वर्ग और चौरासी का चक्कर तैयार है। फिर जब असंख्य युगों के बाद मनुष्य का चोला तो मिला, उस समय भी यदि गुरु पूर्ण न मिला तो फिर वही चक्कर चल पड़ा। इसी प्रकार इस दुनिया के लोग सुख-दु:ख, पाप-पुण्य के हिण्डोले में झूल रहे हैं। जब इस चक्कर से निकलने का समय आता है तो धर्म का पक्षपात, लोक-लाज, सुस्ती तथा मूर्खता के कारण मनुष्य पूर्ण गुरु के पास जाने से रह जाते हैं या दुनिया की दौलत, पदवी और हुकूमत पाने की कोशिश में अपना जीवन गँवा देते हैं। इस दुनिया में सच्ची और पूर्ण विद्या है तो यही है।

एक पत्र के उत्तर में हुजूर ने लिखवाया कि सन्तमत का धर्म ही यही है कि सब पर दया करना और बिना स्वार्थ, बिना बदले के, बिना किसी इच्छा के दुनिया के जीवों की सहायता करना। उसने लिखा था कि आपने एक मुसीबत में मेरी बड़ी रक्षा की। मैं उसका क्या बदला दे सकता हूँ ?

27 जनवरी, 1944 को एक सत्संगी ने सवाल किया कि कुछ लोग यह कहते हैं कि मनुष्य मर कर मनुष्य के जन्म से नीचे नहीं जाता। इसके प्रमाण में उन्होंने दो छोटी लड़िकयों के जिनको अपने पहले जन्म का पता था, के उदाहरण दिये जिसके बारे में हिन्दू महासभा के पिछले जलसे में क्रिसमस की छुट्टियों में अमृतसर में बताया गया था। हुजूर ने जवाब दिया कि नहीं, मनुष्य जन्म से फिर से मनुष्य का जन्म तो बड़े श्रेष्ठ कर्म हों तो प्राप्त होता है। नहीं तो अधिकतर अच्छे कर्म करने वालों को तो स्वर्ग लोक यानी बहिश्त में ले जाते हैं। वहाँ वे अपने नेक कर्मों का फल भोगकर फिर अपने कर्मों के अनुसार स्वर्ग से गिरकर मनुष्य या उससे नीचे की योनि में जाते हैं। जो लोग बैकुण्ठ यानी विष्णुपुरी में जाते हैं, वहाँ से गिरकर मनुष्य-जन्म धारण करते हैं। जो लोग ब्रेर काम करते हैं वे या तो मरकर चौरासी लाख योनियों में जाते हैं या नरकों में। नरकों में दण्ड भुगत कर फिर बुरे-बुरे जन्मों साँप, बिच्छू, छिपकली इत्यादि में गिर जाते हैं। फिर फ़रमाया कि जो कोई मनुष्य सराय, धर्मशाला, कुआँ या जनहित की चीज़ें बनवाता है उसको उस समय तक रहमत पहुँचती रहती है जब तक इमारतों या चीज़ों से लोगों को लाभ पहुँचता है।

इसी प्रकार पहली फ़रवरी की शाम को एक सिक्ख डॉक्टर साहिब ने हुज़ूर से चर्चा की कि जेहलम के ज़िले से एक बड़ी भारी गद्दी हिन्दू महन्तों की है, जिसके महन्त का नाम... नन्द जी है। उनको हुजूर के सत्संग सुनने तथा दर्शन करने का बड़ा शौक़ है। उसके चेले ने संस्कृत की उच्च परीक्षा पास की है और अब अंग्रेज़ी की दसवीं की तैयारी कर रहा है। उसको भी हुजूर से प्यार-प्रीत है। डॉक्टर साहिब ने यह भी बताया कि चेले ने गुरु को बताया कि मैं पहले जन्म में तुम्हारे गुरु का गुरु था। इसलिये मेरी पोथी और एक छाज मेरे मकान में होंगे। वह मकान गिर चुका था। जब उस मकान के मलबे को हटाया गया तो नीचे मकान की दीवारें निकलीं और वहाँ एक पोथी और छाज पाया गया। हुजूर ने सुनकर फ़रमाया कि यह असम्भव नहीं है। बल्कि मैं ख़ुद भी फिर इस दुनिया में आऊँगा, क्योंकि हमारा काम ही यह है कि यहाँ से रूहों को बेड़े में भर कर पार ले जायें। जैसे कि फ़ौज में स्टाफ़ अफ़सर होते हैं वैसे ही परमात्मा ने काम

करनेवाले नियुक्त कर रखे हैं, जिनका काम ही इस संसार से रूहों को निकालकर सतलोक ले जाना है। इसिलये वे इस दुनिया के उद्धार के लिये बार-बार आते हैं। मुझे याद है कि हुजूर ने एक बार फ़रमाया था कि माया बड़ी नीच है। एक जन्म में जो माँ है, दूसरे जन्म में बीबी बन जाये तो कोई ... आश्चर्य नहीं। एक जन्म में बाप है दूसरे जन्म में बेटा।

2 फ़रवरी, 1944 को स्कूलों के रिटायर्ड इन्सपेक्टर ला. ज्ञानचन्द तथा उनकी सुपुत्री जोकि डॉक्टर है, तशरीफ़ लाये। वह बीबी फ़ारसी की नज़म वाली किताब हुजूर से लेकर पढ़ने लगी तो हुजूर को आश्चर्य हुआ। इस पर इन्सपेक्टर साहब ने कहा कि पहले फ़ारसी, पहली-दूसरी कक्षा से शुरू कर देते थे। अब सातवीं कक्षा से शुरू करते हैं। अब अंग्रेज़ी का जोर है। मैंने कहा कि जो बादशाह आता है हम उसी की जबान पढ़ने लग जाते हैं।

6 फ़रवरी, 1944 को रेल व नहर के परे कमाद (ईख) की कटाई शुरू हुई। आजकल उस इलाक़े में चारे की कमी है क्योंकि वर्षा नहीं हुई। इसलिये ु बारानी भूमि में रबी की फ़सल नहीं होगी। पिछले साल जो लोग कमाद के नजदीक नहीं आते थे, अब बारात की तरह आ रहे हैं। कोई ऊँट पर सवार है, कोई गड्डे पर। कई मण्डलियाँ पैदल आ रही हैं गोया एक मेला-सा प्रतीत होता है। कमाद के खेत में सैंकड़ों आदमी कमाद काटने तथा गन्ने छीलने में लगे हुए हैं। आजकल यह इलाक़ा, जहाँ कुछ साल पहले उजाड़ मैदान दिखाई देते थे, दुआबे को मात कर रहा है। जिधर देखो कमाद के खेत खड़े है। कई जगह बेलने कमाद पीड़ रहे हैं। गुड़ बन रहा है। सबकी भट्टियाँ एक विशेष ढंग की हैं, जिनमें आँच ज़्यादा से ज़्यादा पैदा होती है।

7 फ़रवरी, 1944 आज एक चिट्ठी जो एक सत्संगी ने दोमैली, जिला जेहलम से भेजी है उसका यहाँ वर्णन करना उचित समझता हूँ- 'श्री हुजूर महाराज सतगुरु दीनदयाल जी- राधास्वामी। मैं आपका अनजान बच्चा हूँ। मेरी उम्र इस समय अठारह साल की है। मुझे नाम मिले हुए चार-पाँच साल हो गये हैं। हुजूर की दया से भजन-सिमरन बना हुआ है। हुजूर महाराज जी आपका स्वरूप भी अंग-संग है। सतगुरु महाराज जी मेरे साथ एक घटना हुई है, जो कि दिन के चार बजे के क़रीब हुई। महाराज जी, मैं एक शहर से साइकिल पर सवार होकर घर को आ रहा था। कच्ची सड़क थी। रास्ते में कोई जंगल न था। मैदानी रास्ता था। एक जगह सड़क का मोड़ था और रास्ता कुछ ख़राब था। जब मैं मोड़ पर आया तो क्या देखता हूँ कि सड़क के किनारे पाँच पठान खड़े हैं। वे मुझे देखकर कहने लगे कि खड़े हो जाओ। मैं खड़ा नहीं हुआ। दूसरी बार फिर उन्होंने ज़ोर से कहा। मैं उनके पास से गुज़र गया, फिर उन्होंने ज़ोर से कहा कि खड़े हो जाओ। मेरी साइकिल गिर गई और मैं भी गिर गया, मगर झट उठकर खड़ा हो गया और उनसे कहा कि क्या बात है ? उन्होंने कहा कि तुम्हारी जान लेनी है। जब मैंने उनकी तरफ़ देखा तो ऐसा मालूम हुआ कि उनकी शक्लें पहले से बदल गई हैं। मुझे सिमरन भी याद न रहा। हुजूर केवल आपको याद किया तो अन्दर आपके दर्शन हुए और आप चले गए। इतने में एक मनुष्य बिलकुल आपका स्वरूप धारण करके आ गया और वे पाँचों हट गये। वह कहने लगा कि ऐ लड़के! तूने मुझे पहचाना नहीं ? मैं तुम्हारा गुरु हूँ, मुझे मत्था टेक! मैं घबराया हुआ था, जब उसकी तरफ़ ध्यान से देखा तो उसका माथा और आँखें सही न लगी। मैंने जवाब दिया कि तू जमाने का ठग होकर मुझे गुरु बनकर धोखा देता है। मैं तुझे मत्था नहीं टेकूँगा। उसने मुझे बहुत धमकाया और जोर दिखाया। मुझसे सिमरन भी नहीं हो सकता था। फिर मैंने दिल में जोर देकर सिमरन याद किया। जब तीन-चार बार सिमरन किया तो देखते ही देखते वह ग़ायब हो गया। जब वह ग़ायब हो गया तो हुज़ूर महाराज जी आप झट सोटी पकड़े हुए दस क़दम पर आते दिखाई दिये। मैंने अच्छी तरह पहचान कर सिमरन करते-करते आपको राधास्वामी बुलाई और आपने भी राधास्वामी बुलाई। फिर मैंने आपके चरणों में सिर रखा। फिर हुजूर आपने मुझे थपकी दी और कहा शाबाश, बच्चा तुमने ठीक किया, ऐसा ही होना चाहिये था। अब तुम जाओ। मैंने विनती की कि हुज़ूर पहले आप जायें। फिर हुजूर आप मेरे सामने वहाँ से दस क़दम जाकर लुप्त हो गये। वे जो पाँच पठान थे, वे मुझे कहने लगे कि हमें भी आज्ञा दो। हम भी जायें। मैंने उनको कहा कि जाओ न जाओ हम क्या करें। मैं वहाँ से साइकिल पर सवार होकर चल पड़ा और वे पठान भी मेरे पीछे चल पड़े। एक फ़र्लांग जाकर मैंने उनसे कहा कि क्या कहते हो ? उन्होंने कहा कि हमें आज्ञा दो ताकि हम भी जायें। मैंने उनको कहा कि अच्छा जाओ। मेरे कहने की देर थी कि वे उसी जगह देखते ही देखते लुप्त हो गये। हुजूर महाराज जी, मैं यह स्वप्न या भजन में बैठने की हालत बयान नहीं कर रहा। यह हालात मेरे साथ रास्ते में

दिन में चार बजे हुए हैं। हुजूर महाराज जी वह जो आपका रूप बनाकर आया था वह तो काल होगा और पाँच पठान जो थे वे कौन थे ? और आप भी देह समेत आये थे और मुझे थपकी दी थी...।

हुजूर ने कहा कि शुक्र कर बच गया है। मैंने विनती की कि हुजूर वे पठान उससे जाने की आज्ञा क्यों मॉॅंगते थे ? जवाब दिया कि वे उसकी तरफ आकर्षित और उसके अधीन हो गये थे।

9 फ़रवरी,1944 आज एक सत्संगी का लम्बा-सा पत्र कीनिया (अफ्रीका) से आया है। उसका पहला भाग नोट करने लायक है-'राधास्वामी-इससे पहले एक प्रार्थना-पत्र आपकी सेवा में 19-12-43 को जामनगर से लिखा था कि मैं आपकी दया तथा मेहर से आपका सहारा लेकर अफ्रीका जा रहा हूँ। आपका तुच्छ सेवक 15-1-44 को शाम को पाँच बजे राजी-ख़ुशी मोम्बासा पहुँच गया है। इस पत्र को लिखने का मेरा यह मतलब है कि आपसे क्षमा मांगू क्योंकि रास्ते में मैंने आपको बड़ा कष्ट दिया। वह यह है कि 7-1-44 और 8-1-44 के बीच की रात को जहाज़ भारी तूफ़ान की लपेट में आ गया। रात का एक बजा था। समुद्र की लहरें जहाज को चलने न देती थीं। कभी इधर से तो कभी उधर से जहाज़ के साथ टकराती थीं। सब यात्री, जिनकी संख्या एक सौ दो थी, परेशान थे। परन्तु कोई पेश न जाती थी। अन्त में जहाज इतना डोलने लगा कि सब जीवन से निराश हो गये। जहाज़ के कैप्टन ने कहा कि सब यात्री जहाज़ के नीचे के भाग में चले जाओ। उनसे पूछा गया कि अब क्या होगा ? कैप्टन साहिब ने फ़रमाया कि अब हम सब साहिबान अल्ला मियाँ के सहारे हैं। बस सच्चे पिता! उस समय जो दशा हुई वह बयान से बाहर है। यह ठीक है कि पूत कपूत हो जाते हैं लेकिन माँ-बाप साथ नहीं छोड़ते। उस समय केवल आप ही थे और कोई न था। आपके चरणों की तरफ़ ध्यान किया और बेहोश हो गया। बेहोशी में सेवक आपकी सेवा में उपस्थित हुआ। उस समय आप आराम कर रहे थे। मैंने बिना आदर-मान के आपको पुकारा कि आप यहाँ आराम कर रहे हैं और हम इस मुसीबत में फँसे हुए हैं। यह सुनते ही आप बिना कोई जवाब दिये नंगे पाँव चल पड़े। उसके बाद जब होश आया तो सब ऊपर की मंजिल के लोग धीरे-धीरे ऊपर जा रहे थे और कैप्टन साहिब फ़रमा रहे थे कि अब कोई ख़तरा नहीं है, निश्चिन्त होकर सो जाओ। उस समय आपकी दयालुता देखकर मेरा मन भर आया''।

यू.पी. प्रान्त में हिन्दुओं में मूर्ति-पूजा का रिवाज बहुत रूपादा है। एक सलसंगी ने पत्र भेजा है कि पण्डित लोग कहते हैं कि जो मूर्ति को पत्थर मान कर पूजा करता है उसके लिये तो मूर्ति-पूजा निष्कल है परन्तु जो बद्धा-भिक्त के साथ उस मूर्ति को पूजता है तो वह मूर्ति वास्तव में उसके लिये उस देवता का काम करती है। उस देवता के साधान दर्शन भी हो जाते हैं। पिछले साल इलाहाबाद में ... नाम का एक निर्धन बाह्मण था जो श्री कृष्ण का बड़ा भक्त था और उसे श्री कृष्णजी के दर्शन हुए। उस बाह्मण ने उनसे अपनी ग़रीबी दूर करने की प्रार्थना की। अब भी वह आदमी जीवित है और करकी धनवान व्यक्तियों में उसकी गिनती है। हुनूर ने जवाब लिखनाया :

मूर्ति-पूजा उन ऋषियों - मूर्नियों ने, जो अन्दर जाते थे, इसलिये रखी थी कि जो लोग बाहरमुखी हैं, उनको अन्दर जाने की लगन पैदा हो। ताल्पर्य यह है कि जिन मूर्तियों के प्रति उनमें लगन पैदा की जाती थी उसका उद्देश्य यह था कि वे अभ्यास करके उन देशों में पहुँचें, जहाँ-जहाँ वे महात्या अपने अभ्यास का फल सहाजो मॉक्तलों पर भोग रहे हैं या जो-जो ब्रह्म, चरब्रह्म और मतलोक में समा गये हैं। परन्तु क्योंकि मन अन्दर जाने नहीं देता, वे लोग परिवम करके परवा न खोल सके। इस्तियों बाहर प्राथा टेकने लगे और पूजा करके वाहर ही बाहर रह गये। जिन महतवाओं को गुजरे पुग बीत गये अब उनका आना सम्भव नहीं। यदि उन्होंने भूतों-प्रेतों की तरह संसार में ही फिन्ना था तो अभ्यास क्यों किया ? यदि वे म्हालिक से मिले तो फिर उन्हें इस गन्दी दुनिया में आने की क्या जरूरत है ? यदि सब देशों से नीचा और दु:जी देश है तो यह दुनिया है। च्यों-च्यों अन्दर ऊँचो मॉक्तलों पर जाओगे सुख ही सुख प्रतीन होगा! इस चौरासी के जेलखाने में आने की फिर इच्छा नहीं रहेगी। जिस प्रकार हम पहाद की ऊँचाई पर ज्यों-च्यों ऊपर जाते हैं, उण्डक बढ़ती जाती है। इसी प्रकार च्यों क्यों कहानी मॉक्तलों पर चढ़ोगे, सान्ति और ख़ुशी प्राप्त होगी।

इस किलोकी में सान्ति नहीं। सान्ति तुम्हारे अन्दर है। सो जब तक तीन गुणों की रचना के पार नहीं जाओगे, सान्ति नहीं सिलेगी। यदि वास्तविक सान्ति है तो मन और माद्या के धेरे से घरे है। जहाँ तक मन और माया की स्कावट है, पूर्ण सान्ति प्राप्त नहीं होती और जो तुम लिखते हो कि यदि मूर्ति को अवतार, देवता, बहा तथा पारब्रहा मान कर गुजें तो यह मन का थोखा है। मन धोखा दे रहा है। ऐसे लोग अपने वेद-शास्त्रों से अनिभन्न हैं। यह सारी सृष्टि याँच तस्त्रों की बनी हुई है। मूर्ति में एक तस्त्र है, मिट्टी या कोई धनु , काँसी, पीतल, सोना, चाँदी आदि मिट्टी है। वनस्पति में भी एक तस्त्र है, वह है पाने। काँदे मकोई में दो तस्त्र, हवा और आग प्रबल हैं। पीचारों में तीन और जानवरों में बार हैं। उनमें आकाश तस्त्र कम है। केवल मनुष्य में ही याँच तस्त्र पूर्ण हैं। हिन्दू शास्त्र इस बात पर जोर देते हैं कि "जहाँ आसा तहाँ बासा"। यदि मनुष्य याँच तस्त्र कम मालिक होकर एक तस्त्र मूर्ति या वृश्व को पृजता है तो वह मर कर क्या बनेगा ? पर्यार या वृश्व। वह ईश्वर के रूप को एक मिट्टी की मूर्ति में देखता है, जबकि उसके अपने अन्दर ईश्वर, परम ईश्वर और ब्रह्म साक्षात् हैं। अगर वह साक्ष्य को छोड़कर नीचे गिरता है तो मनुष्य योचि से नीचे क्यों नहीं आयेगा ? बाँद बादशाह बनकर एक वायरासी की सेवा करता है तो वह क्या देशा ?

मनुष्य के अन्दर सम्पूर्ण-ब्रह्मण्ड है। कुल देवी-देवता कुल अकतार, पैगान्बर, ईरवर, परमेरवर, ब्रह्म, परब्रह्म और स्वयं परमात्मा इसके अन्दर है। उसको चाहिये कि अन्दर खोज करे। कई मृति-पुत्रक मेरे पास आते रखते हैं और ये भी जतलाते हैं कि जिन-जिन महात्माओं को हम पुत्रते हैं वे हमें अन्दर दर्शन देते हैं। मैंने उनसे कहा कि तुम उनको परखो कि वे स्वयं अवतार या महात्या आते हैं या तुम्हारे मन की कल्पनाएँ हैं। वे पूछते हैं कैसे परखें ? मैं उनको कहता हैं कि भाई जब तुम ध्यान में बैठों और तुम्हारा इस्ट तुम्हारे सामने आ कार्य को तुम उससे यह सवाल करों कि तुम्हारा देश कीन-सा है ? मुझे कब ले चल्होंने ? मुझे क्या-क्या करना चाहिये ? आप मेरे अन्दर का परदा खोल कर कहानी मण्डलों में ले चलो। जब वे लोग ऐसा करते हैं तो दूसरे दिन वे मेरे सस बायस आकर कहते हैं कि साहित्र वह मूर्ति तो बोलती नहीं। कई बार हमने हाथ-चौंब जो है, पिनतें, ख़ुशाधदें की मगर वह चुन की चुन खड़ी है। मैं उनको सन्त्राता हैं कि वह पहात्मा नहीं आये, न आयेंगे। यह तुम्हारे मन का प्रम है और इस्प का प्रतिविध्य है। इसकी जानकारी के लिये तुम एक फिनट सूर्व की ओर ध्यान करों, आँखें बन्द न करों। जब एक घिनट के बाद आँखें बन्द करोगे तो सूर्व अन्दर है। अगर चन्द्रमा या लैब्स का ध्यान करोगे तो चन्द्रमा या लैब्स अन्दर आ जायेगा। इसी प्रकार यदि आप आँखें खुली स्खेंगे और सो फिन्ट तक किसी के मकान को देखें तो मकान अन्दर आ जायेगा। तब उन लोगों को निरुपण

आता है। मनुष्य को मनुष्य से नीचे किसी भी पशु, पक्षी, वृक्ष या पत्थर आदि का ध्यान करने की आवश्यकता नहीं। सारी दुनिया में यदि कोई श्रेष्ठ योनि है तो मनुष्य की है। जो दौलत ईश्वर ने मनुष्य के अन्दर रखी है वह और कहीं नहीं। सच्ची मसजिद, सच्चा ठाकुरद्वारा, सच्ची धर्मशाला, सच्चा मन्दिर यदि कोई है तो मनुष्य के अन्दर है। अफ़सोस है कि दुनिया चेतन मन्दिर को जिसमें कि ईश्वर बोल रहा है और जिसमें आत्मा परमात्मा मौजूद हैं, छोड़कर जड़ वस्तुओं में परमात्मा को ढूँढती है।

यद्यपि हमें सिवाय परमेश्वर के इन चीजों की आवश्यकता नहीं, फिर भी यदि उन देवी-देवताओं और अवतारों से मिलना है और उनसे बातें करनी हैं तो अन्दर के मन्दिर में चलो। जब ख़ूब अभ्यास करके मूल-चक्र में जाओगे तो गणेश मिल जावेंगे। इन्द्री-चक्र में जाओगे तो ब्रह्मा मिल जायेंगे। नाभि में जाओगे तो विष्णु मिलेंगे। हृदय में जाओगे तो शिव। यदि कण्ठ में जाओगे तो तुम्हें आदि शक्ति के दर्शन होगें जो कि ब्रह्मा, विष्णु और शिव तीनों की माता है। आँखों के पीछे छठे चक्र में जाओगे तो वहाँ तुम्हारा मन और आत्मा उपस्थित हैं। जब तुम अपनी वास्तविक बैठक से ऊपर चढ़ोगे तो कुल ब्रह्माण्ड आ जायेगा, जिसके विषय में नाम देते समय समझाया जाता है।

कुछ लोग कहा करते हैं कि धन्ने भक्त को पत्थर से परमेश्वर मिला है। यदि धन्ना को मिला तो उनको भी मिलना चाहिये। परन्तु कदापि नहीं। सब ख़ाली के ख़ाली हैं। वास्तव में बात क्या थी ? धन्ना गुरु था और त्रिलोचन सेवक था। धना उससे मूर्ति-पूजा छुड़वा कर ब्रह्म-पद में ले जाना चाहता था। क्योंकि धन्ना जाट था और त्रिलोचन ब्राह्मण था, इसलिये ब्राह्मण जाट को कैसे गुरु मान सकता था। धन्ना नादान बन कर, त्रिलोचन जहाँ मूर्ति-पूजा करता था, वहाँ जा बैठा। चुपचाप देखता रहा। क्योंकि त्रिलोचन का ध्यान मूर्ति में था और त्रिलोचन उसको इष्ट मानकर प्यार करता था, धन्ना ने कहा, पण्डित जी, जैसे तुम करते हो मैं भी कर सकता हूँ या नहीं ? त्रिलोचन ने कहा, ''कर सकते हो। मैं तुम्हें ठाकुर दे दूँगा मगर इस शर्त पर कि तुम मुझे दूध देनेवाली गाय दे दो''। धन्ना ने गाय लाकर हाज़िर कर दी। त्रिलोचन ने सोचा कि यह मूर्ख जाट क्या पूजा समझेगा ? उसने तोल करनेवाला चार-पाँच सेर का पत्थर उसको दे दिया कि यह तेरा ठाकुर है। हमारे सब ठाकुरों का सरदार है। धन्ना ने पत्थर को तो घर के आगे फेंक दिया और दी

महीने के बाद त्रिलोचन के पास पहुँचा, जहाँ वह पूजा करता था। धन्ना देखता रहा। जब त्रिलोचन ने पूजा समाप्त की और ठाकुर की मूर्ति को भोग लगाने लगा तो वह मिठाई मूर्ति के मुँह से लगाकर आप खाने लग गया। धन्ना बोला-''पण्डित जी, क्या अनर्थ कर रहे हो। अपने ठाकुर से ही ठगी कर रहे हो। उसको खिला दिया ?'' त्रिलोचन ने कहा, "धन्ना, कभी पत्थर भी खाया करते हैं"। धन्ना ने जवाब दिया कि यदि पत्थर नहीं खाते तो तुम उससे क्या लोगे ? तुम मेरे साथ चलो, मेरा ठाकुर मेरा सब काम करता है। त्रिलोचन चिंकत होकर पूछने लगा, क्या धन्ना तुम सच कहते हो ? जब त्रिलोचन धन्ना के साथ गया तो क्या देखता है कि धन्ना का रहट ख़ुद बख़ुद चल रहा है। त्रिलोचन ने कहा कि मुझे तो दिखाई नहीं देता। उस समय त्रिलोचन को समझाना शुरू किया कि तुम बाहरमुखी हो गये हो। तुम में ब्राह्मण होने का, अपनी जाति का, अपनी विद्या का अहंकार है। जो-जो त्रुटियाँ त्रिलोचन में थीं, धन्ना ने सब बताई। त्रिलोचन ठण्डे दिल से सुनता रहा। अन्त में रो पड़ा कि तुम जो कुछ कह रहे हो वे सब दोष मुझ में हैं। अब मैं तुम्हारी शरण में आ गया हूँ। मुझे असली ठाकुर दिखाओ। उस समय धन्ना ने उसको अन्दर जाने का रास्ता बताया और ज्ञान दिया।

इसमें शक नहीं कि जब मनुष्य के मन में मूर्ति के प्रति प्रेम-प्यार और श्रद्धा होती है और उसके प्रति तरह-तरह के संकल्प पैदा करके उसको अपने विचारों में स्थान देता है तो उसे ऐसे लगता है कि मेरा सब काम मूर्ति ही कर रही है। जो अच्छे काम हुये वे मूर्ति की ओर से समझ लिये। जो काम फेल हुए वे अपने दुर्भाग्य के कारण सोच लिये। जितनी ऋद्भि-सिद्धि, शक्ति, करामात, कौतुक इत्यादि हैं, ये सब मनुष्य के मन और आत्मा के जौहर हैं। ज्यों-ज्यों आदमी सिमरन करके मन को एकाग्र करता है, इच्छा शक्ति दृढ़ होती जाती है। परन्तु जो मुक्ति देने वाली शक्ति है, जिसको नाम कहते हैं, वह इससे परे है। वह परिश्रम और अभ्यास से मिलेगी।

12 फ़रवरी, 1944 की शाम को हुजूर ने सिरसा सत्संग-घर में जाकर चालीस स्त्री-पुरुषों को नाम दिया। क्योंकि आज फालगुन की संक्रान्ति है, थोड़ा-सा सत्संग भी किया। हुजूर छोटे से छोटा काम भी अपनी निगरानी में करवाते हैं। आम लोगों की तरह हुक्म देकर चले जाना काफ़ी नहीं समझते। जैसे आज ख़ाली ड्रम वर्कशाप से घर लाने थे। कोई और तो हुक्म देकर चला आता

15 फ़रवरी 1944

260

कि दो ड्रम ले आना। परन्तु हुजूर ने सोचा कि यह कोई और ही ड्रम न ले आयें, इसलिये उनको स्वयं लदवा कर घर आये जबकि रात के नौ बजे थे।

15 फ़रवरी, 1944- पीर शो बयामोज़ * वाली बात है। यूँ तो यहाँ कारख़ाने में बहुत-सी नई बातें देखीं- कमाद का काटना, रस निकालना, खाँड बनाना, डीज़ल इंजनों का काम आदि। आज कुछ कमाद बोने का ढंग भी सीखा। पहले जमीन में पानी देते हैं। जब पानी सूख जाता है, यानी जमीन इतनी सूख जाती है कि चलते समय कीचड़ नहीं होता तो उसमें दो-तीन बार हल चलाते हैं। फिर दो-तीन बार सोहागा फेर कर जमीन को समतल करते हैं। फिर खेत की बटें बाँधते हैं ताकि यदि नहर का पानी दिया जाये तो पानी खेत से बाहर न निकले। फिर एक-दो हलों से इसमें क्यारियाँ बनाते हैं, जिनमें सात-सात इंच के फ़ासले पर गन्ने के टुकड़े बिछाये जाते हैं। ये टुकड़े कोई नौ-नौ इंच के क़रीब लम्बे होते हैं और इनको थोड़ा पाँव से दबाते जाते हैं। इसके बाद सोहागा फेर कर मिट्टी से उन टुकड़ों को ढाँप देते हैं। इसी तरह पिछले साल जो मालटे, नींबू, सन्तरें के पौधों की जड़ों की मिट्टी को उखाड़ कर झाड़-झंकाड साफ़ किया गया था, वह परीक्षण (तजुर्बा) सफल हुआ। क्योंकि झाड़-झंकाड पौधों की ख़ुराक को ख़ुद खा जाते हैं, इसलिये यदि इसको हर साल पौधों की जड़ों से निकालकर बाहर फेंक दिया जाये और नई मिट्टी, जिसमें रेत मिली हो, जड़ों के आसपास एक गिलास शीरा मिलाकर डाल दी जाये और गोबर का खाद भी मिला दिया जाये तो फल ख़ूब आता है और मीठा होता है।

19 फ़रवरी, 1944 को महाराज जी ने सुबह स्वामी जी महाराज के अन्तिम वचन पढ़वा कर राव बहादुर शिवध्यान सिंह जी को सुनाये। फिर कमाद के खेत में जहाँ लोग कमाद काट रहे थे, बातों-बातों में फ़रमाया कि स्वामी जी के ज्योति-ज्योत समाने के बाद एक बार हुजूर बाबा जी महाराज तथा हम आगर गये। उस समय साधु हंसदास जी जीवित थे और राधा बाग़ में रहते थे। बड़ी कमाई वाले थे। उनसे हम मिलने गये तो एक बीबी ने, जो वहाँ उपस्थित थी, मुझे देखकर कहा कि अब इनको चाहिये कि स्वामी बाग़ आगरा में रहकर भजन-सिमरन किया करें। इस पर साधु हंसदास जी गुस्से होकर बोले, अरी

बावरी, तुम्हें क्या पता कि अभी इन्हें क्या-क्या काम करने हैं? कहाँ-कहाँ फिरना है ? किस-किस बहाने जीव निकालने हैं ? फिर साधु ने कहा, भई हमें तो स्वामी जी महाराज ने जैसे किसी को ओक भर कर देते हैं, वैसे दिया। मगर इनके बाबा जी को तो जैसे कोई दोनों हाथों से दौलत देता है, वैसे दिया।

आज एक सत्संगी के सवाल पर फ़रमाया कि यदि सत्संगी को सतगुरु पर विश्वास है और इस दुनिया की आशा-तृष्णा नहीं तो चाहे भजन नहीं किया फिर भी उसका जन्म नहीं होगा। परन्तु भजन बहुत भी हो और दुनिया की आशा-तृष्णा कोई दिल में हो, उस आशा को पूरा करने के लिये जन्म लेना पड़ेगा।

20 फ़रवरी, 1944- सुबह को मैं और हुजूर वर्कशाप से कमाद के खेत को जा रहे थे। हुजूर ने फ़रमाया कि वर्कशाप से दो मील इधर और दो मील उधर कुल चार मील का चौड़ा टुकड़ा किसी समय दिरया के नीचे था। इसके किनारे शहर बसे हुए थे। इस चार मील चौड़े टुकड़े का पानी मीठा है। परन्तु उससे आगे पानी ख़ारा है और इस चार मील की हद के आसपास जो पुराने वक़्तों के कुएँ निकलते हैं, वे केवल चालीस फ़ुट नीचे जाकर समाप्त हो जाते हैं।

पानी यहाँ पास था। मैंने विनती की कि इतिहास में किसी ऐसे बड़े शहर का नाम नहीं आता जो कभी यहाँ बसा हो। हुजूर ने फ़रमाया कि एक महात्मा ने अन्तरी दृष्टि से बताया कि जो ऊँचा टीला सिकन्दरपुर से उत्तर की ओर दो मील की दूरी पर स्थित है और जिस पर बड़े-बड़े भारी लाल रंग के पत्थर पड़े हैं, वहाँ छ: हजार साल पहले आबादी थी। रसूलपुर में जो थेहड़ी है वह सात हजार साल पहले की थी।

कालोऽयं निर विधिर्विपुला च पृथ्वी।

21 फ़रवरी, 1944 को हवा, वर्षा का जोर था। हुजूर शाम के पाँच बजे ही घर वापस आ गये। वहाँ एक सत्संगिन ने हुजूर को पत्र भेजा कि उसका लड़का, जो बहुत बीमार था, हुजूर का पत्र मिलने पर अच्छा हो गया है। मगर अब दूसरे लड़के की नौकरी में तरक़्क़ी भी होनी चाहिये। हुजूर ने फ़रमाया, 'यके रा बगुजार, दीगरे रा बगीर' अर्थात् एक को छोड़ और दूसरे को पकड़ और यह कविता पढ़ी।

^{*}बूढ़े होकर भी कुछ सीखते रहो।

हुजूर की वापसी और डेरे में निवास

24 फ़रवरी, को हुजूर सिरसा से सुबह के सात बजे डेरे पहुँचे। रास्ते में डबवाली तक वर्षा होती रही। महीने का सत्संग 27 फ़रवरी को हुआ। 29 फ़रवरी को अमृतसर तशरीफ़ ले गये। तरनतारन बाबा बग्गा सिंह जी के यहाँ भी जाने का विचार था। लेकिन रईया से पता चला कि नहर की पटरी पर कटे हुए वृक्ष पड़े हैं, जिससे सड़क पर मोटर कार नहीं जा सकती। अमृतसर में हुजूर ने शाम और सुबह को दो सत्संग किये। गुरु-भिक्त पर जोर दिया। शाम को छ: बजे के लगभग वापस डेरे तशरीफ़ ले आये। 4 मार्च को सिरसा जाने का विचार है।

2 मार्च, 1944 की शाम को महाराज जी ने एक विधवा स्त्री की विधुर बाबू से आनन्द-कारज द्वारा शादी करवाई। आनन्द कारज करने से पहले श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से गुरु अर्जुन देव का शब्द 'जो जो जूनी आयो तिह तिह उरझायो" पढ़ा गया। हुजूर ने फ़रमाया कि काल ने सत्पुरुष से एक वर यह लिया था कि जहाँ जिस रूह को भेजा जाये वहीं ख़ुश रहे। एक सूअर से कहा गया कि आओ, तुम्हें अच्छी दुनिया में ले चलें। तो बोला, अभी बाल-बच्चे छोटे-छोटे हैं, वे मेरे बिना नहीं रह सकेंगे। फिर फ़रमाया कि गुरु तीन प्रकार के होते हैं। मुर्गी, कछुआ तथा कूँज जैसे। मुर्गी का अण्डा उसके शरीर की गर्मी से पकता है यानी जब तक चेला गुरु के पास है गुरु से लाभ उठा सकता है। जब दूर चला गया तो लाभ का रास्ता बन्द हो गया। ये हैं निचली श्रेणी वाले गुरु यानी जो आँखों से नीचे-नीचे पिण्ड देश में ही अभ्यास करते हैं। कछुआ पानी में रहता है, परन्तु पानी के किनारे कीचड़ में अण्डे पकते हैं। कछुआ पानी में रहता है, परन्तु पानी के किनारे कीचड़ में अण्डे देता है और उनको अपनी दृष्टि से पकाता है। तीसरे, कूँज जो सर्दी के मौसम में पहाड़ों में अण्डे देती है और अण्डों को वहाँ छोड़कर आप मैदानों में आ जाती है। उसके अण्डे उसके

विचारों की धारा से पकते हैं। ऐसे ही पहुँचे हुए मुर्शिद (सतगुरु) हर समय विचार की धारा के समान अपने मुरीद (सत्संगी) के साथ रहते हैं। जैसे एक मुरीद, जोिक फ़ौज में लड़ाई पर गया हुआ था, लड़ाई से तंग आकर अपनी बन्दूक वहीं फेंककर पैदल चल पड़ा। रास्ते में दुश्मन के सिपाही थे। उसने समझा कि हमारे अपने सिपाही हैं। वहाँ से होता हुआ टैंकों की लाइनों को पार कर आगे गया। मुर्शिद का ध्यान किया तो मुर्शिद आ प्रगट हुए और बोले ये दुश्मन की फ़ौजें हैं। तुम जाओ, बन्दूक सँभालो, अभी नौकरी करनी है।

263

अध्याय 18

सिकन्दरपुर, देहली और रोहतक के दौरे का हाल

4 मार्च, 1944 को सुबह आठ बजे डेरे से कार में सिरसा की ओर रवाना हुए। मौसम बिलकुल साफ़ था क्योंकि वर्षा हुए सिर्फ़ चार-पाँच दिन ही हुए थे, इसलिये रेलगाड़ी के इंजन का धुआँ सर्दी तथा नमी के कारण वहीं का वहीं खड़ा रहा और लक़ीर-सा प्रतीत होता था। ढिलवाँ के पास धुन्ध थी, क्योंकि गीली जमीन में से भाप निकल-निकल कर जम रही थी। हवा बन्द थी। वहाँ से जालन्धर, लुधियाना और जगराओं होते हुए डॉ. प्रेमनाथ साहिब के अस्पताल में पहुँच गये। डॉक्टर साहिब की तलाश की तो देखा कि एक बीमार को मेज पर लिटाया हुआ है और आँख का आप्रेशन कर रहे हैं। ऐसी अवस्था में उनको बुलाना और उनके काम में बाधा डालना ठीक न समझकर चुपचाप बाघापुराना, समालसर, कोटकपूरा और मुक्तसर से आगे निकल गये। जब मलोट ग्यारह मील रह गया तो अबोहर ब्रॉंच बॅंगला नहर के पास कार का तेल रुक गया। वहाँ एक से दो बजे तक सिर खपाई करके कार को आगे चलाया। फिर सिरसा जाकर ही दम लिया। रास्ते में रोटी आदि नहीं खाई। सिरसा में हम सबने, जो खाना लाये थे, खाया। वहाँ एक घण्टा ठहर कर शाम के पाँच बजे वर्कशाप को चल दिये। वहाँ पहुँचते ही हुजूर खेतों में तशरीफ़ ले गये। दास भी साथ गया परन्तु थकावट महसूस करके वापस आ गया और गना चूसकर आराम कुर्सी पर लेट गया।

5 मार्च, रविवार शाम को सिरसा सत्संग-घर में सत्संग हुआ। फालगुन का महीना हुजूरी पोथी में से लिया गया :

> फागुन मास रंगीला आया। धूम धाम जग में फैलाया॥ घर घर बाजे गाजे लाया।

तुझको फिर कर फागुन आया। सम्हल खेलियो हम समझाया॥

मन और इन्द्रियाँ सँभलकर खेलने से रुकती हैं। जैसा कि वारिसशाह ने समझाया कि 'तिलकन बाज़ी है वेहड़ा खेड़ियाँ दा, एथे सम्भल के पैर धरावना जी '। यह दुनिया ही खेड़ियाँ दा वेहड़ा है। बुरे कामों से बचना चाहिये। इसका उदाहरण मुझे डॉ. करतार सिंह जी ने वर्कशाप से घर पैदल आते हुए बताया। एक सत्संगी बड़ा अभ्यासी, 75 साल का बुजुर्ग था। सतगुरु का प्यारा था। एक बार शहर से अपने गाँव को जा रहा था। शाम को अँधेरा हो गया। रास्ते में गोगीरा ब्राँच बड़ी गहरी और चौड़ी आती थी। उस पर रेल का पुल था। वह उस पुल पर से जा रहा था कि उसको ऐसा मालूम हुआ कि जैसे रेल के आने का शोर हो। बेचारा बड़ा घबरा गया और बेसुध हो गया। नीचे गहरी नहर और अँधेरी रात, पुल के बीच में से न इधर भाग सका न उधर। 'शबै तारीक व बीमे मोज व गरदाबे चुनीं हायल' यानी काली रात, लहरों का डर और सिर पर मँडराता हुआ तूफ़ान वाला मामला हो गया। करे तो क्या करे ? अन्त में जो स्लीपर पुल के बाहर निकले हुए थे उन पर लेट गया, ऐसे कि सिर रेल से परे रहे। दो ट्रालियाँ आ रही थीं। एक ट्राली आकर जोर से टकराई। उसकी सारी पसलियाँ टूट गईं और कन्धे की हड्डी उतर गई। रेलवे का जमादार पुल के सिरे से देख रहा था। उसको ऐसा मालूम हुआ कि जैसे कोई सफ़ेदपोश सफ़ेद दाढ़ी वाला बुजुर्ग जल्दी-जल्दी पुल से ट्रालियों की ओर भागा जा रहा हो। सबसे पहले ट्राली उस सत्संगी से टकरा कर चार क़दम पीछे हट गई। दूसरी भी पीछे हटी। बड़ा आश्चर्य है कि वह टक्कर खाकर नहर में नहीं गिरा। उसको डॉ. करतार सिंह के घर लाये, क्योंकि दोनों में बड़ा प्रेम था। वहाँ से सरकारी अस्पताल में ले गए। एक मस्त फ़क़ीर वहाँ घूमा करता था। वह डॉक्टर साहिब से पूछने लगा कि वह कहाँ है जिसको चोटें आई हैं। सो उसको अस्पताल में जख़्जी के पास ले गए। बोला, अरे! तुमने गाय को क्यों मारा था ? देखो, बदला देना पड़ा। पता चला कि उस सत्संगी ने अपनी जवानी में अपनी गाय को ऐसी जोर से लाठी मारी थी कि बेचारी की पसलियाँ टूट गईं और दो घण्टे बेहोश रही। यह उसके सिर पर कर्मों का कर्ज़ था। उसको साफ़ करना आवश्यक था। जो सतगुरु ने

ट्राली की टक्कर लगवा कर साफ़ किया। इक़बाल साहिब का यह शेअर बार-बार मेरे सामने आता था :

कभी ऐ हक़ीक़ते मुन्तज़िर नज़र आ लिबासे मजाज में। कि हजारों सिजदे तड़प रहे हैं मेरी ज़बीने नियाज़ में। परन्तु मनुष्य तो स्वयं हक्रीकृत है, जो मजाजी लिबास (देह का चोला) पहन कर आई है। इसलिये मौलाना रूम ने फ़रमाया था :

मस्जिदे अस्त अंदरूने औलिया, सिजदा गाहे जुमला अस्त आँजा ख़ुदा।

266

भाव ख़ुदा औलिया-अल्लाह (प्रभु के सन्तों) के अन्दर है। जिसको सिजदा करना हो वह औलिया को सिजदा करे। औलिया और आम मनुष्य दोनों के अन्दर ख़ुदा है। औलिया के अन्दर परदा खुला हुआ है। आम मनुष्य के अन्दर भी ख़ुदा है। परन्तु ख़ुदा और मनुष्य के बीच अहंभाव का परदा है। यदि पहुँचे हुए गुरु मिलें तो उस परदे को खोलकर परमात्मा का नूर दिखा दें। जब परदा हट गया तो वह मनुष्य भी मायावी चोले में हक़ीक़त होगा। हक़ीक़त तो हमेशा मनुष्य के चोले में दुनिया में आती रहती हैं। जैसे कि तुलसी साहिब जी ने कहा है 'सन्त न होते जगत में, जल मरता संसार'। मगर दुनिया के लोग हक़ीक़त को इस पहनावे में देखने से इनकार करते हैं। इनकार ही नहीं करते बल्कि लड़ने को तैयार रहते हैं। इसलिये मौलाना रूम साहिब ने इस विषय पर बड़ा लम्बा-चौड़ा भाषण मसनवी में लिखा है :

क़ौम गुफ़्तंद ऐ गिरोहे मुदई, कू गवाहे तिवो इलमे वाफ़ई। हुबो जाह व सरवरी दारदहर ऑ, कै शुमारद ख़्वेश अज पैग़म्बरां। चू शमा बस्ताइ हम ख़्त्राबों ख़ुरेद, कै शुमा सैयादे सी-मुर्गे दिल एदे।

भाव लोग कहते है कि हे आन्तिरक ज्ञान की डींग मारने वालो! जिसके मन में पदवी और मान पाने की धुन है वह कैसे अपने आपको परमात्मा का प्यारा कह सकता है ? तुम, जो कि सदा खाने और सोने की सोच में रहते हो, किस तरह आत्म-ज्ञान को पा सकते हो ?

बस यही हाल हम सबका है, जिसका नक़्शा मौलाना साहिब ने मसनवी में खींचकर दिखा दिया है। इनसान भी सच्चा है। वे उस व्यक्ति को कैसे

पहचाने, जो बेशक हमारी तरह खाता-पीता और बाल-बच्चेदार है, परन्तु वास्तव में हमारे जैसा मनुष्य नहीं बल्कि ख़ुद परमात्मा स्थूल देह धार बन आया है। उनकी आँखों के आगे धर्म, जाति, देश-विदेश के भेद-भाव, सांसारिक लालच आदि के परदे लगे हैं। वे जो कुछ देखते हैं उन परदों में से देखते हैं। कोई बिरले ही, जिन पर प्रभु की कृपा होती है, खोजी नज़र से ऐसे दावों की जाँच-पड़ताल करते हैं। पहले तो दुनिया और दुनियादारों के दिल में इस पहनावे में सच्चाई को ढूँढने का शौक़ ही नहीं, उनको तो दुनिया का रुपया-पैसा, स्त्री, बाल-बच्चे प्यारे हैं। बहुतेरों को दुनिया के धन्धों से सच्चाई की खोज के लिये फ़ुर्सत ही नहीं। जो इन रुकावटों से बचा वह अपने धर्म और रीति-रिवाजों की उ रंगीन ऐनक को आँखों पर चढ़ाये हुए है। सच्चाई का सफ़ेद उजाला उसे कैसे नज़र आये। कामिल फ़कीर फिर उसे उसके अपने धर्म के विचारों के अनुसार समझाने के प्रयत्न करते हैं। जिनकी समझ में उनकी बात आ जाती है वे उनको इस पहनावे में सच्चाई का जलवा दिखाते हैं। फिर एक और भारी रुकावट है जिसको लोक-लाज कहते हैं। जैसे कि शम्स तबरेज़ ने कहा है :

गुफ़्ता कि कूस्त रहजन, गुफ़्तम हमीं मुलामत। अर्थात् पूछा कि ठग कौन है ? कहा कि लोक-लाज, निन्दा आदि का डर। जब-जब परमात्मा इस पहनावे में आता है वह दुनियादारों से बचने के लिये अपनी निन्दा या चुगली करवाने का सामान उत्पन्न कर लेता है। जैसा राधास्वामी दयाल ने फ़रमाया है, 'निन्दा चौकीदार बिठाई। कोई जीव धसने नहिं पाई'।' पिछले महात्माओं को, जब वे मनुष्य के रूप में महात्मा बनकर इस संसार में आये, लोगों ने उन्हें कितना दु:ख दिया। हजरत ईसा, हजरत मुहम्मद, राम, कृष्ण, कबीर साहिब, गुरु नानक साहिब इत्यादि को लोगों ने उनकी बात सुनने और उनका आदर-मान करने की बजाय हर प्रकार से कष्ट पहुँचाये। लेकिन जिन लोगों ने सौभाग्य से उन महात्माओं की शिक्षा को मान लिया, वे लाभ उठा गये। शेष ख़ाली रह गये। अब हम हैं कि उन गुजरे हुए महात्माओं की शिक्षा को दिखावे के लिये मानकर और भेद-भाव में पड़कर कहते हैं कि अब उनके बाद कोई महात्मा नहीं आयेगा, जैसे कि अब परमात्मा ने इस पहनावे में आने का नियम ही समाप्त कर दिया हो। वास्तव में बात यह है कि परमात्मा इस पहनावे में आता रहा है और आता रहेगा। जो-जो उसको इस पहनावे में पहचान लेंगे, उनका काम बन जायेगा। शेष

ख़ाली फिरते रहेंगे। वे दुनिया के बन्दे हैं। गुज़रे हुए महात्माओं को मानना आसान है। जीवित महात्मा की इच्छानुसार काम करना और उसके हुक्म पर चलना बहुत कठिन है। लेकिन उसके बिना गुजारा भी नहीं है। इसे प्रमाणित करने के लिये कि परमात्मा इस पहनावे में आता है, बुल्लेशाह ने कहा है : 'मौला आदमी बन आया'। गुरु अर्जुन देव जी :

हर जीओ नाम परयो रामदास। शम्स तबरेज : 'आँ बादशाहे आजम दरे बस्ता बूद महकम। पोशीद दलिक आदम यानी कि बर दर आमद।

वह शहंशाह दरवाज़ा बन्द किये हुए था। फिर वह मनुष्य के भेस में दरवाजे पर आया।

मौलाना रूम : चूं कि करदी जाते मुर्शिदा रा क़बूल। हम ख़ुदा दर जातिश आमद हम रसूल।

जब तूने मुर्शिद (सतगुरु) को मान लिया तो उसमें ख़ुदा भी आ गया और रसूल भी।

आज 6 मार्च को हुजूर वर्कशाप तथा खेतों में नहीं गए। कल आपकी आँखों में कुकरा फूल गया था। आज कास्टिक लगाया तो तकलीफ़ ज़्यादा हो गई है। बिस्तर पर आराम कर रहे हैं। शाम के चार बजे हुजूर को कुछ आराम हो गया। हुजूर वर्कशाप में तशरीफ़ ले गए। कमाद की बुआई का काम जारी है। 8 और 9 मार्च, दो दिन कमाद की बुआई थेहड़ी रसूलपुर के पास हौदियाँ में होती रही, जिसको मोरीवाला से रास्ता जाता है। आज एक सत्संगी का पत्र आया कि मैंने 27 फ़रवरी को नाम लिया था। अब सिमरन ख़ुद-ब-ख़ुद जारी है यानी नाम लेने के एक सप्ताह बाद सिमरन पक गया। पिछले जन्म के संस्कार और मेहनत। कुछ लोग तो वर्षों तक इस स्थान पर नहीं पहुँच पाते। संस्कृत में ख़ूब कहा है कि सिद्धि यानी सफलता प्राप्त होने में अनेक जन्म लग जाते हैं। निराश होकर छोड़ न दें। जैसे मौलाना रूम ने कहा है : 'अन्दर्री राह मी तराश व भी ख़राश, ता दमे आख़िर वले फ़रग़ मबाश 9 इस राह पर आख़िरी साँस तक बढ़ते चलो, कभी आलस न करो।

जहाँ तक किसी ने इस जन्म में उन्नित कर ली अगले जन्म में फिर वहीं से आरम्भ करेगा, परिश्रम निष्फल नहीं जाता। भगवान् कृष्णजी ने भी गीता में यही कहा है कि योगभ्रष्ट यानी वह योगी जिसको योग में पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं हुई और मृत्यु हो गई, वह फिर मनुष्य जन्म में आयेगा। फिर उसको योग पूर्ण करने का अवसर मिलेगा या तो सत्संगी अभ्यासियों के घर पैदा होगा या किसी धर्मात्मा वंश में, जहाँ कि उसे पूर्ण भक्ति करने का अवसर मिल जायेगा। इसलिये हर व्यक्ति को चाहिये कि पूर्ण गुरु से नाम लेकर मेहनत करे। यदि मेहनत नहीं कर सकता तो सत्संग करे या साध संगत की सेवा करे। यदि पूर्ण गुरु नहीं मिला या उस पर विश्वास नहीं आया तो साधुओं-महात्माओं की खोज जारी रखे और उनकी सेवा करता रहे। यह भी बेकार नहीं जायेगी। जैसे शेख़ सादी ने फ़रमाया है, 'शायद कि वक़्ते रसी कामिले।' यानी सम्भव है कभी तेरा किसी पूर्ण सतगुरु से मेल हो जाये। कमी है तो इच्छा की। हमारे अन्दर रूहानी खोज और तरक्क़ी की चाह नहीं। इसीलिये मौलाना रूम ने फ़रमाया है, 'ब-हर हाले कि बाशी में-तलब' यानी, जिस हाल में भी रहो मालिक से मिलने की मन में तड़प रखो। कमी है तो तड़प की। हमारे अन्दर तड़प नहीं है।

इस समय 6 मार्च को रात के साढ़े ग्यारह बजे हैं। मैं अभी सत्संग से आया हूँ , जोकि सिकन्दरपुर के शान्ति आश्रम के आँगन में हुआ। मौसम बड़ा सुहावना है। न सर्दी है न गर्मी। स्वामी जी की वाणी में से आसाढ़ और सावन के महीने पढ़े गए। जिनका अर्थ है कि जो मनुष्य दुनिया में आता है, किसी न किसी आशा अर्थात् पहले जन्म की इच्छा के कारण आता है। सत्संग के बाद हुजूर ने लाल सिंह मियाँविण्ड वाले की कहानी सुनाई कि वह बाबा जी महाराज के समय में बड़ा प्रेमी सत्संगी था। जब डेरे आता कभी ख़ाली नहीं बैठता। या तो सत्संग सुनता या सेवा करता। यदि कुछ न होता तो रस्सी ही बटता रहता या बाड़ लगाता रहता। उसके पास अपनी जमीन बहुत थोड़ी थी। लोगों से लेकर खेती करता था लेकिन इस विचार से कि किसी मालिक की बटाई का दाना उसके पास न रह जाये वह हरएक मालिक की ज़मीन का खिलवाड़ा उसी के खेत में लगा कर अनाज निकालता था। इस प्रकार से उसे कई जगह खिलवाड़े लगाने पड़ते। लोग कहते भई इतनी जगह इतने खिलवाड़ों की देखभाल कैसे करोगे ?

तो जवाब दिया कि गुरु कर लेगा। सो एक बार कुछ बदमाशों ने सोचा कि आओ ता जवाब । दया । या पुरे । वे इकट्ठे होकर रात के समय पहले एक खिलवाड़े इसका खिलवाड़ा जला दें। वे इकट्ठे होकर रात के समय पहले एक खिलवाड़े इसका खलपाड़ा अला सिंह तुम जागते हो!' आवाज आई।' हाँ!' फिर दूसरे पर गये और पुकारा, 'लाल सिंह तुम जागते हो!' आवाज आई।' हाँ!' फिर दूसरे पर गय और उन्हें प्रकारा, 'लाल सिंह तुम जागते हो!' आवाज आई, 'हाँ जागता बुर गुप पति हैं। अन्ति सोचा कि एक ख़िलवाड़े से दूसरे में भाग कर आ गया होगा। फिर हू। उन्होत साथा अवाज दी तो जवाब मिला 'हाँ जागता हूँ।' उस समय से लोगों को विश्वास हो गया कि भाई लाल सिंह करनी वाला व्यक्ति है और उसकी मान्यता होने लगी। कुछ समय के बाद वह तंग आ गया। उसके गाँव में एक बीबी साहिब देई प्रेमी अभ्यासिन थी। एक दिन वह उसे मिलने आई, तो लाल सिंह ने कहा कि अब दिल दुनिया से तंग आ गया है। अब तो यहाँ से चले जाने को जी चाहता है। लेकिन एक बड़ी बात बाक़ी है। उसने पूछा क्या ? तो बोला कि बताऊँगा। कुछ समय बाद वह अपने भाई का भैंसा खोल रहा था कि उस भैंसे ने दोनों सींग उसके पेट में मार कर उसकी आँतें निकाल दीं। एक हकीम ने उसको सी दिया। परन्तु लाल सिंह बजाय चारपाई पर लेटने के चल कर घर चला गया। जिससे सिलाई फट गई और फिर जख़्म हो गया। लेकिन लाल सिंह का चेहरा ख़ुश तथा लाल था। जब लोग आते तो मुँह ढाँप लेता। साहिब देई ने पूछा तो बताया कि वह भैंसा पिछले जन्म में सुनार था। मैंने छवी से उसकी आँतें बाहर निकाली थीं। अब वह बदला देना पड़ा। अच्छा हुआ कि हिसाब साफ़ हो गया। अब मैं जाता हूँ।

इसके बाद डॉ. करतार सिंह ने सत्संग में बताया कि एक बार उसका लड़का सत्संग सुनकर ब्यास से ट्रेन में घर वापस आ रहा था। रास्ते में एक सूबेदार मेजर से बातचीत हुई तो उसने कहा कि यह क्या, मैं तुम्हें अपनी घटना बताता हूँ कि जब जापानियों ने अंग्रेजी जहाज प्रिंस आफ़ वेल्स पर सिंगापुर में बमबारी की तो मैं जहाज में था। जापानियों ने चिमनी में बम मारा और उसके बाद कई बम गिराये, जिनसे जहाज फट गया और नीचे डूबने लगा। मैंने जहाज का एक ताख्ता पकड़ लिया और समुद्र में बहने लगा। लेकिन वह ताख्ता हाथ से छूट गया और लगा गोते खाने। उस समय विनती की कि हे सतगुरु! आप कहा करते थे कि आप सब जगह मौजूद हैं, अब मेरी सहायता करो। इस पर हुज़ूर ने उसको दर्शन दिये और हाथ पकड़ लिया। फिर वह बेहोश हो गया। जब होश आया तो वह किनारे पर था।

हुजूर ने कहा कि अभी एक लारी आयेगी और तुम्हें ले जायेगी। लेकिन जब मैंने हुजूर को मत्था टेकना चाहा तो हुजूर लुप्त हो गये। इतने में लारी आ गई और मुझे बिठा लिया। मैंने पूछा कि सिंगापुर यहाँ से कितनी दूर है ? जवाब मिला कई सौ मील अर्थात् हुजूर कई सौ मील तक उसे ले गए।

हुजूर महाराज जी का देहली का दौरा

15 मार्च की सुबह को हुजूर दस बजे सिरसा से मोटर कार में सवार होकर पूरे तीन बजे कोठी न. 7/24 दरियागंज देहली में पहुँच गये। उनके सेवादार उनसे पहले सुबह आठ-नौ बजे वहाँ पहुँच चुके थे। थोड़ा सा आराम करके हुजूर ने शाम को छ: बजे सत्संग शुरू किया। लेकिन क्योंकि लोगों को पता था कि हुजूर रेलगाड़ी से हिसार तथा गुड़गाँव के रास्ते शाम के सात बजे तशरीफ़ लायेंगे इसलिये बहुत भीड़-भाड़ न थी। लेकिन दूसरे दिन सुबह आठ बजे के सत्संग में और शाम साढ़े छ: बजे के सत्संग में भीड़ होने लगी। यह भीड़ प्रतिदिन बढ़ती ही गई। यहाँ तक कि आज शाम 17 मार्च को इतनी भीड़ थी कि सत्संग का सारा आँगन स्त्री-पुरुषों से भर गया। आज हजुर ने कबीर साहिब की वाणी में से 'कर नैनों दीदार महल में प्यारा है 10 की व्याख्या की। कल शाम को 'जग में घोर अंधेरा भारी। तन में तम का भंडारा"। और 'बिख बोहिथा लादया दीआ समुंद मंझार" पढ़े गए। एक बार 'यह तन दुर्लभ तुमने पाया " लिया गया। क्योंकि देहली में मूर्ति-पूजा का रिवाज अधिक है, इसलिये हुज़ूर ने मूर्ति-पूजा को निकृष्ट धर्म बताया और धन्ना भक्त के ठाकुर की कहानी भी सुनाई। यह भी फ़रमाया कि देवी-देवता मनुष्य के पूजने योग्य नहीं। मनुष्य-शरीर को वे भी तरसते हैं कि हमें मनुष्य का जन्म मिले और हम भजन बन्दगी करके भवसागर से पार हो जायें। मनुष्य के पूजने के लिये परमात्मा के सिवाय कोई नहीं, क्योंकि मनुष्य से बड़ी और कोई हस्ती नहीं है। देहली में सत्संग के बाद सारा दिन उन लोगों की भीड़-भाड़ रहती है जो हुजूर से बातचीत करना चाहते हैं। हुजूर को कभी आराम का ख़याल नहीं आता। मैंने प्रार्थना की कि हुजूर दोपहर को दो घण्टे आराम के लिये नियुक्त करके लोगों को सूचित कर दिया जाये कि उस समय आकर हुजूर को कष्ट न दें। लेकिन हुजूर ने परवाह न की। आज हुजूर राय बहादुर सरदार सिंह की कोठी पर उनको देखने गये, क्योंकि वह बीमारी के

कारण स्वयं दर्शन करने नहीं आ सकते थे। इसके बाद फ़ोटोग्राफ़र मिस्टर दत्त के स्टूडियो में कश्मीरी गेट तशरीफ़ ले गये। मैंने उनके बनाये हुए फ़ोटो देखे जोिक बहुत साफ़ थे। उनके पास भारत के कमाण्डर-इन-चीफ़ और वायसराय के सर्टीफ़िकेट भी थे। उन्होंने बिजली के प्रकाश में हुजूर का ग्रुप फ़ोटो लिया जिसमें मैं, भाई शादी, मिस्टर टी. एस. सचदेव और एक-दो अन्य व्यक्ति शामिल थे। इसके बाद हुजूर ने वापस आकर सत्संग किया। फिर रात के साढे आठ बजे सरदार जगजीत सिंह रईस नई देहली की कोठी पर तशरीफ़ ले गये। वहाँ हम सबको खाना खिलाया गया। वहाँ से सवा दस बजे वापस आये। रास्ते में चर्चा हुई कि एक सिक्ख औरत ने बीस हजार रुपया लगाकर अखण्ड पाठ करवाया। मैंने अर्ज की कि दान तो पंजाब में सर गंगाराम का बड़ा लाभदायक सिद्ध हुआ है। सर गूज्जरमल का अमृतसर में टी.बी. का अस्पताल भी बहुत अच्छा कार्य कर रहा है। हुजूर ने फ़रमाया कि मुक्ति तो बिना नाम के नहीं होगी। हाँ, यह दानी लोग अगले जन्म में सेठ-साहूकार हो जायेंगे।

18 मार्च को हुजूर ने देहली में दो सौ चालीस स्त्री-पुरुषों को नाम दिया। इसके बाद कुछ बड़े-बड़े सेठ-साहूकारों की सम्बन्धी स्त्रियों को भी नाम दिया। फिर शाम को सब्ज़ी मण्डी आटे की मिल में, जिसका मैनेजर सत्संगी है, तशरीफ़ ले गये। वहाँ क़रीब आधा घण्टा ज्ञान चर्चा होती रही। उन्होंने फ़रमाया कि गीता में मन को वश में करने के दो साधन लिखे हैं- एक अभ्यास और दूसरा वैराग्य। सन्तमत में, सन्त सत्संग द्वारा मन में दुनिया की तरफ़ से वैराग्य और रूहानी देशों का प्रेम पैदा करते हैं। सत्संग का ध्येय यही है। सन्तजन सुरत-शब्द के अभ्यास से मन को स्थिर करने का ढंग बताते हैं। रात को नई देहली के ठेकेदार व रईस सरदार बहादुर जगजीत सिंह जो स्वर्गीय राय बहादुर सरदार नारायण सिंह जी के सुपुत्र हैं, के यहाँ कार में तशरीफ़ ले गये। वहाँ हुजूर और उनके साथियों को सरदार साहिब तथा उनकी धर्मपत्नी ने बड़े प्रेम से खाना खिलाया। हुजूर को उनसे बड़ा प्रेम है। उन पर हमेशा दया रखते हैं। धन्य है वे लोग जो पूर्व जन्मों में अपनी अच्छी करनी के कारण इस जन्म में बड़े-बड़े धनवान बनते हैं और सन्तों की सेवा करके आगे के लिये भी अच्छे जन्मों या आन्तरिक लोकों में जाने के अधिकारी बन रहे हैं। धन का लाभ और सबसे

उत्तम ख़र्च भी यही है कि सन्तों-महात्माओं और जनता की सेवा में ख़र्च किया जाये। वरना हुजूर स्वामी जी महाराज सच फ़रमाते हैं :

सो धन जोड़ किया क्या भाई। जगत लाज में दिया उड़ाई॥ पर जो समझवार तुम होते। तो धन से कुछ कारज लेते॥ कारज लेना यह है भाई। गुरु सेवा में ख़र्च कराई॥

हुजूर का रोहतक का दौरा और सिकन्दरपुर को वापसी

19 मार्च रविवार को हुजूर दिन के बारह बजे सरदार बहादुर की कार में दिरयागंज से चल कर दोपहर के दो-तीन बजे के क़रीब रोहतक शान्ति भवन में वकील लाला द्वारका प्रशाद के मकान पर पहुँचे। वहाँ हजारों स्त्री-पुरुष आपकी राह देख रहे थे। शाम के छ: बजे पास वाले जैन गर्ल्स स्कूल के आँगन में सत्संग हुआ। राय बहादुर लाला गुलवन्त राय, सेशन जज और एक सब-जज भी उपस्थित थे। सत्संग के बाद हुज़ूर कार में सैर को तशरीफ़ ले गये। वहाँ से आकर कई स्त्री-पुरुषों को नामदान दिया।

20 मार्च की सुबह साढ़े आठ बजे से साढ़े नौ बजे तक सत्संग किया। स्कूल का सारा आँगन भरा हुआ था। सत्संग के बाद सरदार साहिब की कार में ग्यारह बजे रोहतक से चल कर सवा बारह बजे कचहरी में लाला कुंजलाल साहिब वकील से मिलने तशरीफ़ ले गए। फिर हिसार से अपनी कार में चल कर रास्ते में फ़तेहबाद, औरतों के अस्पताल की डॉक्टर बीबी चन्द्रावती को दर्शन देते हुए शाम को साढ़े तीन बजे ग्रेवाल मिल्स में पहुँच गये। जब हम रोहतक से हिसार आ रहे थे तो रास्ते में सरदार साहिब के ड्राइवर ने कहा कि हुजूर एक अर्ज़ करनी है। हुजूर ने फ़रमाया कि अवश्य करो। अत: उसने वह सवाल पूछा जोकि दुनिया में अधिकतर आदमी एक-दूसरे से पूछा करते हैं यानी दुनिया में देखा जाता है कि जो आदमी नेक, धर्मी-कर्मी होते हैं वे दु:ख उठाते हैं और उनको मरने से पहले बीमारी आदि का बड़ा दु:ख होता है। इसके विपरीत जो लोग बुरे और पापी होते हैं उनकी जान आसानी से निकल जाती है। उनको इतना दुःख नहीं होता। हुजूर ने जवाब दिया कि ऐसा ही होना चाहिये क्योंकि यह परमात्मा की विशेष दया है कि वह नेक लोगों के पापों को बीमारी आदि से धोकर साफ़ करना चाहता है, जिससे बाद में उनको नरकों में सज़ा न भुगतनी पड़े और जो बुरे लोग हैं उनको

दूसरे जन्म में या योनियों में या नरकों में अपने बुरे कर्मों की कड़ी सजा भुगतनी पड़ती है। इस विषय पर शम्स तबरेज का यह शेर है :

तू जे ख़्वारी हाइ हमे नाली नमे बीनी इनायत हा, मख़्वाह अज हक़ इनायत हा व कम कुन शिकायत हा। अर्थात् ऐ परमात्मा से अपने दुःखों का रोना रोने वाले, उसकी दयालुता देख। या तो परमात्मा से दया न माँग या अपने दुःखों की शिकायत न कर।

हुजूर की डेरे को वापसी की यात्रा

23 मार्च को सुबह हुजूर ने सिकन्दरपुर चलने का प्रोग्राम बनाया था, मगर प्रातः चार-पाँच बजे सिकन्दरपुर में भारी वर्षा थी। अँधेरी रात के समय कार द्वारा सिकन्दरपुर से पक्की सड़क तक कीचड़ को पार करना सम्भव नहीं था। इसलिये सुबह के सात बजे खाना हुए। इस समय उजाला तो हो गया था परन्तु बूँदा-बाँदी हो रही थी। यह विचार था कि सिरसा ब्राँच की पटड़ी गुजरने के लायक नहीं रही होगी क्योंकि केरे से अट्ठाइस मील पक्की सड़क पर बड्डू पुल जाकर वेस्टर्न जमुना नहर की सिरसा ब्रॉंच पर सौ मील तक जाकर पिपली के पास देहली से अम्बाला तक का रास्ता पकड़ना पड़ता है परन्तु ज्यों-ज्यों सड़क पर चलते गए, वर्षा कम होती गई। फ़तेहबाद के पास ऐसा मालूम हुआ कि यहाँ वर्षा नहीं हुई। बड्डू पुल जाकर नहर की पटड़ी पर हम सुबह आठ बजे पहुँच गये और साढ़े दस बजे पिपली के पास रास्ते को पकड़कर अम्बाला सवा ग्यारह बजे राय साहिब के मकान पर, जोकि कालीबाड़ी रघुनन्दन निवास में है, आ पहुँचे। वहाँ बहुत-से सत्संगी भाई-बहन इकट्ठे थे। वहाँ पन्द्रह मिनट के लगभग उनको दर्शन देकर और राय साहिब को कार में बैठाकर लुधियाना की ओर रवाना हो गये। रास्ते में वर्षा का बड़ा जोर रहा। अम्बाला से आगे सरहिन्द के पास जरनैली सड़क पर फ़ौजी ट्रक भारी संख्या में सफ़र कर रहे थे। मोटर के फिसलने का डर था। इसलिये सड़क से नीचे कच्चे में कार ले जानी पड़ी। लुधियाना में मुसलमानें के किसी जलसे के कारण बड़ी भीड़ थी। इस भीड़ में से कार कठिनाई से निकली। जालन्थर सरदार साहिब के यहाँ दस मिनट ठहर कर, शाम के पाँच बजे के क़रीब डेरे पहुँच गये।

अध्याय 19 डेरे में निवास का हाल

24 मार्च को एक सत्संग हुआ। 25 मार्च को दो सत्संग हुए। स्वामी जी महाराज की वाणी में से आसोज का महीना और श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'जिन तुम भेजे तिनिह बुलाए सुख सहज सेती घर आओ" लिये गए। 26 मार्च रविवार को बारह बजे दोपहर को सत्संग होना था। बहुत-सी संगत दूर-दूर से सत्संग सुनने के लिये आई हुई थी। लेकिन वर्षा इतनी अधिक थी कि सत्संग न हो सका। आज सोमवार को बहुत से स्त्री-पुरुषों को नाम दिया जा रहा है। कल शाम को मेरी उपस्थिति में हुज़ूर ने बताया कि मन को निचला बैठने की आदत नहीं। जब ध्यान लगाकर सिमरन पर बैठा जाता है तो मन सिमरन में लगना नहीं चाहता और तंग करता है, व्याकुल होता है। परन्तु अभ्यासी को चाहिये कि सिमरन न छोड़े। मन चाहे तंग करे या न करे, सिमरन करता जाये। फिर कुछ समय बाद पिण्डलियों में दर्द होगा, जैसे कि

29 मार्च बुधवार को आज कई दिनों के बाद दोपहर में धूप निकली। कल हुजूर ने रामदासिया बिरादरी को नाम दिया और अब तक युवराज आदि जो लोग जा रहे हैं उनको विदा करने में लगे हैं। आज तीन दिन की डाक देखी। अभी तक मासिक सत्संग की भीड़-भाड़ के काम से पूरी तरह छुटकारा नहीं मिला।

पिण्डलियाँ फटना चाहती हैं। उस समय घबरा कर न उठ खड़ा हो, बैठा रहे।

अन्त में दर्द दूर हो जायेगा। फिर जितना चाहो बैठो, मालूम न होगा। इसी

प्रकार धीरे-धीरे मन निश्चल होता जायेगा।

आज डाक में एक मुसलमान साहिब ने एक कहानी नोट करने के लायक लिखी कि एक नेक व्यक्ति ने अपनी सारी आयु परमात्मा की बे-लाग बन्दगी की। मरने के बाद जब उसे परमात्मा के दरबार में ले गये तो परमात्मा ने आदेश

276 दिया कि इसको स्वर्ग में ले जाओ। वह बोला कि बस मेरी सारी उम्र की बन्दगी का यही फल है जो मुझे दे रहे हो। इस पर परमात्मा ने आदेश दिया कि इसे नरक में ले जाओ। जब फ़रिश्ते उसे ले जा रहे थे, रास्ते में उसे बड़ी प्यास लगी और प्यास के मारे उसकी जान निकलने लगी तो उसने पानी माँगा। फ़रिश्तों ने कहा कि पानी का गिलास तो हाजिर है मगर तब मिलेगा जब तुम अपनी सारी आयु की बन्दगी का फल हमें दे दोगे। मरता क्या न करता। बेचारे को देना पड़ा। तब परमात्मा ने आदेश दिया कि उसे वापस लाओ और फ़रमाया कि देखो यह थी तुम्हारी बन्दगी की क़ीमत। सच है गुरु नानक साहिब ने फ़रमाया है :

करम धरम पाखंड जो दीसै तिन जम जागाती लूटै।

फिर कहा है:

जिह पैंडै लूटी पनिहारी। सो मारग संतन दूरारी।

शाम के छ: बजे सत्संग शुरू हुआ। हुजूर के पास शिकायत आई थी कि कुछ बीबियाँ नाम लेकर भी देवी-देवता, तीर्थ-व्रत, मूर्ति-पूजा के भ्रम की क़ैद में हैं, इसलिये तुलसी साहिब की घट रामायण में से लोमस ऋषि, जोिक ब्रह्मा जी का बेटा था, का संवाद लिया गया। उसने बाप के कहने पर तीर्थ-स्नान, व्रत आदि, मूर्ति-पूजा, पीपल, तुलसी की पूजा, शिव जी की पूजा, सब हजारों साल करके देखे, परन्तु मुक्ति न मिली बल्कि चौरासी लाख योनियों में जाना पड़ा। हुजूर ने फ़रमाया कि मूर्ति की पूजा तथा ध्यान भी मना है, चाहे मूर्ति पत्थर की हो या धातु की या काग़ज़ की। फिर फ़रमाया कि जो लोग मेरी फ़ोटो की पूजा करते हैं, वे पाप कर रहे हैं। मेरी फ़ोटो यदि घर में रखना हो तो ऐसे ही रखो जैसे किसी बुजुर्ग या माता-पिता या यार-दोस्त का फ़ोटो याद के लिये रख लिया

एक फ़ौजी युवक ने जो कि बर्मा से आया हुआ मालूम होता है, बताया कि इनफ़ेण्ट्री नम्बर 2 के बहुत-से आदमी बर्मा संगठन की लड़ाई में मारे गये और वह बहुत उदास हो गया। जब उस पलटन के जख़्मी लाये गये तो उसके अफ़सर ने कहा कि तुम तो उदास और दु:खी हो। जाओ स्नान कर आओ ताकि तुम्हें होश आ जाये। वह एक चश्मे पर जोकि सुन्दरबन के जंगल में था, कपड़े धीने और नहाने गया। परन्तु उदासी के कारण बिना कपड़े धोए ही आ गया।

उसके अफ़सर ने कहा कि तुम तो अभी भी उदास हो तो उसने जवाब दिया कि में ब्यास दर्शन करने जाना चाहता हूँ। उसका अफ़सर बोला कि भई तीन साल से पहले छुट्टी नहीं मिल सकती। तुम्हें अभी दो साल हुए हैं। इस पर वह युवक निराश होकर अपनी जगह पर आ गया। मगर रात को उसके अफ़सर ने उसे बुलाया और कहा कि जाओ तुम सुबह चले जाओ। बिस्तर तैयार रखो। सुबह वह लारी में चल पड़ा। आगे जाकर उसे दूसरी लारी पकड़नी थी, जो उसे जहाज़ के बन्दरगाह तक पहुँचा देती। मगर जब वह उस दूसरी लारी पर सवार होने के लिये आया और उसमें बैठ गया तो एक गोरा सारजण्ट आ गया और कहने लगा कि तुम इस लारी में नहीं जा सकते। उसने बहुतेरा हठ किया लेकिन सारजण्ट ने एक न मानी। सब लारियाँ वहाँ से जहाज़ के लिये चल दीं। उसे दूसरे दिन वहाँ से जाना पड़ा। तो दूसरे दिन पता लगा कि दो जहाज़, जिन पर पहले दिन की सवारियाँ थीं, जापान वालों ने बम मार कर डुबो दिये। कुल तेरह सौ यात्रियों में से थोड़े-से देशी बचे हैं। बाकी सबके सब अण्डेमान के पास डूब गये। उसे सन्देह हुआ कि गोरा सारजण्ट कौन था ? सतगुरु ने बताया कि वह मैं था। वहाँ से जब जहाज पर सवार हुआ तो रास्ते में तूफ़ान आ गया और पाँच-पाँच, छ:-छ: गज़ ऊँची लहरें जहाज से टकराने लगीं। एक-एक टक्कर से जहाज एक मील परे धकेला जाता था। जहाज का कप्तान भगवान को याद करने लगा। जब लोग रोने लगे कि अब मरेंगे तो वह युवक सतगुरु के भरोसे पर ख़ुश था। उसे डूबने का ग़म नहीं था। यहाँ तक कि सब लोगों ने लाइफ़ बेल्ट और तैरने की टंकी बाँध ली लेकिन उसने नहीं बाँधी। लोग हैरान थे। अन्त में जहाज बच गया और वह सही सलामत कॉक्स बाज़ार पहुँच गया।

आज डाक पढ़ते-पढ़ते किसी का पत्र आया कि मैं बीमार हूँ। हुजूर ने जवाब दिया कि भजन-सिमरन करना मन का काम है, शरीर का काम नहीं। मन में सिमरन-ध्यान करो, बीमारी में दया अधिक होती है। कई बार सतगुरु आते हैं और बीमारी की दवा बता जाते हैं जिससे आराम हो जाता है। एक मस्त सत्संगी पास बैठा था उसने अपने अनुभव से इसकी पुष्टि की।

30 मार्च शाम के सत्संग में यह वचन आया कि सत्संगियों को आपस में दुश्मनी तथा ईर्ष्या नहीं रखनी चाहिये, विशेषकर बीबियों को। हुजूर ने एक

लतीफ़ा सुनाया कि एक शहर में एक बुढ़िया बड़ी लड़ाकी थी, जिसने लड़-लड़ कर लोगों को तंग कर दिया था। अन्त में यह निश्चय किया गया कि हरएक ख़ुशी के अवसर पर बुढ़िया को कुछ मिठाई और वस्त्र दे दिए जायें अरेर वह लड़ाई न करे। बहुत समय तक यह चलता रहा कि हरएक शादी के अवसर पर बुढ़िया को उसका टैक्स भेजा जाता। एक बार एक नई दुल्हन को ब्याह कर लाये। जब उसकी सास ने कुछ मिठाई और वस्त्र अलग करके रखे तो नई बहू ने पूछा कि यह किसके लिये हैं ? तो सास ने कहा कि यह लड़ाकी बुढ़िया को दिये जायेंगे। बहू ने कहा कि मत दो। मैं उससे निपट लूँगी। अतएव जब बुढ़िया को उसका टैक्स नहीं मिला तो वह आग बबला होकर लड़ने दौड़ी तो बहू ने कहा कि तुम किस तरह की लड़ाई करोगी-रोज की, सप्ताह की या महीने की। बुढ़िया हैरान होकर पूछने लगी कि यह कैसे ? तो बहू ने कहा कि यदि तुमने रोज़ की लड़ाई लड़नी हो तो मेरी सौतन बन जाओ। रोज लड़ाई रहा करेगी। यदि सप्ताह की लड़ाई का चाव है तो मेरी पड़ोसिन बन जाओ। यदि महीने की लड़ाई का विचार है तो मेरे मोहल्ले में मकान ले लो। बुढ़िया हैरान होकर अपना-सा मुँह लेकर वापस चली गई।

फिर फ़रमाया कि स्त्रियों को चाहिये कि जब पुरुष घर में भोजन करता हो तो उसके सामने चिन्ता, लड़ाई-झगड़े न खोलें। उसे प्रसन्नता से भोजन करने दें न कि घर के क़िस्से सुनाकर उसके खाने को बे-रस कर दें। हरएक को चाहिये कि सोते समय ग़म व गुस्से को दिल में न आने दें, जिससे चैन की नींद आये।

एक सत्संगी के सवाल पर हुजूर ने फ़रमाया कि पहले सिमरन जबान से करना चाहिये, फिर ख़याल से, जब सिमरन करते-करते ज़बान रुक जाये तो ख़याल से यानी मन से सिमरन करो।

7 अप्रैल को दोपहर के बाद हुजूर ने दौलू नंगल तथा धालीवाल में जाकर सत्संग किया। एक सत्संगिन ने लिखा कि वह पहले अपने अन्दर बहुत-से नज़ारे देखा करती थी। अचानक उसका जवान बेटा मर गया। सब नज़ारे बन्द हो गये। हुजूर ने जवाब में लिखवाया कि तुमने लड़के की मृत्यु पर चिन्ता की जिससे मनतुम्हारी रूह पर आ बैठा और नज़ारे बन्द हो गये। इसलिये महात्माओं ने कहा

सुख दुख दोनों सम कर जानै और मान अपमाना।

आज मिण्टगुमरी मुलतान के दौरे का प्रोग्राम बनाया गया। हुजूर 17 अप्रैल से 25-26 अप्रैल तक उधर रहेंगे। आज सत्संग में निन्दा करने वालों पर व्याख्यान हुआ। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में निन्दक लोगों के विरुद्ध बहुत कुछ लिखा है। ये लोग सोने को हाथ लगाते हैं तो मिट्टी हो जाता है। जिसकी निन्दा करते हैं उसके पाप उनको लग जाते हैं और निन्दा करनेवालों के अच्छे कर्म उनको मिल जाते हैं जिसकी वे निन्दा करते हैं। हुजूर ने फ़रमाया कि शेख़ सादी ने कहा है कि निन्दा करे तो अपने माँ-बाप की, जिससे कि अच्छे कर्म यदि उनसे जायें तो घर में ही रहें।

9 अप्रैल को रविवार के कारण कुछ लोग बाहर से आ गये। सुबह नौ बजे तथा शाम को छ: बजे दो बार सत्संग हुआ। सुबह हुजूरी वाणी में से 'गुरू गुरू में हिरदे धरती ' लिया गया। हुजूर ने चुप रहने के बारे में ये श्लोक सुनाया:

> चतुर चुप कर रहे चतुर के वचन पछाने, चतुर चुप कर रहे सभा बेगानी जाने। चतुर चुप कर रहे चतुर जब होय अकेला, चतुर चुप कर रहे गुरु के आगे चेला।

सुबह को श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'बिरखै हेठ सभ जंत इकट्ठे। इक तत्ते इक बोलन मिट्ठे ⁷ चेतावनी का शब्द लिया गया, जिसमें व्याख्या की गई है कि दुनिया की रिश्तेदारियाँ माँ-बाप, भाई-बहन, लड़का-लड़की आदि सब दुनिया में ऐसे आकर इकट्ठे हो गये हैं जैसे वृक्ष पर पक्षी। जब सुबह होती है वे अपनी-अपनी राह ले लेते हैं, कोई तड़के चला गया कोई दिन चढ़े। फिर पता नहीं कब मेल होगा। हुजूर ने फ़रमाया कि ये वृक्ष जो सामने दिखाई देते हैं, किसी समय हमारी तरह मनुष्य थे। अपने कर्मों के कारण नरक भोगकर अब सबसे निचली मंजिल वनस्पति में आ गिरे हैं। अब इनकी मनुष्य जन्म की बारी पता नहीं कब आयेगी। हाँ, जिस वृक्ष के नीचे सन्त-सतगुरु बैठ जायें या वृक्ष का फल खा लें उसे मनुष्य का चोला मिल सकता है। इसके बाद कबीर साहिब का प्रसिद्ध शब्द 'पिया मोरा जागे में कैसे सोई री^क लिया गया। रूह कहती है कि मैं सोई हुई हूँ ; मेरा पित सत्पुरुष जाग रहा है। मैं पाँच सहेलियों यानी काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार से मिलकर खेल रही हूँ। मेरी सास, ननद, देवरानी

यानी दुरमत, आशा, मनसा मुझे डरा रही हैं। अपने मन से मैंने दोस्ती कर रखी

है, मेरा छुटकारा कैसे हो!

10 अप्रैल को हुजूर कपूरथला के पुलिस सुपरिटेण्डेण्ट सरदार मदनगोपाल सिंह साहिब के यहाँ भोग पर तशरीफ़ ले गये। भोग में जो वाणी पढ़ी उसकी व्याख्या करते हुए दुनियादारों की मोह-ममता का उदाहरण दिया कि कबीर साहिब का एक जाट जमींदार से प्यार था। वे हमेशा उसको कहा करते कि भाई भगवान् का भजन-सिमरन किया करो। जाट कहता, जी हाँ जरा ये लड़के जवान होकर काम-काज सँभाल लें तो भजन ही करना है। जब लड़के जवान होकर घर-बार सँभालने लग गये तो कबीर साहिब ने फिर वही सवाल किया। उस पर जाट ने कहा कि ये लड़के रात को बे-ख़बर होकर सो जाते हैं, मैं यदि रात को नहीं जागूँ तो चोर इनका घर लूट कर ले जायें। इस बात को दस-बारह साल हो गये। अन्त में फिर कबीर साहिब का वहाँ पर जाना हुआ तो उस जाट के लड़कों ने बताया कि बापू तो आठ-नौ साल हुए स्वर्गवास हो गये। कबीर साहिब ने अन्तर्दृष्टि से देखा तो मालूम हुआ कि वह जाट पहले तो अपने लड़कों के यहाँ बैल बना, फिर जब बूढ़ा हो गया तो लड़कों ने गाड़ीवान के हाथों बेच दिया। जब गाड़ीवान के काम का नहीं रहा तो उसने तेली को दे दिया। जब बहुत बूढ़ा हो गया तो तेली ने कसाई को बेच दिया। इस पर कबीर साहिब ने यह शब्द पढ़ा :

> बैल बने हल में जुते, ला गाड़ी में दीन। तेली के कोल्हू जुते, पुन घेर कसाई लीन॥ मास कटा बोटी बिकी, चमड़न मढ़ी नकार। कुछेक कर्म बाकी रहे, तिस पर पड़ती मार॥

- 11 अप्रैल को फगवाड़ा के पास एक गाँव में तशरीफ़ ले गये। वहाँ से रात को वापस आये।
- 12 अप्रैल को कपूरथला में तोपख़ाना देखा, जिसमें पुराने ज़माने के बहुत से हथियार देखने को मिले जैसे लोहे के कोट, लोहे का ख़ोद, लोहे की ढाल-तलवारें, खंजर, पुरानी बन्दूकें और पुराने तीर-कमान। तीर के सिरे पर आहनी फल लगा हुआ था। मेरा विचार है कि इन तीरों से आदमी का मारा जाना

काफ़ी मुश्किल है, हाँ घायल होना सम्भव है। ऐसे हथियार बहुत-सी देसी रियासतों के हथियारख़ानों में देखे जाते हैं। एक कमरे में हाथियों के होदे लकड़ी के तख़्तों पर रखे थे। कुछ तो मिराज की शक्ल के चाँदी का पतरा चढ़े हुए सन्दूक से थे, जिनको राव बहादुर साहिब ने मुग़लई के नाम से पुकारा। कुछ गद्देदार सोफ़े वाली कुर्सियों की तरह थे। एक कमरे में एक पलंग रखा था, जिसके पाय चाँदी के बड़े वज़नदार मालूम होते थे और बाहियाँ भी बड़ी मोटी थीं। ऊपर छत में शीशे के झाड़-फ़ानूस लगे थे, जिनमें मोमबत्तियाँ जलती होंगी। एक कमरे में चाँदी के बर्तनों के अतिरिक्त धातु की सफ़ेद-सफ़ेद पिचकारियाँ अलमारी में रखी थीं। मैंने सोचा कि उनमें तेज़ाब भर कर युद्ध में शत्रु पर फेंकते होंगे। मगर जात हुआ कि यह युद्ध का शस्त्र नहीं बल्कि होली में मित्रों पर रंग फेंकने के यन्त्र हैं। इससे सिद्ध होता है कि अंग्रेज़ी राज्य से पहले हिन्दू राजा, हिन्दू त्योहार बड़ी धम-धाम से मनाया करते होंगे। यह बात अब स्वप्न मात्र हो गई है।

14 अप्रैल को डेरे से कार में रईया नहर की पटरी के रास्ते से होकर वण्डाला, गगड़भाना गुज़र कर दायें हाथ को नहर के कोई दो-तीन कोस परे मौजा घुमान में आये जो हुजूर बाबा जी महाराज की अति पवित्र जन्म-भूमि है। यहाँ हुजूर महाराज जी ने एक सत्संग-घर बनाया है। यहाँ शाम को पाँच बजे सत्संग हुआ।

15 अप्रैल शाम के सत्संग के बाद नाम दिया। वहाँ से 16 अप्रैल सुबह को सात बजे चल कर रास्ते में नहर की पटरी पर बैलगाड़ियों पर छाँग लदवा कर डेरे सुबह ग्यारह बजे वापस पहुँच गये। आते ही मिण्टगुमरी, मुलतान का दौरा मुलतवी कर दिया, तारें दे दी गईं।

16 अप्रैल की शाम को सत्संग में हुजूरी वाणी में से शब्द लिया गया, जिसके दौरान हुजूर ने फ़रमाया कि योगाभ्यास में सहस्र-दल कमल से परे नहीं जा सकते क्योंकि प्राणायाम का अभ्यास यहाँ तक ही ले जा सकता है। प्राण चिदाकाश से परे नहीं जा सकते। जैसे साइकिल पक्की सड़क पर चलती है, जहाँ रेत आई साइकिल नाकारा हो गई। बिना गुरु के ध्यान के रोशनी या पचरंगी फुलवाड़ी को कैसे पार किया जाये जोकि शशमाल चक्र के आगे आती है। क्योंकि रोशनी या उस फुलवाड़ी में तवज्जोह स्थिर रखने से उसे पार नहीं कर सकते, उसे गुरु के ध्यान से ही पार कर सकते हैं।

17 अप्रैल को कबीर साहिब की वाणी में से 'कर नैनों दीदार महल में प्यारा है ^{ho} पढ़ा गया। हुजूर ने व्याख्या करते हुए फ़रमाया कि पिण्ड के छः चक्र अण्ड के छ: चक्रों का प्रतिबिम्ब हैं और अण्ड के छ: चक्र ब्रह्माण्ड के छ: चक्रों का प्रतिबिम्ब हैं। अत: जो आँखों के नीचे के छ: चक्र हैं वे प्रतिबिम्ब के भी प्रतिबिम्ब हैं, जिनमें योगियों ने अपनी सारी आयु बिता दी। गरुड़ पुराण का अन्तिम भाग जिज्ञासुओं के अध्ययन के योग्य है, जिसमें भगवान् गरुड़ ने छ: चक्रों का वर्णन करते हुए सहस्र-दल कँवल का भी वर्णन किया है और हरएक चक्र पर जो-जो अक्षर हैं, उनको भी खोलकर लिखा है। इनके अनुसार आँखों में दो दल कँवल है। यह रूह और मन की बैठक है। यहाँ दो अक्षर 'स' और 'ह' हैं। साँस अन्दर करते समय 'स' और बाहर निकालते हुए 'ह' उपयोग किया जाता है। इसके अलावा गरुड़ जी ने लिखा है कि किताबों, वेदों-शास्त्रों के पढ़ने या तीर्थों में स्नान करने से

आवागमन से छुटकारा न होगा, बल्कि गुरु तथा शब्द से होगा। 20 अप्रैल को हुजूर ओकाड़ा, मिण्टगुमरी और मुलतान की तरफ़ जा रहे हैं और इसलिये डेरे की इस साल की गेहूँ की फ़सल की कटाई जोर-शोर से हो रही है। क्योंकि हुजूर डेरे से चले जाने के पहले-पहले जितनी कटाई हो सके अपने सामने करवाना चाहते हैं, इसलिये आज दोपहर को साढ़े तीन बजे धूप में खेतों में पधारे हैं।

अध्याय 20

मिण्टगुमरी, मुलतान, बनी बग्गी व लदरौर आदि के दौरे का हाल

20 अप्रैल, 1944 को सुबह छ: बजे हुजूर अपनी कार में लाहौर को रवाना हुए। रास्ते में सात बजे अमृतसर सत्संग-घर पहुँच गये। वहाँ पाँच मिनट के लगभग संगत को दर्शन देकर, आठ बजे लाहौर के सत्संग-घर रावी रोड आये। वहाँ बहुत-से स्त्री-पुरुष एकत्रित थे। पहले हुज़ूर ने सत्संग के पण्डाल में कुछ देर दर्शन दिये। फिर अपने चौबारे पर तशरीफ़ ले गए। लाहौर से सरदार बख़तावर सिंह साहिब की कार में साढ़े नौ बजे रवाना हुये। अनारकली में दालचीनी की टिकियाँ ख़रीदीं क्योंकि हुजूर का गला ख़राब हो रहा था। पत्तोकी में सड़क पर ही संगत को दर्शन देकर, ओकाड़ा कृपाराम मिल में आ गये। वहाँ दोपहर के बारह बजे, जबिक कड़ी धूप और गर्मी थी, सत्संग किया। यद्यपि ओकाड़ा में सत्संग को समय नहीं देना था फिर भी उन्होंने लाउड-स्पीकर लगवा कर सब तैयारी कर रखी थी। वहाँ से डेढ़ बजे चल कर कोट हाकिमराय में ढाई-तीन बजे पहुँच गये। वहाँ सबने खाना खाया और सो गये। सरदार बख़तावर सिंह साहिब इस इलाक़े के बड़े जमींदारों में से हैं। यह गाँव इनकी अपनी जायदाद है। उन्होंने अपने रहने के लिये एक बहुत सादा और आरामदेह कोठी बनवा रखी है, जिसके चारों ओर एक बहुत बड़ा आँगन है। इस चारदीवारी के बाहर एक ओर मरदाना आँगन है, जिसमें सत्संग हुआ। इस आँगन के आगे एक बहुत बड़ा बाग़ लगा रखा है। इनकी कोठी के अहाते के आसपास चारों तरफ़ इनके मुज़ारों के रहने के मकान हैं। ये लोग आम चक्कों से ज्यादा आराम में हैं, क्योंकि इनके यहाँ आपस में लड़ाई-झगड़ा, मुकद्दमे, फ़ौजदारी, अपहरण आदि का नाम भी नहीं। सब लोग ख़ुशहाल हैं। लगभग सारे ही सत्संगी हैं। शाम को सत्संग हुआ। उपस्थिति कम थी लेकिन सुबह 21 अप्रैल को बहुत लोगों ने सत्संग सुना, जिनके लिये लाउड-स्पीकर लगाने पड़े।

21 अप्रैल 1944

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'जग में घोर अंधेरा भारी' और 'बिख बोहिथा लादया" शब्द पढ़े गये। ग्यारह बजे के बाद सत्संग समाप्त हुआ। सरदार साहिब ने हमारी आवभगत में कोई कसर नहीं छोड़ी।

21 अप्रैल की शाम को श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से दो शब्द लिये गए। सत्संग शाम के पाँच बजे शुरू किया गया क्योंकि कुछ लोगों ने वापस ओकाड़ा जाना था। कल कोई सत्संग नहीं है। कल नाम दिया जायेगा और शाम के चार बजे मिण्टगुमरी रवाना हो जायेंगे। आज के दो शब्दों में से पहला शब्द तो दुनिया और दुनियादारों की जिन्दगी का नक़्शा खींचता है :

बिख हेठ सभ जंत इकट्ठे। इक तत्ते इक बोलन मिट्ठे।

दुनिया और गृहस्थ की जिन्दगी का उदाहरण वृक्ष की तरह है, जिस पर रात के समय कई प्रकार के पक्षी इकट्ठे हो जाते हैं और सूर्य निकलने से पहले-पहले हरएक अपनी-अपनी राह पर चला जाता है। कोई मीठा बोलता है, कोई कड़वा। जो-जो कर्म करता है, उसका फल भुगतना पड़ता है। भगवान् की अति दया-मेहर हो तो मनुष्य का ध्यान प्रभु की ओर लगता है और उसे सतगुरु मिलते हैं। दूसरा शब्द गुरु अमरदास जी का, जो इससे भी ज्यादा प्रसिद्ध है, पढ़ा गया।

तेरीआं खाणी तेरीआं बाणी। बिन नावैं सभ भरम भुलाणी।

सारी दुनिया चार श्रेणियों में बाँटी जा सकती है- अण्डज: जो अण्डों से पैदा होते हैं। जेरज: वे जो झिल्ली से लिपटे हुए पैदा होते हैं। सेतज: जो मौसम की तबदीलियों से पैदा होते हैं जैसे कीड़े, पतंगे, आदि। चौथे: उद्भिज अर्थात् वृक्ष आदि। इस प्रकार दुनिया के कलाम (शब्द) को चार श्रेणियों में बाँटा है-बैखरी, मध्यमा, पश्यन्ती और परा। एक वह शब्द है, चाहे वह किसी जबान का हो, जो जिह्वा अर्थात् जबान से बोला जाये। दूसरा वह जो कण्ठ में बोला जाये। तीसरा उससे अधिक बारीक़ जिसका हृदय से उच्चारण किया जाये। चौथा बहुत ही बारीक़ जो योगी लोग नाभी से हिलोर की तरह उठाते हैं। गुरु साहिब का मतलब यह था कि नाम हरएक तरह के कलाम तथा सब तरह की ख़लकत से ऊपर है यानी नाम हरएक धार्मिक पुस्तक से परे है। दुनिया की किसी धार्मिक, पवित्र पुस्तक में नाम नहीं है, केवल नाम की महिमा आदि है। नाम तो मनुष्य के अन्दर है और लिखने-पढ़ने से ऊपर है। यह नाम पूर्ण गुरु से मिलता है। इसकी प्राप्ति गुरु-कृपा, गुरु सेवा से हो होती है। सेवा का अर्थ यह नहीं कि उनकी निजी सेवा की जाये बल्कि असली मतलब यह है कि उनके नियमों पर चलते हुए मन और रूह को एकाग्र करके आँखों के पीछे तीसरे तिल पर इकट्ठा किया जाये और तारा-मण्डल, सूर्य-मण्डल और चन्द्र-मण्डल को पार करके तीसरे तिल में जहाँ गुरु खड़े हैं, उनके चरणों में रूह और मन को पहुँचाया जाये।

मिण्टगुमरी में हुजूर मिस्टर नन्द लाल बैरिस्टर की कोठी पर ठहरे जोकि मिण्टगुमरी सत्संग-घर के साथ है। कल शाम 23 अप्रैल रविवार को सत्संग में . बड़ी भीड़ थी। हुज़ूर स्वामी जी की वाणी में से 'नाम निर्णय करूँ भाई' लिया गया। आज सुबह श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से कई शब्द लिये गए। तुलसीदास जी की रामायण में से पतिव्रत धर्म पढ़ा गया, जो अत्रि ऋषि की स्त्री अनुसूईया ने सीता को सुनाया था। कल शाम हुजूर मिण्टगुमरी रेलवे स्टेशन से आगे 'लिंक कैनाल' भी देखने गए , जहाँ से मिण्टगुमरी की बड़ी नहर 'लोअर बारी दोआब' में से एक 'लिंक' निकालकर पाकपटन की नहर में डाली गई है जिससे कि उस नहर के पानी में गार मिल जाये। रावी दिखा की गार, खेतों के लिये बड़ी लाभदायक है। क्योंकि सतलुज, ब्यास के पानी से जमीन बंजर होती जाती थी, इसलिये रावी की गार इस पानी में मिलकर खेतों को लाभ पहुँचा रही है।

25 अप्रैल को दोपहर के एक बजे हुज़ूर कराची मेल में मिण्टगुमरी से मुलतान को रवाना हुए। बहुत गर्मी थी। सेकेंड क्लास में हुजूर के लिये एक सीट मिल गई और बर्फ़ का ढेला रेलवे वालों से गाड़ी में रखवा लिया गया जिससे गर्मी कम महसूस होने लगी। रास्ते में मियाँ चन् व ख़ानेवाल में बहुत-सी संगत दर्शनों को आई हुई थी। शाम के चार बजे हुजूर मुलतान छावनी के स्टेशन पर उतर कर, कार में राधास्वामी सत्संग-घर, नवांशहर आ पहुँचे। थोड़ी देर बाद बहुत तेज आँधी आई जिसमें बहुत गर्द व धूल थी और रात तक चलती रही। लाचार होकर सत्संग से बन्द करना पड़ा। रात को वर्षा हुई जिससे मौसम ठण्डा हो गया। हम लोग सत्संग-घर के बरामदे में सो गये।

26 अप्रैल सुबह को आठ बजे सत्संग आरम्भ हुआ। मौसम सुहावना था। सत्संग में उपस्थिति एक हजार के लगभग होगी जोकि मुलतान जैसे शहर के लिये कम है। आजकल कोई छुट्टी नहीं। आशा है कि शाम के सत्संग में काफ़ी भीड़ हो जायेगी। सत्संग के बाद हुजूर कार में बैठकर मुलतान छावनी के 27 अप्रैल 1944

कम्पनी बाग में घूमने तशरीफ़ ले गये। वहाँ से आकर भोजन करने के बाद आराम करने लगे। पाँच बजे से लोग आने शुरू हो गये। उस समय डाक देखी। डाक में बम्बई से श्री ठण्डीराम ने पत्र लिखा कि कुछ दिन पहले बम्बई में जो विस्फोट यानी धमाका हुआ था और बन्दरगाह के एक भाग में आग लग गई थी, जोकि कई दिनों तक सुलगती रही, उस भाग में बहुत-से सत्संगी काम करते थे। लेकिन धमाके के दिन एक सत्संगी तथा सत्संगिन की शादी आनन्द रीति से होनी थी। सभी छुट्टी लेकर शादी में व्यस्त रहे और हुजूर की दया से सबके सब बच गये। हुजूर यह ख़बर सुनकर बड़े प्रसन्न हुए और मालिक का धन्यवाद करने लगे। शाम को सवा छ: बजे सत्संग हुआ, जिसमें श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'नाम मिलै मन तृपतीए बिन नामै धृग जीवास है और हुजूरी वाणी में से 'नाम निर्णय करूँ भाई" लिया गया। काफ़ी संगत थी। सत्संग की समाप्ति पर हुज़ूर कार में सैर करने चले गए।

27 अप्रैल सुबह हुजूर ने दो सौ स्त्री-पुरुषों को नाम दिया। इस बार नाम लेने वालों की कुल संख्या छ: सौ के क़रीब थी। मुलतान में बहुत-से अफ़सरों को नाम दिया गया। 27 अप्रैल की शाम को कबीर साहिब की बाणी में से 'कर नैनों दीदार महल में प्यारा है * पढ़ा गया। 28 अप्रैल की सुबह हुजूर ग्यारह बजे कराची मेल में सवार होकर ओकाड़ा उतर पड़े। वहाँ से सरदार बख़तावर सिंह की कार में रीनाले खुर्द जाकर, सत्संग-घर के लिये स्थान देखा तथा रेलवे लाइन के पास एक जगह पसन्द की। इसके बाद सेठ सेढूमल के यहाँ गये। वहाँ पास ही एक मैदान में सत्संग का प्रबन्ध किया हुआ था, बहुत-से स्त्री-पुरुष उपस्थित थे। लाउड-स्पीकर लगा हुआ था। वहाँ हुजूर ने शाम के चार बजे तक कड़ी गर्मी में सत्संग किया। वहाँ से निपट कर कार में चले तो रीनाला का रेलवे फाटक बन्द था। दोनों ओर से माल-गाड़ियाँ आ रही थीं। अभी एक माल-गाड़ी गई थी और दूसरी खड़ी थी कि कराची जानेवाली मिलिट्री स्पेशल के लिये सिगनल हो गया। यहाँ हुजूर पूरा एक घण्टा फाटक पर रुके रहे। कड़ी गर्मी, लोगों की भीड़ और सफ़र की थकान थी। अन्त में छ: बजे शाम के वहाँ से चल कर साढ़े आठ बजे लाहौर के सत्संग-घर रावी रोड में पहुँचे। वहाँ हजारों स्त्री-पुरुषों को एकत्रित पाया। बहुत प्यास लगी हुई थी, पहले पानी पिया, फिर संगत को दर्शन देकर नौ बजे वहाँ से चल कर दस बजे अमृतसर आये। रात अधिक हो गई थी।

गस्ते में बहुत-से सत्संगी मिल गये जोिक हुजूर की प्रतीक्षा करके सत्संग-घर से वापस आ रहे थे। उनको चार-पाँच मिनट दर्शन देकर ग्यारह बजे रात को डेरे पहुँचे।

डेरे में निवास का हाल

29 अप्रैल सुबह नौ बजे श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से एक शब्द लिया गया। लेकिन हुजूर का गला ख़राब हो रहा था इसलिये सरदार गुलाब सिंह जी ने इसकी व्याख्या की। फिर सत्संग के बाद सेवा में बैठे। शाम को सरदार गोकुल सिंह ने सत्संग किया।

30 अप्रैल इतवार को नौ बजे सत्संग आरम्भ हुआ। 'सतगुरु का नाम प्कारो " और श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से एक शब्द लिया गया। संगत काफ़ी थी जबिक आजकल फ़सल की कटाई के कारण जमींदार और मेहनती लोग नहीं आ सकते।

4 मई को एक आनन्द कारज करवा कर हुजूर नौ बजे कार में रईया की नहर के किनारे-किनारे बुरजी 112-113 पर गये। वहाँ से वृक्षों की कटी हुई टहनियाँ, जोकि वृक्षों का ख़रीदार छोड़ गया था, लानी थी। सोलह गड्डे गये हुए थे। गर्मी का बहुत ज़ोर था। गर्म हवा चल रही थी। क्योंकि लादने वाले ज्यादा नहीं थे, इसलिये दो गड्डों से अधिक एक बार में नहीं लादे जा सकते थे। लेकिन हुजूर इस गर्मी और धूप की परवाह न करके वहाँ चलते-फिरते रहे। यहाँ तक कि शाम के साढ़े चार बजे सारे गड्डे टहनियों से लाद दिये गए। तब उन सब गड्डों को नहर के पुल पर से गुजार कर वापस आये। हुजूर ने बातों-बातों में फ़रमाया कि जापान की लड़ाई समाप्त हो जायेगी तो ईंधन काफ़ी सस्ता हो जायेगा। दास ने विनती की कि जब समाप्त हो जायेगी तब ही होगा। इस पर हुजूर ने फ़रमाया "अभी तो बहुत शोर-शराबा होना है''। वहाँ से वापस आकर, नहा-धोकर, हुजूर शाम के सात बजे के क़रीब सत्संग में तशरीफ़ ले गये। उसके बाद रात को ग्यारह बजे तक और कारोबार करते रहे। मैं तो थककर दस बजे ही सो गया।

5 मई को शाम के सत्संग में हुजूर स्वामी जी महाराज की पुस्तक में से 'जोड़ो री कोई सुरत नाम से। यह तन धन कुछ काम न आवे। पड़े लड़ाई जाम से" पढ़ा गया। हुजूर स्वामी जी महाराज की वाणी उनके दिल से निकली है और दिल को पकड़ती है। इससे ऊँचा उपदेश, दुनिया की किसी पुस्तक में देखने में नहीं आया।

6 मई को श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'काम क्रोध परहर पर निंदा'' िलया गया। हुजूर बार-बार यही ज़ोर देते हैं कि मन के संकल्प-विकल्प रोक कर अन्दर चलो।

7 मई रिववार को शाम के सत्संग में हुजूरी वाणी में से 'जग में घोर अंधेरा भारी" और श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'बिख बोहिथा लादया दीआ समुंद मंझार" लिया गया। हुजूर ने स्वयं व्याख्या की और फ़रमाया कि आजकल सिक्ख लोग श्री गुरु ग्रन्थ साहिब के प्रमाणों से, मांस खाना ठीक प्रमाणित करने का प्रयत्न करते हैं। यदि श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में मांस खाने की अनुमित देनी होती तो सदना कसाई की कहानी क्यों लिखी जाती और गुरु अर्जुन साहिब यह क्यों फ़रमाते :

कुदम करे पसु पंखीआ दिसै नाहीं काल। ओतै साथ मनुख है फाथा माया जाल।

भाव वह पशु या पक्षी जिस पर तू अत्याचार करता है, तेरी तरह किसी समय इनसान था। अब अपने कर्मों के कारण इस अवस्था को पहुँच गया है। लोग अंधाधुंध अपने-अपने कार्यों में लीन हैं। किसी से पूछें तो वह यही जवाब देता है कि मुझे फ़ुर्सत ही नहीं। इस दुनिया के कार-व्यवहार में इस तरह क़ैद हैं कि वह नहीं सोचते कि मरने के बाद क्या हाल होगा ? कहाँ जायेंगे ? क्या इस जिन्दगी में मौत का कुछ उपाय हो सकता है या नहीं ?

8 मई को बारह बजे दोपहर के बाद हुजूर कार में पहले अमृतसर जिला कचहरी में अपने पेंशन का बिल तसदीक़ कराने, तशरीफ़ ले गये। वहाँ से अमृतसर सत्संग-घर में 2-3 बजे के क़रीब पहुँचे। धूप और गर्मी बहुत थी। शाम को सत्संग किया। दूसरे दिन सुबह 8 बजे सत्संग हुजूरी वाणी में से किया गया। इसके बाद लोगों को नामदान दिया गया। शाम के पाँच बजे के बाद यहाँ से चल कर डेरे वापस आ गये। आते ही बिना आराम किए उसी समय लारी में से, जो सिरसा से आई थी, सामान उतरवाने लगे। इसके बाद बाहर खेतों में अनाज की गुहाई देखने चले गए। वहाँ से लौटते समय रास्ते में कल और आज की डाक

देखने में एक घण्टा लगाया। फिर कहीं घर पहुँचे। इस आयु में इतना कड़ा परिश्रम हमें अचम्भे में डाल रहा है। कल मोटर कार में हुज़ूर ने मुझसे फ़रमाया कि अब तो दिमाग थक गया है। मैंने विनती की कि डेरे में आप को कोई आराम से नहीं बैठने देता। हुज़ूर ने फ़रमाया, हाँ बाहर चलेंगे।

आज सुबह सात बजे हुजूर कार में फिर रईया की नहर के किनारे, लकड़ी लेने गए। शाम के चार बजे तक वहाँ खड़े होकर वृक्ष आदि कटवा कर उन्नीस-बीस गड्डों में लदवाते रहे। शाम को पाँच बजे डेरे वापस पहुँचे। शाम के छ: बजे सत्संग में तशरीफ़ ले गये। सत्संग के बाद डाक सुनी। इसके बाद ईंधन के गड्डों को उतरवाते रहे। यानी हुजूर जैसा काम करने वाला शायद ही कोई व्यक्ति हो। लड़ाई में जो जरनैल होते हैं वे केवल लड़ाई के समय तक ही काम में लगे रहते हैं। लड़ाई के बाद उनको भी फ़ुर्सत हो जाती है। परन्तु हुजूर का यह हाल तीस-चालीस वर्षों से चला आता है। आज एक घायल भैंसा, जोकि गड्डे में जुता हुआ था, देखकर हुजूर ने फ़रमाया देखो, इसको मन ने इस हालत में पहुँचा दिया है।

बन्नी बग्गी तथा लदरौर के दौरे का हाल

14 मई आज सुबह साढ़े सात बजे डेरे से अपनी कार में चल कर, पहले हुज़ूर जालन्थर तशरीफ़ लाये। वहाँ दस मिनट ठहर कर, होशियारपुर दस बजे से पहले पहुँच गये। वहाँ इतनी संख्या में स्त्री-पुरुष एकत्रित थे कि प्रोफ़ेसर लेख राज साहिब की कोठी का आँगन तथा एक-दो कमरे बिलकुल भरे हुए थे। कुछ लोग बाहर सड़क पर भी खड़े थे। वहाँ से सवा दस बजे किराये की कार में ऊना की ओर रवाना हुए। रास्ते में जहानखेला पर, जोकि होशियारपुर से पाँच-छ: मील पर है, बहुत-सी संगत एकत्रित थी, हजारों की संख्या होगी। वहाँ कार से उतर कर सारी संगत को दर्शन देकर हुज़ूर आगे रवाना हुए। लेकिन अभी एक मील ही गये होंगे कि कार का डायनमों बिगड़ गया और सूबेदार ख्वा सिंह को कार से होशियारपुर भेजना पड़ा। एक सज्जन ने, जो वहाँ सौभाग्य से खड़े थे, बड़े आदर से हुज़ूर से अर्ज की कि आप मेरे यहाँ ठहरिये जब तक कि कार वापस न आ जाये। मालूम होता था कि वहाँ उनकी जमींदारी थी, रहने की जगह न थी। इसलिये पशुओं के लिये जो मकान अभी नये तैयार करवाये गए थे उनमें

290

14 मई 1944

हुजूर के लिये चारपाई बिछा दी। कमरा बिलकुल नया और साफ़ था। हुजूर अपना तौलिया बिछाकर लेट गये। वह साहिब पास ही कुर्सी पर बैठकर इधर-उधर की बातें करने लगे। उनकी बातों से पता लगा कि वह मेरे पुराने मेहरबान, होशियारपुर के बैरिस्टर पण्डित पृथ्वी चन्द जी हैं। मैं उनको बिलकुल न पहचानता यदि वह अपना नाम न बताते। मगर उन्होंने मुझे कुछ देर बाद पहचान लिया। पता लगा कि यहाँ उन्होंने आम और जामुन का बाग लगा रखा है।

आज रविवार की छुट्टी के कारण बाग़ का ठेका नीलाम करने आये थे। इस गाँव में पानी की बड़ी समस्या है। एक कुआँ था जिसमें से लोग चरस से पानी निकालते थे। बैलों की बजाय स्त्री-पुरुष दूर तक रस्सी खींचकर ले जाते तब चरस ऊपर आ जाता। दोपहर को पानी गंदला निकलता है क्योंकि कुएँ में पानी की कमी है। दोआबे में पानी की सतह नीचे जा रही है। यहाँ से शिवालिक पर्वत शुरू होता है। उसको कटार धार कहते हैं। उसके दोनों ओर पानी की कमी है। कटार धार का पूर्वी भाग कोह बैत का इलाक़ा कहलाता है। यहाँ पानी की इस क़दर कमी है कि सुना है कि सरकार ट्यूब-वैल लगा कर, इंजन से पानी उठाकर. बाँटा करेगी। इस प्रदेश में गूजर लोग आबाद हैं, जोकि बड़ी-बड़ी मण्डियों में जाकर मज़दूरी करते हैं। पण्डित जी का मिलनसार होना उनकी पुरानी ख़ानदानी शराफ़त जाहिर करता है। उन्होंने चलते समय हुजूर को एक हरा गेंदा पेश किया और बताया कि इसे एक कोरे घड़े में पानी भर कर दो घण्टे तक डाले रखो तो दो महीने तक, जो पानी इस घड़े में से पिया जायेगा, सुगन्ध देगा। यदि इस फूल को कपड़ों के ट्रंक में रखा जाये तो कपड़े ख़ुशबूदार हो जायेंगे।

वहाँ से चल कर रास्ते में कई जगह इस तरह लोग सड़क पर इकट्ठे होते थे कि हुज़्र महाराज जी को उनके लिये उतरना पड़ता था। अन्त में दो बजे के लगभग ऊना के आगे ठहरना पड़ा क्योंकि वहाँ एक शामियाने के नीचे स्टेज के आसपास, हजारों की संख्या में संगत एकत्रित थी जैसे सारा पहाड़ ही वहाँ जमा हो गया था। बड़ी गर्मी, धूप, भीड़-भाड़ और शोर-शराबा था। वहाँ हुज़ूर शामियाने के नीचे कुछ समय दर्शन देकर, फिर जो कच्ची सड़क ऊना से रियासत मण्डी को जाती है, उससे रवाना हुए। यहाँ से मण्डी 44-45 मील होगी। पहले-पहले तो यह सड़क मैदान में से जाती है तथा गर्मी और लू महसूस

होती है। सड़क भी बहुत ऊँची नीची है। परन्तु आगे जाकर एक ऊँचा हरा-भरा पहाड़ नज़र आया। हमें इस पहाड़ की चोटी पर जाना है। ज्यों-ज्यों इस पहाड़ पर चढ़ते हैं शरीर को आराम मिलता है, लू का नाम नहीं। जब चोटी पर पहुँचे तो वहाँ छायादार वृक्षों के नीचे कई हलवाइयों की दुकानें पाईं। यह सड़क बहुत रौनक वाली है। ऊपर से खच्चर, गन्दे बरोजे के कनस्तर और ख़ाली पीपे लाद कर ला रहे हैं। इधर से भी नमक, गुड़, कपड़ा आदि जा रहा है। लोग पैदल भी सफ़र करते नज़र आते हैं। जहाँ कहीं भी छाया है, वहीं ऊँट, खच्चर आराम कर रहे हैं। कई दुकार्ने पास ही हैं। इस जगह को 'शाहतलाई' कहते हैं। यह ऊना से छ: मील की दूरी पर होगी।

इस पहाड़ी की चोटी पर एक तालाब है, जिसमें गन्दा पानी जमा था, जो पीने के लायक नहीं था। तालाब के पास टिकारानी मितकोट का पक्का प्लेटफार्म बना हुआ है, जहाँ कि वृक्षों की छाया है, जिस पर लोग आराम करते हैं। उसके सामने एक बड़ी साफ़-सुथरी और सुन्दर पक्की सराय है, जिसके बीच में पक्का आँगन और आँगन के पीछे बरामदा है। यह सराय कँची है, जहाँ सीढ़ियों पर चढ़कर जाना पड़ता है। यह स्थान मैदान की लू तथा गर्मी से जले हुए (थके हारे) लोगों को अति सुन्दर मालूम होता है। लेकिन वहाँ पीने का पानी जो हलवाइयों ने दिया, कुछ गंदला था जिसे रूमाल से छानकर पीना पड़ा। सराय में कुछ संगत एकत्रित थी। हुजूर अन्दर तशरीफ़ ले गए। मैं और शादी हलवाइयों की दुकानों को ललचाई हुई नज़रों से देखते रहे क्योंकि सुबह केवल दूध पीकर डेरे से चले थे। मेरा विचार था कि पेड़े या बर्फ़ी ख़रीद कर खायें। लेकिन शादी ने आवाज दी कि हुजूर आ रहे हैं। अतः 'कहरे दरवेश बर जाने दरवेश' यानी फ़क़ीर का गुस्सा अपने सिर। झटपट पेड़ों का विचार छोड़कर कार के पास आ गये। यहाँ से उसी पहाड़ के पिछली ओर उतर गये। बिलकुल घाटी में आ गये जोकि चारों ओर से पहाड़ों से घिरी हुई मालूम होती थी। लेकिन सामने का पहाड़ पिछले पहाड़ से कम ऊँचा था। इस सुन्दर घाटी में पानी बहुत है। पानी तीन स्थानों से पार करना पड़ता है। उस घाटी और उसके आगे पहाड़ों को पार करके दूसरी घाटी में आ गये, जिसके सामने एक और ऊँचा पहाड़ नज़र आया। उस पहाड़ी में टीन की छत वाले पहाड़ी ढंग के मकान नज़र आते हैं।

292

स्थान-स्थान पर छोटे-छोटे खजूर के वृक्ष लगे हैं, जिनमें छोटी-छोटी खजूरें भी लगी हैं। पास ही बाँसों के वृक्ष और डण्डा थोहर खड़ी हैं। उसके अतिरिक्त आम के वृक्षों के झुण्ड दिखाई देते हैं। हवा में सुहावनी ठण्डक है। उस पहाड़ को पार करके हमारी मंजिले मक़सूद बन्नी बग्गी आ गई। अब आगे कोई पहाड़ दिखाई नहीं देता। खेतों की सीढ़ियाँ दिखाई दे रही हैं। सारा इलाक़ा हरा-भरा है, हवा ठण्डी, पानी मीठा और स्वादिष्ट है।

हम यहाँ सूबेदार साहिब रक्खा सिंह के मकान पर उतर पड़े जोकि सड़क से क़रीब एक मील की दूरी पर होगा। सत्संग का प्रबन्ध रास्ते में वृक्षों के ज्ञंड की छाया में किया गया। इसके आगे सूबेदार साहिब का रहने का मकान है. जिसका सहन घोड़े के खुर की शक्ल का है। सहन में काली सलेटों का फ़र्श लगा हुआ है। फ़र्श से परे कमरे हैं। कमरों में फर्श पर दरियाँ बिछी हुई हैं और कुर्सियाँ मेज लगे हुये हैं। छतें नीची हैं लेकिन गर्मी मालूम नहीं होती। सारे कमरे दो मंजिले हैं। हम निचली मंजिल में ठहरे हुए हैं। हुजूर के लिये मुलाक़ात का एक बड़ा कमरा, उसके आगे सोने का कमरा और स्नानगृह है। यहाँ पहुँचकर बड़ा आराम मिलता है। डेरे में लू और गर्मी का नाम तक नहीं, पानी ठण्डा है। रात को चाहे अन्दर सोयें या बाहर। इस मकान के पीछे बड़ा खुला मैदान है जिसमें सीढ़ीदार खेत और पानी के चश्में हैं। जिस जगह रात को हुजूर का पलंग लगाया गया वहाँ अखरोट, अमरूद और अंजीर के वृक्ष लगे हैं। उससे निचले खेत में बाँसों के झुण्ड खड़े हैं। सैर के लिये बड़ी अच्छी जगह है। सुबह नौ बजे धूप बड़ी मीठी लगती है जबिक मैदान में आठ बजे भी निकलने को जी नहीं चाहता। हुजूर का विचार है कि कालू की बड़ वाली जमीन इससे कम ऊँची नहीं। ये दोनों स्वास्थ्य के लिये बड़ी अच्छी मालूम होती हैं। न गर्मी है, न सर्दी और न मच्छर हैं। हाँ, कमरों में मिक्खियाँ ज़रूर हैं। लेकिन कमरों में दोपहर को बड़ी शान्ति रहती है। दिल को शान्ति आ जाती है। मैं रात को बाहर मैदान में सोया। केवल एक गर्म चादर और एक रूईदार पतली तुलाई ओढ़ ली।

15 मई सुबह आठ बजे सत्संग हुआ। संगत मेरी आशा से कम थी। हुजूरी वाणी में से 'नाम निर्णय करूँ भाई '5 और श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'नामै ही ते सभ किछ होआ '6 पढ़े गए। पूरे दो घण्टे सत्संग होता रहा। साढ़े दस बजे हम सत्संग से अपने-अपने कमरों में वापस आ गये। हाँ इतना लिखना भूल गया कि

इस अन्तिम पहाड़ की चोटी पर बड़ेसर का थाना है और डाकख़ाना भी है। बहुत-सी दुकानें हैं। अच्छी रौनक की जगह है। वहाँ से यह स्थान तीन मील की दूरी पर है। पहाड़ी लोग अधिकतर फ़ौज में नौकरी करते हैं। उनमें से बहुत-से बड़ी-बड़ी पदिवयों पर लगे हुए हैं। उनको सरकार ने फौजी सेवा के बदले बार के इलाक़े में जमीन दे रखी है। इसिलये इन लोगों का रहन-सहन तथा जीवन अच्छा हो गया है। इनका रहन-सहन भी शहरों जैसा हो गया है, यद्यिप इनके विचारों में सादापन और सच्चाई है।

किसी ने आकर हुजूर से सवाल किया कि आप पाँच विशेष नामों का सिमरन क्यों बताते हैं? क्यों नहीं राम-राम, वाहेगुरु-वाहेगुरु और दूसरे प्रचलित शब्दों का सिमरन बताते जैसा कि दूसरे धर्मों में जारी है, जैसे कि अल्लाह, रहीम और गॉड आदि। हुजूर ने जवाब दिया कि पूर्ण धनी परमात्मा के सब नाम, जो संसार में लिए जाते हैं, सब सिफ़ाती नाम हैं। जैसे सर्व-शिक्तमान, सर्वव्यापक, रहीम, करीम, दयाल, निर्गुण, सगुण। ये सब मालिक के निजी नाम नहीं हैं। सन्त जो अन्तर में देखकर नाम बताते हैं वे जाती नाम हैं। जब किसी को उसके अपने नाम से बुलाते हैं तो वह जल्दी हमारी ओर आकर्षित होता है। इसके अतिरिक्त यदि किसी गुण के नाम से पुकारो तो प्राय: हम उसे अपनी ओर आकर्षित नहीं कर सकते। इसलिये जब हम जाती नामों का सिमरन प्रेम-प्यार से करते हैं तो जिसके वे नाम हैं वह हमारी ओर आकर्षित होता है और हमारे ध्यान को अन्तर में अपनी ओर खींचता है।

16 मई की सुबह पघरेड़ी गाँव में, जो यहाँ से डेढ़ मील के लगभग है, सत्संग किया गया। वहाँ से साढ़े दस बजे के बाद वापस आये। रास्ते में जब कार को छोड़कर घर आ रहे थे तो हुजूर ने बातों के दौरान फ़रमाया कि चीने के कोठे में आदमी डूब जाता है। इस तरफ़ आम अक्सर होते हैं। पहाड़ी लोगों ने बताया कि आम का वृक्ष खेत में फ़सल को कम हानि पहुँचाता है जबिक बेरी और कीकर जमीन की तरावट को खींच लेते हैं और फ़सल को बढ़ने महीं देते।

शाम को सत्संग सूबेदार साहिब के यहाँ हुआ। यह अन्तिम सत्संग था। इसमें हुजूर ने पहाड़ी लोगों की रहनी के अनुसार चार बातों की चर्चा की। पहले पतिव्रत धर्म, दूसरे मूर्ति-पूजा, तीसरे जादू-टोना, चौथा देवी-देवता और भूत-प्रेत की पूजा। तुलसीदास जी की रामायण में से पतिव्रत धर्म का उपदेश सुनाया गया जो और की वानी अनुसूर्वया ने सीता जी को दिया था। प्रतिजत धर्म करके स्वी अस्त्रानी से प्रस्थाति की प्राप्त कर सकती है।

और वर्ष विष अर गरी। आपत काल परिवर्ष पारी।"

यानी जब पति निर्मन, रोजी, अंधा, लूला और बहरा हो जाये उस समझ पति की सेवा करना पत्नी का पत्म धर्म है। चार प्रकार की पतिजल स्विच्छें होती हैं। उत्तम, मध्यम, लचु और गींच। सबसे उत्तम रूपी वह है जिसकी अपने पति के आंतिरिका संसार में कोई पुरुष नहीं धाता। दूसरी मध्यम जीकि प्रस्ते पुरुषों की बाप, बेटा, या धाई स्वयानती है। तीसरी वह जो पंत की बार से बरनायी से डर कर पतिज्ञत धर्म पर चलती है। चीधी वह जो पति की सार से इर कर या अवसर न जिलने पर, पराचे पुरुष की शोहचते नहीं कर सकती।

शृति-पूजा के किस्ट हुनूर ने बहुत ही जीर दिया। कवीर शाहिक की बाबी में से मूर्ति-पूज का अंग पढ़कर सुनाया और करा कि "वार्ड आख तहीं बाबा"। यदि हमारा इच्ट पाश्चा है तो भर कर हमारा इनी में बाब होता। एक व्यक्ति ने विशेष किया कि हम दिनार को सर्वव्याची चान कर प्रक ब्रॉलियों में ईक्या को समझ कर, उनकी पूजा करते हैं। जनाब मिल्ल कि तब ईक्का बानुष्य के अन्दर है जैसा कि मेद, पूराण और दूसरी धार्मिक पुस्तके कह सही हैं, सो आपने आन्द्र ईश्वर की खोजने का प्रपान न करके, बाहर जह बस्तुओं में ईक्का की कल्पन करके पूजना कड़ी धारी भूल है। जो लोग ईक्का को सर्वन्यापक कहते हैं डक्ति केवल पीकियों में पड़कर यह बात मान ली है। बादि से आपने आन्द्रर ईश्वर के दर्शन करते तब उनको तिनके-तिनके, बने-पने में ईश्वर व्यापक दिखाई देता। लेकिन जब तक अपने अन्दर ईश्वर की अनुभव नहीं किया तब तब हमारा ईश्वर को सर्वव्यापक कहन केवल जवानी वना-खर्च है। कोई एक व्यक्ति तो कह दे कि मुझे ईस्वर, पत्थर-पूजा से मिल है। धन्त भक्त की जो कहानी है कि ईश्वर प्रन्थर-पृजा से प्राप्त हुआ, यह सही नहीं है। इससे लोग तलत धारणा बना लेते हैं। यह धना में विलोचन को समझाने के लिये सारा खेल रचा था। जो दवाई एक को लाभ पहुँचार्ती है वह बाड़ी लोगों पर क्यों नहीं प्रधान हालती।

पहाड़ में बाहू-डोने का बहुत रिवाज है। हुजूर ने फ़रखाया कि ताम जमने बाते के पाम तो वसहूत भी नहीं आते। उनके निकट भूत-प्रेत और जादू-डोनी कैसे आयेगा। इस भ्रम को दिल से दूर कर दो। भूत-प्रेत, जो उनको भाने उसी को कप्ट पहुँचाते हैं। जो होसला रख कर उनके निरुद्ध खड़ा ही जाये, उससे दूर भागते हैं। पहाड़ में देवी-देवताओं का भी जोर हैं। हुन्दर ने करमाया कि मनुष्य इस सुष्टि में सबसे ऊँचा है। इससे ऊँचा केवल परमान्या है। शेय सब देवी-देवता इससे नीचे हैं और मनुष्य को सेवा करने के लिये नियुक्त किये गये हैं। जागते समय मनुष्य को रूड को बैठक दोनों आँखों के पीछे हैं। यदि अंधे को आवास दो तो वह भी दोनों आँखों के पीछे जोर देकर जवाब देता है। 'कौन है भाई'? देवी की बैठक कण्ड में, शिल-पार्वती की इत्य में, विष्णु की नांध में, ब्रह्मा की लिंग में और गणेश को बैठक पूछा में है पानी मनुष्य इन सबसे ऊँचा है और ये सब मनुष्य को पूजा करते हैं। विष्णु शरीर को पालता है। चाहे उसको कोई पूजे या व पूजे, उसका कर्तव्य है पालत-पोपण करना और वह भी मनुष्य के प्रारब्ध कमानुसार। परन्तु आत्मा

17 पर्द को 4 वजे बन्नी बग्नी से कार में लदरीर, तहसील हमीरपुर के लिये चल दिये। अब रास्ते में पहले जैसे ऊँचे पहाड़ नहीं आ रहे हैं। बल्कि हमारे सामने पिट्टी और पाध्यर की एक छोटी पहाडी है। उसमें से हमें मुक्तना है। उसमें चील के क्या बहुत हैं, जिनमें एक-दो स्थान पर से छाल उतार कर, बर्तन तीचे बेंधे हुए हैं जिनमें गब्दा बरोजा जमा हो रहा है, जीकि यहाँ से दीन के पीपाँ में खच्छतों और ऊँटों पर नीचे ले जाया जा रहा है। यहाँ इण्डा थोबर अधिक माता में हैं। बाँस के वृक्ष आम के वृक्षों के पास ही हैं। इस पहाड़ी के दूसरी ओर गाँव भोटा है जहाँ से स्वानपुर टीहरा बाईस मोल और मणडी रियासन की राजधानी भी बाइस मील है। एक सड़क हमीरपुर की जाती है और एक जिलासपुर रियासत को यानी यह स्थान कई सस्तों का केन्द्र है। इसलिये यहाँ के एक सत्यांगी ने विनती की कि यहाँ एक बड़ा सत्यांग-पर बनाया जाये क्योंकि पर्दो पण्डी, हमीरपुर, विलासपुर आदि के सल्संगी पैदल आकर सल्संग सुन सकते हैं। हुन्त ने स्थान देखकर सुझाव को मान लिया। फिर लदरीर साथ के सादे पाँच बजे के लगभग पहुँच गये, जहाँ आतमितत स्वी-पुरुष हु तुर के दर्शनी के लिये ऊँचे टीले पर उपस्थित थे। यहाँ दर्शन देकर हासर अपने उत्तरमें के स्थान पर वरारीफ़ लाये। डाक भी आ पहुँची और सुनते लगे लेकिन वर्षा जोर से आ गई, जिसके होर में डाक मुनना बन्द काना पड़ा। सर्दी हो गई। एत को हक सब अपने कमारों में सीचे। डाक में एक व्यक्ति ने पूछा कि सतगुरु के चेहरे का ध्यान करना चाहिये या चरणों का ? जवाब दिया गया कि चेहरे का।

18 मई को मुक्त आहं बने सत्संग गुरू हुआ। 'नग में भीर अंधेर भागे" और 'बिख बोहिया लादयां" पढ़े गए। यहाँ बन्नी बग्नी से अधिक संगत है। दूर-दूर में लोग सत्संग सुनने आये। लादगीर में सत्संग 18-19 मई दोनों समय होता रहा यानी सुनह को आह बने और शाम को भीन बने अगल्या क्रिया नाता था। कल 18 मई की शाम को 'नाम निर्मय करें 'क और आज 19 मई को मुन्नह मार हागे में से 'काम क्रोध परहर पर निर्मा 'लिख गया। हसके बाद तुलकी राज्यपन में से पतिकत धर्म के निष्मय में अनुसूर्य का संबाद लिखा गया। यहाँ अच्छी सुहावभी हस्ट है। यह को नगमदे में मोते हैं। प्रातः गर्म पानी से नहाना अच्छा लगता है।

19 मई साम को कबीर खादिव की सन्दागाणी में 'कर गैनी टीटर माल के प्यारा है'" लिया गया। "लुफल सोती ध्यान लगाओ, लिरवेनी के सन्ध समाओं 'का अर्थ है कि तीयरे तिल से आगे तीन रास्ते (शिवेगी) इ.इ., फिलल और सुख्यमत हैं। इ.इ. पिंगल के बीच मुख्यमत है जिसमें से टीकर रूड को आहे मान है। मारबद्दा में 'मीन मार्न' अर्थान् रूड की मास्त्री चाल आरम्भ होती है। सतलोक में मिहंगम मानी पक्षी की चाल आरम्भ होती है।

20 सई को सुबह 2 बने एक राजपूत की शारी आन-द रीति से की गई। इसके बाद में बने नाम देना आरम्भ किया। आज महाराज जो ने सुबह 6.20 बने से लेकर शाम के 7-8 बने तक राजपातार कार्य किया। प्रात; को आनद बारज करवाया, फिर टकके बाद छ; सी म्ही-पुरनों को नामरान दिया। वहीं से तीन बने अवकाश पाकर भोजन किया। फिर शाम के चींच बाजे बाकी म्हानिवासी को नामरान देते रहे वानी इतना कड़ा परिश्रम मैंने किसी को करते नहीं देखा और फिर इस आयु में!

21 मई को सुबर 7 कने कार में लहरीर से घल कर, 9 कने के लगभग भोटा में मूर्ति। महाँ जो स्थान करड्राम सल्संग-धर के लिये देन चाहता है, वह पुण-फिर कर देखा। हुन्हर ने सकसे ऊँची जगह में से छ:-सात कनाल लेवी प्रसन्द की। यह जगह कैमी है। इसके प्राप्त आप के शायादार वृक्ष है। जगह बिलकुल समतल है। उसमें कोडी बनवाने को सलाइ है। इससे नीचे पथरीशी जमीन में सत्संग का लंगर आदि बनेगा जिसके दोनों तरफ पानी को खड़द है। यह जगह उपडी है। लेकिन बरसात में होतियारपुर की तरफ से इस और आना बिलकुल असम्भव होगा, क्योंकि सस्ते में बड़े-बड़े वाले आते हैं, जो आजकरन तो मुखे हुए हैं परन्तु वर्षा में गुजरने के बोध्व नहीं रहेंगे। भीता में एक बाबा साथु हुन्दर से बहस करने लगा। जब हुन्दर ने पूछा कि बाबाजी, कभी अन्दर गये हो और कहाँ तक रसाई है तो वह हैगन हो गया। अन्दर कर्तों ? यह अवस्था आवकल भेख की है उनको न तो किसी साधन का पता है और न अन्दर के भेद का। केयल रोटी कपदा प्रीयकर लेनेवालों की साधू कतने लग गये हैं। वहाँ से चल कर बड़ी भूप और गर्यों में छना पहुँचे। वहाँ हुन्। का सल्संग सुनने के लिये बीस-पच्चीस हजार लोग उपस्थित थे। लाउड-स्पीकर लगे हुए थे। हुनूर ने वहाँ दो बजे तक सल्बंग किया। जग में धोर अंधेरा भारी क और श्री गुरु ग्रन्थ साहित में से 'विस्ता बोडिया सादया क पढ़े गए। मार्थण के बाद वहाँ इतनी भीड़ थी कि हुनूर के लिये. मोटर कार तक पहुँचना बड़ा कठिन हो गया। वहाँ से चल कर तीन सने होशियारपुर, प्रोक्तिसर पुरी जी के मकान पर पर्दुचे। उनके बीबी-बच्चे प्रेम को मूर्तियाँ हैं। सबने हमारा बड़ा आदर-सम्मान किया। हम सर्ती से भूप और गमी में आपे से इस्रातिये बहुन प्यास लग रही थी। पेट भर कर बसे का शबंग और लेमनेड पिया, खरवृत्रे और विडाई खाई। वहाँ से चल कर पिपलीवाला, शाम चौरासी, माणको में पाँच-पाँच फिनड हकते हुए, जालन्थर शहर शाम के ३ क्रजे के लगभग आ गये। वहाँ से बस्ती शेख में गये। यहाँ पीरवाद की कव्वाली पारी ने हमें सूको रंगत की कव्यालियाँ सुनाई :

> कड़ पृथिद दा पल्ला के तू रब पावना। छड़ तसबोद फुक मुसल्ला के तू रब पावना। सातृ बृत खाने बिच हुन्ह दिस्से, तेन् काबे दे बिच नूर दिसे। सान् नेदे तेन् दूर दिस्से, तेरी नीयन बिच बदनीती है। आदि आदि...

उस रात हुजूर ने जालन्धर में सरदार सावित्र की कोती पर निवास किया। सुनंद सात बजे चल कर हेरे ५ बजे से पहले पहुँच गर्ग।

अध्याय 21

डेरे और डलहौजी में निवास का हाल

22 मई, 1944 शाम को सत्संग हुआ। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से महला पाँच का शब्द 'दिन रात कमाइअड़ो सो आयो माथै। जिस पास लुकायंदड़ो से वेखी साथै" यानी जो-जो कर्म हम करते हैं वे हमारे माथे पर लिखे जाते हैं। जिस सर्वव्यापी प्रभु से छिपकर कर्म करते हैं वह हमारे अन्दर बैठा देख रहा है। इसी प्रकार शम्स तबरेज़ ने कहा है 'मी नवीसन्द आँकि शुमा में बाज़ीद, ताकि आँरा बाज़ बख़ानीद शुमा' अर्थात् जो-जो कर्म तुम करते हो, सब लिखे जाते हैं। बाइबिल के पुराने अहदनामे में हज़रत लूत का दृष्टान्त आया है कि पुराने जमाने में ननोह और बाबुल शहर बड़े भोग-विलासी शहर थे। परमात्मा ने हजरत लूत के पास फ़रिश्ते भेजकर पूछा कि यदि इस शहर में पचास व्यक्ति भी ठीक हों तो इसको छोड़ दिया जाये वरना इसको आग और पत्थरों की वर्षा से तबाह कर दिया जाये। हजरत लूत ने परमात्मा से बार-बार विनती करके उनको इस पर सहमत कर लिया कि यदि दस बन्दे भी इस शहर में नेक हों तो हज़रत लूत का लिहाज़ करके ये शहर नष्ट होने से बचा लिया जाये। ऐसे ही आजकल भी एक भक्त की ख़ातिर बहुत-से लोगों के सिरों पर आनेवाली बला वह भक्तों से प्यार करनेवाला परमात्मा टाल देता है। एक साधु ने बताया कि वह फगवाड़ा से एक ऐसी लारी में सवार हुआ जिसकी छत पर लगभग बीस मन दूध लदा हुआ था और सवारियाँ खचाखच भरी हुई थीं। गस्ते में बोझ अधिक होने के कारण एक टायर फट कर निकल गया और गाड़ी उसी तरफ़ को होकर गिर जाती परन्तु उसका धुरा टेढ़ा हो गया और गाड़ी का एक सिरा ज़मीन से लगता-लगता रह गया। सारा दूध ऊपर से बह गया। सबने कहा कि परमात्मा ने अपना हाथ देकर इस लॉरी को बचा लिया है। कोई नेक व्यक्ति इसमें सवार है। इसी तरह इस साधु ने कहा कि एक सत्संगी पण्डित की पन्द्रह वर्ष की लड़की उसके सामने गुज़र गई। उसने हुज़ूर से नाम नहीं लिया था। परन्तु , क्योंकि सत्संगी माता-पिता के घर उसका पालन-पोषण हुआ था और सत्संग में आती रहती थी, इसलिये मरने से कई घण्टे पहले बोली कि महाराज जी उसको लेने के लिये आ गये हैं। फिर जब उसे प्रसाद दिया गया तो खिलखिला कर हँसी और प्रसन्नता से प्राण त्याग दिये।

27-28 मई को मासिक सत्संग हुआ। उपस्थित अच्छी थी, पर लोग गेहूँ की फ़सल की कटाई आदि में लगे हुए थे, लू का जोर और गाड़ियों में भीड़ थी, इसलिये पहले जितनी उपस्थित नहीं थी। एक कारण यह भी था कि हुजूर अभी-अभी पहाड़ का दौरा करके लौटे है इसलिये पहाड़ से कम लोग आये है। सत्संग में आसाढ़, सावन और आसोज के महीने 'सार बचन' छन्द-बन्द में से पढ़े गए। गुरु अर्जुन देव जी का वह शब्द पढ़ा गया जिसमें उन्होंने इस दुनिया के लोगों को पुकार-पुकार कर कहा है कि आओ, हमें परमेश्वर ने तुम्हें बुलाने के लिये भेजा है:

जिन तुम भेजे तिनहि बुलाए सुख सहज सेती घर आओ । छोडो वेस भेख चतुराई दुबिधा एह फल नाहीं जीओ ।

सन्त दुनिया को पुकार-पुकार कर बुलाते हैं कि तुम हमारे कहने पर चलो। हम तुम्हें परमात्मा के दरबार में ले चलेंगे। उसके बीच में हुजूर ने फ़रमाया कि दुनिया के लोग जब उनका कोई प्यारा मर जाता है 'कागा रौली' भचा कर चुप हो जाते हैं। 'कागा रौली' का पंजाबी शब्द दुनियादारों की वास्तविक अवस्था का चित्र खींचता है। जब किसी कौवे को बिल्ली पकड़कर ले जाती है तो वह काएँ-काएँ करके अनिगनत कौवे इकट्ठे कर लेता है, जो मँडरा-मँडरा कर काएँ-काएँ करके आसमान सिर पर उठा लेते हैं। लेकिन न तो बिल्ली को रोक सकते हैं, न कौवे को बचा सकते हैं। इसी प्रकार हम दुनिया के अंधे लोग जब किसी प्यारे की मृत्यु देखते हैं तो हाय-हाय करके, चीखना-चिल्लाना आरम्भ कर देते हैं। यह पता नहीं कि उसको कौन ले गया, किधर ले गया। उसका क्या हाल हुआ। दो-चार घण्टे रोकर सन्तोष करके बैठ जाते हैं, जैसे कौवे करते हैं। फिर मरने वाले को भूल जाते हैं। किसी ने सच कहा है :

मुर्गा दर कफ़स बीं, माहियां दर मकीं बीं। भाव पक्षियों को पिंजरे में देखो और मछलियों को जाल में। 30 मई को हुजूर ने फ़रमाया कि जिस किसी ने हमसे बात करनी हो वह बारह बजे दोपहर तक कर ले। उसके बाद शाम के छ: बजे तक कोई हमें आकर तंग न करे। हम छ: बजे सीधे सत्संग में आ जाया करेंगे। बीबी को भी ख़ूब झ़ड़का परन्तु अन्त में शान्त होकर कहा कि सन्तों का झिड़कना ऐसा ही है जैसे गर्म पानी से मैल का धोना। कल शाम 'सार बचन' कविता से यह आरती पढ़ी गई:

करूँ आरती राधास्वामी, तन मन सुरत लगाय। थाल बना सत शब्द का, अलख जोत फहराय। यह आरती हुज़ूर स्वामी जी महाराज ने हुज़ूर चाचा प्रताप सिंह जी के

लिये कही थी। 4 जून रविवार को हुजूर जालन्धर शहर सत्संग के लिये गए क्योंकि लाला उमराव बहादुर ने अपने स्वर्गीय पिता राय बहादुर लाला रंजीत गोपाल की याद में यह सत्संग अपने घर मोहल्ला विक्रमपुरा में करवाना था। हुजूर यहाँ से 7 बजे चल कर पहले सरदार साहिब की कोठी पर तशरीफ़ ले गये। वहाँ से 9 बजे विक्रमपुरा के चौक में, जहाँ कि लाउड-स्पीकर लग रहे थे और हजारों स्त्री-पुरुष एकत्रित थे, सत्संग करने गए। वहाँ 'जग में घोर अंधेरा भारी 5 और श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से मारू राग में से 'बिख बोहिथा लादया[%] पढ़े गए। 11 बजे सत्संग समाप्त हुआ तो हुजूर एक घण्टे तक लाला साहिब के मकान पर बिराजमान रहे। उनके बीवी-बच्चे सब प्रेमी हैं। उन्होंने हुजूर को स्वागत के तौर पर प्रेम के शब्द पढ़कर सुनाये। वहाँ से हुज़ूर सरदार साहिब की कोठी पर वापस आ गये और लोगों से बातें करते रहे। फिर भोजन किया, आराम किया और डी. सी. साहिब बहादुर पीर अहसानुद्दीन साहिब को मिलने तशरीफ़ ले गये। पीर साहिब हुजूर से विशेष प्रेम रखते हैं। वहाँ से छुट्टी मिली तो आँधी का जोर था। फिर सरदार साहिब की कोठी पर एक सब जज साहिब से बार्ते करते रहे और 8 बजे डेरे वापस पहुँच गये। आकर डाक सुनी।

5 जून की शाम को सत्संग में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'हर की पूजा दुलंभ है संतो कहणा कछू न जाई" पढ़ा गया। गुरु साहिब का मतलब है कि

प्रमात्मा को पूजने वाले बहुत कम हैं। स्त्री, धन, जाति, देश, संसार, स्वार्थ और मूर्तियों के पुजारी आदि बहुत हैं परन्तु ईश्वर का पुजारी होना आसान नहीं। जब तक पहुँचे हुए गुरु न मिलें और वे सुरत-शब्द योग का रास्ता न बतायें, प्रभु भक्त बनना सम्भव नहीं और प्रभु भक्त बने बिना आवागमन के चक्कर से बचना मुश्किल है। तीर्थ, व्रत, पूजा, योग, ज्ञान, तप, जप से जीव की चौरासी नहीं कटती। इसके बाद हुजूरी पोथी में से 'गुरू की मौज रहो तम धार। गुरू की रज़ा सम्हालो यार हिलया गया। हुज़ूर महाराज जी ने फ़रमाया कि राबिया बसरी से किसी ने पूछा कि ईश्वर की रजा पर राजी कैसे रहना चाहिये? एक फ़क़ीर ने कहा कि दु:ख को सुख करके भोगना चाहिये। लेकिन राबिया बसरी ने कहा कि इसमें से अहंकार की बू आती है। फ़क़ीर को ऐसा चाहिये कि सुख-दु:ख में भेद न रखे।

एक सत्संगी ने विनती की कि उसका एक सत्संगी जानकार था, जिसकी स्त्री ग़ैर-सत्संगिन थी। उसको घर में दो चुड़ैलें दिखाईं दिया करती थीं और उसको डरा कर कहा करतीं थी कि यह हमारा मकान है, इसको ख़ाली कर दो नहीं तो तुम सबको मार डालेंगी। इस पर उसके पति ने पाँच नाम का सिमरन किया। उसका यह लाभ हुआ कि वे चुड़ैलें घर के दरवाजे के अन्दर नहीं आती थीं। जब उसकी बीवी और लड़की को नाम मिल गया और उन्होंने भी नाम जपना आरम्भ कर दिया तो उसके बाद वे लुप्त हो गईं। हुजूर ने फ़रमाया कि नाम के निकट कोई भूत-प्रेत नहीं आ सकता।

आजकल डेरे के माल-मवेशी (ढोर-डंगर) चारदीवारी में रखे जाते हैं। लेकिन अब हुजूर ने बड़े सत्संग हाल के आगे एक बड़ी-सी जगह कच्ची चारदीवारी से घेर ली है, जिससे कि सब माल-मवेशी और खेती-बाड़ी का सामान डेरे से बाहर उसके अन्दर रहे और डेरे की यह जगह आबादी के

6 जून की शाम को हुजूरी वाणी में से 'काल ने जगत अजब भरमाया। मैं क्या क्या करूँ बखान ⁹ लिया गया। सन्तमत के अतिरिक्त संसार के सभी धर्म इस भेद से वंचित हैं। उनको पता नहीं कि जिस परमात्मा की वे पूजा करते हैं वह होंमें, मन यानी काल है। दयाल इससे परे है। काल रूहों को बना या बिगाड़

303

8 जून 1944

नहीं सकता। सत्पुरुष ने रूहों की कुछ संख्या उसको सौंप रखी है, जिनको वह शरीर के पिंजरों में क़ैद करके, इस सृष्टि का काम चला रहा है। जिसको 14 तबक या त्रिलोकी कहते हैं, यह सब काल के घेरे में है। काल उन हमारी जैसी रूहों को, जोकि दयाल ने उसके सुपुर्द कर रखी हैं, मार नहीं सकता लेकिन अपनी रचना की रौनक़ के लिये उनको तरह-तरह के शरीरों में बदलता रहता है। कभी वृक्ष, कभी पक्षी, कभी साँप, कभी बिच्छू, कभी पशु, कभी मनुष्य, कभी फ़रिश्ते, कभी देवी-देवता आदि शरीरों में उनको क़ैद रखता है। उनको पता ही चलने नहीं देता कि उसके सिवाय कोई और परमात्मा भी है, यदि उसके अधीन रूहों को यह भेद मालूम हो जाये तो वे दयाल के पास पहुँचने की खोज करेंगी और उसका देश उजाड़ हो जायेगा। इसलिये उसने अलग-अलग धर्म बना कर एक-दूसरे से लड़ा दिये हैं। हरएक व्यक्ति जिस धर्म में उत्पन्न हुआ, उसी को सच्चा मानता है और छानबीन नहीं करता। बल्कि दूसरे धर्म वालों को झूठा कहकर उनसे लड़ाई-झगड़ा करता है। दयाल का मत तो सुलतान-उल-अज्ञकार यानी सुरत-शब्द अभ्यास का है। प्रत्येक व्यक्ति अपने अन्तर में अभ्यास करके आवागमन के चक्कर से पार हो सकता है। लेकिन लोग अपने-अपने धर्म के साथ इस तरह जुड़े हुए हैं कि इस बात को मानने के लिये भी तैयार नहीं हैं। हुजूर ने तुलसीदास जी का एक श्लोक सुनाया और फ़रमाया कि जिस मनुष्य में दीनता और सच्चाई है तथा जो पराई स्त्री को माँ-बहन समझता है, वह अवश्य परमात्मा को पायेगा। मैं इसका साक्षी हूँ।

डलहौज़ी में निवास का हाल

7 जून को सुबह 7.30 बजे चल कर अमृतसर के रास्ते डलहौज़ी के लिये रवाना हुए। रास्ते में अमृतसर की संगत को दस मिनट दर्शन देकर 9 बजे के क़रीब पहुँचे। गुरदासपुर लाला ईश्वर दास के मकान पर संगत एकत्रित थी, वहाँ भी आधा घण्टा लगा। फिर दिन के 11.30 बजे पठानकोट से छ: मील परे चक्की के फाटक पर पहुँच गये। पूछने पर पता चला कि सर्विस 1 बजे दोपहर बाद जायेगी, इसलिये एक आम के वृक्ष की छाया में हम सबने खाना खाया। मौसम सुहावना था। गर्मी अधिक न थी। जब वहाँ से दुनेरे 2.30 बजे पहुँचे तो वहाँ तेज धूप, अत्यधिक गर्मी और मोटर कार की छत जलती

हुई मालूम हुई। हमने विश्राम-गृह में आराम किया, पानी पिया और वहाँ से चल पड़े। रास्ते में गर्मी लगती रही। बन्नी खेत पहुँचकर यह आभास हुआ कि ठण्डी जगह पहुँच गये हैं। वहाँ से बूँदा-बाँदी आरम्भ हो गई, लेकिन डलहौज़ी पहुँचने तक समाप्त हो गई। जब कोठी में पहुँच गये तो फिर वर्षा और तेज हवा आरम्भ हो गई। काफ़ी सर्दी हो गई। जब शाम को सैर को गये तो हाथों को ठण्डी हवा लगने लगी।

8 जून को मौसम अच्छा हो गया। आजकल धूप अच्छी निकलती है। लेकिन डलहौज़ी में अभी चहल-पहल नहीं हुई। दुकानदार हाथ पर हाथ रखे बैठे हैं। सुनसान-सी मालूम होती है। हुजूर 9 जून की सुबह को सरदार मक्खन सिंह के घर मिलने के लिये तशरीफ़ ले गये। सरदार साहिब बड़े प्रेम से मिले। इधर-उधर की बातें होती रहीं। सरदार बहादुर ने ज़िक्र किया कि उनके सुपुत्र पंचौली आर्ट पिक्चर वाले दो हजार फ़ुट लम्बी फ़िल्म और कई अन्य फ़िल्मों के विशेष दृश्य तैयार कर रहे हैं। इस कला से जो लोग परिचित हैं, उनका बहुत आदर करते हैं। उनके लड़के भी बहुत सभ्य हैं और उच्च कोटि के शिक्षित होते हुए भी बड़ों के सामने अधिक बात नहीं करते।

11 जून को सरदार साहिब एल्समियर में हुजूर से मिलने आये। बातों-बातों में फ़रमाया कि मुझे सुबह क़ब्ज़ रहती थी। एक डॉक्टर साहिब ने बताया कि ईसबगोल का छिलका ले लिया करो। लेकिन उससे भी अधिक लाभ नहीं हुआ। एक दूसरे डॉक्टर साहिब ने फ़रमाया कि रात को सोते समय काबली हरड़ को बारीक़ पीस कर दो छोटे चम्मच दूध के साथ ले लिया करो। इससे क़ब्ज़ दूर हो गई। हुज़ूर ने फ़रमाया कि बचपन में वे एक साधु के पास क़ब्ज़ की शिकायत लेकर गये तो साधु ने कहा कि दाल, सब्ज़ी में खाना खाते समय जो तड़क कर घी डालते हो उसकी जगह घी जरा गर्म करके डाल लिया करो। तड़के का घी क़ब्ज़ करता है।

आजकल हुजूर यहाँ आराम कर रहे हैं। सत्संग के इरादे से नहीं आये और न ही सत्संग करते हैं। सुबह और शाम दोनों समय घूम आते हैं। किसी समय भजन में देर हो जाती है तो सुबह सैर को नहीं जाते। हम सबको कहते हैं कि

यहाँ आने का यह लाभ तो है कि जितना हो सके भजन-सिमरन को समय दो। आजकल डलहाँजी में मौसम बहुत अच्छा है। वर्षा नहीं, लेकिन दोपहर की धूप इतनी तेज होती है कि धूप में चल-फिर नहीं सकते। नीचे लिखी चिट्ठी, जो आज मिण्टगुमरी से एक सत्संगी की आई है कि किस प्रकार हुजूर महाराज जी अपने सेवकों की सहायता करते हैं, मैं उसकी पूरी नक्ल करता हूँ।

मिण्टगुमरी 10-6-44

11 जून 1944

राधास्वामी दयाल की दया, राधास्वामी सहाय। जवाब जरूर दें, शुक्र है! शुक्र है!! श्री हुजूर महाराज सरदार सावन सिंह जी महाराज,

राधास्वामी।

दो जहान के मालिक, राधास्वामी। अर्ज़ है कि ता. 5-6-44 को प्रिय केवल कृष्ण सुपुत्रआयु 15 वर्ष की तबीयत बहुत बिगड़ चुकी थी। हुजूर कृपा करते हुए कार में मिण्टगुमरी पधारे। कार तो लाला सुन्दर दास मनियारी वाले की दुकान पर खड़ी कर दी और आप केवल कृष्ण के पास उनके मकान पर आये तथा केवल कृष्ण को आदेश दिया कि चलो। क्योंकि वह बच्चा था, उसको कुछ न सूझा और कहने लगा कि महाराज जी अभी मैंने कोई पाप नहीं किया और अभी यहाँ रहने दिया जाये। इसके बाद उसके पिता ने विनती की कि हुजूर अभी इसको यहाँ रहने दिया जाये। तब हुजूर ने कहा, बहुत अच्छा। उसके बाद आपने केवल कृष्ण से पूछा कि दवाई किसकी करते हो। तो उसने कहा कि मेरा मास्टर है और वह शराब बहुत पीता है। अब डॉ. ध्यान सिंह की दवा शुरू कर दी है; तो आपने कहा कि डॉ. ध्यान सिंह की दवाई किये जाओ। वह योग्य डॉक्टर है। परसों तक तुम ठीक हो जाओगे। अकेले केवल कृष्ण से ही आपने ये बातें की। अब केवल कृष्ण ठीक है। इसके बाद आपने केवल कृष्ण से कहा कि सुन्दर दास को टेलिफ़ोन करो ताकि वह मेरी कार, जो उसकी दुकान पर खड़ी है, ले आये। तब उसने टेलीफ़ोन किया और कार आ गई। फिर हुजूर कार पर सवार होकर चले गए। डलहौज़ी में शाम को पाँच बजे के बाद सत्संगी हुजूर के अन्दर वाले ड्राइंग

रूम में एकत्रित हो जाते हैं और बातचीत करते हैं।

आज 17 जून की सुबह को हुन्तूर माल रोड का चक्कर प्रतिदिन की भौति लगाने गए और सड़क के किनारे बैंच पर बिराजमान हो गये और फ़रमाया कि हुजूर बाबा जी महाराज कई बार इस संसार में जीवों का उद्धार करने के लिये आते रहे। यद्यपि उनकी अपनी मौज न थी फिर भी मजबूरी से आते रहे। जब एक बार मौज से ऐबटाबाद के पास आए, तब पाण्डवों की पहाड़ी अभी मैदान ही थी तब भी उनका आगमन हुआ था। फिर फ़रमाया कि सतगुरु जिस जीव को नाम देते हैं, उसे अपने गुरु के सुपुर्द कर देते हैं। नाम के अक्षर बताने तो आसान हैं। बच्चे भी बता सकते हैं। लेकिन अन्तर में जीवों की सँभाल करना, उनके कर्मों का प्रबन्ध करना बहुत कठिन काम है, आसान काम नहीं। अत: बाबा जी के ज्योति-ज्योत समाने के एक वर्ष बाद तक मैंने किसी को नामदान नहीं दिया। जब फिर आगरा में हुज़ूर चाचा प्रताप सिंह जी के सत्संग में गये तो वहाँ 28 दिन मेरी उनसे बहस होती रही। वह कहते थे कि 'नामदान' दिया करो। मैं इनकार करता था कि मैं इस योग्य नहीं। अपने किसी साधु को वहाँ नाम देने के लिये भेज दो। अन्त में चाचा जी महाराज ने एक दिन जोश से कहा कि तुम हमें क्या समझते हो ? तो मैंने जवाब दिया कि आपको हुजूर स्वामी जी महाराज का भाई और बाबा जी का प्रिय मित्र और उनका रूप समझता हूँ। तो चाचा जी महाराज ने कहा कि बस यदि तुम मुझे ऐसा समझते हो तो नामदान अवश्य देना होगा। तुम स्वामी जी महाराज का कार्य कर रहे हो। वे स्वयं सँभाल करेंगे। इस पर मज़बूर होकर मैंने यह कार्य अपने हाथ में ले लिया।

एक सत्संगी ने पत्र लिखा कि जब आप कहते हो कि केवल सिमरन से ही नौ द्वारों को छोड़कर सतगुरु के चरणों तक पहुँच सकते हैं तो फिर शब्द सुनने की क्या आवश्यकता है। हुजूर ने फ़रमाया कि सिमरन करते-करते चोला छूट जाये और शब्द न सुने तो दोबारा जन्म लेना पड़ेगा क्योंकि ले जाने वाला शब्द है। किसी सत्संगी के सवाल के जवाब में फ़रमाया कि सूक्ष्म शरीर सत्रह तत्त्वों का होता है।

21 जून को सुबह 9 बजे की सर्विस में डलहौजी से खाना होकर पहले बकलोह की संगत को दर्शन देते हुए पठानकोट दिन के बारह बजे पहुँच गये। वहाँ भी एक स्थान पर संगत एकत्रित थी। वहाँ पाँच मिनट दर्शन देकर 306

23 जून 1944

पठानकोट रेलवे स्टेशन पर पानी पिया और फिर वहाँ से गुरदासपुर लाला ईश्वर दास वकील के मकान पर आ गये। महाराज जी वहाँ संगत को आधा घण्टा दर्शन देते रहे। मैं लाला ईश्वर दास से बातें करता रहा। गर्मी तेज थी। वहाँ से चल कर धारीवाल से दो मील इधर हम सब एक कुएँ के पास ठहर गये और एक शीशम के वृक्ष के नीचे खाना खाया। वहाँ काफ़ी समय लग गया क्योंकि किसी विशेष स्थान पर पहुँचने की जल्दी नहीं थी। धारीवाल से दो साइकिल सवार एक-दूसरे के पीछे धारीवाल की संगत के भेजे हुए आये कि हुजूर कब पहुँचेंगे। संगत दर्शनों के लिये कई घण्टों से खड़ी थी। अतएव फिर वहाँ से चल कर दर्शन देते हुए बटाला लुहारों के कारख़ानों पर रुके। वहाँ हुजूर लोहा ढलता देखते रहे। वहाँ से चले तो अमृतसर सत्संग-घर में आकर ठहरे। वहाँ हजारों की संख्या में संगत एकत्रित थी। शाम को सत्संग किया। हुजूर रात को वहीं रहे। दूसरे दिन 22 जून को आठ बजे सत्संग करके दोपहर को डेरे पहुँच गये।

डेरे में निवास

23 जून, 1944 मासिक सत्संग का समय आ गया था। संगत आ रही थी लेकिन गर्मी बहुत थी, जिस कारण अधिक लोग सत्संग पर नहीं आये। गर्मी के कारण हुजूर का स्वास्थ्य भी कुछ बिगड़-सा गया। इसलिये हुजूर ने सोमवार को नामदान भी नहीं दिया। आज मंगलवार के दिन सब लोग अपने-अपने घरों को चले गए हैं। हुजूर का स्वास्थ्य ठीक हो गया है। रात वर्षा थी। इस कारण मौसम भी सुहावना है। कालू की बड़ जाने की तैयारियाँ हो रही हैं।

2 जुलाई, 1944 रविवार का दिन तो काग़ज-पत्र आदि देखने में समाप्त हो गया। शाम को सत्संग सरदार कृपाल सिंह ने किया :

गुरु का ध्यान कर प्यारे। बिना इस के नहीं छुटना। 10

हुजूर स्वामी जी महाराज ने सार बचन छन्द बन्द के इस शब्द में संसार के प्राणियों को सच्ची शिक्षा दी है कि ऐ लोगों, यदि तुम इन सांसारिक कष्टों से छूटना चाहते हो तो गुरु का ध्यान करो। स्त्री, पित, पुत्र, दुनिया के सम्बन्धी, दुनिया की जायदादों और दुनिया के लोगों का ध्यान छोड़ दो। यदि उनका ध्यान करोगे तो मर कर भी उन्हीं में जन्म लेना पड़ेगा। जैसा कि श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में भी आया है, 'अकाल मूरत है साध संतन की ठाहर नीकी ध्यान कौ " यानी

सन्तों का ध्यान करने से मन खड़ा होने लगता है। फिर इसके बाद कहा कि लाभ-हानि, मान-बड़ाई का विचार छोड़ दो, वरना मृत्यु पर छोड़ने पड़ेंगे। जो-जो कर्म अच्छे या बुरे करोगे, सबकी सज़ा भुगतनी पड़ेगी। जैसा कि गीता में आया है, 'न हीयते कर्म कल्प कोटि शतैरपि' कि कर्म करोड़ों युगों के बाद भी बिना भोगे नष्ट नहीं होते। हुजूर ने फ़रमाया कि कर्म से बचो। सबसे बुरा कर्म क्या है ? किसी का दिल दुखाना। जैसे कि हाफ़िज़ शीराज़ी ने फ़रमाया है :

> मै ख़ुरो महसफ़ बसोज़ो आतिश दर कॉबा जन, साकिन बुतख़ाना बाश मरदुम आज़ारी मकुन।

शराब पी, मुसल्ला जला दे, क़ाबे में आग लगा दे, बुतख़ाने में चला जा, लेकिन किसी के दिल को न दु:खा। इसके बाद गुरु की शरण ले, यह मुक्ति प्राप्त करने का ढंग है। यह सब मत-मतान्तरों का निचोड़ है, जो स्वामी जी महाराज ने इस छोटे-से शब्द में भर दिया है।

5 जुलाई की सुबह को 6.30 बजे कार में चल कर हुजूर जालन्धर आये। वहाँ केवल एक-दो मिनट ठहर कर आदमपुर, शाम-चौरासी की संगत को दर्शन देते हुए 9 बजे से पहले होशियारपुर पहुँच गये। वहाँ से हरियाणा, भुंगा के रास्ते ढोल बाहा 10 बजे आये। होशियारपुर से जो सड़क दसूहा को जाती है उसके बाईं ओर हरियाणा का पुराना क़स्बा है। इस सड़क पर आमों और शीशम के वृक्षों के अतिरिक्त कोई वृक्ष नजर नहीं आते है। हरियाणा से पाँच-छ: मील आगे इस सड़क पर भुंगा है जो रियासत कपूरथला में शामिल है। भुंगा से चार मील आगे दायें हाथ को कच्ची सड़क ढोल बाहा को जाती है जो वहाँ से छ:-सात मील पर पहाड़ की जड़ में स्थित है। धूप तेज़ लगती है, अत: छाया में बैठते ही आराम मालूम होता है। लू का नामोनिशान तक नहीं है। राजपूतों का यह गाँव शिवालिक पहाड़ी की घाटी में स्थित है। छायादार वृक्ष, जिनमें आम अधिक हैं सब ओर दिखाई देते हैं। पानी इतना कम गहरा है कि ढींगली से निकाल लेते हैं। एक ओर एक नाला है जो अब सूखा हुआ है लेकिन वर्षा में बहता होगा। जहाँ हम ठहरे हैं, वहाँ कमरे बड़े हवादार हैं लेकिन न कोई स्नानगृह, न कोई बैठक, न कोई विशेष प्रबन्ध दिखाई देता है। शाम को 2 . 30 बजे मैदान में आम के वृक्ष के नीचे सत्संग हुआ। पंखे की कोई आवश्यकता महसूस नहीं होती थी। ठण्डी-ठण्डी हवा चल 6 जुलाई 1944

रही थी। पाँच बजे सत्संग समाप्त करके हुजूर अपने स्थान पर आ बिराजे। आँगन में आम के पेड़ के नीचे कुर्सी पर बिराजमान होकर रौनक़ बढ़ाई। आसपास दरी पर सत्संगी एकत्रित हो गये, जिनमें मुसलमान भी थे।

6 जुलाई को सुबह 8 बजे सत्संग आरम्भ हुआ। लेकिन एक ही शब्द पढ़ा था कि ज़ोर से वर्षा आ गई। इसलिये हम सब दौड़कर अपनी-अपनी जगह आ गये। रास्ते में फिसलन भी थी। हुजूर भी कठिनाई से बचे।

हुजूर का विचार था कि यहाँ लोगों को नाम दिया जाये लेकिन दोपहर बारह बजे होशियारपुर से प्रोफ़ेसर लेखराज साहिब कार लेकर आ गये कि तरनतारन में सन्त बग्गा सिंह सख़्त बीमार हैं। हुजूर आकर दर्शन दें। 1 बजे वर्षा बन्द हो गई। हुजूर जल्दी-जल्दी कुछ बीबियों तथा भाइयों को सिमरन देकर, सामान बाँध, लारी लदवा, मोटर पर सवार हो, हरियाणा, भुंगा के रास्ते होशियारपुर पहुँच गये और वहाँ से जालन्धर होते हुए शाम के सात बजे के क़रीब डेरे में पहुँच गये।

तरनतारन वाले बाबा बग्गा सिंह जी के दाह-संस्कार का हाल

7 जुलाई सुबह 7 बजे डेरे से चल कर 9 बजे तरनतारन पहुँच गये तो पता लगा कि सन्त जी 6 जुलाई, 1944 की दोपहर को बारह बज कर चालीस मिनट पर, ठीक जबकि हुजूर को तार मिला था, चोला छोड़ गये। जब अन्दर डेरे में गये तो सारी संगत जार-जार रो रही थी। सन्त जी का शरीर कपड़ों में लपेटकर बर्फ़ की बड़ी-बड़ी सिल्लियों पर रखा हुआ था। हुजूर महाराज जी की प्रतीक्षा हो रही थी। हुजूर ने पहले तो उनको उपदेश दिया कि रोना-धोना बन्द कर दो। यह सन्तमत के सिद्धान्तों के विरुद्ध है। जैसा कि गुरु अमरदास जी ने फ़रमाया है:

मत मैं पिच्छै कोई रोवसी सो मैं मूल न भाया।12 कबीर सन्त मूए क्या रोईऐ जो अपने गृह जाय। रोवो साकत बापुरे जो हाटै हाट बिकाय।13

और इसके बाद उनको हुजूरी वाणी में से एक शब्द पढ़वा कर सत्संग सुनाया ताकि उनका ध्यान दूसरी ओर हो जाये :

गुरु कहे खोल कर भाई। लग शब्द अनाहद जाई॥14

इसके बाद सरदार देवा सिंह जी (जो सन्त जी के परम सेवक हैं) ने विनती की कि बहुत-सी संगत दोपहर के बाद तीन बजे की गाड़ी से आनेवाली है। उसके बाद दाह-संस्कार किया जाये। लेकिन हुजूर ने फ़रमाया कि सारी संगत, बीबियाँ, बच्चे दो दिन से भूखे हैं। जल्दी संस्कार कर दिया जाये। सो सन्त जी के शरीर को स्वयं हुजूर ने एक स्नानगृह में अच्छी तरह स्नान करवाया। इसके बाद बाजों के साथ उनकी अरथी को सत्संग-घर के मैदान में ले जाकर, जहाँ कि सन्त सत्संग किया करते थे, बारह और एक बजे के बीच दोपहर को संस्कार किया गया। कहा जाता है कि सन्त हुक्म दे गए थे कि इसी मैदान में, उनकी समाधि बना दी जाये। इसके बाद 2 बजे के क़रीब हुजूर ने सन्त जी के ख़ास सेवकों, बीबियों तथा सरदार देवा सिंह को फ़रमाया कि दूध मँगवाओ और पियो, क्योंकि वे कई दिनों से भूखे थे और गिर-पड़ रहे थे। अतएव हुजूर ने स्वयं अपने हाथों से कटोरी में दूध पिलाया। उसके बाद आज्ञा दी कि देखो अब जाकर लंगर जारी करो जिससे सारी संगत खाना खाये। जो संगत बाहर से आये उसकी सेवा करो, सत्संग सुनाओ और धैर्य दो। इसके बाद हुजूर वहाँ से चल कर 4 बजे डेरे वापस आ गये। आकर हम सबने भोजन किया। इसके बाद शाम को 6 बजे सत्संग हुआ। दूसरे दिन सुबह ७ बजे कालू की बड़ को जाना था।

अध्याय 22

कालू की बड़ के दौरे का हाल

8 जुलाई को सुबह 7:30 बजे पहाड़ के दौरे के लिये चल कर, जालन्धर आधा घण्टा ठहर कर, होशियारपुर आये। वहाँ प्रोफ़ेसर साहिब के मकान पर पाँच मिनट ठहर कर दोपहर के एक बजे के लगभग गगरेट , चिन्तपुर्णी के रास्ते कालू की बड़ आ पहुँचे। चिन्तपुर्णी तक सड़क अच्छी है लेकिन इसके बाद छ:-सात मील का टुकड़ा बहुत तंग, भयानक और पेचदार है। मोटर ड्राइवर होशियार और मोटर की ब्रेक मज़बूत होनी चाहिये। यहाँ बहुत-से सत्संगी स्त्री-पुरुष उपस्थित थे। पहाड़ की खुदाई हो रही थी। बीबियाँ बट्टे इकट्ठे कर रही थीं। केवल दो कमरे निचली मंजिल पर और दो कमरे ऊपरी मंजिल पर बन पाये। लेकिन किसी दरवाजे पर तख़्ते नहीं लगे थे। बड़ी कठिनाई से तीन घण्टे बाद हुजूर के निवास-स्थान में दरवाज़ों और खिड़िकयों पर लकड़ी के सादा तख़्ते जड़ दिये गए , क्योंकि वर्षा अन्दर आने से सारे कपड़े भीग जाने का डर था। हमारा साथ वाला कमरा बिना तख़्तों के था। निचले कमरे वर्षा से बिलकुल भीगे हुए थे, क्योंकि पिछली रात यहाँ वर्षा हुई थी। सारी संगत निचले दो कमरों में ठहरी हुई है। उन्हें हमारे आने का पता नहीं था। इसलिये दोपहर के तीन बजे सबने भोजन किया। हुजूर एक घण्टा आराम करके शाम के पाँच बजे काम देखने चले गए। जो ज़ीन की शक्ल की पहाड़ी ख़रीदी थी, उस पर महंदड़ों के बहुत-से पौधे थे जिनमें से गुज़रना और जरीब ले जानी कठिन थी। अब वे साफ़ कर दिये गए हैं। क्योंकि पहाड़ी की चौड़ाई कम है, इसलिये पहाड़ी काटकर स्थान को चौड़ा किया जा रहा है ताकि ऊपर कोठी बनाने या सत्संग करने के लिये काफ़ी चौड़ा मैदान मिल सके।

क. खेत नापने की जंजीर।

जब हम जंडियाला की नहर पर से तरनतारन जा रहे थे तो हमने देखा कि नहर के दोनों किनारों पर जो शीशम आदि के वृक्ष खड़े थे सब नहर की ओर झुके हुए थे। बजाय दूसरी ओर झुकने के, नहर की ओर ही उनकी टहनियाँ और पत्ते अधिक झुके हुए थे। यानी वृक्षों को भी यह आभास है कि उधर हमारे लालन-पालन का सामान है, इसलिये उधर को झुको। जहाँ भी पालन-पोषण तथा बढ़ने का साधन है वहाँ वह बिना रूह के नहीं हो सकता। यह चेतन शिक्त है जिसकी सहायता से प्रत्येक प्राणी घास, पौधों से लेकर मनुष्य तक हवा, मिट्टी, पानी, अग्नि और आकाश में से अपने जीवित रहने के परमाणु पचा कर बढ़ता है। चेतन सत्ता न होती तो इस सृष्टि में रौनक़ नहीं होती। न वृक्ष होते, न पशु-पक्षी आदि; केवल समुद्र, पहाड़, जंगल होते। हुजूर ने फ़रमाया कि मृत्यु के बाद जबिक आत्मा शरीर से निकल जाती है तो उस समय किसी महात्मा या किसी प्यारे व मित्र का फ़ोटो लेना व्यर्थ है। शरीर में रौनक़ आत्मा की है। शरीर की महानता व क़द्र आत्मा के कारण है। जैसे उपनिषदों में भी आया है, रूह के बिना शरीर मुर्दा व डरावना प्रतीत होता है। उसका चित्र क्या ?

9 जुलाई को रिववार था। सेवादार व सेवादारिनयाँ खुदाई की सेवा करती रहीं। शाम के 4 बजे पहाड़ी पर सत्संग हुआ। यह पहला सत्संग था तथा बहुत-से लोगों को मालूम न था परन्तु फिर भी हजारों लोग उपस्थित थे। इन सादा व्यक्तियों का प्रेम ही हुजूर महाराज जी को इन सुनसान पहाड़ों में खींच लाया है, वरना यहाँ ठहरने का क्या मनोरथ ? न कोई रौनक़ है, न कोई वस्तु मिलती है। पानी दो मील से गाँव देहरा की बावली से आता है। लोग किठनाई से घड़ा उठाकर लाते हैं। हाँ, आम बहुत अधिक मात्रा में और ताजे मिलते हैं। रात दो टोकरियाँ मेरे पावों की तरफ और एक सिरहाने की तरफ पड़ी थीं। अभी इमारत थोड़ी बनी है। न बैठने की कोई जगह है न कोई वस्तु रखने की। सत्संग के दो घण्टे के बाद हुजूर उसी पहाड़ी पर, जहाँ कि चोटी पर पत्थरों का थड़ा बना हुआ है, घूमने गये। यह पहाड़ी आसपास के सब पहाड़ों से ऊँची है। इसके बाद रात को बड़ी वर्षा व हवा थी।

आज सुबह हवा व वर्षा का ज़ोर है। दरवाज़े बन्द करके अन्दर बैठे हैं। हुजूर यहाँ सत्संग, तुलसी साहिब की वाणी में से करते हैं क्योंकि यहाँ ब्राह्मणों की आबादी अधिक है और हिन्दू धर्म का ज़ोर है। पहले दिंन तुलसी साहिब के दोहे पढ़े गये :

सुरत सैल असमान की, लख पावै कोइ संत। तुलसी जग जानै नहीं, अति उतंग पिया पंथ॥ पढ़ पढ़ के सब जग मुआ, पंडित भया न कोय। ढाई अच्छर प्रेम के, पढ़ै सो पंडित होय॥

वे ढाई अक्षर क्या हैं ? उनको दसवें द्वार पर सन्त दिखाते हैं। एक को छोड़ना पड़ता है। एक को लेना पड़ता है। दूसरे दिन घट रामायण में से सन्तों की महिमा सुनाई गई।

जो कछु करहिं करिंह सोइ संता, संत बिना निहं पावे पंथा। फिर स्वामी जी महाराज की वाणी में से कार्तिक के महीने में से शरीर के अन्दर जो बारह कमल हैं, वे सुनाये गए और कहा गया कि देवी-देवताओं के स्थान मनुष्य की आँखों के नीचे हैं जबिक मनुष्य के शरीर में आत्मा दोनों आँखों के पीछे बैठी है। जब मनुष्य मरता है तो देवी-देवता उसको पहले छोड़ जाते हैं। जब मनुष्य की रूह आँखों में सिमटकर आती है तब उसके प्राण निकलते हैं। देवी-देवता की बैठक गुदा, इन्द्रिय, नाभी, हृदय और कण्ठ के स्थानों पर होने के कारण वे मनुष्य को पहले ही छोड़ जाते हैं।

यहाँ प्राय: आकाश पर बादल छाये रहते हैं। वर्षा अधिक नहीं होती। ध्रप भी निकल आती है। इसलिये बिस्तर आदि सूख जाते हैं और गर्म वस्त्र पहनने की आवश्यकता नहीं। मेरी खिड़की में से दक्षिण-पूर्व की ओर दूर-दूर तक हरियाली व पहाड़ियाँ दिखाई देती हैं। उनके बीच में नदियाँ बहती दिखाई देती हैं। कहीं कहीं आबादी मालूम पड़ती है। मकानों की छतों पर टीन की चहरें पड़ी हैं। दूसरी ओर छोटी-सी पहाड़ी है, जो दरवाज़े से दिखाई देती है। इसको हुजूर महाराज जी ने ख़रीदा है। उस पर उनकी कोठी बनेगी। रात को उस पहाड़ी पर चढ़कर देखा तो दक्षिण की ओर होशियारपुर की बिजली की रोशनी और उससे दाईं तरफ़ जालन्धर का प्रकाश और बाईं तरफ़ एक प्रकाश और दिखाई देता था, जो शायद फगवाड़ा या लुधियाना का हो। उत्तर की तरफ़ देखें तो योल कैम्प का प्रकाश दिखाई पडता है। कहते हैं कि यहाँ से ब्यास नदी का रेलवे पुल और डेरा बाबा जैमल सिंह के सत्संग हाल की मीनारें दिखाई देती हैं।

13 जुलाई की शाम को एक सत्संगी की इच्छा पर हुजूर ने घट रामायण में से लोमस ऋषि का संवाद लिया, जिसमें लिखा है कि तीर्थ, व्रत, जप, तप से जीव का कल्याण नहीं होगा जब तक सन्तों की शरण में जाकर, नाम लेकर, कमाई न करे। आजकल इस पहाड़ी, जहाँ कि सत्संग होता है, को काटकर बराबर और चौड़ा किया जा रहा है और बाद में कोठी बनाई जायेगी।

रूहानी डायरी भाग 1

14 जुलाई को दोपहर के एक बजे प्रोफ़ेसर लेखराज पुरी, होशियारपुर के डिस्ट्रिक्ट इंजीनियर के साथ पहुँच गये क्योंकि इंजीनियर साहिब ने चिन्तपुर्णी से कालू की बड़ तक सड़क का निरीक्षण करना था। इस सड़क को अधिक चौड़ा करना चाहिये।

16 जुलाई को सावन की संक्रान्ति थी और सुबह 8.30 बजे से 10 बजे तक सत्संग होता रहा। सत्संग के बाद कुछ प्रेमियों ने हारमोनियम के साथ शब्द सुनाये जिनमें से एक हुजूर की कालू की बड़ में कोठी बनाने के सम्बन्ध में है:

अर्ज आख़िरी सतगुरु आ बस तू नेड़े नेड़े। झगड़े मैं की दस्सां जेहड़े मेरे तेरे। तेरे जेहा सन्त नाहीं मेरे पापां दा अन्त नाहीं। • दस्सां मैं केहड़े, केहड़े..... आदि

मालूम होता है कि बाबा बग्गा सिंह के ज्योति-ज्योत समाने पर यद्यपि बाबा जी भाई देवा सिंह को गद्दी पर बैठने का आदेश दे गये हैं और हुजूर महाराज जी भी सरदार देवा सिंह को गद्दी का उत्तराधिकारी समझते हैं, फिर भी कुछ सत्संगी लोग गद्दी का लालच रख कर कह रहे हैं कि उनमें धारा आ गई है। गद्दी के साथ एक सौ बीघे के लगभग ज़मीन है जिसकी उपज से तरनतारन सत्संग का साल भर का निर्वाह चल जाता है।

संक्रान्ति की शाम को, क्योंकि धर्मशाला के बहुत-से लोग सत्संग सुनने आ गये थे, सत्संग हुआ। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'सतगुरु सेवन से वडभागी '3 और हुजूरी वाणी में से 'यह तन दुर्लभ तुमने पाया 4 लिये गए। फिर उसके बाद तुलसी साहिब की घट रामायण में से आरम्भ के छन्द लोगों को सुनाये गए। यहाँ बहेड़े के वृक्षों की लकड़ी की शहतीरियाँ व तुन्न की लकड़ी (जो लाल रंग की होती है) और सेमल (जो सफ़ेद रंग का होता है

314

और जिसके रेशे से सिरहाने भरे जाते हैं) मकानों में प्रयोग होते हैं। आजकल यहाँ मौसम बहुत सुहावना है, बादल आ-जा रहे हैं। ठण्डी हवाएँ चल रही हैं। कभी-कभी धूप भी निकल आती है। न अधिक गर्मी है और न अधिक सदीं। स्वास्थ्य भी अच्छा रहता है।

19 जुलाई को कालू की बड़ में बड़ी रौनक़ दिखाई दे रही है क्योंकि कल एक सौ पाँच लोगों को नामदान दिया गया। आज हुजूर ने 350 स्त्रियों और पुरुषों को नाम दिया। इसलिए हजारों से भी अधिक सत्संगी स्त्री-पुरुष यहाँ एकित्रत हैं। लोगों को पता था कि शाम को सत्संग होगा, इसलिये शाम के छ: बजे यहाँ इतनी जनता एकित्रत हो गई कि लोगों के बीच में से गुज़रना किठन हो गया। एक बड़ा भारी मेला-सा प्रतीत होता था।

20 जुलाई को प्रात: से ही लोग कालू की बड़ को आने आरम्भ हो गये। इस सड़क पर आनेवालों की काफ़ी भीड़ थी। कई बार तो रास्ता नहीं मिलता था। यह भीड़ शाम के तीन बजे तक लगी रही। हुजूर सत्संग में तशरीफ़ ले गये। हुजूर ऊँची जगह तख़्ज पर बिराजमान थे और नीचे में भी बैठा था। स्त्री-पुरुषों का एक समुद्र-सा प्रतीत होता था। रंग-बिरंगी पगड़ियाँ ही पगड़ियाँ दिखाई देती थीं या बीबियों के रंग-बिरंगे दुपट्टे। सारे मैदान में लोग खचाखच भरे हुए थे। यह वह मैदान है जोकि बोहड़ से नीचे है और जहाँ हुजूर की कोठी बनेगी। इस मैदान के दोनों तरफ ढलान पर लोग खड़े थे और जो रास्ता कालू की बड़ को पब्लिक सड़क से आता है, उस पर इतनी भीड़ थी कि बीच में से गुज़र नहीं सकते थे। दूर-दूर पहाड़ी गाँवों व झोंपड़ियों से स्त्री-पुरुष और बच्चे आ रहे थे, एक बड़ा भारी मेला-सा प्रतीत होता था। जैसे कि मेलों में होता है, इस सड़क पर और कालू की बड़ की सड़क पर हलवाइयों और आम बेचने वालों की बहुत-सी दुकानें सजी हुई थीं। यह वही स्थान है जहाँ पहले जब हम दिसम्बर 1943 में जगह देखने आये थे तो बिलकुल सुनसान थी और जिस जगह अब लोग सत्संग सुन रहे हैं, महंदड़ के पौधे इतने ज्यादा थे कि बीच में से होकर चलना कठिन था। हुजूर ने इन पौधों को साफ़ करा कर निचली तह को कई फुट कटवा कर एक समतल मैदान सत्संग के लिये और बाद में कोठी के लिए बनवा लिया है। अब हम इस मैदान से नीचे रहते हैं।

सत्संग में स्वामी जी महाराज के सार बचन नज़म में से 'जग में घोर अंधेरा भारी '5 और श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'इस गुफा मह अखुट भंडारा '6 लिये गए। दोनों में यह बताया गया कि परमात्मा इनसान के अन्दर रहता है और उसके मिलने का रास्ता भी अन्दर है। बाहर किसी को न मिला है और न मिलेगा। बाहरमुखी क्रिया सब व्यर्थ है। जब तक अन्दर न जायें, जीव की आवागमन से मुक्ति सम्भव नहीं। अन्दर जाने का रास्ता पूरा सतगुरु ही बता सकता है, जो स्वयं अन्दर गया हो। अभी श्री गुरु ग्रन्थ साहिब की कथा समाप्त नहीं होने पाई थी कि वर्षा आरम्भ हो गई। पहाड़ी स्त्रियाँ बिना छतरी के घर से कम निकलती हैं और पुरुषों के पास भी प्राय: छतरियाँ होती हैं। सबने छतरियाँ तान लीं। ऊपर से जहाँ कि मैं बैठा था, काले सफ़ेद तम्बुओं का एक जंगल-सा प्रतीत होता था। लोगों ने विनती की कि सत्संग जारी रखा जाये। तो तुलसी साहिब की घट रामायण में से यह गजल 'दिल का हुजरा साफ़ कर जानाँ के आने के लिये $^{\eta}$ पढ़ी गई। हुजूर ने उसकी व्याख्या की और फ़रमाया कि क़ुरान शरीफ़ में जो 'शाहरग' की चर्चा है उसका अर्थ गले की घुण्डी ही नहीं बल्कि 'शाहरग' बाल जैसी एक बहुत बारीक रग है जोकि सतगुरु अन्दर अभ्यास में बताते हैं, उसमें से होकर ही रूहानी दुनिया में जा सकते हैं। उसके बाद तुलसीदास की रामायण में से अनुसूईया का सीता जी को पतिव्रत धर्म का जो उपदेश है, वह सुनाया गया। उसके बाद दरबारी दास 'उडारू' ने अपनी पंजाबी कविता हुजूर की सेवा में सुनाई, इसके बाद दो सत्संगियों ने एक भजन गाया :

> लक्खाँ शकलाँ तकीयाँ अखियाँ ने, कोई नज़र मेरी विच ख़ुबदी नहीं। ऐ सावन दीन दयाल मेरे, तेरा नाम लियाँ बेड़ी डुबदी नहीं।

हुजूर ने फ़रमाया कि अभी एक वर्ष बाद कालू की बड़ का नया नाम रखा जायेगा।

इस प्रदेश में बहुत-से महन्त हैं। यहाँ से डेढ़ मील पर धर्मसाल में, जोिक ब्राह्मणों का गाँव हैं, महन्त लक्ष्मीधर की गद्दी है। इस प्रदेश में अधिकतर आबादी ब्राह्मणों की है, जो सनातन धर्म के विचारों के हैं। कुछ महन्त श्री गुरु ग्रन्थ साहिब को भी मानते हैं। हुजूर का विचार है कि हुजूर के साथ ये सब लोग प्रेम-प्यार से भाइयों की तरह मिलें-जुलें। इस विचार को ध्यान में रख कर हुजूर ने अपने जन्म-दिन के अवसर पर महन्त साहिब को बुलाने के लिये कई सभ्य व्यक्ति भेजे। परन्तु

दुर्भाग्यवश आज सूर्य ग्रहण का दिन है। महन्त साहिब ने ग्रहण की समाप्ति पर भोजन करना था इसलिये वह तशरीफ़ नहीं ला सके। उनके छोटे भाई बधाई देने के लिये तशरीफ़ लाये और बड़े प्रेम के साथ हुजूर से मिले। हुजूर ने कल कुछ मुसलमान तेलियों को नामदान दिया जोकि धर्मसाल के तेलियों के सम्बन्धी थे, लेकिन वहाँ के निवासी नहीं थे। इन धर्मसाल के तेलियों ने एक-दो मौलवी इकट्ठे किये ताकि उन लोगों पर, जिन्होंने हुजूर से सुरत-शब्द योग (सुल्तान-उल-अजकार) का रास्ता लिया था, आरोप लगाकर अपने धर्म से अलग करने का फ़तवा दे दिया जाये। उन मौलवी लोगों ने हुजूर को एक सन्देश लिखकर भेजा कि आज अरबी, फ़ारसी के विद्वान धर्मसाल में इकट्ठे होंगे। आप विचार-विमर्श के लिए तशरीफ़ लायें। हुजूर फ़क़ीर हैं व अभ्यासी हैं। स्वामी जी महाराज ने कहा है कि :

रूबरू आमिलाने बातिन फ़हम। आलिमां इल्मे जाहिरी जाहिल है

316

अन्तर्मुख अभ्यासी और अनुभवी पुरुषों के सामने विद्वान और बाहरमुखी ज्ञानी मूर्ख हैं। विद्वान लोग परमात्मा के दरबार के पहरेदार होने का दावा करते हैं। वे कहते हैं कि जो कोई परमात्मा के दरबार में जायेगा, उनके पहरे में से होकर जायेगा। जो उनमें से होकर नहीं गया और वह परमात्मा से मिलने का दावा करे तो उसका दावा झूठा है। उनको यह नहीं पता कि परमात्मा के चाहने वाले एक दूसरे रास्ते से परमात्मा के पास पहुँच जाते हैं, जिसकी आम लोगों को ख़बर भी नहीं। जैसे शम्स तबरेज ने फ़रमाया है:

अकल गौयद शस जहत अस्त व हेच बेरूँ राह नेस्त, इश्क्र गौयद हस्त राहो रफता अम बारहा।

अर्थात् बुद्धि कहती है कि इसके सिवाय और कोई रास्ता नहीं है। प्रेम कहता है कि रास्ता है और मैं कई बार उस रास्ते पर गया हूँ।

हुजूर ने उनको जवाब दिया कि आज जोड़ मेल है, उनको फ़ुर्सत नहीं है और न वे बहस पसन्द करते हैं, न आम जलसे में जाते हैं। क्षमा किया जाये। इस समय शाम के छ: बजे हैं, जब मैं यह लिख रहा हूँ। मेरे कमरे की खिड़की में से लोगों की भीड़ पब्लिक रोड पर वापस जाती दिखाई दे रही है। 21 जुलाई, 1944 को होशियारपुर के डिप्टी किमश्नर के आदेशानुसार, जो सड़क चिन्तपुणीं से कालू की बड़ को जाती है, उसकी मुरम्मत आरम्भ हो गई। कई स्थानों पर सड़क केवल आठ फ़ुट चौड़ी थी जबिक काग़जों में पाँच करम लिखी हुई है। लगभग पचास-साठ मजदूर पहाड़ियाँ काट-काट कर सड़क की चौड़ाई ठीक कर रहे हैं और सड़क को भी मिट्टी और पत्थर बिछाकर बराबर कर रहे हैं। यह कार्य कई दिन तक होते रहने की सँभावना है। 21 जुलाई को शाम के सत्संग में कबीर साहिब का शब्द 'कर नैनों दीदार महल में प्यारा है" लिया गया। बहुत-से ब्राह्मण लोग उपस्थित थे। सबने प्रेम से सुना।

22 जुलाई को सरदार भगत सिंह एडवोकेट जालन्धर से अपनी कार में तशरीफ़ लाये। जालन्धर से चार बजे के बाद चल कर सुबह 8-9 बजे के क़रीब यहाँ पहुँच गये। शाम के पाँच बजे वापस चले गए। डलहाँजी जाने के लिये दो दिन चाहियें।

यह स्थान आमों के लिये प्रसिद्ध है। यहाँ चूसने के लिये आम अच्छे और सस्ते मिल जाते हैं। भाई शादी ने आम चूसते-चूसते यह सुनाया :

तरन तारन दिया मुनारिया, सिरों पतलेआ ते पैरों भारिया। तू मसया ते सारा जहान तारिया, मैंनूं वी अम्बां विच वाड़िया। मैं वी नहीं बोरा किसे नाल दे नूं दिखालिया।

24 जुलाई को प्रातः बड़ी वर्षा थी। वर्षा के रुक जाने की प्रतीक्षा में 9 बजे कालू की बड़ से रवाना हुए। उस समय वर्षा बन्द हो चुकी थी। बड़ के सामने की सड़क का कुछ भाग ठीक हो चुका था। लेकिन आगे जाकर चिन्तपुर्णी के पास कार का दायाँ पहिया एक डंगे पर से गुजरा, तो डंगा नीचे बैठ गया। यदि हुजूर कार को न ठहराते तो कार का पिछला पिहया खड्ड में जाता। यहाँ चढ़ाई थी, इसलिये हम सब लोग पैदल जा रहे थे, जोिक बड़े सौभाग्य की बात हुई। वरना ड्राइवर यदि कार को नहीं रोकता तो पिछला पिहया नीचे जाता और यदि अगला पिहया नीचा करते तो अगला पिहया खड्ड में जाता। इसलिये मज़दूरों को बुलाकर कार को उठाकर दूसरी तरफ़ धकेला गया और आगे चल दिये। चिन्तपुर्णी में देवी-भक्त, स्त्री तथा पुरुष पैदल और ताँगों में आ रहे थे, क्योंकि देवी का मेला सावन सुदी अष्टमी का होना बताया जाता है। यहाँ से लेकर सवाँ

के किनारे तक उतराई है। कदम-कदम पर नानबाई और हलवाइयों की दुकानें हैं जिनमें लोग खा-पी रहे हैं। कुछ सड़क के किनारे बैठकर आम चूस रहे हैं। सवाँ के किनारे तक यही हालत है। जब वहाँ पहुँचे तो सवाँ चढ़ी हुई थी। कार गुजर नहीं सकती थी। एक-दो लारियाँ कठिनाई से गुजरीं। वहाँ हम पन्द्रह मिनट ठहर गये कि सवाँ जरा उतर जाये। अन्त में एक लारी पर, जिसमें डेरे के लोग बैठे हुए थे, हुजूर और अन्य कार की सवारियाँ बैठकर गगरेट आ गई, जहाँ पर बहुत-सी संगत एकत्र थी। वहाँ आकर कार का इन्तिजार करने लगे। दरबारी दास संगत को शब्द सुना-सुना कर आधे-पौने घण्टे तक निहाल करता रहा। जो लोग चिन्तपुणीं जा रहे थे वे भी यह दृश्य देखने के लिये खड़े हो गये। वहाँ से चल कर रास्ते में एक-दो जगह संगत को दर्शन देते हुए, होशियारपुर तीन बजे के क़रीब पहुँच गये। वहाँ हम सबने स्नान किया। हम पहाड़ से जो उतरे थे इसलिये हमें गर्मी बहुत तेज लग रही थी। वहाँ हम सबने पुरी साहिब के यहाँ भोजन किया। वहाँ से पाँच बजे के बाद चल कर जालन्धर पहुँच गये।

अध्याय 23

डेरे में निवास का हाल तथा कालू की बड़ का दौरा

28 जुलाई, 1944 को हुजूर का जन्म-दिन है और लोग धड़ाधड़ डेरे आने आरम्भ हो गये हैं। लेकिन कठिनाई यह है कि ब्यास रेलवे स्टेशन पर 11 बजे से 5 बजे तक कोई ताँगा नहीं मिलता। उसी समय ताँगों की बहुत आवश्यकता होती है क्योंकि सवारियाँ बाल-बच्चों को लेकर धूप में पैदल नहीं आ सकती। इसलिये हुजूर की आज्ञानुसार अमृतसर से एक प्रेमी सज्जन, जिनकी अपनी लारियाँ हैं, एक लारी लेकर पहुँच गये और यह कठिनाई समाप्त हो गई। मौसम का यह हाल है कि आकाश पर बादल छाये रहने पर भी वर्षा कम है। जब हवा चलनी बन्द हो जाती है तो बहुत गर्मी महसूस होती है। जन्म-दिन तक बहुत-सी संगत डेरे में एकत्रित हो गई। परन्तु डेरे में इतने मकान नहीं थे। इसलिये बहुत-से प्रेमी स्त्री-पुरुष बरामदों में समान रखे बैठे हैं और वहीं पर दिन-रात गुजारा करते हैं। जिन लोगों के पास मकान हैं वहाँ भी तिल धरने की जगह नहीं है। प्रत्येक मकान वाले के मित्र तथा सम्बन्धी लोग आकर ठहरे हुए हैं।

जन्म-दिन का उत्सव

28 जुलाई, 1944 की सुबह पहले हुजूर ने हुजूरी वाणी में से दो शब्द और एक शब्द श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से पढ़वा कर व्याख्या की। इसके बाद बलसराय के रागियों की पार्टी ने शब्द-कीर्तन सुनाया:

मोरी रुण झुण लाया भैणे सावण आया।

जिसको सारी संगत ने बहुत पसन्द किया। इसके बाद 'भई परापत मानुख देहुरीआ। गोबिंद मिलण की एह तेरी बरीआ' सुनाया।

इतने में ग्यारह बज गये और उत्सव समाप्त हुआ। फिर शाम को 'सतगुरु का नाम पुकारो। सतगुरु को हियरे धारो' पढ़ा गया। इसके बाद कवि दरबार

30 जुलाई 1944

में हरा जर्रा सावन नुमा देखता हूँ, में मुर्शिद में अपना ख़ुदा देखता हूँ। सरदार दर्शन सिंह की उच्चकोटि की नज़म तथा मिस्टर दीवान अली 'दीवाना' की फिल्मी ढंग की किवता 'सावन के संग चला चल' सुनकर लोग ख़ुश हुए। इसके बाद ढड्ड सारंगी वालों ने अपने दो शब्द सुनाये। इस समूह ने देहात के मेले की याद दिला दी।

राय साहिब हरनारायण जी ने अपने भाषण से लोगों को मोहित कर लिया। लेकिन हुजूर ने फ़रमाया कि मुझे अपनी बड़ाई सुनना पसन्द नहीं। आप लोगों ने मुझे परमात्मा का परमात्मा कहकर सतलोक पर चढ़ा दिया। मैं तो अभी शिष्य यानी सेवक भी नहीं बना। यदि सतगुरु मुझे सेवक बनाना ही स्वीकार कर लें तो भी धन्यवाद ही दूँगा।

चे निसंबत ख़ाक रा बा-आलमे पाक।

पृथ्वी की धूल की पवित्र सृष्टि से क्या तुलना! मैं तो गुनहगार बन्दा हूँ। जब तुम लोग मेरी प्रशंसा करते हो तो मैं अपनी सुरत खींचकर बाबा जी के चरणों में डाल देता हूँ। मैं अगले वर्ष तुम्हारे क़ाबू में नहीं आऊँगा।

समय थोड़ा था। बाक़ी कवियों को उनके हठ करने पर कहा गया कि तुम्हें कल समय दिया जायेगा।

29 जुलाई को सुबह 8 बजे सत्संग आरम्भ हुआ। 'काल ने जगत अजब भरमाया। मैं क्या क्या करूं बखान 4 लिया गया। हुजूर ने फ़रमाया कि संसार के बहुत सारे धर्म और मत, काल और दयाल में भेद नहीं जानते। काल को ही परमात्मा समझकर उसकी पूजा कर रहे हैं, जबकि काल त्रिलोकी का नाथ है। वह चौथे पद यानी मुक़ामे हक्र अथवा सतलोक में कभी नहीं जा सकता। न रूहों को उत्पन्न कर सकता है, न ही नाश कर सकता है। उसने कई युगों तक भक्ति करके दयाल सत्पुरुष से रूहें ली हैं। उनको तन, मन के पिंजरों में क़ैद करके कभी स्वर्ग, कभी नरक और कभी चौरासी में घुमाता है। सत्पुरुष दयाल का उनको पता नहीं देता। वे काल को ही परमात्मा समझकर उसकी पूजा कर रहे हैं। काल चाहता है

कि रूहें सदा उसके अधीन रहें और उसकी त्रिलोकी आबाद रहे। महात्मा धुर-धाम सतलोक से आकर जीवों, रूहों को उपदेश देते हैं कि यह देश तुम्हारा देश नहीं है। यह जातियाँ तुम्हारी जातियाँ नहीं हैं। तुम्हारी असली जाति सतनाम और तुम्हारा असली देश सतलोक है जोकि सदा स्थिर रहनेवाला और सब सुखों का भण्डार है। तुम काल के देश को, जोकि अस्थिर माया तथा कर्मों के नियमों का देश है, छोड़कर हमारे साथ चलो। इस शब्द के बाद लाला दरबारी लाल और एक दो साहिबान ने अपनी-अपनी कविताएँ पढ़कर सुनाईं।

30 जुलाई को मासिक सत्संग 8 बजे आरम्भ हुआ। भीड़ इतनी थी कि पहले कभी देखने में नहीं आई। संगत पचास-साठ हज़ार के करीब थी। सत्संग के समाप्त होने पर एक मुसलमान साहिब ने कविता सुनाई:

सुरते हक़ रा ख़्वाही, सूरते मुर्शिद बबीं।

मतलब यदि तू परमात्मा को देखना चाहता है तो पूरे सतगुरु के दर्शन कर। एक सिक्ख ने पंजाबी कविता पढ़ी। इसके बाद वर्षा आरम्भ हो गई वरना और भी बहुत-से लोग अपने-अपने लेख पढ़ना चाहते थे। 31 जुलाई तथा 1 अगस्त को नामदान दिया गया।

बाबा देवा सिंह जी के गद्दी पर बैठने के अवसर पर हुजूर का तरनतारन का दौरा

3 अगस्त को सुबह हुजूर बाबा देवा सिंह के गद्दी पर बैठने के उत्सव पर नहर के रास्ते तरनतारन तशरीफ़ ले गये। वहाँ सत्संग किया और दूसरे दिन शाम को तीन-चार बजे के क़रीब गद्दी पर बैठने की रीति आरम्भ हो गई। पहले हुजूर ने सत्संग किया। उसके समाप्त होने पर सरदार देवा सिंह जी को अपने बराबर बैठाकर फ़रमाया कि अब तुम सन्त बग्गा सिंह की जगह पर काम करो। जो काम वह करते थे, यानी नामदान देना और सत्संग करना, अब वे तुम्हें करने होंगे। लेकिन सारी संगत के साथ प्रेम-प्यार का बर्ताव करना होगा। यदि कोई तुम्हारे विरुद्ध हो तो उसको यहाँ से बाहर निकाल दो। किसी से मत डरो। एक सत्संगी ने सवाल किया कि हम बाबा देवा सिंह जी को क्या ख़याल करें ? उनको सत्संग-घर का और उसकी जायदाद का मैनेजर ख़याल करें या कुछ और ? हुजूर ने फ़रमाया कि जैसा तुम बाबा बग्गा सिंह को समझते थे वैसे ही समझो। जब तुम ध्यान करके सूर्य-चाँद से ऊपर जाओंगे तो बाबा बगा सिंह और बाबा देवा सिंह जी दोनों के स्वरूप आ जायेंगे। हमारे यहाँ प्राय: ऐसे होता रहा है और अब भी होता है कि जिन सत्संगियों ने बाबा जैमल सिंह जी से नाम लिया था बाबा जी के ज्योति-ज्योत सत्संगियों ने बाबा जैमल सिंह जी से नाम लिया था बाबा जी के ज्योति-ज्योत समाने के बाद ऐसा होता रहा कि दोनों स्वरूप अन्दर आकर दर्शन देते रहे या पहले हुजूर का स्वरूप आता फिर बाबा जी महाराज का या पहले बाबा जी पहले हुजूर का। इसके बाद हुजूर ने बाबा देवा सिंह जी को एक पगड़ी और 125 रुपये नक़द भेंट किये। फिर दूसरे लोगों ने भी पगड़ियाँ भेट में दीं। उसके बाद हुजूर पानी पीकर अमृतसर को रवाना हो गये। रास्ते में एक गाँव में, जो सड़क के पास ही दाई ओर था, सत्संग किया।

फ़िरोज़पुर का दौरा

अमृतसर में सुबह सत्संग किया और दूसरे दिन दोपहर के तीन बजे फिरोजपुर छावनी को खाना हो गये। वहाँ से शाम के छ: बजे नहर के रास्ते खालड़ा ललयानी कसूर जा पहुँचे। पहुँचते ही वर्षा आरम्भ हो गई। दूसरे दिन सेशन जज सरदार सेवा सिंह की कोठी पर सत्संग किया। छ: सात अगस्त दोनों दिन सुबह-शाम दोनों समय सत्संग होता रहा। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से मारू राग के शब्द महला तीसरा से लिये गए। आख़िरी सत्संग में कबीर साहिब की वाणी में से 'कर नैनों दीदार महल में प्यारा है किया गया। आख़िरी सत्संग में लोगों की बहुत भीड़ थी। जैसे-जैसे लोगों को हुजूर के आने का समाचार मिलता गया, उपस्थित-जनों की संख्या में वृद्धि होती रही। चौधरी साधु राम पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट फिरोजपुर वाले अपने बाल-बच्चों के साथ पधारे। वह हुजूर के पहले से ही सेवक थे। सिविल सर्जन डॉ. राज सिंह साहिब और उनके बाल-बच्चे, आई. एम. एस. कर्नल चन्दानी, मैजिस्ट्रेट ठाकुर अर्जनिसंह साहिब, एडीशनल सब-जज लाला पुरुषोत्तम लाल साहिब और दूसरे साहिबान शामिल हुए।

8 अगस्त को लगभग एक सौ पचास स्त्री-पुरुषों को नामदान दिया गया। कहते हैं िक कई स्त्रियों का ध्यान उसी समय लग गया। उनको अन्दर प्रकाश और आवाज सुनाई देने लगी। 9 अगस्त को सुबह हुजूर रवाना हुये। लेकिन रास्ते में रिसालदार मेजर ख़ुशहाल सिंह ने हुजूर को आरमर्ड कारें (जंगी मोटरें) दिखाईं। एक कार तो विशेषकर नोट करने के लायक है, जिसकी गोला चलाने की नाली

बहुत लम्बी थी। कहते थे कि पन्द्रह मील तक गोला फेंकती है। इस मोटर के अन्दर चार व्यक्तियों की जगह है। ड्राइवर का सिर ही बाहर निकलता है। वह भी ख़तरे के समय अन्दर कर सकते हैं। दूसरा व्यक्ति दूरबीन लगाकर देखता रहता है। एक कमाण्डर होता है और एक निशानेबाज। इस नाली को जिस ओर चाहें घुमा सकते हैं और मोटर के आगे एक बहुत बड़ा लोहे का मोटा तख़्ता लगा रखा है। जिस पर यदि गोली लगे तो गोली अन्दर नहीं जा सकती, बाहर ही गेंद की तरह उछलकर रह जाती है। उसके बाद हुजूर ललयानी में आकर सड़क के साथ वाले स्कूल में एक घण्टा सत्संग देकर खालड़े की तरफ़ नहर की पटरी के साथ-साथ रवाना हुये। नहर के महकमे के अफ़सर लाला अर्जन दास साहिब यहाँ अपने बाल-बच्चों के साथ कार में आ मिले। ललयानी से एक पक्की सड़क लाहौर को जाती है। ललयानी से दो मील परे बहुत चौड़ी नहर है; जिसके साथ पन्द्रह-सोलह मील पर खालडा है। ललयानी और खालड़ा का पानी खारा है। इसलिये उस क्षेत्र को खारा-माझा बोलते हैं। लेकिन अब नहर के कारण मीठे कुएँ भी हो गये हैं। नहर के किनारे से दायें हाथ को खालड़ा का नया बाज़ार और मण्डी है। लोग स्वस्थ, लम्बे, बलवान और ख़ुशहाल दिखाई दिये। लेकिन सत्संग से बेख़बर और धार्मिक पक्षपात में फँसे हुए हैं। फिर भी खालड़ा सत्संग-घर के बाहर मैदान में, जहाँ सत्संग हुआ, काफ़ी भीड़ थी। यहाँ और ललयानी में लाउड-स्पीकरों का प्रबन्ध था। वहाँ भी मारू राग का एक शब्द सुनाकर हुजूर खालड़ा नहर के बँगले से पानी पीकर अमृतसर शाम के तीन बजे पहुँच गये और वहाँ भी एक सत्संग देकर शाम के आठ बजे के लगभग डेरे वापस आ गये।

बाबा बग्गा सिंह जी के फूलों का जल-प्रवाह

लगभग उसी समय तरनतारन वाले बाबा देवा सिंह जी अपनी कार में कुछ सत्संगियों के साथ बाबा बग्गा सिंह जी के फूल ब्यास नदी में जल-प्रवाह करने के लिये आ पहुँचे। यद्यपि कुछ सत्संगियों का विचार था कि तरनतारन सत्संग-घर के मैदान में बाबा जी की समाधि बनाई जाये, लेकिन हुजूर महाराज जी ने गद्दी पर बैठने की रस्म के समय उनको इस बात से मना करके फ़रमाया कि यह सन्तमत के सिद्धान्तों के विरुद्ध है। सिक्खों के दसों गुरु साहिबान में से किसी की समाधि नहीं बनाई गई। यह बुत-परस्ती तथा कब्र-परस्ती को बढ़ावा देना है। इसलिये कल 10 अगस्त को ये फूल हुजूर ने स्वयं तशरीफ़ ले जाकर

13 अगस्त 1944

324 प्रवाह कराये। उसके बाद सत्संग किया गया। दोपहर को सारी पार्टी खाना खाने के बाद चली गई।

13 अगस्त रविवार के दिन सुबह 8 बजे के क़रीब डेरे से कार में कालू की बड़ को चल दिये, क्योंकि वहाँ सड़क ठीक कराने का निरीक्षण करना था। रास्ते में जगह-जगह जैसे आदमपुर, मदारपुर, मानको, शाम चौरासी, होशियारपुर में संगत एकत्रित थी। होशियारपुर में प्रोफ़ेसर साहिब के मकान पर हम लोगों ने पानी पिया। वहाँ ज़िला इंजीनियर साहिब से मिलकर गगरेट की ओर खाना हुये। रास्ते में मियाँ खेल, मंगोवाली, गगरेट में भी संगत इकट्ठी थी। भरवाईं में हुजूर सरकारी बँगले में देहाती बँक के असिस्टैण्ट रजिस्ट्रार सरदार इन्द्र सिंह साहिब से मिलने गये। वहाँ जाते ही मूसलाधार वर्षा होने लगी और क़रीब एक घण्टा होती रही। जब वर्षा रुकी तो कार में सवार होकर चिन्तपुर्णी की ओर चल दिये। रास्ते में वर्षा दुबारा आने के कारण चिन्तपुर्णी से परे अमृतसर सेवा समिति की धर्मशाला में ठहरना पड़ा। वहाँ लाहौर के एक वैद्य साहिब ने बड़े प्रेम-भाव से आदर किया। यह धर्मशाला पक्की बनी हुई है और दो मंज़िली है। इसमें बहुत बढ़िया पक्के फ़र्श के कमरे हैं। आगे बरामदा है। इस मकान की नींव सड़क से बहुत ऊँची है। यह जगह कभी-कभी ठहरने के लिये बहुत अच्छी मालूम होती है, विशेषकर जब मेले का शोर-शराबा न हो। सामने हलवाई की दुकान है। दूर-दूर तक सुहावना दृश्य है। वैद्य साहिब कवि भी है। उन्होंने अपनी उर्दू की कविताओं से लोगों का मनोरंजन किया। कहने लगे कि सत्संग में जरूर आऊँगा। क्योंकि उनकी एक कविता में परमात्मा की खोज के विषय में चर्चा थी, इसलिये हुजूर ने फ़रमाया कि यद्यपि परमात्मा सर्वव्यापक है पर वह सर्वव्यापक परमात्मा हमारा कोई भला नहीं कर सकता। न हमें पाप करने से रोकता है, न दु:ख में हमारी विनती का जवाब देता है। बाहर परमात्मा ऐसा ही है जैसे दूध में घी। दूध घी का कोई काम नहीं देता और न ही घी, दूध में दिखाई देता है। जब युक्ति से दूध की दही बनाकर मक्खन निकालें तो घी का पता लग जाता है। वैसे ही जिसने परमात्मा को मिलना हो, अपने अन्दर आँखों के ऊपर सुष्मना के रास्ते खोज करे। लेकिन यह तभी हो पाएगा जब कोई अन्दर का भेदी महात्मा अन्तर में रास्ता दिखायेगा। इसलिये सब शास्त्रों में गुरु की जरूरत पर बल दिया गया है। ऋग्वेद में तुरिया पद और सगुण ब्रह्म की बड़ाई की गई है:

सहस्रशीर्ष: पुरुष: सहस्राक्ष: सहस्त्रपात।

इसको सहस्र-दल-कमल भी बोलते हैं। इसके बाद निर्गुण ब्रह्म का भी वर्णन ऋग्वेद में आया है :

हिरण्यगर्भ: समवर्तताऽग्रे भृतस्य जात: पतिरेक आसीत्। इसको सन्तों ने त्रिकुटी कहा है और मुसलमान मुसल्लसी या अल्लाहु

वहाँ से चल कर रास्ता ख़राब था। चिन्तपुर्णी से कुछ दूर गुज़र कर बहुत उतराई आती है और साथ ही तेज मोड़ भी आता है। यहाँ आकर हमें नीचे उतरना पड़ा और मोटर कार भी कठिनाई से मोड़ी गई। फिर आगे रास्ता साफ़ था। किसी-किसी जगह रास्ता तंग था और सावधानी की ज़रूरत थी। चम्बी की दुकानों से आगे जहाँ कि छप्पर हैं बहुत-से पत्थर और तेज चढाई आती है। वहाँ तो मोटर कार बिलकुल पत्थरों और कीचड़ में धँस गई। हम सब तो पैदल चल कर चम्बी की दुकानों पर आ बैठे मगर मोटर कार को धकेलकर निकालना पड़ा, जिसमें बहुत समय लग गया। उसके आगे रास्ता साफ़ था। शाम के चार बजे हम सब कालू की बड़ पहुँच गये। छ: बजे के क़रीब भोजन करके लेट गये। अब वर्षा तो नहीं लेकिन बादल छाये हुए हैं और सर्दी है। गर्म रूईदार तुलाई ओढ़कर बड़ा आनन्द आया। आजकल कालू की बड़ में मौसम सुहावना है। थोड़ी-बहुत वर्षा रोज़ होती है। जब धूप निकलती है तो भादों की मैदानी धूप की तरह बहुत तेज होती है, जिसमें चलने से पसीना आ जाता है। लेकिन जब धूप न हो और हवा बन्द हो तो भी मैदान की तरह, यहाँ जिसे हुसड़ कहते हैं, वह नहीं आता। स्वास्थ्य के लिये यह स्थान बहुत अच्छा है। आजकल जिस ओर दृष्टि डालो हरियाली ही हरियाली दिखाई देती है। सब पहाडियाँ और घाटियाँ हरी दिखाई देती हैं। इससे आगे दक्षिण-पश्चिम में सवाँ की रेत दिखाई देती है। सवाँ से आगे भी गगरेट की हरी पहाड़ियाँ दिखाई देती हैं। आज शाम को कई लोगों ने कहा कि उनको ब्यास नदी का रेलवे पुल दिखाई दे रहा है। कोई कहता था कि डेरे के सत्संग-हाल की मीनारें दिखाई देती हैं। मगर मुझे दिखाई नहीं दीं। वैसे भी मेरी नज़र कमज़ोर है। लेकिन शायद वे दिव्य-दृष्टि से देख रहे हों लेकिन उनके विरोधी यह कहेंगे कि ख़ाली भ्रम है। आज सरदार इन्द्र सिंह साहिब, जो देहाती बैंकों के असिस्टैण्ट रिजस्ट्रार हैं, हुजूर के दर्शनों के लिये अपने परिवार सहित पधारे। शाम को श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से शब्द सुनाया गया। मारू राग:

निहचल एक सदा सच सोई। पूरे गुर ते सोझी होई।

326

फिर 'इस गुफा मह अखुट भंडारा। तिस विच वसै हर अलख अपारा।' लिया गया। उसके बाद शाम के छ: बजे वे सब मोटर कार में भरवाई तशरीफ़ ले गये।

20 अगस्त रिववार को एडवोकेट सरदार भगत सिंह अपनी कार में जालन्थर से तशरीफ़ लाये और शाम के पाँच बजे वापस चले गए। रिववार के दिन महन्तों की धर्मशाला में दो बजे दोपहर महन्त साहिब का सनातन धर्म का सत्संग हुआ करता है। इसमें आसपास के स्त्री-पुरुष सैकड़ों की संख्या में आ जाते हैं। वहाँ भागवत पुराण व दूसरी धार्मिक हिन्दू पुस्तकों की कथा होती है। परन्तु मैंने स्वयं जाकर नहीं देखा। कल शाम को यहाँ भी उपस्थित बहुत थी। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'काया कामण अत सुआल्यो पिर वसै जिस नाले 'ि और तुलसी साहिब के दोहे लिये गए। सत्संग के बाद हमारे कमरे के पश्चिम की ओर जो डंगा हमारी जमीन और दूसरी खेती की जमीन के बीच में बन रहा है, हुजूर उसको बनवाते रहे, कहीं बाहर सैर को नहीं गये।

21 अगस्त की शाम को कबीर साहिब की शब्दावली में से 'महरम होय सो जानै साधो, ऐसा देस हमारा"। और 'साधो ऐसा धुंध अंधियारा" लिये गए। इसके बाद कबीर साहिब की वाणी में से 'सुमिरन का अंग' लिया गया। शाम को सैर में आश्चर्यजनक दृश्य देखा कि एक काला बादल इस आकार का था कि जैसे हिन्दू लोग दशहरे में रावण बनाते हैं। उसके अन्दर बिजली चमक रही थी। दूसरा बादल ऐसा था जैसे किसी ने ऊँचे प्लेटफ़ार्म पर तोप रखी होती है और तोप की नाली बहुत लम्बी दिखाई देती हो। बातों-बातों में किसी के सवाल करने पर हुजूर ने फ़रमाया कि सूक्ष्म-मण्डल की रूहें कभी-कभी स्थूल-मण्डल वालों को अपना आप दिखा देती हैं। लेकिन सूक्ष्म-मण्डल की रूहें इस दुनिया के लोगों का कुछ बिगाड़ नहीं सकती। केवल दुर्बल हृदय वाले या वहम

करनेवाले लोग उनसे डर कर घबरा जाते हैं। यहाँ पहाड़ों में किसान, जिन खेतों में फ़सल उग रही हो, उनमें मल-मूत्र त्यागना ठीक नहीं समझते। जबिक मैदान के किसान खेतों में ऐसा करना अच्छा समझते हैं। यहाँ खेतों में मनुष्य के विष्टा की खाद नहीं डालते। केवल गोबर या कूड़ा-करकट डालते हैं। मनुष्य की विष्टा को खड्डों में फेंक दिया जाता है।

24 अगस्त को सुबह 8.30 बजे चल कर गगरेट और चिन्तपुर्णी के रास्ते 11 बजे के क़रीब होशियारपुर पहुँच गये। वहाँ एक घण्टा ठहर कर दोपहर दो-तीन बजे के क़रीब जालन्धर सरदार साहिब के मकान पर पहुँच गये। वहाँ सबने खाना खाया। फिर मास्टर आहलूवालिया के मकान पर गये। हुजूर ने उनके नवजात नवासे (दौहित्र) को देखा और फ़रमाया कि वह घर भाग्यशाली होता है जहाँ दिया जले और बच्चे खेलते हों। उसके बाद कपूरथला प्रोफ़ेसर साहिब के मकान पर गये। वहाँ बहुत-से स्त्री-पुरुष एकत्रित हो गये और क़रीब आधा घण्टा वहाँ ठहर कर शाम के छ: बजे डेरे पहुँच गये। थोड़ा विश्राम करके तथा नहा-धोकर सत्संग में गये। इसके बाद चार दिन की डाक सुनी।

अध्याय 24

डेरे में निवास का हाल

25 अगस्त की दोपहर को 12.30 बजे हुजूर बलसराय से एक अखण्ड पाठ के बाद वापस आये। शाम को छ: बजे श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से मारू राग का तीसरे गुरु साहिब का शब्द 'निहचल एक सदा सच सोई। पूरे गुर ते सोझी होई" लिया गया है क्योंकि जिला अमृतसर सदर से दो-तीन सिक्ख अफसर पधारे थे। हुजूर ने फ़रमाया कि बिना सतगुरु के वह परमात्मा, जोकि अद्वितीय है, नहीं मिल सकता।

बेद पढ़ह पढ़ बाद वखाणह। घट मह ब्रहम तिस सबद न पछाणह 🖒

वेद ब्रह्म से उत्पन्न हुए हैं; परन्तु ये वेद नहीं। ब्रह्म से वेदों की ध्विनि निकली जिसे ऋषियों ने महावाक् कहा है। उन ध्विनयों को सुनकर ऋषि-महात्माओं ने स्थूल वेद रचे। गुरु साहिब फ़रमाते हैं कि मनुष्य वेद पढ़कर शास्त्रार्थ करता फिरता है, परन्तु अपने अन्दर जो ब्रह्म है, उसके शब्द यानी ब्रह्म-शब्द को नहीं पकड़ता। ब्रह्म के लोक में भी कारण माया है, इसलिये ब्रह्म की मुक्ति भी सदैव के लिये नहीं है, केवल कल्प पर्यन्त है। नौ सौ अठानवे चौकड़ी युगों का एक कल्प होता है।

सत्संग हाल की हद में आम के पौधे लगाए जा रहे हैं। कहते हैं कि एक पौधा दूसरे पौधे से कम से कम पच्चीस फ़ुट की दूरी पर लगाना चाहिये क्योंकि यदि दोनों वृक्षों की टहनियाँ आपस में मिल जायें तो फल नहीं लगता और आम के पौधे को यदि एक स्थान से दूसरे स्थान पर और दूसरे स्थान से तीसरे स्थान पर उखाड़ कर लगा दें तो आम अच्छा आता है। सरू के बूटे भी लगाये गए हैं।

26 अगस्त को सुबह सत्संग में हुजूरी वाणी में से 'यह तन दुर्लभ तुमनें पाया। कोटि-जन्म भटका जब खाया' लिया गया। ऐसा ऊँचा उपदेश मैंने किसी ग्रन्थ में नहीं देखा। शाम को सत्संग में गुरु राम दास का शब्द 'राम गुरु पारस परस करीजै' और हुजूरी वाणी में से 'भजन कर मगन रहो मन में' लिये गए।

27 अगस्त रिववार को मासिक सत्संग सुबह 9 बजे आरम्भ होकर लगभग 11 बजे समाप्त हुआ। पहले तो मौसम सुहावना था, परन्तु अन्त में धूप आ गई, जिससे बहुत-से लोग व्याकुल प्रतीत हुये। हुजूरी वाणी में से 'गुरुमता अनोखा दरसा। मन सुरत शब्द जाय परसा' लिया गया। संसार में केवल दो ही मत हैं — गुरु-मत और मन-मत। जब तक पूरा गुरु न मिले संसार के सारे धर्म मन-मत में शामिल हैं। पूरा गुरु किसी जाति-पाति या धर्म का क़ैदी नहीं। जो महात्मा सतलोक या धुर-धाम पहुँच जाये वही पूरा गुरु है चाहे वह हिन्दू हो या मुसलमान, सिक्ख हो या ईसाई। उससे शिक्षा लेकर अध्यास करना गुरु-मत है। बाक़ी सब मन-मत और धोखा है। गुरुमत के बिना आवागमन नहीं छूटता। जब पूर्ण गुरु मिल गया और उसने आत्मा को शब्द तथा पूर्ण ध्विन से जोड़ दिया तब आत्मा ऊँचे स्थानों पर जाकर भिन्न-भिन्न स्थानों के रूहानी दृश्य देखने लगी। जैसा कि शम्स तबरेज ने फ़रमाया है:

गोयन्द आँ सगां कि नरफ़तन्द राहे रास्त, राह नेस्त बंदा रा बजानबे ख़ुदा-दरोग़।

वे नासमझ लोग जोिक ठीक रास्ते पर नहीं चले, कहते हैं कि इनसान के लिये परमात्मा तक पहुँचने का कोई भी रास्ता नहीं है। परन्तु यह झूठ है! झूठ है!! झुठ है!!!

अन्दर सूक्ष्म और कारण लोकों में अमृत बरस रहा है। उसको आत्मा पीने लगी, इसिलये ऐसी आत्मा को पिनहारी कहा गया है। आगे जाकर 'सुन दर की खिड़की खोली'। यह रूहानी भेद है। जब आत्मा पहले रूहानी मण्डल अर्थात् मुकामे-अल्लाह के स्थान पर पहुँची तो वहाँ एक बारीक छेद में से आगे रास्ता है, उसको खोला। सुखमन, शाहरग को कहते हैं जोिक गले में नहीं है, जैसा कि आम लोगों का विचार है, बिल्क आँखों के ऊपर है। इस शब्द के बाद गुरु नानक साहिब का शब्द मारू राग में से लिया गया। 'कुदरत करनैहार अपारा। कीते का नाहीं किहु चारा'। अब की बार इतनी भीड़ न थी जितनी कि पिछले सत्संग में थी।

2 सितम्बर 1944

30 अगस्त- कल वर्षा का मौसम था। पहले तो सत्संग में हुजूरी वाणी में से 'सतगुरु सरन गहो मेरे प्यारे। कर्म जगात चुकाय कि लिया गया। शरण का पर बहुत ऊँचा है। श्री कृष्ण भगवान् ने भी गीता में अर्जुन को यही उपदेश दिया 'सर्व-धर्मान्यरित्यज्य मामेकं शरणं व्रज। 100 सब कर्मों धर्मों को छोड़कर मेरी शरण में आ जा, मैं तुम्हें सब पापों से छुड़ा दूँगा। यही स्वामी जी महाराज फ़रमाते हैं कि गुरु की शरण लो तो सब पाप नष्ट हो जायेंगे लेकिन शरण लेनी कठिन है। भजन-अभ्यास में परिश्रम कर लेना आसान है। हुजूर ने फ़रमाया, शरण ली थी गुरु अंगद ने, जब बहुत-से यात्रियों के साथ देवी के दर्शन को जा रहे थे तो रास्ते में गुरु नानक साहिब का सत्संग था। वहाँ जाकर ऐसे मोहित हो गये कि फिर कहीं न गये, जैसे परवाना ज्योति को छोड़कर फिर कहीं नहीं जाता। यह ऊँचे प्रेमियों का विषय है जिनको तन-मन की सुध नहीं रहती:

दर्शन करत पिंड सुध भूली। फिर घर बाहर सुधि क्या आय। 11

परमार्थ की दौलत ऐसे विरले प्रेमियों के लिये ही है। बाक़ी तो धीरे-धीरे लड़खड़ाते गिरते-पड़ते चले जाते हैं। इसके बाद गुरु अर्जुन साहिब का प्रसिद्ध शब्द सावन की छिंझ के विषय पर लिया गया। पाँच शरीकों से मतलब पाँच विकारों से है। उससे आगे पाँच ज्ञानेन्द्रियों का वर्णन है। गुरु साहिब का तात्पर्य है कि जैसे संसार में छिंझ अर्थात् पहलवानों का दंगल होता है, वैसे ही हर व्यक्ति के अन्दर दैवी सम्प्रदाय यानी शील, सन्तोष, विवेक आदि की काम, क्रोध, मोह आदि के विकारों से नोंक-झोंक हो रही है। सावन से अभिप्राय मनुष्य-जन्म से है कि मुझे मनुष्य-जन्म मिला। मैंने पाँचों शत्रुओं को जीत लिया और मैंने ऊँची पदवी प्राप्त कर ली। मेरी शरीर रूपी नगरी में दैवी सम्प्रदाय के गुण रूपी प्रजा आराम से रहने लगी। '....वुट्ठा घुघ गिराओ जीओ" यानी गाँव गहरी नींद की तरह आराम से रहने लगा, जैसे पंजाबी में कहते हैं, 'बड़ी घूक नींद आई है'। जैसे दंगल में ढोल आदि बजते हैं, उसी प्रकार मनुष्य के अन्दर घण्टे, शंख आदि बज रहे हैं।

31 अगस्त की सुबह को हुजूर अमृतसर के अकाली लीडर मास्टर तारा सिंह से मिलने गए। मास्टर जी, खालसा कॉलेज से पहले स्थित मिशनरी कॉलेज में रहते हैं। बातचीत से सज्जन पुरुष प्रतीत होते हैं। कहने लगे कि सिक्ख पंथ में जो पार्टियाँ हैं वे तो मुसीबत के डर से ही आपस में एका करेंगी। उनमें मतभेद हो तो कोई बुरा नहीं। मतभेद तो रहना चाहिये लेकिन राजनीतिक दृष्टि से सब एक हो जाने चाहियें। मास्टर जी स्वयं तो निःस्वार्थ जाति-भक्त प्रतीत होते हैं, उनके विचार नेक हैं। जाति की सेवा बिना किसी पुरस्कार के करना चाहते हैं। उनका स्वास्थ्य बहुत अच्छा है। भगवान् करे उनको देश व जाति की सेवा करने के लिये बहुत-से अवसर मिलें।

वहाँ से वापस आकर शाम को पाँच बजे अमृतसर सत्संग-घर में हुजूरी वाणी में से :

गुरु क्यों न सम्हार। तेरा नर तन बीता भर्म में॥ दारा सुत परिवार। ठिगयन संग क्यों खोवही॥ मन है बड़ा गँवार। मोह रहा कर प्यार। छूटे कैसे जार से॥¹³

पढ़ा गया। इससे ऊँची शिक्षा मैंने नहीं देखी। मनुष्य को मन ने ही परमात्मा से दूर कर रखा है। उसने प्यार से मनुष्य को वश में कर रखा है। प्यार से स्वादों में फँसाता है। बिना पूर्ण गुरु के इसके भ्रमों से बचना सम्भव नहीं। गुरु साहिब फ़रमाते हैं कि जो मन कहे उसके विरुद्ध करो। इसी पर चलना कठिन है। जिसने यह कर लिया वह दुनिया से बाजी जीत गया।

2 सितम्बर रिववार को सुबह 8.30 बजे डेरे से कार में चल कर जंडियाला की नहर पर से होते हुए भुल्लर के रास्ते तरनतारन सुबह 10 बजे पहुँच गये। हुजूर का स्वागत किया गया। फिर सत्संग आरम्भ हुआ। हुजूरी वाणी में से 'जग में घोर अंधेरा भारी। तन में तम का भंडारा। 1 लिया गया। जग में अँधेरा इसिलये है कि जल में और थल में जीवों को जीव खा रहे हैं, और गुजारे का कोई ढंग नहीं रखा गया क्योंिक जितनी वनस्पित, मेवे और अनाज के दाने हैं उन सबमें रूह है। वेद-शास्त्रों में भी लिखा है कि रूहें सूर्य और चाँद की किरणों द्वारा सूक्ष्म मण्डल से इस भौतिक संसार में उतर कर फल, फूल, अनाज, घास-फूस आदि बनती हैं, जिन्हें लोग खा लेते हैं। रूहें अपने कर्मानुसार योनियों में आ जाती हैं। फिर चौरासी लाख के चक्कर में घूमती रहती हैं। जब उनकी मनुष्य-जन्म की बारी आती है तो प्राय: गाय आदि की योनि से मनुष्य योनि में आती हैं। जैसे कि मौलाना रूम

साहिब ने भी अपनी मसनवी में लिखा है कि पहले मैं जमादात (पत्थर और धातु) में आया, फिर नबातात (पेड़ पौधों) में, फिर हैवानात (पशुओं) में और फिर मनुष्य योनि में आया। जब मनुष्य बन गया तो अब अवसर है कि चौरासी लाख योनियों में से निकल जायें। वह कैसे हो सकता है ? किसी पूर्ण सतगुरु से सुरत-शब्द के अभ्यास की शिक्षा लेकर शब्द के सहारे जीते-जी रूहानी मण्डलों में पहुँच कर आत्मा मनुष्य शरीर में ही उच्च रूहानी मण्डलों पर चढ़ सकती है। जैसा कि शास्त्रों में लिखा है, 'जो ब्रह्मण्डे सोई पिण्डे 'मनुष्य का शरीर, आलमे सग़ीर, आलमे कबीर का नमूना है। अंग्रेज़ी में जिन्हें Macrocosm (ब्रह्माण्ड) व Microcosm (पिण्ड) कहते हैं। मगर शब्द को पकड़ने के लिये मन व इन्द्रियों को वश में करने की ज़रूरत है। इसलिये सब धार्मिक नेता, ऋषि-मुनि इस बात का उपदेश करते चले आए हैं कि इच्छाओं का दमन करो। इन्द्रियों को वश में करो, 'सम-दम' साधन अपनाओ। यदि मनुष्य ने ऐसा नहीं किया तो फिर मनुष्य-जन्म में जो-जो कर्म लोभ, मोह, काम, क्रोध के वश होकर करेगा वे चौरासी में या नरकों में अथवा स्वर्गों में भोगने पड़ेंगे। चौरासी का चक्कर फिर चल पड़ेगा। इसके बाद श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से गुरु नानक साहिब का शब्द 'बिख बोहिथा लादया दीआ समुंद मंझार' लिया गया, जोकि बड़ी उच्चकोटि की वाणी है। इसमें भी यही शिक्षा दी गई है कि प्रत्येक व्यक्ति पुण्य और पाप का माल लाद कर, संसार-सागर में बहा जा रहा है। न उसकी नाव के साथ मल्लाह है, न चप्पू। इसके अतिरिक्त समुद्र अथाह है जिसका कोई किनारा भी दिखाई नहीं देता। जिधर की हवा आई उधर ही नाव चल पड़ी। हजारों बल्कि लाखों वर्ष इसी प्रकार बहते हो गये। यदि कोई पहुँचा हुआ सन्त मिलता तो पार लगाता। सत्संग के बाद 4 बजे के क़रीब बारिश शुरू हो गई। इसलिये शाम का सत्संग 6 बजे शुरू हुआ। श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से गुरु अर्जुन साहिब का प्रसिद्ध शब्द 'पाठ पढ़यो अर बेद बीचारयो" और गुरु अमरदास जी का 'नामै ही ते सभ किछ होआ बिन सतगुरु नाम न जापै ¹⁷ लिये गए। फिर उसी रात 7 बजे चल कर 8 बजे वापस पहुँच गये। रास्ते में भी बारिश होती रही।

3 सितम्बर रिववार की शाम को हुजूरी वाणी में से यह शब्द लिया गया : गुरू की मौज रहो तुम धार। गुरू की रज़ा सम्हालो यार॥¹⁸ हुजूर ने फ़रमाया कि सेवक को गुरु की परीक्षा नहीं लेनी चाहिये। यदि अ, आ पढ़ने वाला एम. ए. पास मास्टर की परीक्षा ले तो वह मूर्ख है। इसी तरह मौलाना रूम साहिब ने फ़रमाया है:

शेख़ रा कि पेशवा व रहबर अस्त, गर मुरीद इम्तिहान कर्द ऊ ख़रास्त।"

मतलब यदि शिष्य गुरु का इम्तिहान ले तो वह मूर्ख है।

फिर हुजूर ने हजरत ख़िजर और मूसा की कहानी सुनाई जोिक मौलाना रूम की मसनवी में भी आई है और 'रसूमें हिन्द' में भी देखी थी कि किस प्रकार हजरत ख़िजर ने तीन कार्य ऐसे किये जो मूसा की समझ से बाहर थे।
पहले तो एक अनाथ की नाव को तोड़ डाला। दूसरे एक नेक व्यक्ति के इकलौते बेटे को मार डाला। तीसरे एक टूटी हुई दीवार को बिना पैसे के सारा दिन कीचड़ लगा-लगा कर खड़ा कर दिया। हुजूर ने फ़रमाया कि सन्तों के सामने जब कोई आता है तो उसका आदि से अन्त तक का सारा वृतान्त प्रत्यक्ष हो जाता है। इसलिये सन्त जो कुछ करते हैं उस पर इतराज नहीं करना चाहिये। ऐसे ही मौलाना रूम साहिब ने कहा है कि शिष्य के उत्पन्न होने से पूर्व ही गुरु को उसका हाल मालूम हो जाता है:

पेश अज जाइदने तू सालहा दीदा बाशिन्दत बचन्दे हालहा।

यानी तेरे पैदा होने से कई साल पहले से ही वे तेरा हाल जानते थे। जिला हजारा की एक माई गुलाबों की कहानी सुनाई कि उसकी अन्दर की आँखें खुली थीं। जब स्त्रियाँ उसके पास से निकलतीं तो पुकार उठती कि तूने अमुक बुरा कर्म किया है और तुम नरक में जाओगी आदि। यहाँ तक कि स्त्रियों ने उसके पास से निकलना छोड़ दिया। इसी प्रकार सन्तों को सेवकों के अच्छे-बुरे कर्मों का पता होता है। परनु वे परदा नहीं उठाते, इस आशा से कि आज नहीं तो कल सुधर जायेगा। यदि वे परदा उठाने लर्गे तो उनके पास कोई न आये। सेवक को चाहिये हर समय गुरु का धन्यवाद करे चाहे ग़रीबी आये या बीमारी, क्योंकि गुरु उसके पापों का कर्जा भुगतवा कर उसको साफ़-सुथरा करना चाहते हैं। यदि वे किसी पर नाराज होते हैं तो इसमें उनका अपना कोई मतलब नहीं होता बल्कि सेवक के लाभ के लिये ऐसा करते हैं। पूर्ण गुरु से मान-बड़ाई प्राप्त करने की

हुजूर ने शेर सिंह सवार की कहानी सुनाई कि किस प्रकार एक बनिये ने उसके दो हजार रुपये, जो उसके पास उसने जमा किये थे, उसके उत्तराधि-कारियों से छुपा कर हड़प लिए थे। अन्त में शेर सिंह ने उसके घर लड़का बन कर वह रुपया वसूल किया और वसूल करके जवानी में मर गया और बता गया कि मैं वहीं शेर सिंह हूँ। इसके बाद डॉक्टर साहिब ने अपने स्वर्गीय पुत्र सोहन की कहानी सुनाई कि जब वह पैदा हुआ तो हुजूर ने कहा कि इसके लिये पाँच हजार रुपया जमा करा दो। जब उसकी बड़ी बहन की शादी आदि के लिये रुपया जमा करने के विषय में पूछा तो हुज़ूर ने कहा कि उसकी शादी हम स्वयं कर देंगे। वह लड़की तो छोटी आयु में मर गई। जब सोहन भी ब्यास नदी में डूब कर मरा तो उसकी माँ बहुत रोई। हुजूर ने फ़रमाया कि फिर आ जायेगा। लेकिन वह रोती गई तो हुजूर ने फ़रमाया कि दो आ जायेंगे। डॉक्टर साहिब ने बताया कि सोहन की मृत्यु के बाद वह लुधियाना ज़िले में अयाली गाँव के एक ज्योतिषी के पास उसकी जन्म-पत्री बनवाने गए। उसने पाँच रुपये पेशगी लिये और पाँच रुपये बाद में लेने को कहा। शाम को जन्म-पत्री का फल बताने का वादा किया। जब शाम को डॉक्टर साहिब गये तो ज्योतिषी उन पर बड़े नाराज़ हुए और कहने लगे कि ये लो अपने रुपये और तुम चले जाओ। ये पत्री मुझसे नहीं बनती। जब डॉक्टर साहिब ने नरमी से पूछा तो कहा कि मरे हुए की पत्री बनवाते हो। सुनो तुम पहले जन्म में एक राजा के साईस थे और तुम्हारी यह पत्नी तीन जन्मों से तुम्हारी पत्नी है। (डॉक्टर साहिब के अनुसार हुजूर महाराज जी पहले जन्म में राजा थे) एक बनिए का लड़का पाँच हज़ार रुपया का सोना, चाँदी, रेशमी कपड़े आदि लेकर तीर्थ पर गया क्योंकि उसका बाप मरता हुआ उसको कह गया था कि मेरी जायदाद में से पाँच हजार रुपया तीर्थ पर जाकर मेरे नाम से दान-पुण्य कर देना। लेकिन तुमने और तुम्हारी पत्नी ने मिलकर उस पाँच हज़ार रुपये का सोना, चाँदी चुरा लिया और वह लड़का बहुत विलाप करने लगा। लोग इकट्ठे हो गये। तुम भी वहाँ गये तो तुम्हें दया आ गई। परन्तु तुम्हारी पत्नी ने चोरी का माल वापस नहीं देने दिया। इसलिये उस लड़के ने तुम्हारे घर जन्म लिया और उसकी मृत्यु तीर्थ पर हुई। तुम्हें उसकी मृत्यु पर सब्र आ गया। परन्तु तुम्हारी पत्नी ने जो निर्दयता की थी उसको सारी उम्र वह लड़का नहीं भूलेगा। हुजूर ने फ़रमाया कि न तो कोई किसी का बाप है, न बेटा। सब लेना-देना पूरा करने आये हैं। जीव का तो सतगुरु और शब्द है। उनके सिवाय उसका संसार में और कोई सम्बन्धी नहीं।

एक सत्संगी तेजा सिंह को मैंने देखा कि वर्षा के मौसम में ब्यास नदी के पास एक गुफ़ा के अन्दर बीमार पड़ा है। हुज़ूर उसकी ख़बर लेने गये। मैं भी साथ गया तो हुज़ूर ने फ़रमाया कि उसकी रूह बहुत दूर तक गई हुई है, वापस आना नहीं चाहती। मैं भी उसको इस आनन्द से बाहर लाना नहीं चाहता। जब आयेगी तो बात करेंगे। आज उसकी रूह बाहर शरीर में आ गई है तो उसने अपने अन्दर का सारा हाल बताया और कहा कि बारह वर्ष तक भजन-सिमरन में बड़ा परिश्रम किया लेकिन कोई रस नहीं आया। अब आया है।

एक सत्संगी के सवाल के जवाब में हुजूर ने बताया कि बाईं तरफ़ काल का जाल है। नरक, स्वर्ग, बैकुण्ठ आदि सब बाईं ओर हैं। उन लोकों में योगी मिलते हैं लेकिन उस से आगे रास्ता नहीं है। दाईं ओर बड़े-बड़े नगर हैं और उस ओर सुरत-शब्द के अध्यासी भी मिल जाते हैं। परन्तु सन्तों का रास्ता दोनों के मध्य में सुखमन यानी शाहरग में से है जो सीधा सतलोक को जाता है। दाईं ओर सन्त-महात्मा सैर के लिये आ जाते हैं।

कल दोपहर 11 बजे तार आया था कि रावलिपण्डी के असिस्टैण्ट डिप्टी कण्ट्रोलर, मिलिटरी अकाऊँटस, सरदार जोध सिंह साहिब का देहान्त लाहौर में हो गया। यहाँ उनके भाई सरदार कृपाल सिंह जी रहते हैं। सरदार साहब हुज़ूर के प्रेमी सत्संगी थे। कुछ दिनों से घायल और बीमार थे। मुझे तो पहले ही हुज़ूर के संकेतों से पता चलता था कि उनका चोला नहीं रहेगा। हुज़ूर ने तुरन्त कार की तैयारी का आदेश दिया। 12 बजे यहाँ से सीधे लाहौर को चल दिये। वहाँ दो-तीन बजे के क़रीब राम गली में सरदार साहिब के मकान पर पहुँचे। क्योंकि स्वर्गीय सरदार साहिब के पुत्रों की शाम के आठ बजे फ्रिंग्टियर मेल से रावलिपण्डी से आने की आशा थी, इसिलये मृतक–संस्कार में देर थी। हुज़ूर लाहौर सत्संग–घर, जो रावी रोड पर था, तशरीफ़ ले गये। वहाँ विश्राम किया।

6 सितम्बर 1944

हुजूर आठ बजे से कुछ पहले मरघट पहुँच गये। वहाँ अरथी भी आ पहुँची। वहाँ एक भाई बैठा हुआ श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से शब्द पढ़ रहा था, बीच में लाश रखी थी। आसपास लोग एकत्रित थे। दूर कई मुर्दे जल रहे थे। एक ओर साधु लोग रोटियाँ पका रहे थे। दूसरी तरफ़ एक छाबड़ी वाला चाय बेच रहा था। जो लोग मरघट में रहते हैं उनके लिये यह प्रतिदिन का कार्य हो जाता है। उनके लिये मुर्दों का आना, रोने-पीटने की आवाज़ें और मुर्दों का जलाया जाना मामूली-सी बात होती है, जिसका उनके दिल पर असर नहीं होता। वे अपनी रोटियाँ पका रहे थे, जैसे अपने घर में आराम से बैठे हों और कोई मरा ही नहीं। जो मुदें को जलाने आये थे, उनके लिये दुनिया अँधेरी हो रही थी। छाबड़ी वाला इस आशा से आया होगा कि यहाँ भी चाट के शौक़ीन मिल जायेंगे। पेट के लिये मनुष्य मरघट में भी रोजी ढूँढता है 'दुनिया है बहुरंगी बाबा'। दाह-संस्कार करके हुजूर 9 बजे के क़रीब लाहौर से वापस चल दिये। रात को सवा ग्यारह बजे डेरे पहुँच गये।

6 सितम्बर, 1944 - आज शाम को, जो नया अस्तबल बनाया गया है, उसके उद्घाटन का सत्संग उसके आँगन में किया और हलवे का प्रसाद बाँटा गया। पहले तो दरबारी दास ने भाई गुरदास जी की बाणी सुनाई:

जे गुरू सांग वरतदा सिक्ख सिदक़ ना हारे। जे पिर कहु घर हन्डण सत रखे नारे।।²⁰

इसके बाद हुजूर स्वामी जी के सार बचन छन्द-बन्द यानी हुजूरी वाणी में से 'गुरु चरन गिरह मेरे आये। भाग मेरे सोते दिये जगाये' पढ़ा गया। हुजूर ने व्याख्यान करते हुए फ़रमाया कि सतगुरु के चरण घर आने का अर्थ है कि जब सेवक अभ्यास करके तारा मण्डल, सूर्य, चाँद को पार करके सतगुरु के चरणों तक पहुँचता है तब उसका भाग्य जागता है। जब सतगुरु अपने सेवकों को ऊपर के लोकों में ले जाते हैं तो उन लोकों के हंस शर्मिन्दा होते हैं, क्योंकि पारब्रह्म में जो हंस हैं या उससे ऊपर के लोकों में जो हंस हैं वे उन्हीं लोकों की शोभा और रौनक़ के लिये हैं। वे अपने से ऊपर के लोकों में नहीं जा सकते। जो आत्माएँ इस नाशवान संसार में आकर सतगुरु के सहारे ऊपर चली जाती हैं उनको यह अधिकार है कि सतलोक से परे अनामी तक चली जायें। इसलिये यह कहा है कि गुरु के सेवकों को देखकर आकाश मण्डल के हंस शर्मिन्दा होते हैं। इसी प्रकार

ऋषि, मुनि, देवी, देवता भी उन आत्माओं को ऊपर के लोकों में जाता देखकर तरसते हैं कि काश, हमें भी मनुष्य शरीर मिलता तो हम भी सतगुरु से मिलकर, भजन-सिमरन करके उन देशों में जाते। सतगुरु के सेवकों का प्रकाशमय तेज देखकर ऋषि, मुनि, देवी, देवता ईर्घ्या करते हैं। सुरत-शब्द अभ्यास के बिना उन रूहानी देशों में जाना सम्भव नहीं। इसके बाद श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से 'सा धरती भई हरीआवली जित्थै मेरा सतगुरु बैठा आय 22 लिया गया।

एक सत्संगी ने भजन-सिमरन में मन न लगने की शिकायत की है। उसको यह जवाब हुजूर ने स्वयं लिखवाया, 'अन्तर में मन न लगने और अभ्यास में रस न आने के कई कारण हैं। पहले तो यह कि जब व्यक्ति अभ्यास में बैठे तो मन की चौकीदारी करे। यह सबसे ज़रूरी है कि मन बाहर न जाये। यदि बाहर जाये तो फिर वापस लाओ। फिर जाये तो फिर वापस लाओ। मन से वायदा करो कि मैंने एक या दो या तीन घण्टे भजन पर बैठना है। कोई बाहर का संकल्प नहीं लाना। यदि आये तो बाहर निकाल दो। इस प्रकार करने से, मन को अन्दर बैठने की आदत पड़ जायेगी। जब मन अन्दर बैठेगा तो रस आने लग जायेगा। कई बार ऐसा भी होता है कि मन में कोई फ़िक़र तथा चिन्ता हो तो भी मन को अभ्यास में रस नहीं आता। इसका इलाज केवल यही है कि हम मन को समझायें कि जब हम पैदा हुए , तो साथ प्रारब्ध लेकर आये हैं। उसमें कमी नहीं हो सकती। जो कुछ होना है सो होना है। उस चिन्ता वाले काम का इलाज कर दो लेकिन भजन के समय उसकी माला न फेरो। जब भजन से उठो उसका इलाज कर दो। यदि मन संसार में घूमता है तो फिर भजन में छ: घण्टे बैठो तो भी कोई लाभ नहीं। यदि लिखने-पढ़ने के अतिरिक्त आपको दिन के समय कोई सैर करने या बाहर जाने का मौक़ा मिले तो सिमरन करो। जब अवकाश मिले तो सिमरन करो। जब रात को सोओ तो सिमरन करते-करते सो जाओ। जब जागोगे तो ऐसा प्रतीत होगा कि सिमरन से उठे हो। इस प्रकार आदत डालने से जब भजन में बैठोगे, मन लग जायेगा। इस संसार में यदि कोई हमारा शत्रु है तो मन है। ग्रन्थ-पोथियों, वेद-शास्त्रों में जितने उपाय हैं, सब मन को वश में करने के हैं। गुरुवाणी पढ़कर देख लो। सो घबराओ नहीं, धीरे-धीरे करते चले जाओ। सिमरन में बहुत भारी शक्ति है। यदि सिमरन पूरा हो जाये तो चलती गाड़ी को खड़ी कर सकते हैं। किसी सत्संगी का यह सोचना कि दूसरे को नाम मिल जाये, बुरा नहीं। लेकिन प्रेम-प्यार से उसको समझाओ। यदि उसका मन करे तो नाम दिलाओ लेकिन प्यार से उसको समझाओ। यदि उसका मन करे तो नाम दिलाओ लेकिन जबरदस्ती नाम दिलाने से उसके कर्म अपने ऊपर लेने पड़ते हैं। यदि कोई सत्संगी मन में यह प्रार्थना करे कि अमुक व्यक्ति को नाम मिल जाये, परन्तु उसके कर्म ऐसे हैं कि मालिक उसको नाम नहीं देना चाहता तो उसकी प्रार्थना उसके कर्म ऐसे हैं कि मालिक उसको नाम नहीं देना चाहता तो उसकी प्रार्थना निष्फल होगी। परन्तु विचार बुरा नहीं, सम्बन्धी माने या न माने। सिमरन कभी नहीं छोड़ना चाहिये। यदि आयु भर भी परदा न खुले तो भी सिमरन न छोड़ो। सिमरन मुख्य वस्तु है। सिमरन के द्वारा ही प्राणी अन्दर जाता है।''

माता किशन कौर जी का चोला छोड़ना

7 सितम्बर, 1944 को शाम के सवा चार बजे माता जी (माता किशन कौर) ने लगभग पन्द्रह दिन बीमार रह कर सतलोक का रास्ता लिया। आपको संग्रहणी का रोग था। दिन-रात में बहुत-से दस्त आते थे जिससे 5 सितम्बर को, जब मैंने उनके अन्तिम दर्शन किये, इतनी दुर्बल हो गई थीं कि किसी को पहचान नहीं सकती थीं। बोलना तो कई दिनों से बन्द था। अन्त में 5 सितम्बर को उनकी आत्मा अन्दर चली गई। ऐसा लगता था जैसे बेहोश हो। उस रोज़ हुज़ूर महाराज जी ने उनको दर्शन दिये। वह हुज़ूर महाराज जी से तीन-चार दिन पहले से विनती कर रही थीं कि अब मुझे इस संसार से ले चलो। उस दिन हुजूर ने फ़रमाया कि अच्छा, अन्दर ध्यान करो। बस फिर अन्दर से ध्यान वापस नहीं आया। एक बीबी ने पूछा कि उनको इतना कष्ट क्यों हुआ ? तो फ़रमाया कि लोगों से मत्था टिकवाती थी। बड़ी सीधी-सादी हँसमुख स्त्री थीं। सारी संगत, बीबियों और भाइयों को अपने बच्चों की तरह समझती थीं। सबसे प्यार के साथ बर्ताव करती थीं, सब लोग भी उनकी प्रशंसा करते थे और सबको ही उनकी जुदाई से दु:ख हुआ। उनका कोई भी सुपुत्र अन्त समय उनके पास नहीं था। कारण यह था कि हुजूर नहीं चाहते थे कि उनके सुपुत्र अन्त समय उनके सामने हों और उनको उनसे अलग होने में कष्ट हो। जैसा कि कबीर साहिब ने फ़रमाया है :

कबीर मरना भला परदेश का, जा में संग न कोय। पड़े रहो मैदान में, बात न पूछे कोय।²³ देखने में तो यह बहुत बुरा लगता है लेकिन सन्त-महात्मा नहीं चाहते कि अन्त समय में सत्सींगयों को कोई सांसारिक बन्धन याद आये या उनके निकट-सम्बन्धी विलाप करते दिखाई दें, जिससे रूह को इस संसार से जाने में किठनाई हो। हुजूर ने उनके देहान्त के बाद अपने सुपुत्रों को तारें दे दीं। परन्तु उनके आने की प्रतीक्षा नहीं की बल्कि शाम को ही दाह-संस्कार कर दिया।

9 सितम्बर 1944 को दोपहर 11-12 बजे के क़रीब हुजूर के सुपुत्र सरदार हरबन्स सिंह पधारे। एक बजे हम स्वर्गीय माता जी के चौथे को गये। वहाँ जाकर देखा तो भस्म बहुत ही गर्म थी और अलग दिखाई देती थी। फ़ोटो लेने के बाद भस्म पर पानी की बाल्टियाँ गिराई गईं जिससे राख ठण्डी हो जाये। जब पानी डालते तो बुलबुले और शोर उठता जैसा कि बुझे चूने या सफ़ेदी के ढेले पर पानी डालने से होता है क्योंकि भस्म और नीचे की रेत बहुत गर्म हो गई थी। बहुत सारी पानी की बाल्टियाँ डालकर राख को ठण्डा करके फावड़ों से बाल्टियाँ भर कर पास ही ब्यास नदी में बहा दी गईं। हिन्दुओं की तरह भस्म में हाथ डाल ाकर हिड्डयाँ अलग-अलग चुन कर इकट्ठी नहीं की। हिन्दू लोग तो वह सब इसलिये करते हैं कि हिड्डयाँ गंगा नदी में डाल दी जायें। यह ढंग अच्छा प्रतीत होता है कि सारी राख हिंड्डयों समेत उसी समय किसी पास की नदी में डाल दी जाये। इस काम में एक घण्टा लग गया, यद्यपि वह स्थान डेरे से दूर नहीं था। जहाँ दाह-संस्कार किया गया था उस स्थान को इस प्रकार खुरच कर सब रेत नदी में डाल दी कि गड्डा हो गया, जिसको बाद में रेत से भर कर बराबर कर दिया गया। लोग अमृतसर और लाहौर से शोक मनाने के लिये आ रहे हैं। तारें भी आ रही हैं।

कल सत्संग में एक व्यक्ति ने सवाल किया कि महाराज जी भाग्य क्या वस्तु है ? हुजूर ने फ़रमाया कि जो अच्छे या बुरे कर्म हमने पिछले जन्मों में किये हैं वे इस जन्म में हमारे भाग्य बन गये। इसके अतिरिक्त सन्तों की दया भी कोई चीज़ है, जो भाग्य बदल देती है। एक बनिया था जो बड़ा सूद-ख़ोर, सूद पर सूद लेनेवाला था। किसी को सूद में से एक पाई भी नहीं छोड़ता था। एक बार फ़सल के अवसर पर एक क़र्ज़दार जाट उसको क़र्ज़ें का हिसाब करने और क़र्ज़ा चुकाने के इरादे से अपने गाँव में ले गया। बनिये ने ख़ूब सूद पर सूद लगाया और एक पाई भी नहीं छोड़ी। जाट मन ही मन बहुत क्रोधित हुआ।

बनिया रात को रहने के विचार से बिस्तरा साथ लाया था। जाट ने बिस्तरा उठाकर उसके घर पहुँचाने से इनकार कर दिया। बिस्तरा भारी था। गाँव में कोई उठाने वाला मिलता नहीं, बनिया हैरान व परेशान ख़ड़ा था। कोई सन्त-महात्मा वहाँ आये थे। उनको तरस आ गया तो कहा, लाला जी चलो बिस्तरा मैं छोड आता हूँ। लाला ने पूछा क्या मजदूरी लोगे ? तो महात्मा ने कहा मजदूरी तो कुछ नहीं लूँगा परन्तु या तो तुम भगवान् का कीर्तन मुझे सुनाना या मैं तुम्हें सुनाऊँगा, तुम्हें सुनना पड़ेगा। बनिये ने सोचा कि इससे सस्ता सौदा नहीं मिलेगा। यह बकता जायेगा, मैं हाँ-हाँ करता जाऊँगा। इस प्रकार महात्मा बिस्तरा उठाकर चल पड़े। रास्ते में हिर के गुण बिनये को सुनाते गये। बिनया हाँ-हाँ करता गया। जब निवास-स्थान पास आया तो महात्मा ने सोचा कि यह बनिया भी क्या याद करेगा, उससे कहने लगे कि लालाजी, तुम्हें दस-बारह दिन बाद मर जाना है। तुमने संसार में आकर कोई अच्छा कर्म नहीं किया। तुम्हें धर्मराज के सामने ले जाया जायेगा और तुम्हारे कर्मों का लेखा खोला जायेगा तो उसमें से केवल यही तीन-चार घड़ी, जो तुमने मेरे साथ बितायीं, तुम्हारे अच्छे कर्मीं में आयेंगी। तुमसे पूर्छेंगे कि तुम इसका बदला पहले लेना चाहते हो या नर्क भोग कर। तुम कहना: पहले दे दो और मुझे उस महात्मा के पास ले चलो। सो ऐसा ही हुआ। जब यमदूत उसको महात्मा के पास लाये तो उन्होंने कहा लाला तीन घड़ी के बाद तुम्हें यहाँ से हमारे पास आना है। जब तीन घड़ी बीत गईं तो लाला ने महात्मा से कहा कि अब मुझे जाना होगा। वे यमदूत मेरी प्रतीक्षा कर रहे हैं। इस पर महात्मा बोले, मत जाओ मेरे पास बैठे रहो, वे यहाँ नहीं आ सकते। यमदूत हैरान होकर धर्मराज के पास गये तो धर्मराज ने कहा:

जहं साधू गोबिन्द भजन कीरतन नानक नीत1 णा होँ णा तूं णह छुटह निकट न जाईओ दूत1²⁴

11 सितम्बर, 1944 शाम को श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से यह शब्द लिया गया :

> मन मैगल साकत देवाना। बनखंड माया मोह हैराना। इत उत जाहि काल के चापे। गुरमुख खोज लहै घर आपे। बिन गुर शबदै मन नहीं ठौरा। सिमरो राम नाम अत निरमल। अवर तिआगो हौंमैं कौरा। एह मन मुगध कहो क्यों रहसी। बिन समझे जम का दुख सहसी।

इसके बाद हुजूरी वाणी में से 'धुन सुन कर मन समझाई' शब्द लिया गया। हुजूर ने फ़रमाया कि मन पाँच तत्त्वों के सतोगुणी अंश से उत्पन्न होता है। आत्मा से बल पाकर आत्मा को ही दबाये बैठा है। जैसे कि सूर्य की परछाईं पानी के तालाब पर पड़ती है और तालाब से टकरा कर फिर एक दीवार पर पड़ती है। यदि तालाब का पानी साफ़ तथा निर्मल है तो सूर्य की परछाईं, जो दीवार पर पड़ेगी, वह भी निर्मल और साफ़ होगी। यदि तालाब का पानी हिल रहा हो यानी अस्थिर हो या गन्दा हो तो परछाईं भी धुँधली-सी होगी। वैसे ही यदि मन मैला है या चंचल है तो उसमें से सतगुरु का स्वरूप दिखाई नहीं देगा। इसलिये पहले परिश्रम करके मन को स्थिर करो, जिससे उसमें रूहानी दुनिया की परछाईं पड़े। साधु-महात्माओं का मन सदा एक ही अवस्था में रहता है। जैसे कि कहा है :

कभी मन रंग तरंग चढ़े, कभी चित चाहत है धन को। कभी तिरिया संग लुभावत है, कभी छोड़ चला बन को।

कल से स्वामी जी महाराज की वाणी में से बारहमाहा का पाठ शुरू से लिया गया। किसी व्यक्ति ने हुजूर से पूछा कि जो प्रसाद किसी को दिया जाता है क्या वह उसी को खाना चाहिये या किसी और को दे सकता है? हुजूर ने फ़रमाया कि जिसको प्रसाद दिया जाता है, यह दया तो उसी के लिये होती है। यदि वह अपनी दया दूसरों को दे दे तो उसकी मर्ज़ी, उनको लाभ होगा। स्वामी जी का बारहमाहा स्वयं मुक्ति प्राप्ति की एक पूर्ण शिक्षा है। पहले दो माह यानी आसाढ़ और सावन में सांसारिक लोगों की दशा बताई गई कि जब बच्चा माँ के गर्भ में होता है तो उसको सारे जन्मों की सोझी (ज्ञान) होती है, उस समय परमात्मा से यह पुकार करता है कि यदि तू मुझे इस क़ैदख़ाने से छुड़ा दे तो मैं स्वाँस-स्वाँस तेरा नाम जपूँगा। परन्तु ज्यों ही माँ के पेट से बाहर आया तो माया ने सबकुछ भुला दिया और वह अपने पूर्व जन्मों के संस्कारों के अनुसार बरतने लगता है। जन्म लेते ही दु:खों ने घेर लिया। कभी रोग है, कभी भूख-प्यास, बोल सकता नहीं, न ही अपना रोग किसी को बता सकता है। माँ-बाप हैरान हैं। रोग कुछ होता है, औषधि कुछ देते हैं। दर्द कान में है मगर जुलाब दे रहे हैं। दुगना कष्ट उत्पन्न हो गया। फिर ज़रा बड़ा हुआ तो यह खेलना चाहता है, परन्तु माँ-बाप इसको स्कूल में पढ़ाना चाहते हैं और मारते-पीटते हैं। जब इस दु:ख से थोड़ा आगे गया तो जवानी आ गई और काम की तंरगों ने बुरी दशा की। शादी हुई,

बच्चे हो गये तो खाने-कमाने की चिन्ता सताने लगी। दर-दर की ठोकरें खाने लगा। यदि पूर्व जन्मों के शुभ कर्मों के कारण धन मिल गया तो अच्छा है वरना कुंत्ते की-सी गति हो गई, दर-दर धन के लिये मारा-मारा फिरता है। गृहस्थी के ख़र्च पूरे ही नहीं होते। ज्यों-ज्यों आयु बढ़ती गई ख़र्च भी बढ़ते जाते हैं। स्त्री और बच्चे खाने-पीने को माँगते हैं। किसी लड़के की पढ़ाई की चिन्ता है तो किसी लड़की की शादी की चिन्ता। इस प्रकार बुढ़ापा आ गया। दुनिया के काम-काज में भगवान् को याद ही नहीं किया। जब मौत आ गई तो फ़रिश्ते खींचकर ले गये। हाँ, सतगुरु मिल गये, थोड़ी भजन-सिमरन की कमाई कर ली तो अन्त समय तो अच्छा हो गया। भादों के महीने में कहा है कि संसार को मलेरिया ज्वर हो गया है। मनुष्य को शारीरिक, मानसिक और रूहानी तीन प्रकार के कष्ट लगे हुए हैं। रूहानी कष्टों से अभिप्राय रूह का अन्तर में न जाना और सूक्ष्म देशों का भ्रमण न करना है। इन दु:खों से घबरा कर भिन्न-भिन्न लोग अलग-अलग उपाय करते हैं। कोई इन कष्टों के निवारण के लिये वेद-शास्त्र पढ़ता है, कोई जप, कोई तप, कोई संध्या गायत्री. कोई यज्ञ, कोई दान-पुण्य करता है। मगर ये सब उपाय मनुष्य को चौरासी लाख योनियों के आवागमन से नहीं छुड़ा सकते। इससे छुटकारा तो केवल सतगुरु से नाम लेकर नाम की कमाई द्वारा ही हो सकता है। नाम से मतलब उस नाम से नहीं जो पुस्तकों, वेदों, शास्त्रों और ग्रन्थों में आया है बल्कि उस नाम से है जिसकी महिमा सब धार्मिक पुस्तकें करती हैं। परन्तु नाम पुस्तकों में नहीं है, बल्कि प्रत्येक व्यक्ति के अन्दर है, जिसका भेद सन्त बतलाते हैं। जब तक वह नाम न मिले, चौरासी नहीं छूट सकती।

21 सितम्बर को सर कोलिन गरबेट साहिब हुजूर के दर्शनों को आये, वे भोपाल रियासत में वित्त मन्त्री होकर जा रहे हैं। वहाँ जंगल बहुत हैं। जंगलों में शेर भी ऐसे हैं जो कि रेल-गाड़ी या मोटर कार में टक्कर दे मारते हैं।

अध्याय 25 डलहौज़ी का दौरा माता किशन कौर जी के भोग की रस्म और राय साहिब हरनारायण जी की अन्तिम यात्रा हुज़ुर का डलहौज़ी का दौरा

23 सितम्बर को सुबह पाँच बजे मिलक राधा किशन, सरदार साहिब सरदार हरबन्स सिंह तथा मैं हुजूर के साथ डलहौजी को चल दिये। पहले नहरी पटरी के रास्ते जाने का विचार था परन्तु अँधेरा होने के कारण अमृतसर के रास्ते गये। सुबह साढ़े आठ बजे चक्की पर पहुँच गये। वहाँ दस मिनट ठहर कर, दोपहर के साढ़े बारह बजे डलहौजी आ पहुँचे। रास्ते में कोई विशेष घटना नहीं हुई। दुनेरे में गर्म-गर्म जलेबियाँ बन रही थीं। बड़े शहरों के लोग अच्छे किस्म की घी और खाँड प्रयोग में नहीं लाते। इसिलये हमने डलहौजी में खाने के लिये जलेबियाँ ख़रीद लीं। जब वहाँ पहुँचे तो बहुत ठण्ड थी। सबको भूख लगी हुई थी। सबने ख़ूब पेट भर कर भोजन किया। रात को हुजूर के सोने के कमरे में बातचीत करते रहे।

हुजूर ने फ़रमाया कि हुजूर बाबा जी महाराज के ज्योति-ज्योत समाने के बाद उन्होंने बहुत समय तक लोगों को नामदान नहीं दिया। हुजूर उस समय ऐबटाबाद के मिलिटरी वर्क्स में एस. डी. ओ. थे। एक बार हुजूर, चाचा जी महाराज के पास आगरा तशरीफ़ ले गये। वहाँ तीन-चार सप्ताह तक यही झगड़ा चलता रहा। चाचा जी हठ करते थे कि नामदान क्यों नहीं देते ? महाराज जी मना कर रहे थे कि यह बोझ मुझसे नहीं उठाया जाता। आप किसी साधु को यहाँ से भेज दीजिये। अन्त में चाचा जी महाराज ने कहा कि तुम हमें क्या समझते हो ? इस पर हुजूर ने उत्तर दिया कि आपको हुजूर स्वामी जी महाराज का छोटा भाई

समझता हूँ। क्योंकि बाबा जी महाराज का और आपका बहुत प्रेम था, इस कारण आपको बाबा जी महाराज का रूप समझता हूँ। इस पर हुजूर चाचा जी महाराज ने फ़रमाया कि बस, तुम्हें हमारा कहना मानना पड़ेगा, नामदान देना शुरू करो। हुजूर ने फ़रमाया कि नामदान देकर भी मेरा हृदय विचलित रहा और जब तक नाम दिये हुए सत्संगियों की सँभाल होती नहीं देख ली, तब तक चैन नहीं पड़ा।

फिर फ़रमाया कि वे एक बार बाबा ग़रीबदास जी के सत्संग के लिये, देहली जाकर कई दिनों तक उनके पास रहे। एक दिन प्रश्न किया कि सोलह दल कँवल कहाँ है ? बाबा जी ने अन्तर्ध्यान होकर फ़रमाया कि बेटा, पहले तो मैं इसके पास से होकर गुज़र जाया करता था, कभी ध्यान नहीं दिया था परन्तु अब देख लिया है। फिर बाबा रामबिहारी लाल की ओर देखकर फ़रमाया कि बच्चा, तुम्हारा सत्संग तो सिसकता-सिसकता चलेगा। असली धूम-धाम तो ब्यास में रहेगी। हुजूर ने फ़रमाया कि किसी इस्लामी पुस्तक में लिखा है कि 'जिक्ने क़लब सम सम है, जिक्ने जबान लक़ लक़ है।' परनु जिक्रे रूह शरीर और प्राण को शान्ति देनेवाला है। डलहौजी में, प्रतिदिन शाम को साढ़े चार बजे से लेकर साढ़े छ: बजे तक सत्संग होता है। परन्तु संगत अधिक नहीं होती क्योंकि लोग वापस चले गये हैं।

28 सितम्बर सुबह सात बजे हुज़ूर डलहौज़ी से चल कर बनीखेत के फ़ाटक पर, दो घण्टे के लगभग फ़ाटक खुलने की प्रतीक्षा करते रहे। हम लोग आसपास की पहाड़ियों में, जहाँ कि पानी के झरने वह रहे थे, शौच आदि के लिए चले गये। हुजूर मुलतान के वकील मलिक राधािकशन से, झरने के पुल के पार धूप में खड़े बातचीत करते रहे। फिर वहाँ से सवा नौ बजे चल कर, रास्ते में बकलोह के सत्संगियों को दर्शन देते हुए , पठानकोट से छ: मील इधर ठहर गये, क्योंकि कार में पैट्रोल समाप्त हो गया था। शायद डलहौज़ी के गैरिज में किसी ने तीन गैलन चोरी कर लिया हो। वहाँ से ड्राइवर को पैट्रोल लेने पठानकोट भेजा जिसमें करीब एक घण्टा लग गया। इसके बाद पठानकोट में संगत एकत्रित थी। वहाँ संगत को दर्शन देकर हुजूर दीनानगर आये। वहाँ एक अफ़सर से दस मिनट मिलकर गुरदासपुर में लाला ईश्वर दास वकील की कोठी पर ठहरे, क्योंकि वहाँ बहुत-सी संगत एकत्रित थी। वहाँ से बटाला मिस्त्रियों के वर्कशाप से पुर्जे ख़रीद कर, चार बजे अमृतसर सत्संग-घर आ पहुँचे। वहाँ हुजूर ने एक शब्द पढ़वा कर सत्संग किया। वहाँ से चल कर शाम को अँधेरा होने से पहले डेरे पहुँच गये। संगत दर्शनों को आ रही थी क्योंकि माताजी का भोग और मासिक सत्संग दोनों, 1 अक्तूबर की सुबह होने थे।

29-30 सितम्बर को दोनों समय सत्संग हुआ। एक समय के सत्संग में श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से पहली पातशाही का शब्द , जो मैंने आज से पूर्व कभी नहीं सुना था, लिया गया:

हर सा मीत नाही मैं कोई। जिन तन मन दीआ सुरत समोई। इस शब्द में आगे चल कर यह विषय आता है कि आत्मा योगी है, काया सुन्दर स्त्री है। जब समय आता है तो आत्मा शरीर को छोड़कर चली जाती है

माता किशन कौर जी के भोग की रस्म

1 अक्तूबर को माताजी के भोग की रस्म सम्पूर्ण हुई। नौ बजे सत्संग आरम्भ हुआ। पहले गुरु तेग़ बहादुर के श्लोक लिये गए , जोकि अनुपम वैराग्य से भरे हुए हैं। हुजूर ने स्पष्टता से उनकी व्याख्या की कि हमारे मन, माया में इतने फँस गये हैं कि माया के पदार्थों, विषय, विकारों, मोह, ममता तथा दुनिया के स्वादों को नहीं छोड़ते। जन्मों-जन्मों के पापों से हमारे मन काले हो गये हैं। इसलिये मन भगवान् के भजन-सिमरन की ओर नहीं आता। जब सिमरन करते हैं तो संसार की आशा, तृष्णा मन को खींचकर बाहर ले आती है। प्रत्येक योनि में मृत्यु के बाद जीव को धर्मराय की कचहरी में पेश किया जाता है। उसके बाद फिर दूसरी योनि में धकेल देते हैं। अत: दस नम्बरी बदमाश की तरह हथकड़ियाँ लगी रहती हैं और पेशियाँ होती रहती हैं। जब कोई रूह सतगुरु के उपदेश पर परिश्रम करके, ऊपर के मण्डलों को जाती दिखाई देती है तो उसको देखकर देवी-देवता तरसते हैं कि यदि हमें मनुष्य शरीर मिलता तो हम भी भजन-सिमरन करके, ऊँचे रूहानी मण्डलों को जाते क्योंकि देवी-देवता केवल अपने अच्छे कर्मानुसार, भोग-विलास में लीन हैं। उन लोकों में भजन-बन्दगी नहीं, केवल भोग-विलास हैं। परन्तु हम लोग ऐसे मूर्ख हैं कि देवी-देवताओं को पूजते हैं। भाव हाकिम होकर चपरासी को पूजते हैं। हुजूर ने अन्त में फ़रमाया कि जब हुजूर बाबाजी महाराज ने यह निश्चय कर लिया कि उनके बाद, मैं 346

6 अक्तूबर 1944

1 अक्तूबर 1944

कार्य करूँगा तो 1898-99 के लगभग मुझे आज्ञा दी कि अब गृहस्थ नहीं भोगना। इस पर उन्होंने मेरी धर्मपत्नी को बुलाकर पूछा कि तुम्हारी क्या इच्छा है ? उन्होंने उत्तर दिया कि मुझे सन्तोष है। मुझे गृहस्थ भोगने की इच्छा नहीं। उसके बाद पैंतालीस-छियालीस वर्ष का समय बीत गया। उन्होंने कभी मुझे पति भाव से नहीं देखा और न मैंने उन्हें पत्नी भाव से देखा। जबकि उस समय उनकी आयु पैंतीस-छत्तीस वर्ष की होगी। सारी आयु गुरु के हुक्म में रहीं। अपनी आयु के अन्तिम वर्षों में इस संसार से चले जाने की इच्छा करती रहीं। बल्कि हुजूर महाराज ने रोके रखा। हुजूर का विचार था कि अपने पोतों की शादियाँ देखकर जायें। अन्तर में बाबा जी महाराज से प्रार्थना करती थीं तो उत्तर मिलता था कि हमें कोई आपत्ति नहीं है परन्तु बाहर से पूछ लो। बाहर से हुजूर मना कर देते थे। अन्त में जाने से तीन-चार दिन पहले हुज़ूर से रुष्ट हो गईं कि मुझे जाने से क्यों रोकते हो। फिर हुजूर उनके पास पधारे और इजाजत दे दी। उस समय रूह अन्दर चली गई और अट्ठाईस घण्टे अन्दर रहकर, ज्योति-ज्योत समा गईं। बाहर नहीं आईं, बड़ी भाग्यवान स्त्री थीं। पति के हाथों में डेरे में परमात्मा के प्रेम-प्यार में चोला छोड़ा। इसके बाद सुपुत्रों की तरफ़ से सारी संगत को जो क़रीब बीस हज़ार होगी, बड़ा अच्छा भोजन कराया गया।

माता जी का भण्डारा, सिकन्दरपुर में 7 अक्तूबर को सुबह मनाया जाना निश्चित किया गया। इसलिये हुजूर डेरे से कार में, 4 अक्तूबर को आठ बजे रवाना हुए। लुधियाना तक कार में आये पर सिरसा तक जाने के लिये पेट्रोल नहीं था इसलिये लुधियाना में कार एक गैरिज में बन्द करके, शाम के साढ़े आठ बजे गाड़ी से हिसार के लिये रवाना हुए। साथ में ग्यारह अन्य व्यक्ति थे। लुधियाना पूरे ग्यारह बजे पहुँचे थे। पहले बीबी विद्यावती के यहाँ गवर्नमेण्ट हाई स्कूल के पास श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का भोग डालने की रस्म पूरी की गई। उसके बाद उसी पोथी में से एक शब्द लिया गया। फिर हुजूर बाबू बलवन्तराय वकील के मकान पर आराम करके चार बजे फिर बीबी जी के मकान पर सत्संग करने तशरीफ़ ले गये। वहाँ से साढ़े छ: बजे आकर दूध पीकर और लोगों को आँगन में दर्शन देकर हुजूर आठ बजे प्लेटफार्म पर पहुँच गये। सेकेंड क्लास का सारा डिब्बा, जिसमें केवल पाँच सीटें थीं, उनके और उनके साथियों के लिये रिज़र्व करवाया गया था। आशा के ख़िलाफ़ सेकेंड क्लास में यात्रियों की संख्या अधिक थी इसलिये बाक़ी लोगों को

दूसरे महिलाओं के डिब्बे में जगह लेनी पड़ी। संगत की भीड़ हुज़ूर की गाड़ी के दोनों तरफ़ बहुत थी। सारी रात बड़े आराम से यात्रा की।

सुबह सात बजे गाड़ी हिसार प्लेटफार्म पर पहुँची तो बाबू कुंजलाल वकील वहाँ उपस्थित थे। सामान ताँगों में लाद कर लारियों के अड्डे, जोकि नागौरी दरवाजे पर हैं, ले आये। वहाँ दो सीट लारी में बुक करवा कर, हुजूर को अगली सीट पर बैठा दिया गया, बाकी हम सब लोग उनके पीछे बैठ गये। लारी फ़तेहबाद में आधा घण्टा ठहर कर सिरसा से पाँच मील इधर केरे में, साढ़े ग्यारह बजे आ पहुँची। फ़तेहबाद में भी हुजूर के दर्शनों को सत्संगी स्त्री-पुरुष आये थे, कुछ पीने के लिये दूध भी लाये थे। पर हम सब हिसार से दूध पीकर आए थे, किसी को कोई ज़रूरत महसूस नहीं हुई। केरे आधा घण्टा ठहर कर, बारह बजे बकबोर्ड और ताँगों में बैठकर, सब हुजूरी मकान सिकन्दरपुर में आ गये। वहाँ सब ने स्नान किया, खाना खाया और सो रहे।

6 अक्तूबर की शाम महिमासिंहवाले की रागी-पार्टी ने शब्द-कीर्तन किया। इसके बाद हुजूर ने श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से सत्संग किया।

7 अक्तूबर की सुबह बहुत-से अतिथि मोगा, फ़िरोजपुर और जालन्धर आदि स्थानों से माता जी के भोग की रस्म पर उपस्थित होने के लिये पधारे। हुजूर शान्ति आश्रम के बाहर आँगन में, छाया में, कुर्सी पर बिराजमान हो गये और सब अतिथियों का स्वागत करते रहे। दोपहर के बारह बजे से अतिथियों को भोजन खिलाना शुरू हुआ और गरीबों को भी खाना बाँटा गया। आसपास के गाँवों के सिक्ख, मुसलमान, खत्री, बाह्मण, अरोड़े आये हुए थे। सबको तीन बजे तक भोजन खिलाते रहे।

शाम को पाँच बजे श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का भोग आरम्भ हुआ। भोग से पहले तीसरी पातशाही का शब्द 'जो तुध करणा सो कर पाया। भाणे विच को विरला आया पढ़वा कर हुजूर ने उसकी व्याख्या की कि बिना आन्तरिक रूहानी उन्नित किये, कोई भी परमात्मा की मौज पर राजी नहीं रह सकता। यह ऊँची और दुर्लभ पदवी है कि मनुष्य हर दशा में, उसकी रजा में ख़ुश रहे। चाहे उस पर निर्धनता, दु:ख, सुख और मृत्यु आ द टूट पड़ें तो भी परमात्मा का धन्यवाद करता रहे। यह पदवी रूहानी उन्नित के बिना, सम्भव नहीं है। इसके बाद भोग शुरू हुआ। पहले नवम् पातशाही का शब्द 'गुन गोबिंद गायो नहीं' लिया गया। इसके बाद राग माला पर 'सद' यानी गुरु अमर दास जी के देहान्त के समय, गुरु राम दास जी के गद्दी पर बैठने का हाल पढ़ा गया जिससे पता लगता था कि सुरत-शब्द अभ्यास के अतिरिक्त, जितने भी सांसारिक रीति-रिवाज थे, गुरु महाराज हिन्दू धर्म के अनुसार पूरा करते थे। अपने बाद गद्दी पर बैठने वालों को भी, इसी प्रकार रीति-रिवाजों पर चलने के लिये आदेश दे कर गये :

केसो गोपाल पंडित सदिहो हर हर कथा पढ़ह पुराण जीओ।

पिंड पतल किरया दीवा फुल हरसर पावए। सो गुरु साहिबान का मत आन्तिरक रूहानी चढ़ाई का था। वे बाहर के रीति-रिवाज या धर्मों में कोई परिवर्तन नहीं करना चाहते थे। जैसे कि आजकल हुजूर महाराज जी भी सब सेवकों को यही उपदेश फ़रमाते हैं कि अपने-अपने धर्म में रहते हुए , सुरत-शब्द का अभ्यास करते रहो। धर्म बदलने से भगवान नहीं मिलता। बल्कि रूहानी उन्नति व भगवान का मिलाप,

गुरु की सहायता से ही सम्भव है।

भोग के बाद हुजूर बाहर सैर के लिये तशरीफ़ ले गये तो बातचीत में हुजूर ने फ़रमाया कि मैं परमात्मा का धन्यवाद करता हूँ कि मेरी सन्तान कमाऊ और योग्य है। ख़ुद कमा कर खाती है। फिर साध-संगत की सेवा करती है। किसी के सामने हाथ नहीं फैलाती। न कोई अवगुण है, न शराब, न मांस, न ही झगड़ा करती है, जिसका पंजाब में, आम तौर पर देहात में, जमींदारों में रिवाज है। जो साधु अपनी कमाई करके लोगों को सदुपदेश देता है वहीं सच्चा साधु है वरना लोगों का खाकर भजन-बन्दगी नहीं होती। ऐसा साधु जिसके घर में रहता है उसको उसकी इच्छानुसार चलना पड़ता है। जो अपनी कमाई खाता है वह स्वतन्त्र होता है।

8 अक्तूबर को डेरे से तार आया कि राय साहिब बेसुध हैं, इसलिये हुजूर ने हुक्म दिया कि हम कल सुबह हिसार के रास्ते रवाना हो जायेंगे।

9 अक्तूबर की सुबह आठ बजे हुजूर ग्रेवाल मिल में, जोकि सड़क के पास है, आ गये। वहाँ से लारी पर सवार होकर, फ़तेहबाद में आधा घण्टा ठहर कर, दोपहर के साढ़े बारह बजे हिसार के रेलवे स्टेशन पर जा पहुँचे। वहाँ जो गाड़ी लुधियाना को जाती है, प्लेटफ़ार्म पर उपस्थित थी। उसमें सैकेंड क्लास के डिब्बे में हुजूर ने स्थान ले लिया और वहाँ हम सबने खाना खाया। डिब्बे में पाँच-छः व्यक्ति थे। हुजूर बीच वाली सीट पर लेट गये और जाखल जा पहुँचे। वहाँ हम सबने चाय आदि पी क्योंकि वहाँ गाड़ी एक घण्टा ठहरती है। परन्तु वहाँ दूध में खाँड की बजाय शक्कर मिली। वहाँ से चल कर रात के दस बजे लुधियाना आ पहुँचे। कार पहले से ही स्टेशन पर मौजूद थी। बाक़ी सत्संगी तो रात-भर वहीं रहे क्योंकि सारी रात कोई भी गाड़ी लुधियाना से डेरे को नहीं जाती। जो जाती है वह डेरे (ब्यास) नहीं ठहरती। यह रेलवे अधिकारियों की बेपरवाही का सबूत है। इसलिये हुजूर मोटर कार में सवार होकर रात के साढ़े बारह बजे डेरे आ पहुँचे। रात बड़ी अँधेरी थी। रास्ते में गड्डे और ट्रक आ-जा रहे थे। यदि मुझे नींद न आई होती तो यात्रा मनोरंजक थी। क्योंकि मैं पहली रात के ढाई बजे सुबह का जागा हुआ था, पहले तो भूख ने सताया, फिर नींद ने भूख को भगा दिया। डेरे आते ही दूध पीकर बिस्तर पर ऐसा सोया कि सुबह के सात बजे आँख खुली।

राय साहिब हरनारायण जी की बीमारी का हाल

राय साहिब की ऐसी दशा है कि वह बहकी-बहकी बातें करते हैं। उनका मानसिक सन्तुलन बीमारी व पेशाब के रुकने के कारण बिगड़ा हुआ है। हुजूर फ़रमाते हैं कि राय साहिब के सब संचित कर्म, जो जन्म-जन्मान्तरों के ब्रह्म में जमा रहते हैं, साफ़ करके ले जाना है और अब सब कर्म समाप्ति पर ही हैं। यह राय साहिब पर बड़ी दया है। जो लोग विचार करते हैं कि राय साहिब को कष्ट क्यों ? यह उनकी ग़लती है। यह तो दया है। जैसे शम्स तबरेज ने फ़रमाया है :

तू जे ख़वारी हाये हमें नाली नमें बीनी इनायत हा। मख्वाह अज हक इनायत हाय या कम कुन शिकायत हा।

ऐ अपने दु:खों पर रोने वाले, परमात्मा की दया को देख। या तो परमात्मा से दया न माँग या शिकायतें कम कर। ऐसे ही एक और स्थान पर अपने दीवान में फ़रमाया है कि लोग दरी को लाठियों से इसलिये पीटते हैं कि उसमें से धूल आदि निकल जाये।

10 अक्तूबर को डाक का बहुत-सा काम था। कई दिनों की डाक पड़ी थी। उसके बाद शाम को छ: बजे सत्संग हुआ। पहले तो स्वामी जी की वाणी में से दो शब्द लिये गए।

हंसनी क्यों पीवे तू पानी॥

दूसरा :

हंसनी छानो दूध और पानी है

यह संसार, इसके स्वाद और विषय-विकार पानी हैं और शब्द का रस दूध है। हंसनी यानी गुरुमुख रूह ही दुनिया के स्वादों को छोड़कर दूध पीती है। बाहरी इन्द्रियों को रोककर अन्दर जाती है। फिर सार बचन वार्तिक में से एक बचन लिया गया। हुजूर ने फ़रमाया कि जो सेवा सतगुरु को स्वीकार हो, वहीं सत्संगी को करनी चाहिये। मन-मत से की गई सेवा से सतगुरु प्रसन नहीं होते। कुछ सत्संगी कपड़ा आदि लाकर चाहते हैं कि गुरु उसको पहने या कोई फल या मिठाई सतगुरु को खिलाना चाहतें हैं। क्योंकि सतगुरु किसी सेवक का न तो खाना चाहते हैं और न ही पहनना, इसलिये यह सेवा ज्ञबरदस्ती की है। सतगुरु सत्संगी का मन रखने के लिये रख भी लें तो भी सेवा वही अच्छी है जो गुरु को भावे।

आजकल राय साहिब लाला हरनारायण जी, जिन्होंने अठारह वर्ष तक हुजूर के सेक्रेटरी के रूप में कार्य किया, बहुत बीमार हैं। उनका पेशाब बन्द हो जाता है यानी गुर्दे काम नहीं करते, जिसके लिये आज सुबह डॉक्टर ने उनको इंजेक्शन दिये, जिससे कुछ पेशाब आने लगा। फिर भी शरीर में यूरमिक नामक विष (Uremic poison) है, जिसके कारण कभी-कभी होश की बातें करते हैं और कभी बेहोशी की। हुजूर आज दिन में तीन बार उनको देखने गये। परन्तु राय साहिब ने रोज़ की तरह आज उनकी ओर ध्यान नहीं दिया क्योंकि उनको हुजूर के आने का पूरी तरह से पता नहीं लगा होगा। दोपहर में राय साहिब ने हुजूर से कहा कि बीबी (लड़की) की कौन सँभाल करेगा ? तो हुजूर ने फ़रमाया कि हम। फिर हुजूर ने उनके बाल-बच्चों को आदेश दिया कि राय साहिब का ध्यान मोह, ममता की ओर मत लाओ। उनको कहो कि बाल-बच्चों की चिन्ता मत करो बल्कि शब्द में सुरत जोड़ो। ऐसा न हो कि उनकी अट्ठारह वर्ष की सेवा इस अन्त समय में ख़राब हो जाये। आज शाम को भी हुजूर ने फ़रमाया कि शब्द में सुरत लगाओ। सुना है कि राय साहिब ने उत्तर दिया 'कहना आसान है'। सो राय साहिब को अन्दर से होश है परनु किसी से बातचीत नहीं करते। किसी-किसी बात का जवाब दे देते हैं।

आज एक पत्र गुरुमुखी में मुग़लपुरा या उसके पास के गाँव से आया है। जिसमें लिखा था कि सत्संगी के एक लड़के को हृदय का रोग था। हुजूर से प्रार्थना की गई। हुजूर ने फ़रमाया डॉक्टर से चिकित्सा कराओ। इस पर मुग़लपुरा में एक डॉक्टर से चिकित्सा करवाई तो वह ठीक हो गया। परनु गला बन्द हो गया। फिर डेरे में दर्शनों के लिये लाये। प्रार्थना की तो हुजूर ने फ़रमाया कि डॉक्टर से चिकित्सा कराओ। चिकित्सा से आराम हो गया परन्तु हिस्टिरिया हो गया। लोगों ने कहा कि लड़के में भूत आ गया है। इसलिये किसी खेलने-खिलाने वाले को बुलाकर लाये। लड़के को उसकी इच्छा के विरुद्ध खिलाया गया। परन्तु हुजूर ने उसको दर्शन देकर फ़रमाया कि मत खेलो। उसी डॉक्टर से चिकित्सा कराओ। इस पर उसी डॉक्टर से चिकित्सा करवाई तो आराम आ गया। अब पत्र में लिखा है कि आधे सिर का दर्द है। हुजूर ने उत्तर दिया कि यह कर्मों का खेल है। फिर चिकित्सा करवाओ।

हुजूर ने आज फ़रमाया कि राय साहिब को हुजूर स्वामी जी की वाणी सुनाओ। आज रात को फ़रमाया कि स्वामी जी की वाणी में से :

धाम अपने चलो भाई। पराये देश क्यो रहना॥⁷

तुम धुर से चल कर आये। अब क्यों ऐसी ढील लगाये।। 13 अक्तूबर की शाम श्री गुरु ग्रन्थ साहिब में से गुरु नानक देव जी का

शब्द लिया गया : मन मैगल साकत देवाना। बनखंड माया मोह हैराना। इत उत जाहि काल के चापे। गुरमुख खोज लहै घर आपे। बिन गुरु सबदै मन नहीं ठौरा। सिमरो राम नाम अत निरमल। अवर त्यागो हौमै कौरा।

यह शब्द जितना सुन्दर है उतना ही मन को लुभाने वाला है। इसमें वैराग्य और मन को निश्चल करने की ज़रूरत तथा उसका ढंग बताया गया है।

चुटकला- एक माई किसी साधु-महात्मा के पास गई। कहने लगी, सन्तों मैं तुम्हारे पाँव दबा दूँ। महात्मा बोले, अरी चरण कहा करते हैं। वह बोली, मुझ बेचारी को आग लगे, चरण भी कहने नहीं आते। इस पर सन्त जी गर्म होकर बोले, माई, ऐसा मत कहो, नरकों में जाओगी। तब माई बोली, सन्त जी, वह भी आप जैसे महात्माओं के भाग्य में है। हम ग़रीबों को कौन वहाँ ले जाता है।

आज 14 अक्तूबर शाम को श्री गुरु ग्रन्थ साहिब का भोग था। हुजूर ने व्याख्या करते हुए फ़रमाया कि महात्मा तो भला करते हैं। किसी का बुरा नहीं करते। परन्तु लोग अपनी अक्ल के कारण नुकसान उठाते हैं। एक व्यक्ति के सन्तान नहीं होती थी। किसी महात्मा की शरण में गया। महात्मा करते तो अपने ध्यान से हैं परन्तु कोई बहाना रख लेते हैं। महात्मा ने कहा भाई, यह तावीज रख लो और अपनी बीवी के गले में मढ़वा कर लटका दो। उस समय पहलवान दंगल कर रहे थे। महात्मा ने काग़ज़ पर लिख दिया 'छिंझ पई डेकॉं फुलियाँ । उसने काग़ज़ बिना पढ़े लपेटकर, मढ़वाकर, पत्नी के गले में डाल दिया। समय पाकर कई लड़के-लड़कियाँ उसके घर हो गये। महात्मा का श्रद्धालु बना रहा। दुर्भाग्य से एक मुन्तक़ी, जिसको पंजाबी में खरड़ ज्ञानी कहते हैं, वहाँ आ गया। महात्मा वहाँ से चले गए थे। कहने लगा कि हम नहीं मान सकते कि महात्मा तुझे सन्तान दे सकते है। तावीज़ दिखाओ। जब तावीज़ खोला तो वह लेख पढ़ा। मुन्तक़ी बहुत हँसा कि अरे, यह क्या मन्त्र है। यह सन्तान तो तुम्हारे भाग्य में थी। इसलिये हो गई। महात्मा ने क्या दिया। जब दोबारा महात्मा आया तो वह व्यक्ति, जिसके यहाँ सन्तान हुई थी, बोला महात्मा जी यह तो कोई मन्त्र न था। यह तो पाखण्ड था। इस पर महात्मा बोले कि अच्छा भाई डेकां फुलियाँ या न फुलियाँ। बस थोड़े दिनों में सारे बेटे-बेटियाँ मर गये और वह वैसे का वैसा ही हो गया।

आज मैंने उर्दू के एक समाचार-पत्र में पढ़ा है कि परमात्मा भिक्त से प्रसन्न होता है परन्तु जो जवानी व बचपन में भिक्त करता है उससे अधिक प्रसन्न होता है। परमात्मा दीनता और नम्रता से प्रसन्न होता है परन्तु जो धन-दौलत या पदवी पाकर नम्रता रखता है उससे अधिक प्रसन्न होता है । परमात्मा दान से ख़ुश होता है परन्तु जो ग़रीबी में दान करता है उससे अधिक प्रसन्न होता है। परमात्मा लालची और क्रोधी से रुष्ट होता है परन्तु जो धनवान होकर लालची हो उससे अधिक रुष्ट होता है। परमात्मा पापी से रुष्ट होता है परन्तु जो बुढ़ापे में पाप करे उससे अधिक रुष्ट होता है।

राय साहिब लाला हरनारायण जी की अन्तिम यात्रा

आज 17 अक्तूबर मगंलवार को कार्तिक़ सुदी एकम को, दीवाली के दसरे दिन दोपहर के बाद साढ़े तीन बजे, राय साहिब लाला हरनारायण जी ने चोला छोड़ा। वह सवा दो माह तक बीमार रहे। हृदय का रोग था। इस रोग में बहुत समय तक लेट नहीं सकते थे। बैठकर समय बिताते थे जैसे कि हृदय रोग में होता है। अन्तिम बारह दिनों में उनके गुर्दें कमज़ोर हो गये थे जिसके कारण पेशाब आना बन्द हो गया था। डॉक्टर इंजेक्शन देकर गुर्दे को उकसा कर पेशाब निकालते थे। जो पानी पीते, पेट में पड़ा रहता क्यों कि गुर्दे ख़ून को साफ़ नहीं करते थे। अन्तिम दस दिनों में सबने उनको चारपाई पर सिरहाने के सहारे, कुछ बेहोशी की-सी हालत में देखा। आज दो दिनों से पेशाब बन्द था। शरीर में जहर जमा हो गया था। आत्मा सचखण्ड की ओर चढ़ाई कर गई। कई अनजान पूछेंगे कि उन्होंने बीस वर्ष तक सत्संग की सेवा की फिर उनको इतना कष्ट क्यों उठाना पड़ा। हुजूर ने फरमाया कि उन्होंने इस जन्म में कोई पाप नहीं किया था जिसकी सजा उनको भुगतनी पड़ती। परन्तु हुजूर की इच्छा थी कि संचित कर्म, जो करोड़ो जन्मों से ब्रह्म देश में प्रत्येक जीव के एकत्रित होते रहते हैं, वे यहाँ इस जन्म में भुगत लें, जिससे दोबारा जन्म न हो और न ही ब्रह्म देश में वे कर्म काटने पड़ें।

राय साहिब की मौत के एक-दो दिन बाद सरदार काहन सिंह भण्डारी ने अपने घर जाकर, रावलपिण्डी में चोला छोड़ दिया।

> याराने रफ़्तगाँ को क्या रोइये 'मुसीबत', क्या हम रवाना सूये मुलके अदम न होंगे।10

उद्धरण

अध्याय 1

 सार बचन, 8:12
 म. 4, आदि ग्रन्थ, पृ. 1069 सार बचन 18:5
 म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 915 3. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1041 . 11. सार बचन, 18:9 4. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 641 12. म. 4, आदि ग्रन्थ, पृ. 725 4. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 641 12. म. 4, आदि श्रन्थ, पृ. 725 13. सार बचन, 10:10 5. सार बचन, 18:5 6. सार बचन, 8:1 14. म. 3, आदि ग्रन्थ, पृ. 755 8. सार बचन, 19:18 16. सार बचन, 9:1

अध्याय 2 1. सार बचन, 8 : 1

2. सार बचन, 18 : 5 7. कबीर साखी-संग्रह, पृ. 87

8. सार बचन, 19:13

9. सार बचन, 14:12

3. सार बचन 15:13

4. कबीर शब्दावली, भाग 1, पृ. 65

 4. कबीर शब्दावली, भाग 1, पृ. 65
 9. सार जप्प, मि. 12

 5. सन्तों की बानी, पृ. 275
 10. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 761

 अध्याय 3 म. ४, आदि ग्रन्थ, पृ. 1323
 म. ५, आदि ग्रन्थ, पृ. 1077

 2. म. 9, आदि ग्रन्थ, पृ. 1426
 14. म. 4, आदि ग्रन्थ, पृ. 1323

 3. सार बचन, 18:5
 15. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1042

 3. सार बचन, 18:5 16. सन्तों की बानी, पृ. 251 4. सार बचन, 5:4 म. 3, आदि ग्रन्थ, पृ. 754
 सार बचन, 18:5 6. सार बचन, 16:1 18. म. ४, आदि ग्रन्थ, पृ. 725 7. सार बचन, 14: 12 19. म. १, आदि ग्रन्थ, पृ. 1427 8. म. ४, आदि ग्रन्थ, पृ. 1323 20. म. ४, आदि ग्रन्थ, पृ. 1323

 9. सार बचन, 18:5
 21. सार बचन, 8:17

 10. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 915
 22. म. 3, आदि ग्रन्थ, पृ. 116

25-26. सार बचन, 7:1

27. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1171

अध्याय 4 1. उत्तररामचिरत, छठा अंक 9. प्राप्त नहीं 2-3. सार बचन 10 : 1 10-11. सार बचन, 16:1 12. सार बचन, 18:5 4. कबीर, आदि ग्रन्थ, पृ. 340 5. म. १, आदि ग्रन्थ, पृ. ११७१ 13. म. ४, आदि ग्रन्थ, पृ. 757 6. म. ४, आदि ग्रन्थ, पृ. ११७९ 14. सार बचन, 18:5:15 15. सार बचन, 8 : 13 7. प्राप्त नहीं 16. म. ५, आदि ग्रन्थ, पृ. 864 प्राप्त नहीं

अध्याय 5 सार बचन, 18:5
 कबीर, आदि ग्रन्थ, पृ. 1365 17. म. १, आदि ग्रन्थ, पृ. १०४१ 2. म. ५, आदि ग्रन्थ, पृ. 915 18-19. भाई बनूं दी बीड़, पृ. 628 3. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 641 20. तुलसी शब्दावली, भाग 2, पृ. 42 4. सार बचन, 15:11 5. म. १, आदि ग्रन्थ, पृ. 1426 21. प्राप्त नहीं 6. सार बचन, 19:18 22. सार बचन, 19:9 7. म. 4, आदि ग्रन्थ, पृ. 923 23. सार बचन, 14:12 8. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 747 24. सार बचन, 8:1 25. सार बचन, 10:1 9. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 1075 10. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 466 26. म. ३, आदि ग्रन्थ, पृ. 754 27. म. ४, आदि ग्रन्थ, पृ. ४० 11. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 465

12.	म. ३, आदि ग्रन्थ, पृ. ३४	28. 4. 5, जापि अन्य, रू. 1019
13.	म. ४, आदि ग्रन्थ, पृ. 725	29. मानस 2:90:4
14.	सार बचन, 41:1	30. म. १, आदि ग्रन्थ, पृ. 1426
15.	कबीर शब्दावली, भाग 1, पृ. 65	31. प्राप्त नहीं
	अध्य	गय 6
1.	सार बचन, 9:9	7. गुरु नानक देव जी
2.	सार बचन, 16:1	8. म.1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1171
3.	सार बचन 14 :12	9. कबीर, आदि ग्रन्थ, पृ. 340
4.	कबीर साखी-संग्रह, पृ. 87	10. घट रामायण, पृ. 8
5.	सार बचन, 10:1	11. पलटू साहिब की बानी, भाग 1, पृ. 67
6.	कबीर शब्दावली, भाग 1, पृ. 65	12-14. घट रामायण, भाग 1, पृ. 1

11. सार बचन, 8:11 23. म. ४, आदि ग्रन्थ, पृ. 1323 12. सार बचन, 16:1 24. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1290

अध्याय 7

1. सार बचन, 14:12 2. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 641

3. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 472

4. सार बचन, 18:5

5. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 810

6. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 906

7. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 915

8. सार बचन, 8:1

9. सार बचन, 8:17

10. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1009

11. म. ३, आदि ग्रन्थ, पृ. 124

12. सार बचन, 5:4

13. सार बचन, 5: 4-10

14. सार बचन, 1 : 2 15. म. १, आदि ग्रन्थ, पृ. ३

16. म. ३, आदि ग्रन्थ, पृ. 1045

17. म. ४, आदि ग्रन्थ, पृ. ९१

18. सार बचन, 11:1

19. म. ५, आदि ग्रन्थ, पृ. ८११

20. सार बचन, 27:6

21. सार बचन, 18:5

22. भाई गुरुदास दीयां बारां 35:20

23. तुलसी साहिब की शब्दावली, भाग 1, पृ. 25

24. रामचरितमानस 1.1.3

25. सार बचन 17 : 1

अध्याय 8

1. सार बचन 18:8 2-5. कबीर साहिब की शब्दावली, पृ. 65

6. कबीर, आदि ग्रन्थ, पृ. 340

7-9. कबीर साहिब की शब्दावली, पृ. 73

10. प्राप्त नहीं

11. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 641

12. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 1074

13. कबीर, आदि ग्रन्थ, पृ. 332

14. सार बचन, 14: 12

15. म. १, आदि ग्रन्थ, पृ. ४७२

16. प्राप्त नहीं 17. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 1072

18. प्राप्त नहीं 19. तुलसी साहिब

20. गुरु नानक देव जी

21. पलटू साहिब की बानी, भाग 1, पृ. 70 44. म. 3, आदि ग्रन्थ, पृ. 754

22. जन्मसाखी भाई बाला, पृ. 261

23-26. प्राप्त नहीं

27. घट रामायण, भाग 1, पृ. 56

28. प्राप्त नहीं

29. पलटू साहिब की बानी, भाग 1, पृ. 64

30. प्राप्त नहीं

31. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 802

32-33. प्राप्त नहीं

34. गुरु अमरदास, आदि ग्रन्थ, पृ. 917

35-36. प्राप्त नहीं

37. पलटू साहिब की बानी, भाग 1, पृ. 23

38. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1009

39. सार बचन, 9 : 1

40. कबीर साखी-संग्रह, पृ. 49

41. प्राप्त नहीं

42. म. ४, आदि ग्रन्थ, पृ. 725

43. कबीर साखी-संग्रह, पृ. 61

45. म. 4, आदि ग्रन्थ, पृ. 1323 46. म. ३, आदि ग्रन्थ, पृ. 1045 48. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 249 49. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 1209 50. म. ४, आदि ग्रन्थ, पृ. 757 51. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 1094

47. सार बचन, 19: 16

52. म. 3, आदि ग्रन्थ, पृ. 124 53. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 641

54. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1038

55-57. आदि ग्रन्थ, पृ. 1039

58. रतन सागर, पृ. 78

59. प्राप्त नहीं

64. सार बचन, 9:1 65. सार बचन, 9:1:4

. 60. म. 3, आदि ग्रन्थ, पृ. 1063

63. म. 3, आदि ग्रन्थ, पृ. 1045

66. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 939

61. कबीर शब्दावली, भाग 1, पृ. 65

62. कबीर साखी संग्रह, पृ. 165

67. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 940

68. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 463

69. सार बचन, 10:1

अध्याय १

1. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 1077

2. सार बचन, 18:5

4. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 557

5. नामदेव, आदि ग्रन्थ,पृ. 1164

6. म. ४, आदि ग्रन्थ, पृ. ३१०

8. म. ४. आदि ग्रन्थ, पृ. ४५०

10. सार बचन, 38:3:11 11. म. ४, आदि ग्रन्थ, पृ. 725

म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 256
 म. 4, आदि ग्रन्थ, पृ. 726

13. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 256

13. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 43

15. सार बचन, 9:5

7. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 12 16. **म. 1, आदि ग्रन्थ**, पृ. 931

17. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 1075

9. म. ३, आदि ग्रन्थ, पृ. ७५५ । १८-१९. म. १, आदि ग्रन्थ, पृ. १०४१

अध्याय 10

1-6. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 73 7-12. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 74

13. सार बचन, 10:1

14. म. ४, आदि ग्रन्थ, पृ. 1323 27. सार बचन, 33: 21

15. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 678 16. म. 3, आदि ग्रन्थ, पृ. 754

17-18. प्राप्त नहीं

20. सार बचन, 8 :1

22-25. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1015

26. सार बचन, 18:5

28. सार बचन, 27:1 29. म. ४, आदि ग्रन्थ, पृ. 758

30. कबीर शब्दावली, भाग 1, पृ. 50

19. म. 3, आदि ग्रन्थ, पृ. 755 31. कबीर शब्दावली, भाग 2, पृ. 52

अध्याय 11 म. ३, आदि ग्रन्थ, पृ. ७५४ 9. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1273 10. म. ३, आदि ग्रन्थ, पृ. 1064 म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 745 11. म. ३, आदि ग्रन्थ, पृ. 1065 12. म. ३, आदि ग्रन्थ, पृ. 1290 सार बचन, 8:11 12. म. ३, आदि ग्रन्थ, पृ. 1290 13. प्राप्त नहीं 14. सार बचन, 18:5 सार बचन, 41:1 प्राप्त नहीं सहजोबाई की बानी, पृ. 3 प्राप्त नही कबीर शब्दावली, भाग 1, पृ. 13 , भाग 1, पू. 13 अध्याय 12

1. सार बचन, 2 : सिफ़त 4 4. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 561 5. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 102 म. 2, आदि ग्रन्थ, पृ. 139
 म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1026 अध्याय 13

 म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 915
 सार बचन, 18: 12 6. म. ३, आदि ग्रन्थ, पृ. १०५७ 2. सार बचन, 19:13 3. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1041 7. सार बचन, 19: 18 4. सार बचन, 18:5 8. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1009 अध्याय 14

1. सार बचन, 10 : 1

अध्याय 15 1. सार बचन, 5:4 6. म. ४, आदि ग्रन्थ, पृ. 725 2. म. ३, आदि ग्रन्थ, पृ. ७५५ 7. सार बचन, 9:9 3. सार बचन, 14:12 8-9. सार बचन, 9:1 4. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1009 10. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1033 5. कबीर शब्दावली, भाग 1, पृ. 65

अध्याय 17

1. सार बचन, 10:1 3. आदि ग्रन्थ, पृ. 536 2. बाईबल जॉन, 1:1 4. सार बचन; 14:12

 म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1009
 म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 686 6. सार बचन, 16:1

अध्याय 18

 सार बचन, 38 : मास 9
 कबीर शब्दावली, भाग 1, पृ. 65

 2. सार बचन, 38 : मास 9 : 15
 11. सार बचन, 14 : 12

 3-6. प्राप्त नहीं
 12. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1009

 12. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1009 7. सार बचन, 38 : मास 7 : 25 13. सार बचन, 16 : 1 8. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 612 14. सार बचन, 16:1:29, 41-42 9. प्राप्त नहीं

अध्याय 19

6. प्राप्त नहीं 1. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 678 2. म. ५, आदि ग्रन्थ, पृ. ७४७ 7. म. ५, आदि ग्रन्थ, पृ. १०१९ 8. कबीर शब्दावली, भाग 1, पृ. 13 3. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 393
 4. म. १, आदि ग्रन्थ, पृ. २११

 9. प्राप्त नहीं
 10. कबीर शब्दावली, भाग 1, पृ. 65 5. सार बचन, 8:1

अध्याय 20

14. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 43 सार बचन, 14: 12
 म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1009 15. सार बचन, 10:1

 3. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 1019
 16. म. 3, आदि ग्रन्थ, पृ. 753

 4. म. 3, आदि ग्रन्थ, पृ. 116
 17. रामचिरतमानस 3. 4. 4

 18. सार बचन, 14:12 5. सार बचन, 10 :1 19. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1009 6. म. ४, आदि ग्रन्थ, पृ. ४० 20. सार बचन, 10:1 7. सार बचन, 10:1 21. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1041 8. कबीर शब्दावली, भाग 1, पृ. 65 22. कबीर शब्दावली, भाग 1, पृ. 65 9. सार बचन, 18:5 10. सार बचन, 15: 16 23. सार चचन, 15: 16 24. प्राप्त नहीं 11. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1041 25. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1009 12. सार बचन, 14:12 13. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1009

अध्याय 21 म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 461
 सार बचन, 18:8

 2. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 678
 9. सार बचन, 8:17

 3. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 598
 10. सार बचन, 19:2

 9. सार बचन, 8:17 11. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 1208 4. सार बचन, 6:7 12. म. ३, आदि ग्रन्थ, पृ. 923 5. सार बचन, 14:12 13. कबीर, आदि ग्रन्थ, पृ. 1365 6. म. १, आदि ग्रन्थ, पृ. १००९ 14. सार बचन, 20: 10

7. म. ३, आदि ग्रन्थ, पृ. ९१०

अध्याय 22 1. संतबानी संग्रह, भाग 1, पृ. 219 6. म. ३, आदि ग्रन्थ, पृ. 124 2. घट रामायण, भाग 1, पृ. 9 7. सन्तों की बानी, पृ. 275 8. सार बचन, 21, ग़ज़ल 3 3. म. 3, आदि ग्रन्थ, पृ. 1044 9. कबीर शब्दावली, भाग 1, पृ. 65 4. सार बचन, 16:1 5. सार बचन, 14:12 अध्याय 23

8. म. ३, आदि ग्रन्थ, पृ. १०५७ 1. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 557 9. म. ३, आदि ग्रन्थ, पृ. 124 11. कबीर शब्दावली, भाग 1, पृ. 59 12. कबीर शब्दावली, भाग 1, पृ. 70 5. कबीर शब्दावली, भाग 1, पृ. 65 13. कबीर साखी-संग्रह, पृ. 87 6. ऋग्वेद 10:90:1 7. ऋग्वेद 10 : 121 : 1 असे हा ... १००१ हा माराजीका है में इ

अध्याय 24 10. 18:66 1. म. ३, आदि ग्रन्थ, पृ. १०५७ 11. सार बचन, 8:13:7 2. म. ३, आदि ग्रन्थ, पृ. १०५८ 3. सार बचन, 16:1 12. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 73 13. सार बचन, 19:16:1-4 4. म. ४, आदि ग्रन्थ, पृ. 1324 5. सार बचन, 20:5 14. सार बचन, 14: 12 6. सार बचन, 5:4 15. म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1009 7. शम्स तबरेज 16. म. 5, आदि ग्रन्थ, पृ. 641 8. म. १, आदि ग्रन्थ, पृ. १०४२ 17. म. ३, आदि ग्रन्थ, पृ. ७५३ 9. सार बचन, 8:13 18. सार बचन, 18:8

19. मौलाना रूम 20. भाई गुरदास 35: 20 25. म. 1 अपनि ग्रन्थ, पृ. 256 21. सार बचन, 28:5 26. सार बचन, 9:9 22. म. ४, आदि ग्रन्थ, पृ. ३१० 27. प्राप्त नहीं 23. कबीर साहिब

अध्याय 25 म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 1027
 सार बचन, 20: 20 2. म. ३, आदि ग्रन्थ, पृ. 1063 7. सार बचन, 19: 18 3. म. १, आदि ग्रन्थ, पृ. 1426 8. सार बचन, 33:10 4. सुंदर, आदि ग्रन्थ, पृ. 923 9-10. प्राप्त नहीं सार बचन, 20: 19
 म. 1, आदि ग्रन्थ, पृ. 415

The several state of the several state of the several state of the several state of the several severa

अनुक्रमणिका

अंजन माहे निरंजन 152 'अंश', 'बंस' से अभिप्राय 188 अनुराग सागर 10, 194-98 अन्तर में काल की आवाज 53-54 गुरु नानक साहिब के दर्शन 112-113 अभ्यास करने का ढंग 73-74, 102, 275 करामातें, ऋद्भियाँ-सिद्धियाँ 63 -में तारा दिखाई देना 13, 153 --मन न लगने का कारण 337, 345 अभ्यासी की सफलता कैसे 108 'अमृत' से अभिप्राय 90 अवगुणों को दूर करने के तरीक़े 138 अवतार भी कर्मों के अधीन 105, 135 अवतारों का उद्देश्य 172 अष्ट-दल कमल 21, 102 आत्म-परमात्म से अभिप्राय 130 आत्महत्या से सीधा नरक 171 आत्माओं को बुलाना 134-35 आत्मा की अवस्था 139, 142, 279, 331 गुरु अन्तर में प्रकट कब? 14 -की चार चालें 119 -पवित्र कैसे 14, 142 -पारब्रह्म में जाने के काबिल कब 240 -माता के गर्भ में कैसे? 127 आत्मिक शक्तियों से बीमारियों का इलाज --की जिम्मेदारी 215, 305 24, 29, 100 'आदि निरंजन' से अभिप्राय 93 आवागमन का कारण 131,178, 261 इंजील 89-90, 152 इन्द्रियाँ निर्मल कैसे? 64 -सांसारिक सम्बन्धों का कारण 91 ऋग्वेद 86, 325 कर्मकाण्ड और मुक्ति 276, 342

कर्म : दयाल, काल के 190 -सबसे बुरा 307 -सिद्धान्त 19, 103-05, 152, 265, 270, 298, 307, 334-35 करनी 141-42 कलयुग में मुक्ति का साधन 74 काम आठ प्रकार का 161, 189 काल 165, 171, 187, 192, 197, 220-21 -और दयाल में भेद 194, 302, 320 -का धोखा 151, 302 -के तीन वर 142, 262 'काहु न जानी शब्द की रीता' 68 क्रिया-कर्म असली 63 करान मजीद 24, 130-31 गरुड पुराण 282 गीता 93, 104, 165, 269, 272, 307, 330 -अपूर्ण का सेवक 171 -अमरदास जी का 'सद' 107, 348 -का प्रत्येक सत्संगी से निजी सम्बन्ध 138 -किसे कहते हैं? 154 --ताक़त 76 --निन्दा 209 --पहचान 266-67 --महिमा 135, 210 --**शरण** 152, 307, 330 --सेवकों को सहायता 30, 53-54, 76, 99, 100, 106, 212, 263 -के चोला छोड़ने के बाद 67, 321-22

--बिना की गई भिक्त 175, 196, 275 ज्योतिष विद्या 154, 219-20 -केवल शरीर नहीं 67, 98, 208 –चरनन आशिक होना का अर्थ 81 -जीवित की जरूरत 89, 93, 155, 168 -द्वारा कमाया गया नाम पारस 196 -दो प्रकार के 192 -पर भरोसा 30, 143, 261, 277 -परमात्मा, शब्द एक ही 268 -भिक्त 48, 120, 137 -भक्तों के वचन नहीं टालते 163 गुरुमत 49, 133, 329 गुरुमुख 93, 108, 186, 240 गुरुमुखों का आपसी प्रेम 178 गुरु मौत को भी टाल सकते हैं 304 -रामदास जी का गुरु के प्रति प्रेम 25

-शब्द ब्रह्म तक अलग-अलग 128 -से गुस्सा 159 गृहस्थ और त्याग 75, 77 गैर-सत्संगियों के साथ सतगृरु 60 ग्रन्थ साहिब में मांस खाने की मनाही 288 -फ़ोटो, मूर्तियों का 101, 257, 276 ग्रहों का प्रभाव भजन सिमरन से कम 154 नम्रता 75

चौरासी लाख योनियाँ 92, 197 जपजी 134 जानवरों में आपसी शत्रुता क्यों? 71 जालन्धर का सत्संग घर 129-130 जीव की अवस्था 62, 131, 211, 280, 332, 341-42 -सतनाम की अंश, ब्रह्म की नहीं 171 -हत्या का पाप 155

क्षर, अक्षर का अर्थ 68 -के साथ कैसा वर्ताव? 138 तक़दीर, तदबीर में से कौन बड़ा? 119 तस्वीरें पूर्व के महात्माओं की 102 तीसरा तिल 21 त्रिलोकी 52 अक्षरों में 68, 76, 151 थेहड़ी रसूलपुर 87, 218, 26 दया तीन प्रकार की 138-39 दर्शन प्रेम-भाव से 52 -पूरे के लक्ष्ण 251, 263, 267, 329 दान-पुण्य 66, 211, 252, 272 दु:ख प्रभु की दया 273-74, 349 दुनियादारी की बातें 73, 218, 236, 250-51, 278 देवी-देवता 53, 135, 154, 197, 215, 230, 236, 295, 312, 337, 345 धन्ना द्वारा त्रिलोचन को ज्ञान 258-59 धर्म और रूहानियत 155, 250, 348 -रूह को जबरदस्ती क्यों नहीं खींचते 75, -ग्रन्थ 53, 130, 196, 223 142-43 धर्मराज, यमदूतों से छुटकारा 152 धर्म स्थान 111 ध्यान की विभिन्न मुद्राएँ 160, 165 -गुरु के स्वरूप का 20, 73-74, 78, 101, 243, 296, 306 घट रामायण 121, 192-194, 276, 313, नरक, स्वर्ग 173, 335 नाम का बीज 143 -की लज़्ज़त 161, 169, 211-12

-िकसी को ज़बरदस्ती दिलाना 338

-वर्णात्मक, धुनात्मक 175, 249

-श्रेष्ठ कर्मों से 61

निन्दा 279

-लेते ही शब्द का अनुभव 101, 322

-सच्चा 144, 223, 284-85, 293, 342

नीम के वृक्षों का उद्धार 118 भिवत सागर 159, 189 परीक्षा के वक़्त बिरला ही पास 143 भजन सिमरन और सांसारिक दु:ख 137 पशु भी मनुष्य श्रेणी में शामिल 67 पाँच पठान और गुरु की दया 254-55 --न बनने का कारण 209 पाण्डव चार नरक में 194 --पिछले जन्म में किया गया 268-69 पाप नाश करने का उपाय 19 --से बीमारी में दया 277 पारब्रह्म 61, 68, 95, 128, 240, 296 भाणा मानना 99, 149, 301, 333, 347 -में दो अक्षर 68, 76, 119 भूत-प्रेत, जादू दूने 30, 135, 294, 301 पूजा मूर्तियों, देवी-देवताओं की 65, 173, भ्रम-चक्कर से मुक्ति 181 193-94, 256-59, 271, 294 मांस खाने से मनाही क्यों ? 41, 288 प्रभू क्या है? 169 मन आत्मा का सम्बन्ध 341 -पाप करने से क्यों नहीं रोकता 18, 242, -एक रस नहीं रहता 164 -एक रुकावट 143-44, 331 -भक्त की महिमा 298 कि कि -की विभिन्न स्थितियाँ 144 -सर्वव्यापक 94 -के चार कार्य 21 प्रसाद में दया 341 -के विकार दो प्रकार से उत्पन्न 210 प्रारब्ध 221, 337, 339 -क्या है? 243-44 प्राणायाम 74, 96, 159, 196, 263, 281 -पवित्र कैसे ? 142 प्रेम गुरु से 64, 75 -दुनियावी 178, 249, 280 फ़क़ीर दो प्रकार के 96 फूलाबाई गुरु को न पकड़ सकी 98 बाबा काहन 135 281, 305 ---- और फ़रिश्ते 220 ---- का निवास-स्थान 64 ---- स्वामी जी से मिलाप 224-28 -बग्गा सिंह 65-66, 308 ब्रह्म 95, 133-34, 188, 240, 325 -की मुक्ति कल्प पर्यन्त 62-63, 328 ब्रह्मचर्य के लाभ 129, 161,189

निर्वाण कीर्तन से अभिप्राय 92 भिक्त, श्रद्धा : परमार्थ की नींव 26 --करना आवश्यक 187, 23**5** मनुष्य की आदतों में अन्तर क्यों ? 197 -को तीन ताप 131, 178 -जन्म का उद्देश्य 215, 232, 242 --के बाद कौन-सा जन्म 252 -जामे की श्रेष्ठता 92, 127, 214, 236, -जैमल सिंह जी 106, 107, 260-61, 251, 257-58, 294, 332 -शरीर के चार भाग 242 --में अठारह कमल 68 --- छ: चक्र 68, 119, 150, 181, 258, 282 ---तीन तिल 76 बुद्धि भ्रष्ट बुरे कर्मों के कारण 104-105 --हरि-मन्दिर 79, 111, 169, 193, 315 मनोकाश से परे प्राण नहीं 134, 159 -हृदय से तीसरे तिल तक 21 महाराज चरन सिंह जी की मंगनी 136

-सावन सिंह जी का गृहस्थ जीवन 15-16, -देवी का व्याह शहीदों से 51 ----- जन्म दिन 173-74, 177, 315, मुक्ति के तीन साधन 73, 90 319-20. ---- दर्शनों के बारे में कथन 134 -----संगत के प्रति प्रेम 86, 114,141, -शब्द सुनने से ही 102 181, 205-06, 241 ----की खाने सम्बन्धी आदतें 72 ---- टांग की हड्डी टूटी 106 -----बीमारी 47, 86, 87, 91, 101, -के बाद 128, 170, 172, 276, 312 123, 126, 129, 155, 157, 198-205, 217, 228, 268 --समय रोना पीटना 19, 61, 97, 107, ----यात्रा से सृष्टि को लाभ 52 -----विनम्रता 320 -सत्संगी की 59, 61, 67, 70, 156, 164, ---- सहनशीलता 59, 63, 97, 198, ----कोढ़ियों से मिलने गए 65-66 योग-हठ, ज्ञान, ध्यान 21, 74 ----को हुक्म सिंह का माथा टेकना 141 रचना के समय 187, 197 ---- लिखे गए पत्र 23, 29, 97, 139, रत्न सागर 170-71 305, 351 ----द्वारा मुसलमान तेलियों को नाम देने रामायण 18, 142, 294 की घटना 316 ---- द्वारा लिखे गए पत्र 73, 134, 236, ----दोबारा संसार में आएंगे 252-53 रूहानी तरक्की को हजम करना 74, 141 ----ने नाम देना कब शुरू किया 305, -नजारे बन्द होने का कारण 278-79 343-44 ----परिश्रमी 97, 132, 176-7, 237, 287, 288-89, 296 महाराजा रणजीत के विनाश का कारण 64 -स्वप्न 61, 99 मात मण्डल की रूहों का विशेषाधिकार विष्णु चक्र या नील चक्र 121 188, 336-37 व्यास जी के सेवक 'जैमिनी' 143 माता किशन कौर जी 338, 345

200, 346 मानसिक रोग कौन-कौन से 137 -नेक कर्मों से नहीं 90, 93, 128, 188 236, 275-76 मौत अटल है 162 -का समय 19, 21, 61, 107, 152, 165, 170-71, 172, 312 --- 'दिया' 'क्रिया कर्म' 63 243 --के रिश्तेदारों की 299 141, 216, 253-56, 261, 286, 304, 'राधा स्वामी' अलग मजहब नहीं 158, 222 --से अभिप्राय 68, 222 रिश्तेदार दुनियावी 103-04, 193, 231, 251-52, 256 -सच्चा 20, 193, 250 -सफ़र 14, 73-74, 94-95, 98, 121, 133-35, 160, 188, 240, 335 --आसान कब ? 147 वेदान्तियों की अवस्था 63, 75

-के कारण शरीर जीवित 174-75, 243 --दुनिया के कार्यों में दख़ल 220 -मनोकाश से परे 21 -की झिड़क 300 -से जुड़े जीवों की अवस्था 101 --दया 107, 130, 339 शरण से अभिप्राय 21, 83, 128 --परख 16-17, 333 शरीर-स्थूल, सूक्ष्म, कारण 94-95, 99 --प्रारब्ध नहीं रहती 106 शान्ति सच्ची 256-57 -- संगति 164, 165, 173, 179, 210 संभाल सत्संगी की 30, 70, 81, 98, 129, -के उपकार 23, 48

156, 164, 305 --वाक्य 64-65 -सत्संगी के रिश्तेदारों की 81, 180 -को बहुत से जन्मों का ज्ञान 131 संसार की अवस्था 91-92, 100, 127, 'सम', 'दम' से अभिप्राय 129 151, 152, 284 समाधि बनाना सन्तमत के विरुद्ध 323

-में चार पदार्थ 163 समाधियाँ तीन प्रकार की 121 --तीन प्रकार के लोग 130 संस्कृत को देववाणी क्यों कहते हैं? 150 साईं लसूड़ी शाह 243 सांसारिक मान-बड़ाई 78 साधुओं के लिये हिदायतें 145, 348 सतलोक 62 सत्संग का उद्देश्य 143, 249, 272 सिमरन और ध्यान 11, 73 सत्संगियों के साथ न्योता-भाजी 235 -की ताक़त 22, 177, 254, 301 -पर हुजूर की दया 24, 25, 53-54, 59, -की सीमितता 20, 73, 305 77, 286, 304, 351

-त्यागी, गृहस्थ 15-16, 77 -प्राचीन समय के 89, 267 सन्तमत का धर्म 251-252 -का सार 49 सन्त मौत से नहीं डरते 200 -शाप नहीं देते 107-108

शब्द का खिंचाव कब? 102, 139, 249 सन्तों का उद्देश्य 172, 214, 222, 321

160, 325

सिक्खमत रूहानी फिलॉसफ़ी 158 188-89, 241, 265, 269-71, 276- सिमरन के समय मन भटके तो? 22, 78, 101, 134, 231, 275

सत्संगी का किसी से माथा टिकवाना 338 -ज़बान से या दिल से 78, 278 --पल-पल का भजन-सिमरन 141-42 सिमरन पाँच विशेष नामों का क्यों 293 सन्त गृहस्थ की सलाह क्यों देते हैं ? 75 सुखमना 240, 296, 315, 329, 335 सूक्ष्म मण्डल की रूहें स्थूल मण्डल में 326 -देवा सिंह 309, 313, 321, 323 सूली का सूल 100, 145,188-89 सेवक की अवस्था 195, 204-205 सेवा 16, 210, 285, 350 स्वामी जी महाराज 222-224 --- तुलसी साहिब 192, 224 'स्वामी पद' 222

हमारे प्रकाशन

स्वामी जी महाराज

- 1. सारबचन संग्रह
- 2. सारबचन वार्तिक

बाबा जैमल सिंह जी महाराज

1. परमार्थी पत्र, भाग 1

महाराज सावन सिंह जी

- 1. परमार्थी पत्र, भाग 2
- 2. शब्द की महिमा के शब्द
- 3. प्रभात का प्रकाश
- 4. गुरुमत सिद्धान्त, भाग 1, 2

महाराज सरदार बहादुर जगत सिंह जी

- 1. आत्म-ज्ञान
- 2. रूहानी फूल

महाराज चरन सिंह जी

- 1. सन्तों की बानी
- 2. सन्तमत दर्शन, भाग 1 से 3
- 3. सन्त-संवाद भाग 1, 2
- 4. सन्त-मार्ग

'पूर्व के सन्त' पुस्तक-माला के अन्तर्गत

- 1. सन्त नामदेव
- 2. सन्त कबीर
- 3. गुरु रविदास
- 4. गुरु नानक का रूहानी उपदेश
- 5. गुरु अर्जुन देव
- 6. सन्त तुकाराम
- 7. नाम-भिक्त: गोस्वामी तुलसीदास
- 8. मीरा : प्रेम-दीवानी

- 5. सन्तमत सिद्धान्त
- 6. सन्तमत प्रकाश, भाग 1 से 5
- 7. परमार्थी साखियाँ
- 8. गुरुमत सार
- 5. जीवत मरिए भवजल तरिए
- 6. पारस से पारस
- 7. सत्संग संग्रह, भाग 1 से 6

जनक पुरी शान्ति सेठी के. एन. उपाध्याय जनक पुरी महिन्द्र सिंह जोशी चन्द्रावती राजवाडे

के.एन.उपाध्याय, पंचानन उपाध्याय वीरेन्द्र सेठी

367

	9. सन्त दादू दयाल	क. एन. उपाध्याय
शब्		राजेन्द्र कुमार सेठी
-के	10. सन्त पलटू	टी. आर. शंगारी
-म	11. सन्त चरनदास	के. एन. उपाध्याय
-से	12. सन्त दरिया (बिहार वाले)	जनक पुरी, वीरेन्द्र सेठी
शर शरी	13. तुलसी साहिब	सहगल, शंगारी, 'ख़ाक', भण्डारी
शर	14. उपदेश राधास्वामी (स्वामी जी महाराज)	
संक	15. साईं बुल्लेशाह	जनक पुरी, टी. आर. शंगारी
	16. हजरत सुलतान बाहू	कृपाल सिंह 'ख़ाक'
- E	17. सरमद	टी. आर. शंगारी, पी. एस. 'आलम'
संस	18. बोलै शेख़ फ़रीद	टी. आर. शंगारी
	सतगुरुओं के विषय में	
-1	1. रूहानी डायरी, भाग 1 से 3	राय साहिब मुंशी राम
-	2. धरती पर स्वर्ग	दरियाई लाल कपूर
-	3. अनमोल ख़जाना	शान्ति सेठी
संग सां	4. मेरा सतगुरु	जूलियन पी. जानसन
सः	सन्तमत के सम्बन्ध में	
स	1. नाम-सिद्धान्त	शंगारी, 'ख़ाक', भण्डारी, सहगल
स	2. सन्तमत विचार	टी.आर.शंगारी, कृपाल सिंह 'ख़ाक़'
-7	3. सन्त-सन्देश	शान्ति सेठी
	4. सन्त-समागम	दरियाई लाल कपूर
	5. अमृत नाम	महिन्दर सिंह जोशी
स	6. अन्तर की आवाज	सी. डब्लयू. सेंडर्स
स	7. हंसा हीरा मोती चुगना	सम्पादक: सन्तोख सिंह, टी.आर.शंगारी
-	8. हक़-हलाल की कमाई	सम्पादित
_	9. जिज्ञासुओं के लिये	सम्पादित
-	10. बिनती और प्रार्थना के शब्द	संकलित
Ŧ	11. अमृत वचन	संकलित
-	अन्य प्रकाशन	
Ŧ	1. भाई गुरदास	महिन्दर सिंह जोशी
-	2. किताब-ए-मीरदाद	मिखाइल नइमी